अघन्यतों तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटी ॥ सामान्यतो मनुष्यनपुंसकस्यापि जघन्यतों तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटी कर्म्मनूमकमनुष्यनपुंसकस्य क्षेत्रं प्रतीत्य जघन्यतों तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटी धर्म्मचरणं बाह्यवेषपरिकारितप्रव्रज्याप्रतिपत्तिमंगीकृत्य जघन्यनेनांतर्मुहूर्त्तं तत ऊर्द्ध मरणादिनावात् उत्कर्षतो

॥ मणुस्सणपुंसगस्स णं नंते केवतियं कालं ठिति पं० गो० खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणापुव्वकोडी कम्मनूम

जघन्यपणे अंतर्मुहूर्त्तनी ने उत्कृष्टपणे पूर्वकोटी वरषनी स्थिति जाणवी ॥ हे नगवन् मनुष्य नपुंसकनी केटला कालनी स्थिति कहीछे? हे गौतम क्षेत्र आश्रि सामान्यपणे जघन्यथी अंतर्मुहूर्त ने उत्कृष्टपणाथी पूर्वकोटी वरषनी जाणवी धर्मचरण एटले बाहिर वेष आश्रि प्रव्रज्या तेनो अंगीकार करिने जघन्यपणे अंतर्मुहूर्त्तनी ने उत्कृष्टपणे देशेउणी पूर्वकोटी वरषनी कर्मनूमिना नरत ऐरवत पूर्वविदेह अपरविदेहना मनुष्य नपुंसकनी पण क्षेत्र आश्रि धर्म चरणनी स्थिति जघन्यथी अंतर्मुहूर्त्तनी ने

देशोना पूर्वकोटी संवत्सराष्टकाडूर्द्ध प्रानिपद्य, जन्मपालनात् नरतैराक्तकर्मनूमकमनुष्यनपुंसकस्य च क्षेत्रं धर्मचरणं प्रतीत्य जघन्यत उत्कर्षतश्चैवमेववक्तव्यं अकर्मनूमकमनुष्यनपुंसकस्य जन्म प्रातित्य जघन्येनांतर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेणापि अंतर्मुहूर्त्तं अकर्मनूमौ हि संमूर्च्छिमा मनुष्यानपुंसका एव नवंति न गर्नव्युत्क्रांतिका युगलधार्मिकाणां नपुंसकत्वानावात् । संमुर्च्छिमाश्च जघन्यत उत्कर्षतो वा अंतर्मुहूर्त्तायुषः केवलं जघन्यादुत्कृष्ट मंतर्मुहूर्त्तं बृहत्तरमव

य नरहेरवय पुव्वविदेह अवरविदेह मणुस्सणपुंसकस्सवि तहेव अकम्मनूमक मनुस्सनपुंसकस्स णं नंते केवातियं कालं ठिती पं० गो० जम्मणं पमुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अंतो

उत्कृष्टपणाथी देशेऊणी पूर्वकोटी वरषनी । हे नगवन् अकर्मनूमिना मनुष्य नपुंसकनी केटला कालनी स्थिति कहीछे? हे गौतम जन्म आश्रिने जघन्यपणे अंतर्मुहूर्त्तनी ने उत्कृष्टपणे पण अंतर्मुहूर्त्तनी ते केम समजवी जे अकर्मनूमिने विषे मनुष्य नपुंसक समूर्छिम होय पण गर्नज न होय ने जुगलीयाने नपुंसकपणानो अनाव छे ने समूर्छिम जघन्यपणाथी तथा उत्कृष्टपणाथी अंतर्मुहूर्त्तना आउखावंतज हो

सेयं संहरणं प्रतीत्य जघन्यतोंतर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतोदेशोनपूर्वकोटी संहरणादूर्ध्वमामरणांतमवस्थानसंभवात् देशोनता च पूर्वकोट्यागर्भनिर्गमनस्य संभवात् एवं विशेष
चिंतायां हैमवत हैरण्यवताकर्मभूमकमनुष्यनपुंसकस्य हरिवर्षरम्यकवर्षाकर्मभूमक मनुष्यनपुंसकस्य देवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमकमनुष्यनपुंसकस्य अंतरद्वीपकमनुष्य

मुहुत्तं साहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसुणापुव्वकोडी एवं जाव अंतरदीवकाणं ॥

य माटे तेमां पण आटलो विशेष जाणवो जे जघन्यपणे अंतर्मुहूर्त्त ते थकी उत्कृष्टपणे जे अंतर्मुहूर्त्त ते अति मोटुं जाणवुं संहरण आश्रिने जघन्यपणे अंतर्मुहूर्त्त ने उत्कृष्टपणे देशेउणी पूर्वकोटी वरषनी केम जे गर्भथी निकल्या ने संहरणथी पछे जावजीव रहेवा थकी देशेउणी पूर्वकोटी वरषनी स्थितिनो संभव छे माटे। ए प्रकारे अंतरद्वीप सुधीनो पाठ जाणवो एटले हैमवंत ने हैरणवंत जे अकर्मभूमिना मनुष्य नपुंसकनी तथा हरिवर्ष रम्यकवर्ष जे अकर्मभूमिना मनुष्य नपुंसकनी तथा देवकुरु उत्तरकुरु जे अकर्मभूमिना मनुष्य नपुंसकनी तथा अंतरद्वीपना मनुष्य नपुंसकनी जन्म आश्रिने तथा संहरण

टीका.

नपुंसकस्य च जन्म संहरणं च प्रतीत्यैवमेव वक्तव्यम् ॥ संप्रति कायस्थितिमाह नपुंसगेणं भंते इत्यादि नपुंसको भदंत नपुंसक इति सामान्यत स्तद्वेदापरि त्यागेन कालतः कियच्चिरं भवति भगवानाह गौतम जघन्यत एकं समयं उत्कर्षतो वनस्पतिकालं तत्रैकसमयता तु उपशमश्रेण्यां समाप्तौ सत्यामवेदकत्वे सति

मूल.

॥ णपुंसएणं भंते णपुंसएत्ति कालतो केवच्चिरं होंति गो० जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं तरुकालो नेरइयनपुंसएणं भंते२ गो० जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं एवं

भाषा.

आश्रने एमज जाणवुं ॥ हवे नपुंसकनी कायस्थिति कहे छे हे भगवन् नपुंसकने नपुंसकपणे सामा न्यपणाथी नपुंसक वेदनो न त्याग करते केटलो घणो काल कह्यो छे? हे गैतम जघन्यपणे एक समय ने उत्कृष्टपणे वनस्पतिकाल जाणवो तेमां एक समयपणु तो उपसमश्रेणिनी समाप्ति थये छते अवे दकपणु छते उपसमश्रेणीथी पडताने नपुंसकवेदनो उदय समय थकी अनंतर कोइने मरण थाय ने तेहवा मरणवालाने सर्वथा देवने विषे उपजवे करिने पुरुषवेदनो उदयभावथी वनस्पतिकाल क

पा. १८३ टीका. उपशमश्रेणीतः प्रतिपततो नपुंसकवेदोदय समयानंतरं कस्यचित् मरणात् तथामृतस्य चावश्यं वेदोत्पादःपुंवेदोदयभावात् वनस्पतिकाल आवलिकासंख्येय भागगत समयराशि प्रमाणा संख्येय पुद्गलपरावर्त्तप्रमाणः नैरयिकनपुंसककायस्थिति चिंतायां यदेव सामान्यतोविशेषतश्च स्थितिमानं जघन्यत उत्कर्षतश्चोक्तं तदेव

मूल. पुढवीउ० ठिती जाणियव्वा तिरिक्खजोणिय नपुंसएणं भंते ति० गो० जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो एवं एगिंदियनपुंसकस्स वणस्सइ कायस्सवि एवमेव सेसाणं जहण्णे

भाषा. हेवो आवलिकाना असंख्यातमा भागने विषे जे समयराशि ते प्रमाणे असंख्यात पुद्गल परावर्त्त रूप जे काल तेने वनस्पतिकाल कहेवो। हे भगवन् नारकी नपुंसकने नारकी नपुंसकपणाने विषे केटलो घणो काल कह्यो छे? हे गौतम जघन्यपणे दशहजार वरषनो ने उत्कृष्टपणे तेत्रीस सागरोपमनो। नारकी नपुंसकना कायस्थितिना विचारने विषे जे सामान्यपणे तथा विशेषपणे स्थितिनुं प्रमाण कह्युं छे तेहीज प्रमाणे जघन्यपणाथी तथा उत्कृष्टपणाथी जाणवुं त्यां भवस्थिति विना बीजी कायस्थितिनो

टीका.

वस्तात्वं भवस्थितिव्यतिरेकेण तत्रान्यस्याः कायस्थितेरसंभवात् सामान्यत स्तिर्यग्योनिककायस्थितिचिंतायां जघन्यतोंतर्मुहूर्तं तदनंतरं मृत्वा गत्यंतरे वेदांतरे वा संक्रमात् उत्कर्षतो वनस्पतिकालः विशेषचिंतायामेकेंद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसककायस्थितावपि जघन्यतोंतर्मुहूर्तं भावना प्रागवत् उत्कर्षतो वनस्पतिकालो

सूत्र:

णं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं असंखेज्जाउ उस्सापिणिउ कालतो खेत्ततो असंखेज्जा लोया बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय नपुंसकाणय जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं संखेज्जंकालं पं

भाषा.

संभव नथी ॥ ए प्रकारे बीजी सघली पृथ्वीनी स्थिति जिम कही छे तिम जाणवी । हे भगवन् तिर्यंच योनिया नपुंसकनी कायस्थिति केटला घणा कालनी,कहीछे! हे गौतम सामान्यपणाथी तिर्यंचयोनिनी कायस्थितिनी चिंताने विषे जघन्यपणे अंतर्मुहुर्त्त केमजे अंतर्मुहूर्त्त अनंतर मरीने बीजी गतिने तथा बीजा वेदने अवश्य पांमे ते माटे उत्कृष्टपणाथी वनस्पतिकाल जाणवो विशेष चिंताने विषे एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसकनी तथा वनस्पतिकायनी स्थिति एमज जाणवी॥ एमज शेष बीजा बाकीरह्या तेने विषे पण

पा. १८४

टीका.

यथोदितरूपः तत्रापि विशेषचिंतायां पृथिवी कायिकैकेंद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसककायस्थितौ जघन्यतोंतर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो ऽसंख्येयः कालो ऽसंख्येयोत्सर्पिण्यवसर्पिणी प्रमाण स्तथाचाह उक्कोसेणमसंखेज्ज कालं असंखेज्जाउ उसप्पिणीउसप्पिणीउ कालतो खेत्ततो असंखेज्जालोगा एमप्कायिकतेजस्कायिक वायुकायिक कायस्थिति

मूल.

चेंदियतिरिक्खजोणियनपुंसएणं भंते२ गो० जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोमी पुहुत्तं एवं जलयर तिरिचउप्पद थलयर उरपरिसप्प महोयर गाणवि मणुस्सणपुंसकस्सणं भंते२ गो० खेत्तं

भाषा.

जाणवुं । विशेष चिंताये पृथिवीकाय एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसकने जघन्यपणे अंतर्मुहुर्त्त ने उत्कृ पणे असंख्यातो काल असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी कालथी ने क्षेत्रथी असंख्याता लोकाकाश प्रदेश प्रमाणे बेइंद्रिय तेंद्रिय चउरिंद्रिय ए त्रण जातिना तिर्यंचयोनिया नपुंसकने जघन्यपणे अंत र्मुहुर्त्त ने उत्कृष्टपणे संख्यातो काल जाणवो । हे भगवन् पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसकनी कायस्थि ति केटली कहीछे? हे गौतम जघन्यपणे अंतर्मुहुर्त्तनी ने उत्कृष्टपणे पूर्वकोटि पृथक्त्वनी जाणवी ते किम

प्यपि वक्तव्यं वनस्पतिकायिककायस्थितौ तथावक्तव्यं यथा सामान्यतः एकेंद्रियकायस्थितौ द्वींद्रिय तिर्यग्योनिक नपुंसककायस्थितौ जघन्यतों तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः संख्येयः काल. सच संख्येयानि वर्षसहस्राणि प्रतिपत्तव्यः एवं त्रींद्रिय चतुरिंद्रिय तिर्यग्योनिकनपुंसककायस्थित्योरपि वक्तव्यं पंचेंद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसककायस्थितौ जघन्यंतोतर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिपृथक्त्वं तच्चानिरंतरं सप्त नवान् पूर्वकोटयायुषो नपुंसकत्वेनानुजवतो वेदितव्यं ततऊर्ध्वं त्ववश्यं वेदांतरे 'विलक्षणानवा

पमुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोमियपुहुत्तं धम्मचरणं पमुच्च जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं देसूणापुव्वकोमी एवं कम्मनूमनरहेरवयपुव्वविदेह अवरविदेहेसुवि नाणियव्वं अकम्म

तो सात नव पूर्वकोटि आउखाना नपुंसकपणे अनुनव करनार आश्रि जाणवी ते थकी उर्ध्वे बीजा वेदने विषे अथवा बीजा नवने विषे अवश्यपणे जवाथी समजवी एज प्रकारे जलचर तिर्यंचने तथा चउपद तिर्यंचने तथा थलचर तथा उरपरिसर्प तथा महोरग तिर्यंचने पण जाणवी। हे नगवन् मनुष्य नपुंसकनी कायस्थिति केटला कालनी कहीछे? हे गौतम क्षेत्र आश्रि जघन्यपणे अंतर्मुहुर्त्तनी ने उत्कृ

।' १८५ तरे वा संक्रमात् एवं जलचरस्थलचरसामान्यतो मनुष्यनपुंसककायस्थितिष्वपि वेदितव्यं कर्मभूमकमनुष्यनपुंसककायस्थितौ क्षेत्रं प्रतीत्य जघन्यतो ऽन्तर्मुहूर्त्तमुत्क

टीका. र्षतः पूर्वकोटीपृथक्त्वं भावनात्र प्रागिव धर्मचरणं प्रतीत्य जघन्यत एकं समयमुत्कर्षतोदेशानपूर्वकोटी अत्रापि भावना पूर्ववत् एवं भरतैरवतकर्मभूमकमनुष्यका यस्थितौ पूर्वविदेहापरविदेहकर्मभूमकमनुष्यनपुंसककायस्थितौ च वाच्यं सामान्यतो कर्मभूमकमनुष्यनपुंसककायस्थिति चिंतायां जन्म प्रतीत्य जघन्यतोंतर्मुहूर्त्त

मूल. भूमकमणुस्सणपुंसएणं भंते गो० जम्मणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं (अंतोमुहुत्त

भाषा. ष्टपणे पूर्वकोटि पृथक्त्वपणे जाणवी धर्मचरण आश्रिने जघन्यपणे एक समयनी ने उत्कृष्टपणे देशेउणी पूर्वकोटी ए सर्वनी भावना पूर्वनी पेठे जाणवी ए प्रकारे कर्मभूमिना भरत ऐरवत क्षेत्रने विषे तथा पूर्व महाविदेह पश्चिममहाविदेह क्षेत्रने विषे मनुष्य नपुंसकनी स्थिति जाणवी। हे भगवन् अकर्मभूमिना मनुष्य नपुंसकनी कायस्थिति केटला कालनी कहीछे? हे गौतम जन्म आश्रि जघन्यपणे अंतर्मुहुत्तनी ने उत्कृष्टपणे अंतर्मुहुर्त्त पृथक्त्वनी जाणवी संहरण आश्रिने जघन्यपणे अंतर्मुहुत्त ने उत्कृष्टपणे देशेउणी

का. मेतावत्यपि काले मसकृडुत्पादात् उत्कर्षतोंतर्मुहूर्त्तपृथक्त्वं तत ऊर्द्ध तत्र तथोत्पादाजावात् संहरणं प्रतीत्य जघन्यतोंतर्मुहूर्त्तं तत ऊर्द्ध मरणादिनावात् उत्कर्षतो देशोना पूर्वकोटी एवं हैमवतहैरण्यवतहारिवर्षरम्यकवर्ष देवकुरूत्तरकुर्व्वंतरद्वीपकमनुष्यनपुंसककायस्थितिष्वपि वक्तव्यं तदेवमुक्ता कायस्थितिः ॥ ॥ सांप्रतमंतरमजिधित्सुराह नपुंसगस्सणमित्यादि । णं वाक्यालंकारे जदंत अंतरं कालतः कियच्चिरं जवति नपुंसकोजूत्वा नपुंसकत्वाद्भ्रष्टः पुनः कियता का

मू. पुहुत्तं) संहरणं पमुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणापुव्वकोमी एवं सव्वेसिंजाव अंतरदीवगाणं॥ ॥ णपुंसगस्सणं जंते केवतियं कालं अंतरं होति गो० जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरो

भा. पूर्वकोटी वरषनी एमज सर्वे अकर्मजूमिमां हेमवंत१ हैरण्यवंत२ हरिवर्ष३ रम्यकवर्ष४ देवकुरु५ उत्तर कुरु६ ए सर्व क्षेत्रने विषे मनुष्य नपुंसकनी कायस्थिति कहेवी जावत् शब्दे करिने अंतरद्वीपना मनुष्य नपुंसक पर्यंत एमज कायस्थिति कहेवी ए प्रकारे कायस्थिति कही ॥ हे जगवन् नपुंसकने केटला कालनु आंतरु होय एटले नपुंसक थईने नपुंसकपणाथी भ्रष्ट थयो ते पाछो नपुंसक केटला काले थाय

पा. १८६ टीका. भेन नपुंसको भवतीत्यर्थः भगवानाह गौतम जघन्यतोंतर्मुहूर्त्त मेतावता पुरुषादिकालेन व्यवधानात् उत्कर्षतः सागरोपमशतपृथक्त्वं सातिरेकं पुरुषादिकालस्य एतावत एवसंभवात् तथा चात्र संग्रहणिगाथा इत्थिनपुंसा संचिठ्ठणेसु पुरिसंतरेय समउ पुरिसनपुंसा संचिठ्ठणंतरे सागरपुहुत्तं अस्याक्षरगमनिका संचिठ्ठणा नाम सातत्येनावस्थानं तत्रास्त्रिया नपुंसकस्य च सात्येनावस्थाने पुरुषांतरे च जघन्यतः एकसमयस्तथाच प्रागभिहितं इत्थीणं भंते इत्थीत्ति कालओ केवच्चिरं

मूल: वमसतपुहुत्तं सातिरेगं नेरइएणपुंसकस्सणं भंते केवतियं कालं अंतरं होति जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तरुकालो रतणप्पभापुढविनेरइयणपुंसकस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं तरुकालो

भाषा. ए प्रश्न हे गौतम जघन्यपणे अंतर्मुहुर्त्तनु ने उत्कृष्टपणे कांइक अधिक एवु सो सागारोपम पृथक्त्वपणु जाणवुं । हे भगवन् नारकी नपुंसकने केटला कालनु आंतरु होय? हे गौतम जघन्यपणे अंतर्मुहुर्त्तनु ने उत्कृष्टपणे वनस्पतिकाल जाणवो रत्नप्रभाना नारकी नपुंसकने जघन्यपणे अंतर्मुहुर्त्तनु ने उत्कृष्टपणे वनस्पतिकाल जाणवो ए प्रकारे सघली नारकी पृथिवीये आंतरु समजवुं जावत् हेठली सातमी पृथ

कि.

ल.

षा.

होइ गोयमा एगेणं आदिसेणं जहन्नेणं एगं समयं इत्यादि तथा नपुंसगेणं भंते नपुंसगेत्ति कालतो । केवच्चिरं होइ गोयमा जहण्णेणं एक्कं समयमित्यादि तथा पुरिसस्सणं भंते अंतरं कालतो केवच्चिरं होइ गोयमा जहन्नेणं एक्कं समयमित्यादि तथा पुरुषस्य च नपुंसकस्य यथाक्रमं संचिठणं सातत्येनावस्थानमतंरं चोत्कर्षतः सागरपृथक्त्वं पदैकदेशे पदसमुदायोपचरात् सागरोपमशतपृथक्त्वं तथाच्च प्रागभिहितं पुरिसेणं भंते पुरिसत्ति कालतो किच्चिरं (केवच्चिरं) होद गोय

एवं सव्वेसिं जाव अहे सत्तमा तिरिक्खजोणियणपुंसकस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सा

वी सुधी तिर्यंचयोनिया नपुंसकने जघन्यथी अंतर्मुहुर्त्तनुं ने उत्कृष्टपणे कांइक अधिक सो सागरोपम पृथक्त्वपणानु आंतरु जाणवुं विशेष विचारणाये सामान्यथी एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसकने जघन्य पणे अंतर्मुहुर्त्तनु ने उत्कृष्टपणे संख्यात वरष अधिका वे सागरोपम सहस्र जाणवा ते किम समजवा तो त्रसकायस्थितिकालने एकेंद्रियपणाना आंतराने विषे उत्कृष्टपणाये एटला कालनो संभव छे माटे संख्यात वरष अधिका लेवां । पृथवीकाय अप्काय तेउकाय वायकाय एटलाने जघन्यपणे अंतर्मुहु

पा. १८७ टीका. मा जहण्णेणं (जहन्नेणं) अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवमसयपुहुत्तं सातिरेगं नपुंसकांतरोत्कर्षप्रतिपादकं चेदमेवाधिकृतं सूत्रमिति तथासामान्यतो नैरयिक नपुंसकस्यांतरं जघन्यतोंतर्मुहूर्त्तं सप्तमनरकपृथिव्या उद्धृत्य तंडुलमत्स्यादिभवेष्वंतर्मुहूर्त्त स्थित्वा भूयः सप्तमनरक पृथिवी गमनस्य च श्रवणात् प्रतिपृथिव्यापि नपुंसकस्यांतरं जघन्यतोंतर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः सागरोपमशतपृथक्त्वं सातिरेकं अत्रभावना प्रागिव विशेषचिंतायां सामान्य वक्तव्यं तथा सामान्यचिंतायां तिर्यग्योनिकनपुंसकस्यांतरं जघन्यतोंतर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः सागरोपमशतपृथक्त्वं सातिरेकं अत्रभावना प्रागिव विशेषचिंतायां सामान्य

मूल. गरोवमसतपुहुत्तं सातिरेगं एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दोसागरोवमसहस्साइं संखेज्ज वासमब्भहियाइं पुढवि आउ तेउ वाऊणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं

भाषा. र्त्तनु ने उत्कृष्टपणे वनस्पतिकाल जेटलु आंतरु जाणवुं वनस्पतिकायिकने जघन्यपणे अंतर्मुहुर्त्तनु ने उत्कृपष्टणे असंख्यातो काल ते कालथी जाणवो ने क्षेत्रथी असंख्यातो लोक एटले असंख्याता लोकाकाशना प्रदेशोने समय समय एक एक प्रदेश काढीये तेमां जेटली उत्सर्पिणी अवसर्पिणीयो थाय तेटलो वनस्पतिना भवथकी चवीने बीजाने विषे उत्कृष्टपणाथी एटलो काल रहेवुं संभवे छे तदनंतर

ाका. त एकेंद्रिय तिर्यग्योनिकनपुंसकस्यांतर्मुहूर्त्तं तावता द्वींद्रियादि कालेन व्यवधानात् उत्कर्षतो द्वे सागरोपमसहस्रे संख्येयवर्षाभ्यधिके त्रसकायस्थितिकालस्य एकें द्रियत्वव्यवधायकस्योत्कर्षतोप्येतावत एव संभवात् पृथिवीकायिकैकेंद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकस्य जघन्यतों तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो वनस्पतिकालः एवमप्कायिकतेजस्कायिक वायुकायिकैकेंद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकानामपि वक्तव्यं वनस्पतिकायिकैकेंद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकस्य जघन्यतोतर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो असंख्येयंकालं यावत् सचासं

त्र. उक्कोसेणं वणस्सतिकालो वणस्सतिकाइयाणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं जाव असंखेज्जा लोया सेसाणं बेंदियादीणं जाव खहयराणं जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं

। संसारी नियमाये फरीथी पण वनस्पतिकायिकपणे उत्पन्न थाय छे? ए हेतु माटे बेरिंद्रिय तेरिंद्रिय चउरिंद्रिय पंचेंद्रिये जे तिर्यंचयोनिया नपुंसको ने जलचर थलचर खेचर जे पंचेंद्रियतिर्यंचयोनिया नपुंसकोने तथा सामान्यथी मनुष्य नपुंसकोने जघन्यथी अंतर्मुहुर्तनु ने उत्कृष्टपणाथी अनंता काल नुं आंतरु जाणवुं ते अनंतो काल कियो तो पूर्वे कह्यो तेहीज वनस्पतिकाल जाणवो। कर्मभूमिना

पा. १८८ टीका.

ख्येयः कालो ऽसंख्येया उत्सर्पिण्योवसर्पिण्यः कालतः क्षेत्रतो ऽसंख्येया लोकाः किमुक्तं भवत्यसंख्येयलोकाकाशप्रदेशानां प्रतिसमयमेकैकापहारे यावत्य उत्स
पिण्यवसर्पिण्यो भवंति तावत्यइत्यर्थः वनस्पतिभवात् प्रच्युतस्या न्यत्रोत्कर्षत एतावंतं कालमवस्थानसंभवात् तदनंतरं संसारिणो नियमेन भूयोपि वनस्पतिका
यिकत्वेनोत्पादभावात् द्वींद्रियत्रींद्रिय चतुरिंद्रियपंचेंद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकानां जलचरस्थलचरखचर पंचेंद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकानां सामान्यतोमनुष्यनपुंसकस्य

मूल.

उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो मणुस्सणपुंसकस्स खेत्तं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं
वणस्सतिकालो धम्मचरणं पडुच्च जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं अणंतं कालं जाव अवड्ढ

भाषा.

मनुष्य नपुंसकोने क्षेत्र आश्रि आंतरु जघन्यथी अंतर्मुहुर्तनु ने उत्कृष्टपणे वनस्पतिकाल जाणवो।
धर्मचरण आश्रिने जघन्यथी एक समयनु केमजे सर्व जघन्य एवो लबाधिपातने एक समयपणुछे ए हेतु माटे
उत्कृष्टपणाथी अनंतो काल एटले कालथी अनंती उत्सार्पिणी अवसर्पिणीयो ने क्षेत्रथी अनंता लोकाका
शप्रदेश जावत् देशेउणू अर्द्ध पुद्गलपरावर्त जाणवुं ए प्रकारे भरत ऐरवत पूर्वविदेह अपरविदेह जे कर्म

टीका. च जघन्यतोंतर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो नंतं कालं सयानंतः कालो वनस्पतिकालो यथोक्तं स्वरूपः प्रतिपतव्यः कर्मभूमकमनुष्यनपुंसकस्यांतरं क्षेत्रं प्रतीत्य जघन्यतोंतर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो वनस्पतिकालः धर्मचरणं प्रतीत्य जघन्यत एकं समयं यावत् लब्धिपातस्य सर्वजघन्यस्य एकसामयिकत्वात् उत्कर्षतो नंतं कालं तमेवानंतं कालं निर्धारयति अणंताउ उस्सप्पिणिउसप्पिणीउ कालतो खेततो अणंता लोगा अवढं पोग्गलपरियट्टं देसूणामिति एवं भरतैरवतपूर्वविदेहापरविदेह कर्मभूमकमनुष्य नपुंसकानामपि क्षेत्रं धर्मचरणं च प्रतीत्य जघन्यत उत्कृष्टं चातरं प्रत्येकं वक्तव्यं ॥ अकर्मभूमकमनुष्यनपुंसकस्य जन्म प्रतीत्य जघन्यतो तर्मुहूर्त्तमेतावता गत्यन

मूल. पोग्गलपरियट्टं देसूणं एवं कम्मभूमगस्सवि भरहेरवयस्स पुव्वविदेहअवरविदेहकस्सवि ॥ ॥ अकम्मभूमकमणुस्सणपुंसकस्स णं भंते केवतियं० जम्मणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वण

भाषा. भूमिना मनुष्य नपुंसक तेमने क्षेत्र आश्रि तथा धर्मचरण आश्रि जघन्यपणे तथा उत्कृष्टपणे आंतरु कहेवुं ॥ हे भगवन् अकर्मभूमिना मनुष्य नपुंसकोने केटला कालनुं आंतरु जाणवुं? हे गौतम जन्म आश्रिने जघन्यपणे अंतर्मुहुर्त्तनुं केमजे बीजी गत्यंतरादि काले करिने अंतरालना भावथी उत्कृष्टपणे वनस्पति

सच मागधपुरुष

गा. १८९ टीका. रादिकालेन व्यवधानजावात् उत्कर्षतो वनस्पतिकालः संहरणं प्रतीत्य जघन्यतोंतर्मुहूर्त्तं तच्चैवं कोपि कर्मजूमकमनुष्यनपुंसकेनाप्यकर्मजूमौ संहृतः सच मागधपुरुष दृष्टांत बलादकर्मजूमक इति व्यपदिश्यते ततः कियत्कालानंतरं तथाविधबुद्धिपरावर्त्तने जावतो जूयोपि कर्मजूमौ संहृत स्तत्र चांतर्मुहूर्त्तं धृत्वा पुनरप्यकर्मजूमा वानीतः उत्कर्षतो वनस्पतिकालः एवं विशेषचिंतायां हैमवत हैरण्यवत हरिवर्ष रम्यकवर्ष देवकुरूत्तरकुर्वकर्मजूमक मनुष्यनपुंसकानामंतरद्वीपकमनुष्यनपुंसक

णं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो एवं जाव अंतरदीवगत्ति ॥

मूल. स्सतिकालो संहरणं पडुच्च जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वणस्सतिकालो

जाषा. काल जाणवो संहरण आश्रिने जघन्यपणे अंतर्मुहुर्त्तनुं केमजे कोईक कर्मजूमिनो मनुष्य नपुंसक कोइके अकर्मजूमिने विषे संहरी आण्यो ते मागध पुरुषना दृष्टांत बलथी अकर्मजूमिनोज कहेवायो त्यार पछी केटलेक कालने अनंतर ते प्रकारनी बुद्धि फरी गई जे फरीथी पाछो कर्मजूमिमां आण्यो ने त्यां अंतर्मुहुर्त्त धरिने पाछो अकर्मजूमिमां आण्यो तिवारे जाणवुं ने उत्कृष्टथी वनस्पतिकाल जाणवो ए प्रकारे विशेषचिंताने विषे हेमवत हैरण्यवत हरिवर्ष रम्यकवर्ष देवकुरु उत्तरकुरु

टीका. स्यच जन्मसंहरणं च प्रतीत्य जघन्यत उत्कर्षत श्चांतरं वक्तव्यं तदेवमुक्तमंतरम् ॥ अधुनाल्पबहुत्वमाह एएसिणं मित्यादि प्रश्नसूत्रं सुगमं भगवानाह गौतम सर्वस्तो का मनुष्यनपुंसकाः श्रेण्यसंख्येयभागवर्तिप्रदेशराशि प्रमाणत्वात् तेभ्योपि नैरयिक नपुंसका असंख्येयगुणाः अंगुलमात्र क्षेत्रप्रदेशराशौ तद्गतप्रथमवर्गमूलगुणिते यावान् प्रदेशराशि र्भवति तावत्प्रमाणासु घनीकृतस्य लोकस्य एकप्रादेशिकासु श्रेणिषु यावंतो नभःप्रदेशास्तावत्प्रमाणत्वात्तेषां तेभ्यस्तिर्यग्योनिकनपुंसका

मूल: ॥ एतेसिणं भंते नेरइयनपुंसकाणं तिरिक्खजोणियनपुंसकाणं मणुस्सनपुंसकाणय कतरे२ (कयरे) हिंतो जाव विसेसाहियावा गो० सव्वत्थोवा मणुस्सनपुंसका नेरइयनपुंसका असंखेज्जगुणा तिरिक्ख

भाषा: जे अकर्मभूमिना मनुष्य नपुंसकोनुं तथा अंतरद्वीपना मनुष्य नपुंसकोनुं जन्म आश्रि तथा संहरण आश्रि जघन्यथी उत्कृष्टथी आंतरु कहेवुं ए प्रकारे आंतरु कह्युं ॥ हवे अल्पाबहुत्व कहछे। हे भगवन् नारकी नपुंसक तथा तिर्यंचयोनिया नपुंसक तथा मनुष्य नपुंसक ए सर्वमां कोण कोणथकी अल्पछे अथवा बहुछे अथवा बराबरछेः हे गौतम सर्वथी थोडा मनुष्य नपुंस

टीका.

अनंतगुणाः निगोदजीवानामनंतत्वात् संप्रति नैरयिकनपुंसकाविषय मल्पबहुत्वमाह ॥ एएसिणमित्यादि सर्वस्तोका अधः सप्तमपृथिवी नैरयिकनपुंसका असंख्येयगुणा स्तेभ्योपि षष्ठपृथिवीनैरयिकनपुंसका असंख्येयगुणा स्तेभ्योपि पंचमपृथिवीनैरयिकनपुंसका असंख्येय गुणा स्तेभ्योपि चतुर्थपृथिवी नैरयिकनपुंसका असंख्येयगुणा स्तेभ्योपि तृतीयपृथिवीनैरयिकनपुंसका असंख्येयगुणा स्तेभ्योपि द्वितीयपृथिवीनैरयिकनपुंसका असं ख्यातगुणाः सर्वेषामप्येतेषां पूर्वपूर्वनैरयिक परिमाणहेतुश्रेण्यसंख्येयभागापेक्षया असंख्येयगुणाः संख्येयगुणश्रेण्य संख्येयभागवर्त्तिनभः प्रदेशराशिप्रमाणत्वात् अल्पतरश्रेण्यसंख्येयभागवर्तिनभः प्रदेशराशिप्रमाणत्वात् तेभ्योपि

मूल.

जोणियनपुंसका अणंतगुणा एतेसिणं भंते नेरइयनपुंसकाणं जाव अहेसत्तमपुढविनेरइयनपुंसकाण

भाषा.

कहे केमजे श्रेणिना असंख्यातमे भागे वर्त्ततो जे आकाश प्रदेशराशि तेणेकरिने तेनु प्रमाणपणुछे ए हेतु माटे ते थकी नारकी नपुंसक असंख्यात गुणाछे केमजे अंगुल मात्र क्षेत्र प्रदेशराशिने विषे तिहां रह्यो जे प्रथम वर्गमूल ते गुण्यो थको जेटलो ते प्रदेशराशि थाय तेटला प्रमाणे घन करेला लोक नी एक प्रदेशनी श्रेणीयोने विषे जेटला आकाश प्रदेश थाय तेटलु तेमनु प्रमाणपणुछे ए हेतु माटे

टीका.

द्वितीयपृथिवी नैरयिकनपुंसकेभ्योऽस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यां नैरयिका नपुंसका असंख्येयगुणाः अंगुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशौ तद्गत प्रथमवर्गमूलगुणिते यावान् प्रदेश राशि स्तावत्प्रमाणासु घनीकृतस्य लोकस्य एकप्रादेशिकीषु श्रेणिषु यावंत आकाशप्रदेशास्तावत् प्रमाणत्वात् प्रतिपृथिवी च पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्भाविनो नैरयिकाः सर्वस्तोका स्तेभ्यो दक्षिणदिग्भाविनोसंख्येयगुणाः पूर्वपूर्वपृथिवीगतदक्षिणदिग्भागभाविभ्योप्युत्तरस्यामुत्तरस्यां पृथिव्यामसंख्येयगुणाः पूर्वोत्तरपश्चिमदि

मूल.

य कयरेश हिंतो जाव विसेसाहिया वा गो० सव्वत्थोवा अहेसत्तमपुढविनेरइयनपुंसका छठपुढविणे रइयणपुंसका असंखेज्जगुणा जाव दोच्चा पुढवि नेरइय नपुंसका असंखेज्जगुणा इमीसे रयणप्प

भाषा.

तेथी तिर्यंच योनिया नपुंसक अनंतगुणा केमजे निगोद जीव अनंताछे माटे ॥ हे भगवन् ए सर्व नारकी नपुंसको मध्ये रत्नप्रभाथी आरंभिने हेठली सातमी नारकीना नपुंसको सुधी मांहो मांहि कोण कोण थकी अल्पछे अथवा बहुछे अथवा तुल्य छे? हे गौतम सर्वथी थोडा हेठली सातमी पृथिविना नारकी नपुंसक छे केमजे अति थोडी श्रेणिना असंख्यातमा भागने विषे वर्तता जे आकाश प्रदेशराशि ते

टीका. भाविनः तथाचोक्तं प्रज्ञापनायां दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा अहेसत्तमपुढविनेरइया पुरत्थिमपच्चत्थिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा दाहिणेहिंतो अहेसत्त पुढविनेरइएहिंतो छठाएतमाएपुढवीए नेरइया पुरत्थिम पच्चत्थिम उत्तरेणं असंखेज्जगुणा दाहिणेणं असंखेज्जगुणा दाहिणलेहिंतो तमापुढविनेरइएहिंतो पंचमाए पुढवीए नेरइया पुरत्थिम पच्चत्थिम उत्तरेणं असंखेज्जगुणा दाहिणेणं असंखेज्जगुणा दाहिणल्लेहिंतो धूमप्पभा पुढविनेरइएहिंतो चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए नेरइया

मूल. भाए पुढविए नेरइयणंपुसका असंखेज्जगुणा एतासिणं भंते तिरिक्खजोणिय नपुंसकाणं एगिंदियति रिक्खजोणिय नपुंसकाणं पुढविक्काइय एगिंदिय णपुंसकाणं जाव वनस्सतिकाइय एगिंदियतिरिक्ख

भाषा. प्रमाणे ते छे माटे तेथी छठी पृथिवीना नारकीनपुंसक वेदीया जीव असंख्यात गुणा छे तेथी पांचमी पृथिवीना तेथी चोथी पृथिवीना तेथी त्रीजी पृथिवीना तेथी बीजी पृथिवीना नारकीनपुंसक जीव असंख्यात गुणा छे बीजी पृथ्विना नारकीनपुंसकथी आ रत्नप्रभापृथिवीना नारकीनपुंसक असंख्यात गुणाछे। ए सर्व पृथिवीने विषे पूर्व उत्तर पश्चिम दिशने विषे जे नारकी रह्याछे तेथी दाक्षिण दिशने

टीका. पुरत्थिम पच्चत्थिम उत्तरेणं असंखेज्जगुणा दाहिणेणं असंखेज्जगुणा दाहिणल्लेहिंतो पंकप्पभापुढवीनेरइएहिंतो तमप वालुप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरत्थिम पच्चत्थिम उत्तरेणं असंखेज्जगुणा दाहिणेणं असंखेज्जगुणा दाहिणिल्लेहिंतो वालुयप्पभापुढविनेरइएहिंतो डुइयाए सक्करप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरत्थिम पच्चत्थिम उत्तरेणं असंखेज्जगुणा दाहिणेणं असंखेज्जगुणा दाहिणिल्लेहिंतो सक्करप्पभा पुढवीए नेरइएहिंतो इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए नेरइया पुरत्थिम पच्चत्थिम उत्तरेणं असंखेज्जगुणा

मूलं. जोणिय णपुंसकाणं बेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकाणं तेइंदिय चउरिंदिय पंचेंदियतिरिक्खजोणिय णपुंसकाणं जलयर थलयर खहयराणय कयरे२ हिंतो जावविसेसाहियावा गो० सव्वथोवा खहयर

भाषा. विषे नारकी असंख्यात गुणाछे ॥ हवे तिर्यंचयोनि संबंधि नपुंसकने विषे जे अल्प बहुत्व कह्युं छे ते कहेछे ॥ हे भगवन् तिर्यंचयोनिया नपुंसकनी मध्ये एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसकोमां पृथिवीकायथी आरंभिने वनस्पतिकाय पर्यंत एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक बेइंद्रिय तेरिंद्रिय चउरिंद्रिय पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसकोमां जलचर थलचर खचरोमां कोण कोणथी अल्प छे तथा बहु छे तथा तुल्यछे,

पा. १ए७ दाहियोणां असंखेज्जगुणा संप्रति तिर्यग्योनिकनपुंसकविषयमल्पबहुत्वमाह ॥ एगसिणामित्यादि । सर्वस्तोकाः खचरपंचेंद्रियतिर्यक्नपुंसकाः प्रतर संख्येयभागवर्त्यसंख्येयश्रेणिगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् तेभ्यः स्थलचरतिर्यग्योनिकनपुंसकाः संख्येयगुणाः वृहत्तरप्रतरासंख्येयभागवर्त्य संख्येयश्रेणिगतनभःप्रदेशराशि प्रमाणत्वात् तेभ्योपिजलचर तिर्यग्योनिकनपुंसकाः संख्येयगुणाः वृहत्तरप्रतरा संख्येयभागवर्त्य संख्येयश्रेणिगताकाशराशि मानत्वात् तेभ्योपि चतुरिंद्रियतिर्यग्यो

टीका.

मूलः तिरिक्खजोणिय णपुंसका थलयर तिरिक्ख जोणियनपुंसका संखेज्जगुणा जलयर तिरिक्खजोणिय नपुंसका संखेज्जगुणा चतुरिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसका विसेसाहिया तेंदियविसेसाहिया बेंदिय

हे गौतम सर्वथी थोमा खचर पंचेंड्रियतिर्यंचयोनिया नपुंसक ढे तेथी थलचरतिर्यंचयोनिया नपुंसक संख्यात गुणा ढे ते थकी जलचरतिर्यंचयोनिया नपुंसक संख्यात गुणा ढे ते थकी पण चतुरिंड्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक विशेषाधिक ढे तेथकी तेरिंड्रियतिर्यंचयोनिया नपुंसक विशेषाधिक ढे तेथकी बेरिंड्रियतिर्यंचयोनियानपुंसक विशेषाधिक ढे तेथकी तेउकायिक एकेंड्रियतिर्यंचयोनिया नपुंसक

नाषा.

टीका. निक नपुंसका: विशेषाधिका: असंख्येयकोटीकोटी प्रमाणाकाशप्रदेशराशिप्रमाणासु घनीकृतस्य लोकस्य एकप्रादेशिकासु श्रेणिषु यावंतो नभःप्रदेशा स्तावत्प्रमाणत्वात् तेभ्यस्त्रींद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिका: प्रभूततर श्रेणिगताकाशप्रदेशराशिमानत्वात् तेभ्योपि द्वींद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिका: प्रभूततरश्रेणिगताकाशप्रदेशराशिमानत्वात् तेभ्य. तेजस्कायिकैकेंद्रियतिर्यग्योनिक नपुंसका असंख्येयगुणा: सूक्ष्मबादर भेदभिन्ना तेषामसंख्येयलोकाकाशप्रदेशपरि

मूल. विसेसाहिया तेउक्काइय एगिंदियतिरिक्खा असंखेज्जगुणा पुढविक्काइय एगिंदियतिरिक्खजोणिया विसेसाहिया एवं आउ वाउ वणस्सतिकाइय एगिंदियतिरिक्खजोणिय णपुंसका अणंतगुणा ॥

भाषा. असंख्यात गुणा छे तेथकी पृथिवीकायिक एकेंद्रियतिर्यंचयोनिया नपुंसक विशेष अधिक छे तेथकी अप्कायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक विशेष अधिक छे ते थकी पण वायुकायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक विशेष अधिक छे ते थकी पण वनस्पतिकायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक अनंत गुणा छे ॥ हवे मनुष्य नपुंसक संबंधि अल्प बहुत्व कहे छे ॥ हे भगवन्

पा. १९३ माणत्वात् तेभ्यःपृथिवीकायिकैकेंद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका विशेषाधिकाः प्रभूतासंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात् तेभ्योऽप्कायिकैकेंद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका

टीका. विशेषाधिकाः प्रभूततरासंख्येयलोकाकाशप्रदेशमानत्वात् तेभ्योपि वायुकायिकैकेंद्रियतिर्यग्योनिक नपुंसका विशेषाधिकाः प्रभूततमासंख्येयलोकाकाश प्रदेशराशि प्रमाणत्वात् तेभ्योपि वनस्पति कायिकैकेंद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका अनंतगुणाः अनंतलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ॥ अधुनामनुष्यनपुंसकविषयमल्पबहुत्व

मूल. ॥ एतेसि णं भंते मणुस्सणपुंसकाणं कम्मभूमिकाणं अकम्मभूमिकणपुंसकाणं अंतरदीवकाणय कयरे?

भाषा. कर्मभूमिना मनुष्य नपुंसको मांहो मांहि तथा अकर्मभूमिना नपुंसको मांहो मांहि तथा अंतरद्वीपना नपुंसको मांहो मांहि कोण कोणथी अल्पछे अथवा बहुछे अथवा तुल्यछेः हे गौतम सर्वथी थोडा अंतरद्वीपना मनुष्य नपुंसकोछे केमजे ए संमूर्छिम जाणवा गर्भज मनुष्य नपुंसकोनो त्यां संभव नथी ने संहरेला तो कर्मभूमिना पण त्यां होय ते थकी पण देवकुरु उत्तरकुरु अकर्मभूमिना मनुष्य नपुंसको संख्यात गुणाछे केमजे त्यां रहेला गर्भज मनुष्यो अंतरद्वीपना गर्भज मनुष्य थकी संख्यातगुणाछे ए हेतु माटे।

टीका·

माह । एएसिणमित्यादि । सर्वस्तोकाः अंतरद्वीपजमनुष्यनपुंसका एतेच सन्मूर्छनजा इष्टव्याः गर्भव्युत्क्रांतिकमनुष्यनपुंसकाना तत्रा संभवात् संहृतासु कर्म्मभूमिजास्तत्र भवेयुरपि तेभ्यो देवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमकमनुष्यनपुंसकाः संख्येयगुणाः तद्गतगर्भजमनुष्याणा मंतरद्वीपजगर्भजमनुष्येभ्य. संख्येयगुणत्वात् गर्भजमनुष्योच्चारादाश्रयेण च संमूर्छनमनुष्याणामुत्पादात् स्वस्थाने तु द्वयेपि परस्परं तुल्याः एवं तेभ्यो हरिवर्ष रम्यकवर्षाकर्मभूमकमनुष्यनपुंसका. संख्येयगुणा. स्वस्थाने

मूल:

अप्पाबा४ गो० सव्वत्थोवा अंतरदीवगाऽकम्मभूमगमणुस्सणपुंसका देवकुरुउत्तरकुरु अकम्मभूमगा

भाषा.

वळी गर्भज मनुष्यना मळ मूत्रना आश्रये करिने संमूर्छन मनुष्यनी उत्पत्ति थाय छे ए हेतु माटे पोत पोताने स्थाने तो ए बेय मांहो मांही सरखाछे एज प्रकारे ते थकी हरिवर्ष रम्यकवर्ष अकर्मभूमिना मनुष्य नपुंसको संख्यात गुणाछे ने पोताने स्थाने तो बेय पण परस्पर तुल्य छे ते थकी हैमवत हैरण्यवत अकर्मभूमिना मनुष्य नपुंसको संख्यात गुणाछे ने पोताने स्थाने तो बेय पण परस्पर तुल्यछे ते थकी भरत ऐरवत कर्मभूमिना मनुष्य नपुंसको संख्यात गुणाछे ने पोताने स्थाने तो बेय पण परस्पर

पा० १९४ टीका. तु द्वयेपि परस्परं तुल्याः तेभ्यो हैमवत हैरण्यवत वर्षाकर्मभूमक मनुष्यनपुंसकाः संख्येयगुणाः स्वस्थाने तु द्वयेपि परस्परं तुल्याः तेभ्यो नरतेरवत ?र्षकर्मभूमकम नुष्यनपुंसकाः संख्येयगुणा स्वस्थाने तु द्वयेपि परस्परं तुल्याः तेभ्यः पूर्वविदेहापरविदेह कर्मभूमकमनुष्यनपुंसकाः संख्येयगुणा. स्वस्थाने तु द्वयेपि परस्परं तुल्याः युक्तिः सर्वत्रापि तथैवानुसर्त्तव्या ॥ संप्रति नैरयिकतिर्यग्मनुष्यविषयमल्पबहुत्वमाह एएसिणंभंते इत्यादि सर्वस्तोका अधःसप्तमपृथिवीनैरयिकनपुंसका स्तेभ्यः

मूल. दोवि संखेज्जगुणा एवं जाव पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमगमणुस्सणपुंसगा दोवि संखेज्जगुणा ॥ ॥ एतेसिणं भंते नेरइयनपुंसकाणं रयणपुढविनेरइयनपुंसकाणं जाव अहेसत्तमपुढविनेरइयनपुं

भाषा. तुल्यछे ते थकी पूर्वविदेह अपरविदेह कर्मभूमिना मनुष्य नपुंसको संख्यात गुणा छे ने पोताने स्थाने तो बेय पण तुल्य छे ए प्रकारनी युक्ति सर्व जगाये अनुसरवी ॥ हवे नारकी तिर्यंच मनुष्य विषेनु अल्पाबहुत्व कहेछे ॥ हे भगवन् ए नारकी नपुंसक रत्नप्रभापृथिवीने आरंभिने जावत् हेठली सातमी नारकी पृथिवी पर्यंत तथा तिर्यंचयोनिया नपुंसक ते एकेंद्रियतिर्यंचयोनिया पृथिवीकायिक एकेंद्रिय

सू॰ १०४ टीका. तु द्वयेपि परस्परं तुल्याः तेभ्यो हैमवत हैरण्यवत वर्षाकर्मभूमक मनुष्यनपुंसकाः संख्येयगुणाः स्वस्थाने तु द्वयेपि परस्परं तुल्याः तेभ्यो नरतैरवत वर्षकर्मभूमकम नुष्यनपुंसकाः संख्येयगुणा स्वस्थाने तु द्वयेपि परस्परं तुल्याः तेभ्यः पूर्वविदेहापरविदेह कर्मभूमकमनुष्यनपुंसकाः संख्येयगुणा. स्वस्थाने तु द्वयेपि परस्परं तुल्याः युक्तिः सर्वत्रापि तथैवानुसर्त्तव्या ॥ संप्रति नैरयिकतिर्यग्मनुष्यविषयमल्पबहुत्वमाह एएसिणं नंते इत्यादि सर्वस्तोका अधःसप्तमपृथिवीनैरयिकनपुंसका स्तेभ्यः

मूल. दोवि संखेज्जगुणा एवं जाव पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मनूमगमणुस्सणपुंसगा दोवि संखेज्जगुणा ॥ ॥ एतेसिणं नंते नेरइयनपुंसकाणं रयणपुढविनेरइयनपुंसकाणं जाव अहेसत्तमपुढविनेरइयनपुं

नाषा. तुल्य छे ते थकी पूर्वविदेह अपरविदेह कर्मनूमिना मनुष्य नपुंसको संख्यात गुणा छे ने पोताने स्थाने तो बेय पण तुल्य छे ए प्रकारनी युक्ति सर्व जगाये अनुसरवी ॥ हवे नारकी तिर्यंच मनुष्य विषेनु अल्पाबहुत्व कहेछे ॥ हे नगवन् ए नारकी नपुंसक रत्नप्रनापृथिवीने आरंनिने जावत् हेठली सातमी नारकी पृथिवी पर्यंत तथा तिर्यंचयोनिया नपुंसक ते एकेंडियतिर्यंचयोनिया पृथिवीकायिक एकेंडिय

टीका. षष्ठपंचमचतुर्थतृतीयपृथिवीनैरयिकनपुंसका यथोत्तरमसंख्येयगुणाः द्वितीयपृथिवीनैरयिकनपुंसकेभ्योऽन्तरद्वीपजमनुष्यनपुंसका असंख्येयगुणाः एतदसंख्येयगुणत्वं संमूर्छनजमनुष्यापेक्षं तेषां नपुंसकत्वादेतावता च तत्र संमूर्छनसंभवात् तेभ्यो देवकुरूत्तरकुरुअकर्मभूमकमनुष्यनपुंसका हैमवतहैरण्यवताकर्मभूमकमनुष्यनपुंसका

मूल. सकाणं तिरिक्खजोणियनपुंसकाणं एगिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुढविकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसकाणं जाव वणस्सतिकाइयएगिंदियनपुंसगाणं बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय पंचेंदिय तिरिक्खजोणियणपुंसकाणं जलयराणं थलयराणं खहयराणं मणुस्सणपुंसकाणं कम्मभूमिकाणं

भाषा. तिर्यंचयोनिया नपुंसकथी आरंभिने जावत् वनस्पतिकायिक पर्यंत तथा बेंद्रिय तेंद्रिय चतुरिंद्रिय पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक तथा जलचर स्थलचर खेचर मनुष्य नपुंसक कर्मभूमिना अकर्मभूमिना अंतरद्वीपना ए सर्व मांहि कोणकोणथी अल्पछे अथवा बहुछे? हे गोतम सर्वथी थोमा हेठली सातमी नारकी पृथिवीना नपुंसकछे तेथी असंख्यात गुणा पांचमी पृथिवीये तेथी चोथीये तेथी त्रीजीये तेथी बीजीये

पा' १ए५ टीका. भरतैरावतकर्मभूमकमनुष्यनपुंसकाः पूर्वविदेहापरविदेहकर्मभूमकमनुष्यनपुंसकाः यथोत्तरं संख्येयगुणाः स्वस्थान२ चिंतायां तु द्वये२ परस्परं तुल्याः पूर्वविदेहा परविदेहकर्मभूमकमनुष्यनपुंसकेभ्योऽस्यां प्रत्यक्षत उपलभ्यमानायां रत्नप्रभायां पृथिव्यां नैरयिकनपुंसका असंख्येयगुणाः तेभ्यः खचरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः

मूल. अकम्मभूमिकाणं अंतरदीवकाणय कयरे४ गो० सव्वत्थोवा अहेसत्तमपुढविनेरइयनपुंसका छठ्ठ पुढविनेरइयनपुंसका असंखेज्जगुणा जावदोच्चा पुढविनेरइयनपुंसका असंखेज्जगुणा अंतरदीवगमणुस्सणपुंसका असंखेज्जगुणा देवकुरुउत्तरकुरु अकम्मभूमिक दोवि संखेज्जगुणा

भाषा. नारकी नपुंसक असंख्यात गुणाछे तेथी अंतरद्वीपना मनुष्य नपुंसको असंख्यात गुणाछे ए असंख्यात गुणपणु संमूर्छिम मनुष्यनी अपेक्षाये तेउने नपुंसकपणु छे ए हेतु माटे। एहोने वली त्यां समूर्छनपणु छे माटे तेथी देवकुरु उत्तरकुरु अकर्मभूमिना मनुष्य नपुंसको तथा हैमवत हैरण्पवत अकर्मभूमिना मनुष्य नपुंसको तथा भरत एरवत अकर्मभूमिना मनुष्य नपुंसको तथा पूर्व विदेह अपराविदेह कर्म

असंख्येयगुणास्तेभ्यः स्थलचरपंचेंद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका जलचरपंचेंद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका यथोत्तरं संख्येयगुणा जलचरपंचेंद्रियनपुंसकेभ्यश्चतुरिंद्रियत्रींद्रिय तिर्यग्योनिकनपुंसका यथोत्तरंविशेषाधिकाः द्वींद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकेभ्यस्तेजस्कायिकैकेंद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका असंख्येयगुणास्तेभ्यः पृथिव्यं बु वायुतिर्यग्योनि

जावपुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमगमणुस्सणपुंसका दोवि संखेज्जगुणा रयणप्पभापुढविनेरइयणपुंसका असंखेज्जगुणा खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियणपुंसका असंखेज्जगुणा थलयरसंखेज्जगुणा जलयरसंखेज्जगुणा चतुरिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा विसेसाहिया तेइं

भूमिना मनुष्यनपुंसको एक एकथी उत्तरोत्तर संख्यात गुणा छे ने पोतपोताने स्थाने तो बेउ परस्पर तुल्य छे पूर्वविदेह अपरविदेह कर्मभूमिना मनुष्यनपुंसक थकी रत्नप्रभापृथिवीने विषे नारकीनपुंसको असंख्यात गुणा छे तेथी खचर पंचेंद्रियतिर्यग्योनिक नपुंसको असंख्यात गुणा छे तेथी स्थलचर पंचेंद्रियतिर्यंचयोनिया नपुंसको तथा जलचर पंचेंद्रियतिर्यंचयोनिया नपुंसको एक एकथी उत्तरोत्तर

पा. १०६ कनपुंसका यथोत्तरंविशेषाधिकाः वाय्वेकेंद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकेभ्यो वनस्पतिकायिकैकेंद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाअनंतगुणाः युक्तिः सर्वत्रापि प्रागुक्तानुसारेण स्व

मूल. दियनपुंसगाविसेसाहिया बेइंदियनपुंसगाविसेसाहिया तेउक्काइयएगिंदियनपुंसगा असंखे ज्जगुणा पुढविकाइय एगिंदियनपुंसगा विसेसाहिया आउक्काइय नपुंसगाविसेसाहिया वाउक्काइयविसेसाहिया वणस्सइ काइयएगिंदियातिरिक्खजोणियणपुंसका अणंतगुणा ॥

भाषा. संख्यात गुणा छे जलचरपंचेंद्रिय नपुंसकथकी चतुरिंद्रि त्रींद्रियतिर्यग्योनिक नपुंसको एक एक थकी उत्तरोत्तर विशेष अधिक छे द्वींद्रियतिर्यंचयोनिया नपुंसकथकी तेजस्कायिक एकेंद्रियतिर्यंचयोनिया नपुंसको असंख्यात गुणाछे तेथी पृथिवी तथा जल तथा वायुकायिक तिर्यंचयोनिया नपुंसको एक एकथकी उत्तरोत्तर विशेष अधिक छे वायुकायिक एकेंद्रियतिर्यंचयोनिया नपुंसकथी वनस्पतिकाय एकेंद्रियतिर्यंचयोनिया नपुंसको अनंत गुणा छे ए युक्ति सर्व जगाये पण पूर्वे कह्या प्रमाणे पोतानी मेले

भावनीया ॥ संप्रति नपुंसकवेदकर्म्मणो बंधस्थितिं नपुंसकवेदस्य प्रकारं चाह नपुंसगवेयस्स णं भंते कम्मस्स इत्यादि प्रागवद्भावनीयम् । नवरं महानगरदाह

॥ णपुंसकवेदस्स णं भंते केवइकालं ठिति पं० गो० जहण्णेणं सागरोवमस्स दोण्णि सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइभागाणं ऊणगा उक्कोसेणं वीसं सागरोवमकोडाको

ग्रहण करवी । हवे नपुंसकवेदकर्मनी बंधस्थिति तथा नपुंसकवेदनो प्रकार कहे छे। हे भगवन् नपुंसकवेदकर्मनी बंधस्थिति केटला कालनी कही छे? हे गौतम जघन्यपणे सागरोपमना बे सातमा भाग एटले सातईया बे भाग पूर्वनी पेठे जाणवा पण ते केवा तो पल्योपमने असंख्यातमे भागे ऊणा जाणवा उत्कृष्टपणे वीस सागरोपम कोडाकोडी प्रमाण कहेवी बे हजार वर्षनो अबाधा काल तेणे ऊणी कर्मबंधनी स्थिति जाणवी, कर्मनिषेक एटले कर्मनु निर्झरणुं जाणवुं । हे भगवन् नपुंसकवेद

टी. १८७ समान इति सर्वावस्थासु सर्वप्रकारं मदनदाह इत्यर्थः ॥ संप्रत्यष्टावल्पबहुत्वानि वक्तव्यानि तथा प्रथमं सामान्येन तिर्यक्स्त्रीपुरुषनपुंसकप्रतिबद्धमेवमेव

मूल. णीउ दोन्निवासससहस्साइं अबाधा अवाहूणिया कम्मठिती कम्मणिसेगो णपुंसकवेदे णं भंते किंपकारे पण्णत्ते गो० महाणगरदाहसमाणे पण्णत्ते समणाउसो सेत्तंणपुंसगा ॥ ॥ एतेसिणं भंते इत्थीणं पुरिसाणं नपुंसकाणय कयरे२हिंतो अप्पावा४ गो० सव्वत्थोवा पुरिसा इत्थीउ सं

भाषा. किया प्रकारनो जाणवो? हे गौतम माहानगर दाह समान एटले मोटा नगरनो दाह अग्नि सरखो घणा काल सुधी धगश्तो रहे तिम सघली अवस्थाये कामाग्नि मटे नही ए प्रकारे हे साधो हे आउ खावंतो ए प्रकारे नपुंसक कह्या ॥ हवे आठ प्रकारना अल्पाबहुत्व कहे छे तेमां पेहेलु सामान्यपणे तिर्यंच स्त्री पुरुष नपुंसक प्रतिबद्ध१ देवमनुष्य प्रतिबद्ध२ देव स्त्री पुरुष नारक प्रतिबद्ध३ सघले मि

देव मनुष्यप्रतिबद्धं द्वितीयं देवस्त्रीपुरुषनारकनपुंसकप्रतिबद्धं तृतीयं सकलसान्मिश्रं चतुर्थं जलचर्यादिविभागतः पंचमं कर्मभूमिजादिमनुष्यादिविभागतः षष्ठं भवनवास्यादि देव्यादिविभागतः सप्तमं जलचर्यादि विजातीयव्यक्तिव्यापकमष्टमं तत्र प्रथममभिधित्सुराह । एयासिणं भंते तिरिक्खजोणियइत्थीणं इत्यादि

खेज्जगुणा णपुंसका अणंतगुणा। एतेसिणं भंते तिरिक्खजोणित्थीणं तिरिक्खजोणिय पुरिसाण तिरि

लेखु४ जलचर सर्पादिक विभागथी५ कर्मभूमिआदिक मनुष्य स्त्रीआदि विभागथी६ भवनपतिनी देवीआदि विभागथी७ जलचरीआदि विजातिक विगत व्यापी आठमुं८ तेमां पेहेलु अल्पाबहुत्व कहेछे। हे भगवन् स्त्रीयोमां पुरुषमां नपुंसकमां कोण कोण थकी अल्पछे अथवा बहुछे अथवा तुल्यछे तथा विशेषाधिकछे? हे गौतम सर्वथी थोडा पुरुषवेदीछे तेथी स्त्रीयो संख्यातगुणीछे तेथी नपुंसक अनंतगुणाछे ए सामान्यपणे स्त्री पुरुष नपुंसकनुं अल्पाबहुत्व कह्युं१ हे भगवन् तिर्यंचयोनिनी स्त्रीयोमां तथा तिर्यंचयोनिया पुरुषोमां तथा तिर्यंचयोनिया नपुंसकोमां कोण कोणथकी अल्पछे०४ हे गौतम सर्वथी

पा० १८८

टीका. सर्वस्तोकास्तिर्यक्पुरुषा स्तेभ्यस्तिर्यक्स्त्रियः संख्येयगुणा त्रिगुणत्वात् ताभ्यस्तिर्यग्नपुंसका अनंतगुणा निगोदजीवानामनंतानंतत्वात् । संप्रतिद्वितीयमल्पबहुत्वमाह ॥ एयासिणं भंते इत्यादि सर्वस्तोका मनुष्यपुरुषाः संख्येयकोटीकोटीप्रमाणत्वात् तेभ्योमनुष्यस्त्रियः संख्येयगुणाः सप्तविंशतिगुणत्वात् तेभ्यो मनुष्यनपुंसकाश्च

मूल. खजोणिय णपुंसकाणय कयरे२ जावविसेसाहिया गो० सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणियपुरिसा तिरिक्ख जोणियत्थीउ संखेज्जगुणाउ तिरिक्खजोणियणपुंसका अणंतगुणा। एतेसिणं भंते मणुस्सित्थीणं मणुस्स

भाषा. थोडा तिर्यंचयोनिया पुरुषछे तेथी तिर्यंचयोनिनी स्त्रीयो संख्यातगुणीछे केमजे त्रिगुणितपणाथी तेथी तिर्यंचयोनिया नपुंसक अनंतगुणाछे केमजे निगोद जीवना अनंतपणाथी ए पेहेलु अल्पाबहुत्व कह्युं१ हवे बीजु अलबहुपणुं कहेछे। हे भगवन् मनुष्यनी स्त्रीयोमां तथा मनुष्यना पुरुषमां तथा मनुष्य नपुंसकमां कोण कोणथकी अल्पछे०४ हे गौतम सर्वथी थोडा मनुष्य पुरुष छे केमजे संख्यात कोटा कोटी प्रमाणछे माटे तेथी मनुष्यनी स्त्रीयो संख्यातगुणीछे शाथी जे सत्तावीस गुणितछे माटे तेथी मनु

संख्येयगुणाः श्रेण्यसंख्येयभागगतप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् । संप्रतितृतीयमल्पबहुत्वमाह॥एयासिणं भंते देवित्थीणमित्यादि सर्वस्तोका नैरयिकनपुंसकाः अंगुलमा
त्रक्षेत्रप्रदेशराशौ स्वप्रथमवर्गमूलेन गुणिते यावान् प्रदेशराशिर्भवति तावत्प्रमाणासु घनीकृतस्य लोकस्य एकप्रादेशिकीषु श्रेणिषु यावंतो नभःप्रदेशास्तावत्प्रमा

पुरिसाणं मणुस्सणपुंसकाणं कयरे२ हिंतो अप्पावा४ गो. सव्वत्थोवा मणुस्सपुरिसा मणुस्सित्थीउ संखे

ज्यनपुंसक असंख्यातगुणाछे केमजे श्रेणिने असंख्यातमे भागे पाम्या जे प्रदेशराशि ते प्रमाणछे माटे
ए प्रकारे बीजु अल्पाबहुत्व कह्युं२ हवे त्रीजु अल्पबहुत्व कहेछे हे भगवन् देवतानी स्त्रीयो तथा देव
ताना पुरुष तथा नारकीनपुंसक ए त्रणमां कोण कोण थकी अल्पछे०४ हे गौतम सर्वथी थोडा नार
कीनपुंसकछे ते केम तो अंगुल मात्र क्षेत्रप्रदेशराशिने विषे पोतानो प्रथम वर्गमूल गुणे थको जेटलो
प्रदेशराशि थाय तेटलो घन करेलो जे लोक तेहनो एक प्रदेश श्रेणिने विषे जेटला आकाश प्रदेश
थाय तेटला प्रमाणे तेमनु प्रमाणपणुछे माटे तेथी देवपुरुष असंख्यातगुणाछे ते किम तो असंख्यात

टीका. गात्वात् तेभ्यो देवपुरुषा असंख्येयगुणा असंख्येययोजनकोटीकोटी प्रमाणाणां शुचौ यावंतो नज'प्रदेशास्तावत्प्रमाणासु घनीकृतस्य लोकस्य एकप्रादेशिकीषु श्रेणिषु यावंत आकाशप्रदेशा स्तावत्प्रमाणत्वात् तेभ्यो देवस्त्रियः संख्येयगुणा द्वात्रिंशद्गुणत्वात् ॥ संप्रति सकलसन्मिश्रं चतुर्थमल्पबहुत्वमाह । एयासिणं

मूल. ज्जगुणाउ मणुस्सणपुंसका असंखेज्जगुणा एतेसिणं नंते देविच्छीणं देवपुरिसाणं नेरइनपुंसकाणय कयरे २ जाव विसेसाहिया गो० सव्वच्छोवा नेरइयनपुंसगा देवपुरिसा असंखेज्जगुणा देवीच्छीउ संखेज्जगुणाउ ॥

भाषा. जोजन कोमाकोमी प्रमाण सूचीने विषे जेटला आकाश प्रदेश थाय तेटला प्रमाणे घन करेला लोकनी एक प्रदेशनी श्रेणिने विषे जेटला आकाश प्रदेश थाय ते प्रमाणे तेमनुं प्रमाणपणुंछे ए हेतु माटे तेथी देवतानी स्त्रीयो संख्यातगुणिछे केमजे बत्रीसगुणितछे माटे ए प्रकारे त्रीजो अल्पाबहुत्व थयो ॥ हवे सकलमिश्र एहवो चोथो अल्पबहुत्व कहेछे। हे नगवन् तिर्यंचयोनिनी स्त्रीयो तथा तिर्यंचयोनिना पुरुषो तथा तिर्यंचयोनिना नपुंसको तथा मनुष्यनी स्त्रीयो तथा मनुष्यना पुरुषो तथा मनुष्य नपुंसक

मित्यादि सर्वस्तोकामनुष्यपुरुषास्तेभ्यो मनुष्यस्त्रियः संख्येयगुणा स्तेभ्यो मनुष्यनपुंसका असंख्येयगुणाः अत्रयुक्तिः प्रागुक्ता तेभ्यो नैरयिकनपुंसका असंख्येय

॥ एतोसिंणं भंते तिरिक्खजोणित्थीणं तिरिक्खजोणियपुरिसाणं तिरिक्खजोणियनपुंसगाणं मणु
स्सित्थीणं मणुस्सपुरिसाणं मणुस्सनपुंसगाणं देवित्थीणं देवपुरिसाणं नेरइयनपूंसकाणय कयरे४
गो० सव्वत्थोवा मणुस्सपरिसा मणुस्सित्थीओ संखेज्जगुणाओ मणुस्सणपुंसका असंखेज्जगुणा नेरइय

तथा देवतानी स्त्रीयो तथा देवताना पुरुषो तथा नारकीनपुंसक ए सर्वमां कोण कोणथी अल्पछे त०४
हे गौतम सर्वथी थोडा मनुष्य पुरुषछे तेथी मनुष्य स्त्रीयो संख्यातगुणीछे तेथी मनुष्य नपुंसक असंख्या
तगुणाछे इहां भावना पूर्वनी पेठे जाणवी तेथी नारकीनपुंसक असंख्यातगुणाछे केमजे असंख्यात श्रेणिगत
आकाश प्रदेशराशि परिमाणथी जाणवा तेथी तिर्यंचयोनिया पुरुष असंख्यातगुणाछे केमजे प्रतरने असं

१९९ टीका. णात्वात् तेभ्यो देवपुरुषा असंख्येयगुणा असंख्येययोजनकोटीकोटी प्रमाणाणां शुचौ यावंतो नज'प्रदेशास्तावत्प्रमाणासु घनीकृतस्य लोकस्य एकप्रादेशिकीषु श्रेणिषु यावंत आकाशप्रदेशा स्तावत्प्रमाणत्वात् तेभ्यो देवास्त्रियः संख्येयगुणा द्वात्रिंशद्गुणत्वात् ॥ संप्रति सकलसन्मिश्रं चतुर्थमल्पबहुत्वमाह । एयासिणं

मूल. ज्जगुणाउ मणुस्सणपुंसका असंखेज्जगुणा एतेसिणं नंते देविच्छीणं देवपुरिसाणं नेरइनपुंसकाणय कयरे२ जाव विसेसाहिया गो० सव्वत्थोवा नेरइयनपुंसगा देवपुरिसा असंखेज्जगुणा देवीछीउ संखेज्जगुणाउ ॥

नाषा. जोजन कोमाकोमी प्रमाण सूचीने विषे जेटला आकाश प्रदेश थाय तेटला प्रमाणे घन करेला लोकनी एक प्रदेशनी श्रेणिने विषे जेटला आकाश प्रदेश थाय ते प्रमाणे तेमनुं प्रमाणपणुंछे ए हेतु माटे तेथी देवतानी स्त्रीयो संख्यातगुणिछे केमजे बत्रीसगुणितछे माटे ए प्रकारे त्रीजो अल्पाबहुत्व थयो ॥ हवे सकलमिश्र एहवो चोथो अल्पबहुत्व कहेछे। हे नगवन् तिर्यंचयोनिनी स्त्रीयो तथा तिर्यंचयोनिना पुरुषो तथा तिर्यंचयोनिना नपुंसको तथा मनुष्यनी स्त्रीयो तथा मनुष्यना पुरुषो तथा मनुष्य नपुंसक

टीका. मित्यादि सर्वस्तोकामनुष्यपुरुषास्तेभ्यो मनुष्यस्त्रियः संख्येयगुणा स्तेभ्यो मनुष्यनपुंसका असंख्येयगुणाः अत्रयुक्तिः प्रागुक्ता तेभ्यो नैरयिकनपुंसका असंख्येः

मूल. ॥ एतेसिंणं भंते तिरिक्खजोणित्थीणं तिरिक्खजोणियपुरिसाणं तिरिक्खजोणियनपुंसगाणं मणु स्सित्थीणं मणुस्सपुरिसाणं मणुस्सनपुंसगाणं देवित्थीणं देवपुरिसाण नेरइयनपूंसकाणय कयरे४ गो० सव्वत्थोवा मणुस्सपरिसा मणुस्सित्थीउ संखेज्जगुणाउ मणुस्सणपुंसका असंखेज्जगुणा नेरइय

भाषा. तथा देवतानी स्त्रीयो तथा देवताना पुरुषो तथा नारकीनपुंसक ए सर्वमां कोण कोणथी अल्पछे त० हे गौतम सर्वथी थोडा मनुष्य पुरुषछे तेथी मनुष्य स्त्रीयो संख्यातगुणीछे तेथी मनुष्य नपुंसक असंख्य तगुणाछे इहां भावना पूर्वनी पेठे जाणवी तेथी नारकीनपुंसक असंख्यातगुणाछे केमजे असंख्यात श्रेणिगः आकाश प्रदेशराशि परिमाणथी जाणवा तेथी तिर्यंचयोनिया पुरुष असंख्यातगुणाछे केमजे प्रतरने अः

. ७०० गुणा असंख्येयश्रेण्याकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् तेभ्योतिर्यग्योनिकपुरुषा असंख्येयगुणाः तेभ्यस्तिर्यग्योनिकास्त्रियः संख्यातगुणाः त्रिगुणत्वात् ताभ्योदेवपुरुषाः

नपुंसका असंखेज्जगुणा तिरिक्खजोणियपुरिसा असंखेज्जगुणा तिरिखजोणित्थीयाउ संखेज्जगुणाउ
मूलः देवपुरिसा असखेज्जगुणा देविव्हियाउ संखेज्जगुणाउ तिरिक्खजोणियनपुंसका अणंतगुणा एता
सिणं भंते तिरिक्खजोणिव्हीणं जलयरीणं थलयरीणं खहयरीणं तिरिक्खजोणियपुरिसाणं ज

ख्यातमे भागे वरतती जे असंख्य श्रेणि प्रदेशराशि ते प्रमाणथी तेथी तिर्यंचयोनिनी स्त्रीयो संख्यात
भाषा. गुणीछे शार्थी के त्रिण गुणियोछे माटे तेथी देवपुरुष असंख्यातगुणाछे शा माटे घणी अति मोटी प्रतर
ने असंख्यातमे भागे वरतती जे असंख्य श्रेणि प्राप्त आकाश प्रदेशराशि ते परिमाणथकी तेथी देव
नी स्त्रीयो संख्यातगुणीछे केमजे बत्रीश गुणीछे माटे तेथी तिर्यंचयोनिया नपुंसक अनंतगुणाछे केमजे

का. संख्येयगुणाः प्रभूततर प्रतरासंख्येयभागवर्त्यसंख्येयश्रेणिगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् तेभ्योदेवाख्रियः संख्येयगुणाः द्वात्रिंशद्गुणत्वात् ताभ्यस्तिर्यग्योनिकनपुं सकाअनंतगुणाः निगोदजीवानामनंतत्वात् ॥ सम्प्रति जलचर्यादिविभागतः पंचममल्पबहुत्वमाह ॥ एयासिणं भंते इत्यादि सर्वस्तोकाः खचरपंचेन्द्रियतिर्यग्यो

मू. लयराणं थलयराणं खहयराणं तिरिक्खजोणियणपुंसकाणं एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकाणं पुढविक्काइय एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकाणं जाववणस्सतिकाइय एगिंदियतिरिक्खजोणि यनपुंसगाणं बेंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकाणं तेइंदिय चतुरिंदिय पंचेंदिय तिरिक्खजोणियणपुंस

भा. निगोदना जीवनुं अनंतपणुछे माटे ए प्रकारे चोथो अल्पबहुल थयो४ हवे जलचरनी स्त्रीयो आदि दे ईने विभागे पांचमो अल्पबहुत्व कहेछे। हे भगवन् तिर्यंचयोनिनी स्त्रीयो तथा जलचरनी स्त्रीयो तथा थलचरनी स्त्रीयो तथा खेचरनी स्त्रीयो तथा तिर्यंचयोनिना पुरुषो तथा जलचर पुरुषो तथा थलचर पु रुषो तथा खेचर पुरुषो तथा तिर्यंचयोनिया नपुंसको तथा एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसको तथा पृ

पा. ७०१

टीका. निकपुरुषा स्तेभ्यः खचरतिर्यग्योनिकस्त्रियः संख्येयगुणास्त्रिगुणत्वात् ताभ्यः स्थलचरतिर्यग्योनिकपुरुषाः संख्येयगुणा स्तेभ्यः स्थलचरतिर्यग्योनिकस्त्रियः संख्येयगुणा त्रिगुणत्वात् ताभ्यः जलचरतिर्यग्योनिकपुरुषाः संख्येयगुणाः स्तेभ्यः जलचरतिर्यग्योनिकास्त्रियः संख्येयगुणास्त्रिगुणत्वात् ताभ्यः खेचरपंचेंद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका

मूलः काणं जलयराणं थलयराणं खहयराणं कतरे२ जावविसेसाहिया वा गो० सव्वत्थोवा खहयरतिरिक्खजोणियपुरिसा खहयरतिरिक्खजोणित्थियाउ संखेजगुणाउ थलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा थलयरतिरिक्खजोणित्थीउ संखेज्जगुणाउ जलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्जगुणा

भाषा. थिवीकायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसको जावत् शब्देकरिने अप्कायिक तेउकायिक वाउकायिक लेवा तथा वनस्पतिकायिक तथा बेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसको तथा तेंद्रिय चउरिंद्रिय पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसको तथा जलचर थलचर खचर ए सर्वमां कोण कोणथी अल्पछे त. ४ हे गौतम सर्वथी थोडा खेचरपंखी तिर्यंचयोनिया पुरुषवेदियाछे तेथी खेचरपंखी तिर्यंचयोनिनी स्त्रीयो संख्यात

असंख्येयगुणाः तेभ्यः स्थलचरतिर्यग्योनिकनपुंसका यथाक्रमं संख्येयगुणा। एततश्चतुरिंद्रियत्रींद्रियद्वींद्रिया यथोत्तरं विशेषाधिका एततस्तेजस्कायिकैकेंद्रियतिर्यग्योनिक
ीका. नपुंसका असंख्येयगुणा एतत पृथिव्यंबुवायुकायिकैकेंद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका यथोत्तरं विशेषाधिका एततोवनस्पतिकायिकैकेंद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका अनंतगुणा.॥

जलयरतिरिक्खजोणित्थियाउ संखेज्जगुणाउ खहयरपचेंदियतिरिक्खजोणियणपुंसका संखेज्जगुणा
न. थलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियनपुंसगा संखेज्जगुणा जलयरतिरिक्खजोणियणपुंसकपंचेंदिया सं
खेज्जगुणा चउरिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसका विसेसाहिया तेइंदियणपुंसका विसेसाहिया बेइंदिय

गुणीछे केमजे त्रणगुणी अधिकछे माटे तेथी थलचर तिर्यंचयोनिना पुरुषवेदिया संख्यातगुणाछे तेथी
थलचर तिर्यंचयोनिनी स्त्रीयो संख्यातगुणीछे केमजे त्रणगुणी अधिकछे माटे तेथी जलचर तिर्यंचयोनि
ा. या पुरुषो संख्यातगुणाछे तेथी जलचर तिर्यंचयोनिनी स्त्रीयो संख्यातगुणीछे तेथी खचर पंचेंद्रिय तिर्यंच
योनिया नपुंसको असंख्यातगुणाछे तेथी थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक संख्यातगुणा अधि

॥ संप्रति कर्म्मभूमिजादिमनुष्यस्त्र्यादिविभागतः षष्ठमल्पबहुत्वमाह एयासिणं भंते इत्यादि सर्वस्तोका अंतरद्वीपकमनुष्यस्त्रियोऽंतरद्वीपकमनुष्यपुरुषाश्च एतच्चे

मूल. णपुंसगा विसेसाहिया तेउक्काइय एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसका असंखेज्जगुणा पुढविनपुंसका विसेसाहिया आउ० विसेसाहिया वाउ० विसेसाहिया वणप्फतिएगिंदियणपुंसका अणंतगुणा ॥ ॥एतासिणं भंते मणुस्सित्थीणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवियाणं मणुस्सपुरिसाणं

भाषा. कछे तेथी जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसको संख्यातगुणाछे तेथी चउरिंद्रिय तिर्यंचयोनिया विशेष अधिकछे तेथी तेंद्रिय नपुंसक विशेष अधिकछे तेथी बेंद्रिय नपुंसक विशेष अधिकछे तेथी तेउकाइया एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक असंख्यात गुणे अधिकछे तेथी पृथिवीकायिक नपुंसक विशेष अधिकछे तेथी अपकायिक नपुंसक विशेष अधिकछे तेथी वायुकायिक नपुंसक विशेष अधिकछे तेथी वनस्पतिकायिक एकेंद्रिय नपुंसक अनंतगुणा अधिकछे ॥ हवे कर्मभूमिकादिक मनुष्यनी स्त्री आदिके क

ोका. द्वयेपि परस्परं तुल्याः तत्रत्य स्त्रीपुंसाना युगलधर्मोपेतत्वात् तेभ्यो देवकुरूत्तरकुर्वकर्म्मभूमकमनुष्यस्त्रियो मनुष्यपुरुषाः संख्येयगुणाः युक्तिरत्र प्रागेवोक्ता स्वस्था
नेतु परस्परं तुल्याः एवं हरिवर्ष रम्यकपुरुषस्त्रियो हैमवतहैरण्यवतमनुष्यपुरुषस्त्रियश्च यथोत्तरं सख्येयगुणाः स्वस्थानेतु परस्परं तुल्याः ततो भरतैरावतकर्म्मभू

ूत्र. कम्मभूमिकाणं अकम्मभूमिकाणं अंतरदीविकाणं मणुस्सणपुसकाणं कम्मभूमगाणं अकम्मभू
मगाणं अंतरदीवकाणय कयरे२ हिंतो४ गो० अंतरदीवक अकम्मभूमकमणुसित्थीयाउ मणुस्स

ाषा. रीने तेहने विभागे छठो अल्पबहुत्व कहे छे। हे भगवन् कर्मभूमिना मनुष्य पुरुषो तथा अकर्मभूमिना
मनुष्य पुरुषो तथा अंतरद्वीपना मनुष्य पुरुषो एटले कर्मभूमिना तथा अकर्मभूमिना मनुष्य तथा अंत
रद्वीपना मनुष्य पुरुषो तथा सामान्यपणे नपुंसको तथा कर्मभूमिना मनुष्य नपुंसको तथा अकर्मभूमिना म
नुष्य नपुंसको तथा अंतरद्वीपना मनुष्य नपुंसको एहोमां कोण कोण थकी अल्पछे तथा४हे गौतम सर्वथी
थोडा अंतरद्वीपनी मनुष्य स्त्रीयो तथा अंतरद्वीपना मनुष्य पुरुषोछे ए वे मांहोमांही तुल्यछे केमजे त्यांना

ा' १०३

टीका.

मकमनुष्या द्वयेपि संख्येयगुणाः स्वस्थाने तु परस्परं तुल्यास्तेभ्यो भरतैरावतकर्मभूमकमनुष्यस्त्रियो द्वय्योपि संख्येयगुणाःसप्तविंशतिगुणत्वात् स्वस्थाने तु परस्परं तुल्यास्ताभ्यः पूर्वविदेहापरविदेहकर्मभूमकमनुष्यपुरुषा द्वयेपि संख्येयगुणाः स्वस्थाने तु परस्परं तुल्याः तेभ्यो भरतैरावतकर्मभूमकमनुष्यनपुंसका द्वयेपिं

मूल.

पुरिसाय एतेसिणं दोण्णवि तुल्ला सव्वत्थोवा देवकुरुउत्तरकुरु अकम्मभूमकमणुस्सित्थीयाउ मणुस्सपुरिसाउ एतेणं दोण्णवि तुल्ला संखेज्जगुणा हरिवास रम्मकवास अकम्मभूमकमणुस्सि

भाषा.

स्त्री पुरुषोने जुगलधर्मे सहितपणु छे माटे तथी देवकुरु उत्तरकुरु अकर्मभूमिनी मनुष्य स्त्रीयो तथा मनुष्य पुरुषो संख्यात गुणा छे आ जगाये युक्ति पूर्वे कहेलो छे तेम जाणवी ने पोताने स्थाने तो परस्पर तुल्य छे ए प्रकारे हरिवर्ष रम्यकवर्षना मनुष्यनी स्त्रियो तथा पुरुष ए बे पण मांहोमांही तुल्य छे ने पूर्व करतां संख्यात गुणा अधिक छे तथा हैमवत हैरण्यवत अकर्मभूमिनी मनुष्य स्त्रियो तथा पुरुष ए बे पण मांहोमांही तुल्य छे ने संख्यात गुणा अधिक छे तेथी भरत ऐरवतना मनुष्य पुरुषो

संख्येयगुणाः स्वस्थाने तु परस्परं तुल्याः तेभ्य. पूर्वविदेहापरविदेहाकर्मभूमकमनुष्यस्त्रियो द्वय्योपि संख्येयगुणाः सप्तविंशतिगुणत्वात् स्वस्थाने तु परस्परं तुल्या;
टीका. तेभ्योऽंतरद्वीपकमनुष्यनपुंसकाः असंख्येयगुणाः श्रेण्यसंख्येयभागगताकाशप्रदेशराशि प्रमाणत्वात् तेभ्यो देवकुरूत्तरकुर्वकर्मभूमकमनुष्यनपुंसका द्वयेपि संख्येय

त्थीयाउ मणुस्सपुरिसाय एतेणं दोण्णिवि तुल्ला संखेज्जगुणा हेमवते हेरण्णवते अकम्म
मूल भूमकमणुस्सित्थीउ मणुस्सपुरिसाय दोवि तुल्ला संखेज्जगुणा भरहेरवतकम्मभूमगमणुस्सपु

ए बे मांहोमांही बरोबरछे ने संख्यात गुणा अधिकछे तेथी भरत एरवत कर्मभूमिनी मनुष्य स्त्रियो ए बे सं
ख्यात गुणी अधिक छे केमजे सत्तावीस गुणी छे माटे पोतपोताने स्थाने तो ए बे परस्पर तुल्य छे
भाषा. तेथी पूर्वमहाविदेह ने पश्चिममहाविदेह कर्मभूमिनी मनुष्य स्त्रियो ए बे संख्यात गुणी अधिकछे ने पोत
पोताने स्थाने तो ए बे बरोबरछे केमजे रात्तावीश गुणी अधिकछे माटे तेथी अंतरद्वीपना अकर्मभूमिक
मनुष्य नपुंसको असंख्यात गुणा अधिकछे केमजे श्रेणिना असंख्यातमे भागे रह्यो जे आकाश प्रदेशराशि

ा. १०४ गुणाः स्वस्थाने तु परस्परं तुल्या. तेभ्यः हरिवर्षरम्यकवर्षाकर्मभूमकमनुष्यनपुंसका द्वयेपि संख्येयगुणाः स्वस्थाने तु परस्परं तुल्याः तेभ्यो हैमवतहैरण्यवताकर्म

टीका. भूमकमनुष्यनपुंसका द्वयेपि संख्येयगुणाः स्वस्थाने तु परस्परं तुल्याः तेभ्यो भरतैरावताकर्मभूमकमनुष्यनपुंसका द्वयेपि संख्येयगुणाः स्वस्थाने तु परस्परं तुल्याः

मूल. रिसा दोवि संखेज्जगुणा भरहेरवयकम्मभूमगमणुस्सित्थियाउ दोवि संखेज्जगुणा पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमगमणुस्सपुरिसा दोवि संखेज्जगुणा पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमगमणुस्सित्थीउ दोवि संखेज्जगुणा अंतरदीवग अकम्मभूमगमणुस्सणपुंसका

भाषा. ते प्रमाणेछे माटे तेथी देवकुरु उत्तरकुरु अकर्मभूमिना मनुष्य नपुंसको ए बे संख्यात गुणा अधिकछे ने पोत पोताने स्थाने बरोबरच छे तेथी हरिवर्ष रम्यकवर्ष अकर्मभूमिना मनुष्य नपुंसको संख्यात गुणा अधिक छे ने ए बे पोतपोताने स्थाने परस्पर तुल्य छे तेथी हैमवत हैरण्यवत अकर्मभूमिना मनुष्य नपुंसको ए बे पण संख्यात गुणा अधिक छे ने पोतपोताने स्थाने तो परस्पर तुल्यछे तेथी भरत ऐरवत

तेभ्योपि पूर्वविदेहापरविदेहकर्मभूमकमनुष्यनपुंसका द्वयेपि संख्येयगुणाः स्वस्थाने तु परस्परं तुल्याः ॥ संप्रति भवनवास्यादि देव्यादिविभागतः सप्तममल्पबहुत्वमाह । एयासिणं भंते देविडीण मित्यादि । सर्वस्तोका अनुत्तरोपपातिकदेवपुरुषा स्ततउपरितनग्रैवेयक मध्यग्रैवेयकाधस्तनग्रैवेयकाच्युतारण्य प्राणातानतकल्प

असंखेज्जगुणा देवकुरुउत्तरकुरु अकम्मभूमगमणुस्सणपुंसका दोवि संखेज्जगुणा एवं तहेव जाव पुव्वविदेह अवरविदेह कम्मभूमकमणुस्सणपुंसका दोवि संखेज्जगुणा ॥ ॥ एतासिणं भंते देवित्थीणं भवणवासीणं वाणमंतरीणं जोइसीणं वेमाणिणीणं देवपुरिसाणं भवणवा

कर्मभूमिना मनुष्य नपुंसको ए बे पण संख्यात गुणा अधिक छे ने पोतपोताने स्थाने परस्पर बराबरज छे तेथी पण पूर्वविदेह अपरविदेह कर्मभूमिना मनुष्य नपुंसको ए बे पण संख्यात गुणा अधिक छे ने पोतपोताने स्थाने तो परस्पर तुल्य छे ए प्रकारे छठो अल्पबहुत्व कह्यो ॥ हवे भवनवासि आदि देवी आदिकना विभाग वते सातमो अल्पबहुत्व कहेछे । हे भगवन् देवनी स्त्रीयो सामान्यपणे भवनवासीनी

गा. १०५ देवपुरुषा यथोत्तरं संख्येयगुणाः ततोधः सप्तम षष्टपृथिवी नैरयिकनपुंसक सहस्रारमहाशुक्रकल्पदेवपुरुष पंचमपृथिवी नैरयिकनपुंसक लांतककल्पदेवपुरुष

मूलः सीणं जाव वेमाणियाणं सोधम्मकाणं जाव गेविज्जकाणं अणुत्तरोववाइयाणं नेरइयनपुंसकाणं रयण
प्पभापुढविनेरइयनपुंसकाणं जाव अहेसत्तमा पुढविनेरईयनपुंसगाणं कयरे२ हिंतो जावविसेसाहि

भाषा. स्रीयो तथा वाणव्यंतरनी स्रीयो तथा ज्योतिषीनी स्रीयो तथा वैमानिकनी स्रीयो तथा देवता पुरुषवे
दीया भवनवासिथी आरंभिने जावत् वैमानिक पर्यंत तथा सौधर्मकल्पना देवथी आरंभिने जावत्
ग्रैवेयक देव पर्यंत तथा अनुत्तरविमानवासि देवता तथा नारकी नपुंसको रत्नप्रभा पृथिवीना नारकी
नपुंसकोथी आरंभिने जावत् हेठली सातमी पृथिवीना नारकी नपुंसक पर्यंत ए सर्वमां कोण कोण
थकी अल्पबे त०४ हे गौतम सर्वथी थोमा अनुत्तरविमानवासि देवपुरुषबे तेथी उपरना ग्रैवेयक देव

टीका.

चतुर्थपृथिवीनैरयिकनपुंसक ब्रह्मलोककल्पदेवपुरुष तृतीयपृथिवीनैरयिकनपुंसक माहेंद्रसनत्कुमारकल्पदेवपुरुष द्वितीयपृथिवीनैरयिकनपुंसका यथोत्तरमसंख्येय

मूल.

या वा गो० सव्वत्थोवा अणुत्तरोववातिया देवपुरिसा उवरिमगेवेज्जादेवपुरिसा संखेज्जगुणा तहेव जाव आणतकप्पे देवपुरिसा संखेज्जगुणा अहे सत्तमाएपुढवीए नेरइयनपुंसका असंखेज्जगुणा छठीए

षा.

पुरुषो संख्यातगुणा अधिकछे तेथी मध्यम ग्रैवेयकना हेठल्या ग्रैवेयकना अच्युत प्राणत आनत कल्प ना देवपुरुषो उत्तरोत्तर संख्यातगुणा अधिकछे जावत् शब्देकरीने आनतकल्पना देवपुरुष पर्यंत जा णवुं तेथी हेठली सातमी पृथिवीना नारकीनपुंसक असंख्यातगुणाछे तेथी छठी पृथिवीना नारकीनपुंस क असंख्यातगुणाछे तेथी सहस्त्रारकल्पना एटले आठमा देवलोकना देवपुरुष असंख्यात गुणाछे तेथी महाशुक्रकल्पना एटले सातमा देवलोकना देवपुरुष असंख्यातगुणाछे तेथी

गुणाः ततईशानकल्पदेवपुरुषा असंख्येयगुणा स्तेभ्य ईशानकल्पदेवस्त्रियः संख्येयगुणाः द्वात्रिंशद्गुणत्वात् ततः सौधर्मकल्पेदेवपुरुषाः संख्येयगुणाः तेभ्यः

मूल. पुढवीए नेरइयनपुंसका असंखेज्जगुणा सहसारे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा माहाशुक्के कप्पे देवा असंखेज्जगुणा पंचमाए पुढवीए नेरइयनपुंसका असंखेज्जगुणा लंतए कप्पे असंखेज्जगुणा चउत्थीए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा बंभलोए कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा तच्चाए

भाषा. पांचमी पृथिवीना नारकीनपुंसक असंख्यात गुणाछे तेथी लांतककल्पना एटले छठा देवलोकना देवपुरुषो असंख्यातगुणाछे तेथी चोथी पृथिवीना नारकीनपुंसक असंख्यातगुणाछे तेथी ब्रह्मकल्पना एटले पांचमा देवलोकना देवपुरुषो असंख्यातगुणाछे तेथी त्रीजी पृथिवीना नारकीनपुंसक असंख्यातगुणाछे तेथी माहेंद्रकल्पना एटले चोथा देवलोकना देवपुरुषो असंख्यातगुणाछे तेथी स

टीका. संख्येयगुणा स्तेभ्यो ज्योतिष्कदेवास्त्रियः संख्येयगुणा द्वात्रिंशद्गुणत्वात् ॥ संप्रति विजातीयव्यक्तिव्यापकमष्टममल्पबहुत्वमाह एयासिणं भंते इत्यादि सर्वस्तोका

मूल एतासिणं भंते तिरिक्खजोणित्थिणं जलयरीणं थलयरीणं खहयरीणं तिरिक्खजोणियपुरिसा जलयराणं थलयराणं खहयराणं तिरिक्खजोणियणपुंसकाणं एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकाणं पुढवीकाइय एगिंदियतिरिक्खजोणि नपुंसकाणं आउकाइय एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकाणं जाव वणस्सइ

भाषा. माटे ए प्रकारे सातमो अल्पबहुत्व थयो ॥ हवे विजातिनी विगत व्यापक आठमो अल्पबहुत्व कहेछे हे भगवन् तिर्यंचयोनिनी स्त्रीयो जलचरनी स्त्रीयो थलचरनी स्त्रीयो खेचरनी स्त्रीयो तथा तिर्यंचयोनिया पुरुष जलचरपुरुष थलचरपुरुष खेचरपुरुष तथा तिर्यंचयोनिना नपुंसक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक पृथिवीकायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक अप्कायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक

पा. ७०७ रत्नप्रजायां पृथिव्यां नैरयिकनपुंसका असंख्येयगुणाः तेभ्यो वानमंतरदेवपुरुषा असंख्येयगुणा स्तेभ्यो वानमंतरदेव्य संख्येयगुणा स्ताभ्यो ज्योतिष्कदेवपुरुषाः

मूल. संखे० नवनवासि देवपुरिसा असंखेज्जगुणा नवणवासि देवित्थियाउ संखे० इमीसे रतण प्पन्नापुढवीनेरइया असंखेज्जगुणा वाणमंतर देवपुरिसा असंखेज्जगुणा वाणमंतर देवित्थियाउ संखेज्जगुणाउ जोतिसियदेवपुरिसा संखेज्जगुणा जोतिसियदेवित्थियाउ संखेज्जगुणाउ ॥

भाषा. गुणी अधिकछे केमजे बत्रीशगुणी कहीछे माटे तेथी नवनवासि देवपुरुषो असंख्यातगुणाछे तेथी नव नवासि देवनी स्त्रीयो संख्यातगुणीछे तेथी रत्नप्रना पृथिवीना नारकी नपुंसको असंख्यातगुणाछे तेथी वाणव्यंतर देवपुरुषो असंख्यातगुणाछे तेथी वाणव्यंतर देवनी स्त्रीयो संख्यातगुणीछे तेथी ज्योतिषी देवपुरुषो संख्यातगुणाछे तेथी ज्योतिषी देवपुरुषोनी स्त्रीयो संख्यातगुणीछे केमजे बत्रीशगुणी कहीछे।

टीका. संख्येयगुणा स्तेभ्यो ज्योतिष्कदेवास्त्रियः संख्येयगुणा द्वात्रिंशद्गुणात्वात् ॥ संप्रति विजातीयव्यक्तिव्यापकमष्टममल्पबहुत्वमाह एयासिणं भंते इत्यादि सर्वस्तोका

मूल. एतासिणं भंते तिरिक्खजोणित्थिणं जलयरीणं थलयरीणं खहयरीणं तिरिक्खजोणियपुरिसा जलयराणं थलयराणं खहयराणं तिरिक्खजोणियणपुंसकाणं एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकाणं पुढवीकाइय एगिंदियतिरिक्खजोणि नपुंसकाणं आउक्काइय एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकाणं जाव वणस्सइ

भाषा. माटे ए प्रकारे सातमो अल्पबहुत्व थयो ॥ हवे विजातिनी विगत व्यापक आठमो अल्पबहुत्व कहेछे हे भगवन् तिर्यंचयोनिनी स्त्रीयो जलचरनी स्त्रीयो थलचरनी स्त्रीयो खेचरनी स्त्रीयो तथा तिर्यंचयोनिया पुरुष जलचरपुरुष थलचरपुरुष खेचरपुरुष तथा तिर्यंचयोनिना नपुंसक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक पृथिवीकायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक अप्कायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक

टी० १०८ अंतरद्वीपिकमनुष्यास्त्रियो मनुष्यपुरुषाश्च स्वस्थाने तु द्वयेपि तुल्याः युगलधर्मोपेतत्वात् एवं देवकुरूत्तरकुरु अकर्म्मभूमक हरिवर्षरम्यकवर्ष अकर्म्मभूमक हैमवतहैरण्यवता कर्म्म

मूल. काइय एगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकाणं बेइंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकाणं तेइंदिय तिरिक्खजोणियणपुंसकाणं चउरिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकाणं पंचेंदियतिरिक्खजोणियणपुंसकाणं जलयराणं थलयराणं खहयराणं मणुस्सित्थीणं कम्मभूमियाणं अकम्मभूमियाणं अंतरदीवयाणं मणुस्स

भाषा. तेउकाय वाउकाय जावत् शब्देकरीने वनस्पतिकाय एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक तथा बेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक तेरिंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक चउरिंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक तथा जलचरनपुंसक थलचरनपुंसकखेचर नपुंसक तथा कर्मभूमिनी मनुष्य स्त्रीयो तथा अकर्मभूमिनी मनुष्यस्त्रीयो तथा अंतरद्वीपनी मनुष्य स्त्रीयो तथा मनुष्यपुरुषो

भूमकमनुष्यस्त्रीपुरुषा यथोत्तरं संख्येयगुणाः स्वस्थाने तु परस्परं तुल्या एतेभ्यो भरतैरावतकर्मभूमकमनुष्यपुरुषा द्वयेपि संख्येयगुणाः स्वस्थाने तु परस्परं तुल्या एतेभ्यो

पुरिसाणं कम्मभूमकाणं अकम्मभूमकाणं अंतरदीवकाणं मणुस्सनपुंसकाणं कम्मभूमिकाणं अकम्म भूमिकाणं अंतरदीवकाणं देविडीणं भवणवासिणिणं वाणमंतरीणं जोतिसीणं वेमाणिणीणं देवपुरिसाणं भवणवासीणं वाणमंतराणं जोतिसियाणं वेमाणियाणं सोधम्मकाणं जाव गेविज्जकाणं अणुत्तरोववाइ

कर्मभूमिना तथा अकर्मभूमिना तथा अंतरद्वीपना तथा मनुष्यनपुंसको कर्मभूमिना तथा अकर्मभूमिना तथा अंतरद्वीपना तथा देवतानी स्त्रीयो भवनपतिनी तथा वाणव्यंतरनी तथा जोतिषिनी तथा वैमानिकनी तथा देवपुरुषो भवनपतिपुरुष तथा वाणव्यंतर देवपुरुष तथा ज्योतिषी देवपुरुष तथा वैमानिक देवपुरुष तथा सौधर्मकल्पवासि देवपुरुषथी आरंभिने जावत् ग्रैवेयक

टी. ११० पपातिको परितनग्रैवेयकमध्यमग्रैवेयकाधस्तनग्रैवेयकाच्युता रणप्राणतानतकल्यदेवपुरुषा यथोत्तरं संख्येयगुणा स्ततोधः सप्तमषष्टपृथिवीनैरायिकसहस्त्रारकल्प

मूल. दोवि संखेज्जगुणा पुव्वविदेह अवरविदेह कम्ममणुस्सिब्रियाउ दोवि संखेज्जगुणाउ अणुत्तरोववातिय देवपुरिसा असंखेज्जगुणाउ उवरिमगेवेज्जा देवपुरिसा संखेज्जगुणा जाव आणत कप्पे देवपुरिसा संखेज्ज गुणा अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइय णपुंसगा असंखेज्जगुणा छठीए नेरइयणपुंसका असंखेज्जगुणा सहस्सा

भाषा. पण संख्यातगुणीछे केमजे सत्तावीसगुणीछे माटे पोताने स्थाने तो परस्पर तुल्यछे तेथकी अनुत्तरविमा नना उपरि ग्रैवेयकना मध्यम ग्रैवेयकना हेठल्या ग्रैवेयकना अच्युतकल्पना आरणकल्पना प्राणतकल्प ना आनतकल्पना देवपुरुषो उत्तरोत्तर एक एकथी संख्यातगुणाछे तेथी हेठली सातमी पृथिवीये नार की नपुंसक असंख्यातगुणाछे तेथी छठी पृथिवीये नारकी नपुंसक असंख्यातगुणाछे तेथी सहस्त्रार देवलो

का. देवपुरुष महाशुक्रकल्प देवपुरुषाः पंचमपृथिवीनैरयिक लांतककल्पदेवपुरुषा श्चतुर्थ पृथिवीनैरयिकनपुंसक ब्रह्मलोककल्पदेवपुरुष तृतीयपृथिवीनैरयिकनपुं

रे कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा महासुक्के कप्पे असंखेज्जगुणा पंचमाए पुढवीए नेरइयनपुंसका असंखे
ख. ज्जगुणा लंतए कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा चउत्थीए पुढवीए नेरइयनपुंसका असंखेज्जगुणा बंभलोए क
प्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा तच्चाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा माहिंदे कप्पे असंखेज्जगुणा सणंकुमारे

के देवपुरुष असंख्यातगुणाछे तेथी महाशुक्र देवलोके देवपुरुष असंख्यातगुणाछे तेथी पांचमी पृथिवीये
नारकी नपुंसक असंख्यातगुणाछे तेथी लांतक देवलोके देवपुरुष असंख्यातगुणाछे तेथी चोथी पृथिवी
षा. ये नारकी नपुंसक असंख्यातगुणाछे तेथी ब्रह्मलोके देवपुरुषो असंख्यातगुणाछे तेथी त्रीजी पृथिवीये
नारकी नपुंसक असंख्यातगुणाछे तेथी माहेंद्रकल्पे देवपुरुष असंख्यातगुणाछे तेथी सनत्कुमारकल्पे दे

। ७११ सक माहेंद्रकल्पसनत्कुमारकल्पदेवपुरुष द्वितीयपृथिवीनैरयिकनपुंसकांतरद्वीपनपुंसका यथोत्तरमसंख्येयगुणाः ततो देवकुरूत्तरकुर्वकर्म्मनूमकहरिवर्षरम्यकवर्षा

मूल. कप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा दोच्चाए पुढवीए णेरइय णपुंसका असंखेज्जगुणा अंतरदीवगअकम्मनूमगमणुस्सणपुंसका असंखेज्जगुणा देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मनूमगमणुस्सणपुंसका दोवि संखेज्जगुणा एवं जावविदेहोत्ति ईसाणकप्पे देवपुरिसा असंखेज्जगुणा ईसाणकप्पेदेवित्थियाउ संखेज्जगुणाउ सोधम्मे क

नाषा. वपुरुष असंख्यातगुणाछे तेथी बीजी पृथिवीये नारकी नपुंसक असंख्यातगुणाछे तेथी अंतरद्वीपना अकर्मनूमिना मनुष्य नपुंसक असंख्यातगुणाछे तेथी देवकुरु उत्तरकुरु अकर्मनूमिना मनुष्य नपुंसको ए बे संख्यातगुणाछे मांहोमांही बेउ बरोबरछे ए प्रकारे जावत् महाविदेह पर्यंतनो पाठ लेवो तेथी ईशानकल्पे देवपुरुष असंख्यातगुणाछे तेथी ईशानकल्पे देवनी स्त्रीयो असंख्यातगुणीछे तेथी सौधर्मकल्पे देवपुरुषो संख्यातगुणाछे तेथी सौधर्मकल्पे देवनी स्त्रीयो संख्यातगुणीछे ते थकी नवनवासि देव

का. कर्म्मभूमक हैमवतहैरण्यवताकर्मभूमक भरतैरावतकर्म्मभूमक पूर्वविदेहापरविदेहकर्मभूमकमनुष्यनपुंसकाः यथोत्तरं संख्येयगुणाः स्वस्थाने तु द्वये परस्परं तुल्याः
ततईशानकल्पदेवपुरुषा असंख्येयगुणा स्तेभ्यो भवनवासिदेवपुरुषा असंख्येयगुणाः तेभ्यो भवनवासिदेवास्त्रियः संख्येयगुणा स्ताभ्योऽस्या रत्नप्रभाया पृथिव्यां

मू. ये देवपुरिसा संखेज्जगुणा सोहम्मे कप्पे देवित्थियाउ संखेज्जगुणाउ भवणवासिदेवपुरिसा असंखे० भव
णवासिदेवित्थीयाउ संखेज्जगुणाउ इमीसे रयणप्पभाएपुढवीए नेरइयनपुंसका असंखेज्जगुणा खहयरति
रिक्खजोणियपुरिसा असंखेज्जगुणा खहयरतिरिक्खजोणित्थियाउ संखेज्जगुणाउ थलयरतिरिक्खजोणिय

भा. पुरुषो असंख्यातगुणाछे तेथी भवनवासि देवनी स्त्रीयो संख्यातगुणीछे तेथी आ रत्नप्रभा पृथिवीने विषे
नारकी नपुंसक असंख्यातगुणाछे तेथी खेचर तिर्यग्योनिक पुरुष असंख्यातगुणाछे तेथी खेचर तिर्य
ग्योनिक स्त्रीयो संख्यातगुणीछे केमजे त्रण गुणीछे माटे तेथी स्थलचर तिर्यग्योनिक पुरुषो संख्यातगु
णाछे तेथी स्थलचर तिर्यग्योनिक स्त्रीयो संख्यातगुणीछे तेथी जलचर तिर्यग्योनिक पुरुषो संख्यातगु

ा॰ २१२ टीका

नैरयिकनपुंसका असंख्येयगुणाः ततःखचरातिर्यग्योनिकपुरुषाः खचरातिर्यग्योनिकास्त्रियः स्थलचरतिर्यग्योनिकपुरुषाः स्थलचरतिर्यग्योनिकस्त्रिय. जलचरातिर्यग्योनिकपुरुषाः जलचरतिर्यग्योनिकस्त्रियो वानमंतरदेवपुरुषा वानमंतरदेवस्त्रियो ज्योतिष्कदेवपुरुषा ज्योतिष्कदेवास्त्रियो यथोत्तरं संख्येयगुणा स्ततः खचरपंचेंद्रियति

मूल.

पुरिसा संखेज्ज० थलयरतिरिक्खजोणित्थियाउ संखेज्जगुणाउ जलयरतिरिक्खजोणियपुरिसा संखेज्ज० जलयरतिरिक्खजोणित्थियाउ संखेज्जगुणाउ वाणमंतरदेवपुरिसा संखेज्ज० वाणमंतरदेवित्थियाउ संखेज्जगुणाउ जोइसियदेवपुरिसा संखे० जोइसियदेवित्थियाउ संखेज्जगुणाउ खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियण

ाषा॰

णाछे तेथी जलचर तिर्यग्योनिनी स्त्रीयो संख्यातगुणीछे तेथी वाणव्यंतर देवपुरुषो संख्यातगुणाछे तेथी वाणव्यंतर देवनी स्त्रीयो संख्यातगुणीछे तेथी ज्योतिषि देवपुरुषो संख्यातगुणाछे तेथी ज्योतिषि देवनी स्त्रीयो संख्यातगुणीछे तेथी खचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक असंख्यातगुणाछे तेथी थलचर नपुंसक संख्यातगुणाछे तेथी जलचर नपुंसक संख्यातगुणाछे तेथी चतुरिंद्रिय नपुंसक विशेष अधिकछे तेथी तेंद्रिय

र्यग्योनिकनपुंसका असंख्येयगुणाः ततः स्थलचरजलचरपंचेंद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसकाः क्रमेणसंख्येयगुणाः ततश्चतुरिंद्रियत्रींद्रियद्वींद्रियातिर्यग्योनिक नपुंसका यथोत्तरं विशेषाधिका ततस्तेजस्कायिकैकेंद्रियातिर्यग्योनिकनपुंसकाः संख्येयगुणाः ततःपृथिव्यप्वायुकायिकातिर्यग्योनिकनपुंसका यथोत्तरं विशेषाधिकाः ततो वनस्पति

पुंसका संखेज्जगुणा थलयरनपुंसका संखे० जलयरनपुंसका संखे० चतुरिंदियणपुंसकाविसेसाहिया तेंदियाविसेसाहिया बेंदियाविसेसाहिया तेउकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियनपुंसका असंखे० पुढविसेसाहियाआउविसेसाहिया वाउविसेसाहिया वणप्फइकाइयएगिंदियतिरिक्खजोणियणपुंसका अणंतगुणा ॥

विशेष अधिकछे तेथी बेंद्रिय विशेष अधिकछे तेथी तेउकाइया एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक असंख्यात गुणाछे तेथी पृथिवीकायिक विशेष अधिकछे तेथी अप्कायिक विशेष अधिकछे तेथी वाउकायिक विशेष अधिकछे तेथी वनस्पतिकायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया नपुंसक अनंतगुणाछे ए प्रकारे आठमो अल्पबहुत्व पूरो थयो ॥ हवे स्त्री पुरुष नपुंसकनु भवस्थितिमान तथा कायस्थिति ए बेने अनुक्रमे कहेवानी

पा. ११३

टीका. कायिकैकेंद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका अनंतगुणाः निगोदजीवानामनंतत्वात् ॥ संप्रति स्त्रीपुरुषनपुंसकानां भवस्थितिमानं कायस्थितिमानं च क्रमेणाभिधातुकाम आह इत्थीएणं भंते केवतियं कालं ठिई पण्णत्ता इत्यादि एतत्सर्वं प्रागुक्तवद्भावनीयमपुनरुक्तता च प्राक् स्त्र्यादीनां पृथक् स्वस्वाधिकारे स्थित्यादि प्रतिपादितमिदानीं तु समुदायेनेति संप्रति स्त्रीपुरुषनपुंसकानामल्पबहुत्वमाह।एयासिणं भंते इत्थीणमित्यादि सर्वस्तोकाःपुरुषाः स्त्र्यादिभ्यो हीनसंख्याकत्वात् तेभ्यस्त्रियः

मूलः ॥इत्थीएणं भंते केवतियं कालं ठिई पं. गो. एगेणं आदेसेणं जहा पुव्विं भणियं एवं पुरिसस्सवि नपुंसकस्सवि संचिठणा पुणरवि तिण्हंपि जहा पुव्विं भणिया अंतरं तिण्हंपि जहा पुव्विं भणियं

भाषा. इच्छाथी प्रश्नसूत्र कहे छे ॥ हे भगवन् स्त्रियोने केटला कालनुं भवस्थितिमान कह्यु छे? हे गौतम एक आदेशे करिने जेम पूर्वे कह्यु छे एमज स्त्रीयोने तथा पुरुषने पण नपुंसकने पण संचिठणा एटले निरंतरपणे रेहेवुं जाणवुं स्त्री पुरुष नपुंसकनी स्थिति संचिठणा अंतर पूर्वे कह्यु छे ने वली कहे तो पुनरुक्त दोष आवे माटे तेनो उत्तर एछे जे इहां समुदाये पुछे छे ने पूर्वेतो जुदा२ पोतपोताना अधिकारने विषे

संख्येयगुणाः ताभ्योनपुंसका अनंतगुणाः एकेंद्रियाणामनंतानंत संख्योपेतत्वात् इह पुरुषेभ्यः स्त्रियः संख्येयगुणा इत्युक्तं तत्र काः स्त्रियः स्वजातिपुरुषापेक्षया कति गुणा इति प्रश्नावकाशमाशंक्य तन्निरूपणार्थमाह तिरिखजोणिइीउ तिरिखजोणियपुरिसेहिंतो इत्यादि तिर्यग्योनिकस्त्रियस्तिर्यग्योनिक पुरुषेभ्यस्त्रि गुणा स्त्रिरूपाधिका मनुष्यास्त्रियो मनुष्यपुरुषेभ्यः सप्तविंशतिगुणाः सप्तविंशतिरूपाधिकाः देवपुरुषेभ्यो देवस्त्रियो द्वात्रिंशद्गुणा द्वात्रिंशद्रूपाधिकाः उक्तंच

तिरिख्खजोणित्थियाउ तिरिख्खजोणिय पुरिसे हिंतो तिगुणाउ तिरूवाहियाउ मणुस्सित्थियाउ मणुस्सपुरिसेहिंतो सत्तावीशइगुणाउ सत्तावीसइरूवाहियाउ देवित्थियाउ देवपुरिसेहिंतो

प्रश्न पुछ्युं हतु। फरिथी पण ए त्रणनी स्थिति अंतर संचिठणा पूर्वनी पेठे जाणवी तिर्यंचयोनिनी स्त्रीयो तिर्यंचयोनिना पुरुष थकी त्रिरूप त्रण घणीयो अधिक जाणवी मनुष्यनी स्त्रीयो मनुष्यपुरुष थकी सत्तावीश रूपे अधिकी सत्तावीश घणी जाणवी देवतानी स्त्रीयो देवपुरुषथकी बत्रीश गुणीयो बत्रीश रूपे अधिकी जाणवी। स्त्री पुरुष नपुंसक ए त्रण प्रकारना वेदने विषे प्रथम अधिकारे भेद १ तारपछी स्थि

पा. ७१३ टीका.

कायिकेकेंद्रियतिर्यग्योनिकनपुंसका अनंतगुणाः निगोदजीवानामनंतत्वात् ॥ संप्रति स्त्रीपुरुषनपुंसकानां नवस्थितिमानं कायस्थितिमानं च क्रमेणाभिधातुकाम आह इत्थीएणं नंते केवतियं कालं ठिई पण्णत्ता इत्यादि एतत्सर्वं प्रागुक्तवद्भावनीयमपुनरुक्तता च प्राक् स्त्र्यादीनां पृथक् स्वस्वाधिकारे स्थित्यादि प्रतिपादितमिदानीं तु समुदायेनेति संप्रति स्त्रीपुरुषनपुंसकानामल्पबहुत्वमाह। एयासिणं नंते इत्थीणमित्यादि सर्वस्तोकाः पुरुषाः स्त्र्यादिभ्यो हीनसंख्याकत्वात् तेन्यस्त्रियः

मूलः

॥ इत्थीएणं नंते केवतियं कालं ठिई पं. गो. एगेणं आदेसेणं जहा पुव्विं नणियं एवं पुरिसस्सवि नपुंसकस्सवि संचिठणा पुणरवि तिण्हंपि जहा पुव्विं नणिया अंतरं तिण्हंपि जहा पुव्विं नणियं

नाषा.

इच्छार्थी प्रश्नसूत्र कहे ठे ॥ हे नगवन् स्त्रियोने केटला कालनुं नवस्थितिमान कह्यु ठे? हे गौतम एक आदेशे करिने जेम पूर्वे कह्यु ठे एमज स्त्रीयोने तथा पुरुषने पण नपुंसकने पण संचिठणा एटले निरंतरपणे रेहेवुं जाणवुं स्त्री पुरुष नपुंसकनी स्थिति संचिठणा अंतर पूर्वे कह्यु ठे ने वली कहे तो पुनरुक्त दोष आवे माटे तेनो उत्तर ए ठे जे इहां समुदाये पुठे ठे ने पूर्वे तो जुडा२ पोतपोताना अधिकारने विषे

टीका. संख्येयगुणाः ताभ्योनपुंसका अनंतगुणाः एकेंद्रियाणामनंतानंत संख्योपेतत्वात् इह पुरुषेभ्यः स्त्रियः संख्येयगुणा इत्युक्तं तत्र काः स्त्रियः स्वजातिपुरुषापेक्षया कति गुणा इति प्रश्नावकाशमाशंक्य तन्निरूपणार्थमाह तिरिखजोणिइउ तिरिखजोणियपुरिसेहिंतो इत्यादि तिर्यग्योनिकस्त्रियस्तिर्यग्योनिक पुरुषेभ्यस्त्रि गुणा त्रिरूपाधिका मनुष्यस्त्रियो मनुष्यपुरुषेभ्यः सप्तविंशतिगुणाः सप्तविंशतिरूपाधिकाः देवपुरुषेभ्यो देवस्त्रियो द्वात्रिंशद्गुणा द्वात्रिंशद्रूपाधिकाः उक्तंच

मूल. तिरिक्खजोणित्थियाउ तिरिक्खजोणिय पुरिसे हिंतो तिगुणाउ तिरूवाहियाउ मणुस्सित्थियाउ मणुस्सपुरिसेहिंतो सत्तावीशइगुणाउ सत्तावीसइरूवाहियाउ देवित्थियाउ देवपुरिसेहिंतो

भाषा. प्रश्न पुछ्युं हतु। फरिथी पण ए त्रणनी स्थिति अंतर संचिठणा पूर्वनी पेठे जाणवी तिर्यंचयोनिनी स्त्रीयो तिर्यंचयोनिना पुरुष थकी त्रिरूप त्रण घणीयो अधिक जाणवी मनुष्यनी स्त्रीयो मनुष्यपुरुष थकी सत्तावीश रूपे अधिकी सत्तावीश घणी जाणवी देवतानी स्त्रीयो देवपुरुषथकी बत्रीश गुणीयो बत्रीश रूपे अधिकी जाणवी। स्त्री पुरुष नपुंसक ए त्रण प्रकारना वेदने विषे प्रथम अधिकारे भेद १ तारपछी स्थि

ा. ७१४

टीका.

वृद्धाचार्यैरपि तिगुणा तिरूवअहिया तिरियाणं इत्थिया मुणेयव्वा सत्तावीसगुणा पुण मणुयाणं तदहिया चेव बत्तीसगुणा बत्तीसरूवअहियाउ होंति देवाणं देवीउ पण्णत्ता जिणे हिंजियरागदोसेहिं प्रतिपत्त्युपसंहारमाह सेत्तंतिविहा संसारसमावन्नगाजीवा पन्नत्ता इति संप्रति अधिकृतपतिपत्त्यर्थाधिकारसंग्रहगाथा माह तिविहेसुहोइ भेउ इत्यादि त्रिविधेषु वेदेषु वक्तव्येषु भवति प्रथमो धिकारो भेदस्ततः स्थिति स्तदनंतरं संचिठणं सातत्येनावस्थानं तदनंतर मंतरं ततो ल्प बहुत्वं ततो वेदानां बंधस्थिति स्तदनंतरं किंप्रकारो वेद इति ॥ इतिश्री मलयगिरिविरचितायां जीवाजीवाभिगमटीकाया द्वितीया प्रतिपत्तिः समाप्ता ॥

मूल.

बत्तीसगुणाउ बत्तीसइरूवाधियाउ तिविहेसु होइ भेदो ठिई संचिठणंतर प्पबहु
वेयाणं बंधठिई वेदे तहकिं पगारे य सेत्तं तिविहा संसार समावण्णगा जीवा पण्णात्ता ॥

ाषा.

नि१ तदनंतर संचिठणा२ तारपछी आंतरु४ तारपछी अल्पबहुत्व५ तारपछी वेदोनी बंधस्थिति६ तारपछी वेद कीया प्रकारनो छे७ ए प्रकारना बोल बीजी पडीवत्तीमां कह्या ए प्रकारनी बीजी स्थिति प्रतिपत्ति कही ए प्रकारे त्रिविध एटले त्रण प्रकारना संसारी जीव कह्या ए नामनी बीजी पडिवत्ति संपूर्ण थइ ॥

टीका.

॥ तदेवमुक्ता द्वितीया प्रतिपत्तिः संप्रति तृतीयप्रतिपत्त्यवसरस्तत्रेदमादिसूत्रम् । तत्थ जेते एवमाहंसु चउव्विहा इत्यादि तत्र तेषु दशसु प्रतिपत्तिमत्सु मध्ये येते आचार्या एवमाख्यातवंतः चतुर्विधाः संसारसमापन्ना जीवाः प्रज्ञप्ताः त एवमाख्यातवंत स्तद्यथा नैरयिकास्तिर्यग्योनिका मनुष्या देवाः सेकिंतमित्यादिअथ केते

मूल.

॥ तत्थ जेते एवमाहंसु चउविधा संसारसमावण्णगा जीवा पण्णत्ता ते एवमाहंसु तं० नेरतिया तिरिक्खजोणिया मणुस्सा देवा सेकिंतं नेरइया२ सत्तविधा पं० तं० पढमपुढविनेरइया दोच्चा

भाषा.

हवे बीजी पतिपत्ति कह्या पछी त्रीजी पतिपत्ति कहेवानो अवसर छे तेमां आ पेहेलु सूत्र कहेछे तेमां दश प्रकारनी पतिपत्तिने अंगीकार करनार आचार्योनी मध्ये जे आचार्य एहवुं कहे छे जे च्यार प्रकारना संसारी जीव छे तेनो अधिकार लइने कहे छे जे केटलाक आचार्य एम कहे छे जे च्यार प्रकारना संसारी जीव कह्या छे ते कहे छे नारकी१ तिर्यंचयोनिया२ मनुष्य३ देवता४ ए प्रकारे कह्या छे हवे कोण ते नारक जीव एटले हे भगवन् नारकी केटला प्रकारना छे? हे गौतम नारकी सात प्रकारना क

।० ७१५ नेरयिकाः सूरिराह नैरयिकाः सप्तविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा प्रथमायां पृथिव्यां प्रथमपृथिवीनैरयिका इत्यर्थः एवं सर्वत्रजावनीयं संप्रति पृथिवीनामगोत्रं वक्तव्यं

टीका. तत्र नामगोत्रयो रयं विशेषः अनादिकालप्रसिद्धमन्वर्थरहितं नाम सान्वर्थनामगोत्रमिति तत्र नामगोत्रप्रतिपादनार्थमाह इमाणं भंते इत्यादि इयं भदंत रत्न

पुढविनेरइया तच्चा पुढविनेरइया चउत्थापुढविनेरइया पंचमापुढविनेरइया छठापुढविनेरइया स

मूल. त्तमापुढविनेरइया पढमाएणं भंते पुढवी किं नामा किं गोत्ता पं० गो० घंमानामेणं रतणप्पभा गो

ह्याछे प्रथम पृथिवीना नारकी १ बीजीपृथवीना नारकी२ त्रीजीपृथवीना नारकी३ चोथीपृथवीना नारकी४

पांचमीपृथवीना नारकी५ छठीपृथवीना नारकी६ सातमीपृथवीना नारकी७। हे भगवन् पेहेलीपृथिवी श्या

भाषा. नामनी ने श्या गोत्रनी छे? हे गौतम पेहेली पृथिवीनुं घम्मा एहवुं नाम छे ने रत्नप्रभा एहवुं गोत्रछे ए

टले नाम तथा गोत्र तेमां आटलो विशेष छे जे अनादिकाल प्रसिद्धने अर्थे रहित ते नाम कहीये ने

अर्थे सहित ते गोत्र कहीये तेमां पूर्वना आचार्यो आ प्रकारनो अर्थ कहेछे जे रत्ननी छे प्रभा कहेतां

ेका. प्रभापृथिवी किं नामा किमनादिकालप्रसिद्धान्वर्थरहितनामा किं गोत्रा किमन्वर्थयुक्त नामा गोत्रा भगवानाह गौतम नाम्ना धर्मेति प्रज्ञप्ता गोत्रेण रत्नप्रभा। तथाचात्रान्वर्थमुपदर्शयंति पूर्वसूरयः रत्नाना प्रभा बाहुल्यं यत्र सा रत्नप्रभा रत्नबहुलेतिभाव; एवं शेषसूत्राण्यपि प्रतिपृथिवी प्रश्ननिर्वचनरूपाणि भावनीयानि नवरं

ल. तेणं दोच्चाणं भंते पुढवी किंनाम किंगोत्ता पं० गो० वंसानामेणं सक्करप्पभा गोत्तेणं एवं एतेणं अभिलावेणं सव्वासिंपुछा नामाणि इमाणि सेला तच्चा अंजणा चउत्था रिठा पंचमा मघा

ाषा. कांति बहुलपणे जेने विषे ते रत्नप्रभा कहीये एज प्रकारे बीजी पृथ्वीने विषे शुं नाम छे ने शुं गोत्र छे तेनो उत्तर हे गौतम वंशा एहवुं बीजी पृथिवीनु नाम छे ने शर्कराप्रभा एवुं गोत्र छे शर्कराना जेवी बहुलपणे जेने विषे कांतिछे तेने शर्कराप्रभा कहीये एज प्रकारे सर्वे पृथवीने विषे जाणवुं तेना नाम त्रीजी पृथिवीनु सेला ३ एवुं नाम छे ने वालुकाप्रभा एवुं गोत्र छे वालुका केहेतां वेलु (रेती) तेना जेवी जेनी कांतिछे तेने वालुकाप्रभा कहीये चोथी पृथिवीनु नाम अंजना४ एवुंछे ने पंकप्रभा एवुं गोत्रछे

७१ ...विधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा प्रथमायां पृथिव्यां प्रथमपृथिवीनैरयिका इत्यर्थः एवं सर्वत्रभावनीयं संप्रति पृथिवीनामगोत्रं वक्तव्यं

का. ...कालप्रसिद्धमन्वर्थरहितं नाम सान्वर्थनामगोत्रामिति तत्र नामगोत्रप्रतिपादनार्थमाह इमाणं भंते इत्यादि इयं भदंत रत्न

पु० ...विनेरइया चउत्थापुढविनेरइया पंचमापुढविनेरइया छट्ठापुढविनेरइया स

प्र. त्तमापुढविनेरइया प० ...एणं भंते पुढवी किं नामा किं गोत्ता पं० गो० घंमानामेणं रतणप्पभा गो

...ह्यां छे प्रथम पृथिवीना नारकी १ बीजीपृथवीना नारकी २ त्रीजीपृथवीना नारकी ३ चोथीपृथवीना नारकी ४ पांचमीपृथवीना नारकी ५ छठीपृथवीना नारकी ६ सातमीपृथवीना नारकी ७। हे भगवन् पेहेलीपृथिवी इया ...मा गोत्रनी छे? हे गौतम पेहेली पृथिवीनुं घम्मा एहवुं नाम छे ने रत्नप्रभा एहवुं गोत्र छे ए ... आटलो विशेष छे जे अनादिकाल प्रसिद्धने अर्थ रहित ते नाम कहीये ने ...ना आचार्यों आ प्रकारनो अर्थ कहे छे जे रत्ननी छे प्रभा कहेतां

टीका.

प्रभापृथिवी किं नामा किमनादिकालप्रसिद्धान्वर्थरहितनामा किं गोत्रा किमन्वर्थयुक्त नामा गोत्रा भगवानाह गौतम नाम्ना धर्मेति प्रज्ञप्ता गोत्रेण रत्नप्रभा तथाचात्रान्वर्थमुपदर्शयंति पूर्वसूरयः रत्नानां प्रभा बाहुल्यं यत्र सा रत्नप्रभा रत्नबहुलेतिभावः एवं शेषसूत्राण्यपि प्रतिपृथिवी प्रश्ननिर्वचनरूपाणि भावनीयानि नवरं

मूल.

तेणं दोच्चाणं भंते पुढवी किंनाम किंगोत्ता पं० गो० वंसानामेणं सक्करप्पभा गोत्तेणं एवं एतेणं अभिलावेणं सव्वासिंपुच्छा नामाणि इमाणि सेला तच्चा अंजणा चउत्था रिठा पंचमा मघा

भाषा.

कांति बहुलपणे जेने विषे ते रत्नप्रभा कहीये एज प्रकारे बीजी पृथ्वीने विषे शुं नाम छे ने शुं गोत्र छे तेनो उत्तर हे गौतम वंशा एहवुं बीजी पृथिवीनु नाम छे ने शर्कराप्रभा एवुं गोत्र छे शर्कराना जेवी बहुलपणे जेने विषे कांतिछे तेने शर्कराप्रभा कहीये एज प्रकारे सर्वे पृथवीने विषे जांणवुं तेना नाम त्रीजी पृथिवीनु सेला ३ एवुं नाम छे ने वालुकाप्रभा एवुं गोत्र छे वालुका केहेतां वेलुं (रेती) तेना जेवी जेनी कांतिछे तेने वालुकाप्रभा कहीये चोथी पृथिवीनु नाम अंजना४ एवुंछे ने पंकप्रभा एवुं गोत्रछे

टीका.

शर्कराप्रभादीनामियमन्वर्थभावना शर्कराणां प्रभा बाहुल्यं यत्र सा शर्कराप्रभा एवं वालुकाप्रभा पंकप्रभा इत्यपि भावनीयं तथा धूमस्येवप्रभा यस्यां सा धूमप्रभा तथा तमसः प्रभाबाहुल्यं यत्र सा तमःप्रभा तमस्तमस्य प्रकृष्टतमसः प्रभाबाहुल्यं यत्र सा तमस्तमःप्रभा अत्रकेषुचित् पुस्तकेषु संग्रहणि गाथा। धम्मा वंसा सेला अंजणरिठा

मूल.

छठा माघवती सत्तमा तमतमा गोत्तेणं पण्णत्ता। इमाणं भंते रयणप्पभापुढवी केवतिया बाहल्लेणं पं० गो० इमाणं रयणप्पभापुढवी असीउत्तरं जोयणसयसहस्सं बाहल्लेणं पण्णत्ता एवं एतेणं

भाषा.

पंक केतां कादव तेना जेवी जेनी कांतिछे तेने पंकप्रभा कहीये पांचमी पृथिवीनु नाम रिठा ५ एवुंछे धूमप्रभा एवुं गोत्र छे धूमाडाना जेवी जेनी कांति छे तेने धूमप्रभा कहीये छठी पृथिवीनु नाम मघा ६ एवुंछे ने तमप्रभा एवुं गोत्रछे तमः केतां अंधकार तेना जेवी जेनी कांतिछे तेने तमःप्रभा कहीये सातमी पृथिवीनु नाम माघवती ७ एवुंछे ने तमस्तमा एवुं गोत्र छे तमस्तमः केतां गाढअंधकार तेना जेवी जेनी कांतिछे तेने तमस्तमःप्रभा कहीये हे भगवन् रत्नप्रभा पृथिवी बाहल्यपणे जाडपणे केटली क

मघायमाघवती सत्तण्हं पुढवीएणं एए नामाउ नायव्वा रयणा सक्करवालुय पंकाधूमा तमा तमतमाय सत्तण्हं पुढवीणं एए गोत्ता मुणीयव्वा ॥ अधुना प्रतिपृ
थिवि बाहल्यमाभिधित्सुराह । इमाणं भंते इत्यादि इयं भदंत रत्नप्रभापृथिवी कियद्बाहल्येन प्रज्ञप्ता अत्र गोत्रेण प्रश्नो नाम्नो गोत्रं प्रधानं नच प्रश्नोपपन्न
का. मिति न्यायप्रदेशनार्थः उक्तंच नहीना वाक्सदा सता मिति भगवानाह ।। अशीत्युत्तरं अशीतियोजनसहस्राभ्यधिकं योजनशतसहस्रं बाहल्येन प्रज्ञप्ता एवं स

अभिलावेणं इमा गाथा अणुगंतव्वा आसीतं बत्तीसं अठावीस तहेव वीसं च अठारस सोलसगं
मू: अठुत्तरमेव हेठिमया । इमाणं भंते रयणप्पभापुढवी कतिविधा पं० गो० तिविधा पं० तं० खर

ही छे: हे गौतम रत्नप्रभापृथिवी एकलाख ऐंशीहजार योजन बाहल्यपणे कही छे ए प्रकारे एज
आलापे करिने बीजीनु पण जाणवुं ते उपर आ गाथानो अर्थ अनुसंधान करवो जे पेहेली १ एक
बा: लाख ऐंशीहजार योजन बीजी २ एकलाख बत्रीशहजार योयन त्रीजी ३ एकलाख अठावीशहजार
योजन चोथी ४ एकलाख वीशहजार योजन पांचमी ५ एकलाख अढारहजार योजन छठी ६ एक

ा. ७१७ टीका. णिपि सूत्राणि भावनीयानि अत्र संग्रहणिगाथा असीयं बत्तीसं अठावीसं च अठारस सोलसगं अठुत्तरमेव हेठिमिया इमाणं भंते इत्यादि इयं भदंत रत्नप्रभापृथिवी कतिविधा कति प्रकारा कतिविभागा प्रज्ञप्ता भगवानाह गौतम त्रिधा त्रिविभागा प्रज्ञप्ता तद्यथा खरकांडमित्यादि कांडं नाम विशिष्टो भूभागः खरं कठिनं पंकबहुलमपूबहुलं चान्वर्थत प्रतिपत्तव्यं क्रमश्चैतेषामेवमेव तद्यथा प्रथमं खरकाडं तदनंतरं पंकबहुलं ततोपूबहुलमिति इमीसेणं भंते इत्यादि अस्यां भ

मूल. कंडे पंकबहुले कंडे आवबहुले कंडे इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए खरकंडे कतिविधे पं० गो० सोलसविधे पं० तं० रतणकंडे वइरे वेरुलिए लोहितक्खे मसारगल्ले हंसगब्भे पुलए७

भाषा. लाख सोलहजार योजन सातमी ७ एकलाख आठहजार योजन बाहल्यपणे जाणवी। हे भगवन् रत्नप्रभापृथिवी केटला प्रकारनी कहीछे एटले केटला विभागथीछे? हे गौतम रत्नप्रभापृथिवी त्रण प्रकारनी कहीछे (त्रण भेदे छे) (त्रण विभागथी छे) ते कहे छे प्रथम खरकांड एटले खर केतां कठिन कांड केतां भलो सुंदर। भूमिभाग पृथिवीनो विभाग। ते खरकांड कहीये १ तारपछी बीजो पंकबहुलकांड एटले

का. दंत रत्नप्रभायां पृथिव्यां खरकांडं कतिविधं प्रज्ञप्तं भगवानाह गौतम षोडशविधं षोडशविभागं प्रज्ञप्तं तद्यथा रयणे इति पदैकदेशे पदसमुदायोपचारात् रत्न कांडं तच्च प्रथमं द्वितीयं वज्रकांडं तृतीयं वैडूर्यकांडं चतुर्थं लोहिताक्षकांडं पंचमं सारगल्लकांडं षष्ठं हंसगर्भकांडं सप्तमं पुलककांडंअष्टमं सौगंधिककांडं नवमं ज्योतीरसकांडं दशममंजनककांड मेकादशममंजनपुलाककांडं द्वादशं रजतकांडं त्रयोदशं जातरूपकांडं चतुर्दशमंककांडं पंचदशं स्फुटिककांडं षोडशं रिष्ठकांडं

मू. सोइंधिए० जोतिरसे अंजणे अंजणपुलये रयते जातरूवे अंके फलिहे रिट्ठे कंडे इमीसेणं भंते रयण प्पभाए पुढवीए रयणकंडे कतिविहे पं० गो० एगागारे पण्णत्ते एवं जावरिट्ठे। इमीसेणं भंते रय

भा. जेमां कादव कचरो बहुल्यपणे छे। ते विभाग २ त्रीजो अप्बहुलकांड अप् केतां जल बहुल्यपणे जेमां छे ते अप्बहुल्य कहीये हे भगवन् एहीज रत्नप्रभापृथिविने विषे खरकांड पेहेलो केटला प्रकार नो कह्यो छे? हे गौतम सोल प्रकारनो कह्यो छे ते जिम सोल भेद छे तिम कहुं पेहेलो रतनकांड१ बीजो वज्रकांड२ त्रीजो वैडूर्यकांड३ चोथो लोहिताख्यकांड४ पांचमो मसारगल्लकांड५ छट्ठो हंसगर्भ

पा. ७१८ टीका. तत्र रत्नानि कर्केतनादीनि तत्प्रधानं कांडं रत्नकांडं वज्ररत्नप्रधानं कांडं वज्रकांडं एवं शेषाण्यपि एकैकंचकांडं योजनसहस्रबाहुल्यं इमीसेणं भंते इत्यादि अस्यां भदंत रत्नप्रभायां पृथिव्यां रत्नकांडं कतिविधं कतिप्रकारं कतिविभागमितिभावः प्रज्ञप्तं भगवानाह एकाकारं प्रज्ञप्तं एवं शेषकांडविषयाण्यपि प्रश्ननिर्वचनसूत्राणि क्रमेण भणनीयानि एवं पंकबहुलाबहुलाविषयाण्यपि दोच्चाणं भंते इत्यादि द्वितीयादि पृथिवीविषयाणि सूत्राणि पाठसिद्धानि संप्रति प्रति पृथिवि नरका

मूलः एप्पभाए पुढवीए पंकबहुले कंडे तिविहे पं० गो० एगागारे पण्णत्ते आवबहुले कंडे कतिविहे पं० गो० एकागारे पण्णत्ते सक्करप्पभाए णं भंते पुढवी कतिविधा पं० गो० एगागारे

भाषा. कांड६ सातमो पुलाककांड७ आठमो सौगंधिककांड८ नवमो जोतिरसकांड९ दशमो अंजनकांड१० अगीयारमो अंजनपुलाककांड११ बारमो रजतकांड१२ तेरमो जातरूपकांड१३ चउदमो अंककांड१४ पंदरमो स्फटिककांड१५ सोलमो रिष्टकांड१६ ए सोल भेदे पेहेलो खरकांड जाणवो । हे भगवन् रत्नप्रभापृथिवीने विषे पेहेलो रत्नकांड ते केटला प्रकारनो कह्यो छे, हे गौतम रतनकांड एकज छे

का.

वाससंख्या प्रतिपादनार्थमाह । इमीसे णं भंते इत्यादि सुगमम् ॥ नवरामियमत्र संग्रहणिगाथा तीसाय पण्णवीसा पण्णरस दसेव सयसहस्साइ । तिण्णेगं पंचूणं पंचेव अणुत्तरा निरया अधः सप्तम्या च पृथिव्या कालादयो महानरका अप्रतिष्ठानाभिधकस्य नरकस्य पूर्वादिक्रमेण उक्तंच पुव्वेण होइ कालो अवरेणं अप्पइठमहकालो रोरुदाहिणपासे उत्तरपासे महारोरु रत्नप्रभादिषुच तमःप्रभापर्यंतासु षट्सु पृथिवीषु प्रत्येकं नरकावासा द्विविधा स्तद्यथा आवलि

ल.

पण्णत्ता एवं जाव अहेसत्तमा इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए केवतिया निरयावाससतसहस्सा पं० गो० तीसं निरयावाससतसहस्सा पण्णत्ता एवं एतेणं अभिलावेणं सव्वासिंपुछा ॥

षा.

आकार जेनो एहवो कह्यो छे ए प्रकारे जावत् रिष्टकांभ त्यां पर्यंत एक आकारपणु जाणवुं हे भगवन् रत्नप्रभापृथिवीने विषे बीजो पंकबहुलकांभ ते केटला प्रकारनो कह्यो छे हे गौतम एकज आकार जेनो एहवो कह्यो छे एज प्रकारे त्रीजो अप्बहुलकांभ ते पण एक आकारनो जाणवो हे भगवन् बीजी शर्कराप्रभा पृथिवी केटला प्रकारनी एटले केटला भेदे कही छे? हे गौतम एकजछे आकार जेनो एह

ग्रा· ७१९

टीका· काः प्राग्दिष्टाः प्रकीर्णकरूपाश्च तत्र रत्नप्रभायां पृथिव्यां त्रयोदशप्रस्तटाः प्रस्तटानाम वेश्मभूमिकाकल्पाः तत्र प्रथमे प्रस्तटे पूर्वादिषु दिक्षु प्रत्येकमेकोन पंचाशत् नरकावासाश्चतसृषु च विदिक्षु प्रत्येकमष्टचत्वारिंशत् मध्ये च सीमंतकाख्यो नरकेन्द्रकः सर्वसंख्यया प्रथमप्रस्तटे नरकावासा नामावलिका प्रविष्टाना मेकोननवत्याधिकानि त्रीणि शतानि ३८९ शेषेषु च द्वादशसु प्रस्तटेषु प्रत्येकं यथोत्तरं दिक्षु विदिक्षु च एकैक नरकावास हानिभावात् अष्टकाष्टकहीना नर कावासा दृष्टव्याः ततः सर्वसंख्यया रत्नप्रभाया पृथिव्यामावलिका नरकावासाश्चतुश्चत्वारिंशत्शतानि त्रयस्त्रिंशदाधिकानि ४४३३ शेषासु एकोनत्रिंशल्लक्षाणि

मूल· ॥ इमा गाथा अणुगंतव्वा तीसाय पणवीसा पण्णरस दसेव तिण्णिय हवंति पंचूण सतसह रसं पंचेव अणुत्तरा णरगा जाव अहेसत्तमाए पंच अणुत्तरा महंति महालया महाणरगा पं०

भाषा· वी कहीछे एज प्रकारे जावत् हेठली सातमीपृथिवी पर्यंत एक आकारपणु जाणवुं॥ हे भगवन् रत्न प्रभापृथिवीने विषे केटला नरकावासा कह्याछे? हे गौतम रत्नप्रभापृथिवीने विषे त्रीशलाख नरकावासा एटले त्रीशलाख नरक स्थानक कह्या छे एज प्रकारे सघली पृथिवीना नरकावास पुछ्या तेनो

टीका. पंचनवतिसहस्राणि पंचशतानि सप्तषष्ट्यधिकानि २९९५५६७ प्रकीर्णका स्तथाचोक्तं सत्तठीपंचसयापणनउइसहस्स लक्खगुणतीसं रयणाएसेढिगया चोयाल सयाउसेयासीयं छचसमीलने त्रिंशल्लक्षा नरकावासानां ३०००००० शर्कराप्रभायामेका दशप्रस्तटा नरकपटलान्यधोधो द्वंद्वहीनानीतिवचनात् तत्र प्रथमे प्रस्तटे चतसृषु दिक्षु षट्त्रिंशत् आवलिका प्रविष्टा नरकावासा विदिक्षु पंचत्रिंशत् मध्ये चैको नरकेंद्रकः सर्वसंख्यया द्वेशते पंचाशीत्यधिके २८५ शेषेषु दशसु प्रस्तटेषु प्रत्येकं क्रमेणाधोधोष्टकाष्टकहानिः प्रतिदिक् २९ एकैकनरकावासहानेः ततस्तत्र सर्वसंख्यया आवलिकाप्रविष्टानरकावासाः षट्विंशतिशतानि पंचनवत्य

सूत्र. तं० काल महाकाले रोरुए महारोरुए अपतिट्ठाणे । अत्थिणं भंते इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे घणोदधितिवा घणवातेतिवा तणुवातेतिवा उवासंतरेइवा हंता अत्थि एवं जाव अहेसत्त

भाषा. उत्तर आ गाथाना अर्थवते जाणवो जे पेहेली पृथिवीये त्रीशलाख१ बीजी पृथिवीये पचीसलाख२ त्रीजी पृथिवीये पन्नरलाख३ चोथी पृथिवीये दशलाख४ पांचमी पृथिवीये त्रणलाख नरकावासा तेमां पांच ऊणा जाणवा ५ छठी पृथिवीये एकलाख नरकावासा ६ सातमी पृथिवीये सर्वथी उत्कृष्टा

ग्रा॰ ७१९

टीका॰ रा॰ प्राविष्टाः प्रकीर्णाकरूपाश्च तत्र रत्नप्रभायां पृथिव्यां त्रयोदशप्रस्तटाः प्रस्तटानाम वेश्मभूमिकाकल्पाः तत्र प्रथमे प्रस्तटे पूर्वादिषु दिक्षु प्रत्येकमेकोन पंचाशत् नरकावासाश्चतसृषु च विदिक्षु प्रत्येकमष्टचत्वारिंशत् मध्ये च सीमंतकाख्यो नरकेन्द्रकः सर्वसंख्यया प्रथमप्रस्तटे नरकावासा नामावलिका प्रविष्टाना मेकोननवत्याधिकानि त्रीणि शतानि ३८९ शेषेषु च द्वादशसु प्रस्तटेषु प्रत्येकं यथोत्तरं दिक्षु विदिक्षु च एकैक नरकावास हानिभावात् अष्टकाष्टकहीना नरकावासा इष्टव्याः तत. सर्वसंख्यया रत्नप्रभाया पृथिव्यामावलिका नरकावासाश्चतुश्चत्वारिंशत्शतानि त्रयस्त्रिंशदाधिकानि ४४३३ शेषासु एकोनत्रिंशल्लक्षाणि

मूल॰ ॥ इमा गाथा अणुगंतव्वा तीसाय पण्णवीसा पण्णरस दसेव तिण्णिय हवंति पंचूण सतसहस्सं पंचेव अणुत्तरा णरगा जाव अहेसत्तमाए पंच अणुत्तरा महति महालया महाणरगा पं०

भाषा॰ वी कहीछे एज प्रकारे जावत् हेठली सातमीपृथिवी पर्यंत एक आकारपणु जाणवुं॥ हे भगवन् रत्नप्रभापृथिवीने विषे केटला नरकावासा कह्याछे? हे गौतम रत्नप्रभापृथिवीने विषे त्रीशलाख नरकावासा एटले त्रीशलाख नरक स्थानक कह्या छे एज प्रकारे सघली पृथिवीना नरकावास पुछ्या तेनो

का. पंचनवतिसहस्राणि पंचशतानि सप्तषष्ट्यधिकानि २९९५५६७ प्रकीर्णका स्तथाचोक्तं सत्तठ्ठपंचसयापणनउइसहस्स लख्खगुणतीसं रयणाएसेढिगया चोयाल सयाउतेआशियं उनयमीलने त्रिंशल्लक्षा नरकावासानां ३०००००० शर्कराप्रनायामेका दशप्रस्तटा नरकपटलान्यधोधो द्वंद्वहीनानीतिवचनात् तत्र प्रथमे प्रस्त टे चतसृषु दिक्षु षट्त्रिंशत् आवलिका प्रविष्टा नरकावासा विदिक्षु पंचत्रिंशत् मध्ये चैको नरकेन्द्रकः सर्वसंख्यया द्वेशने पंचाशीत्यके २८५ शेषेषु दशसु प्र स्तटेषु प्रत्येकं क्रमेणाधोधोष्टकाष्टकहानिः प्रतिदिक् १एकैकनरकावासहानेः ततस्तत्र सर्वसंख्यया आवलिकाप्रविष्टानरकावासाः षट्विंशतिशतानि पंचनवत्य

ल. तं० काल महाकाले रोरुए महारोरुए अपतिठ्ठाणे । अत्थिणं भंते इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए अहे घणोदधितिवा घणावातेतिवा तणुवातेतिवा उवासंतरेइवा हंता अत्थि एवं जाव अहेसत्त

षा. उत्तर आ गाथाना अर्थवते जाणवो जे पेहेली पृथिवीये त्रीशलाख१ बीजी पृथिवीये पचीसलाख२ त्रीजी पृथिवीये पन्नरलाख३ चोथी पृथिवीये दशलाख४ पांचमी पृथिवीये त्रणलाख नरकावासा तेमां पांच उणा जाणवा ५ छठी पृथिवीये एकलाख नरकावासा ६ सातमी पृथिवीये सर्वथी उत्कृष्टा

पा० ११० टीका.

णिशानि ३६९५ शेषाश्चतुर्विंशतिलक्षाः सप्तनवति सहस्राणि त्रीणि शतानि पंचोत्तराणि २४९७३७५ पुष्पावकीर्णकाः उक्तंच सत्ताणउइसहस्सा चउवी सलक्खतिसयाचविह वीयाए सेटिगया छत्तीससया पणनउया उजयमीलने पंचविंशतिलक्षा नरकावासानां २५०००० वालुकाप्रजायां नवप्रस्तटाः प्रथमेच प्रस्तटे एकैकस्या दिशिभावलिकाप्रविष्टानरकावासाः पंचविंशतिः२ विदिशि चतुर्विंशतिःमध्ये चैको नरकेंद्रक इति सर्वसंख्यया सप्तनवतिं शतं शेषेषु चाष्ट सु प्रस्तटेषु प्रत्येकं क्रमेणाधोधोष्टकहानिः तत्र च कारणं प्रागेवोक्तं ततः सर्वसंख्यया तत्रावलिकाप्रविष्टनरकावासाश्चतुर्दशशतानि पंचाशीत्यधिकानि १४८५

मूल.

मा । इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए खरकंडे केवतियं बाहल्लेणं पं० गो० सोलसजोयणस हस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ते । इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए रतणकंडे केवतियं बाहल्लेणं पं०

भाषा.

पांच नरकावासा निश्चे जाणवा ए प्रकारे जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत नरकावासा कह्या ॥ हवे जे पांच सर्वथी उत्कृष्टा मोटामोटास्थानकना नरकावासा कह्या तेना नाम कहे छे जे काल१ महाकाल२ रौरव३ महारौरव४ अप्रतिष्ठान५ ए प्रकारनां नाम जाणवां ॥ पृथिवी ७ प्रत्ये घनो

शेषास्तु पुष्पावकीर्णका श्चतुर्दशलक्षा अष्टानवतिसहस्राणि पंचशतानि पंचदशाधिकानि १४९८५१५ उक्तंच पंचसया पन्नरो अडनवइसहस्सलक्खचोद्दस या तइयाएसेढिगया पयासीया चोद्दससयाउ उभयमीलने पचदशलक्षा नरकावासाना १५०००००पंकप्रभाया सप्तप्रस्तटाः प्रथमे च प्रस्तटे प्रत्येकं दिशि षोडश आवलिकाप्रविष्टानरकावासाः विदिशि पंचदश मध्येचैको नरकेंद्रक. सर्वसंख्यया पंचविंशं शतं १२५ शेषेषु षट्सु प्रस्तटेषु पूर्ववत् प्रत्येकं क्रमेणाधो धोष्टकाष्टकहानिस्ततः सर्वसंख्यया तत्रावलिकाप्रविष्टा नरकावासा. सप्तशतानि सप्तोत्तराणि७०७ शेषास्तु पुष्पावकीर्णका नवलक्षा नवनवति सहस्रा

गो० एक्कजोयणसहस्सबाहल्लेणं पण्णत्ते एवं जावरिट्ठे । इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए पं

दधि आदिनो सद्भाव छे ते कहेवाने प्रश्नसूत्र कहे छे हे भगवन् ए रत्नप्रभापृथिवीने हेठल घनोदधि एटले पिंडभूत पाणिनो समूह तथा घनवात एटले पिंडभूत वायुनो समूह तथा तनुवात एटले विरल परिणामने पामेलो वायुनो समूह तथा अवकाशांतर एटले शुद्ध आकाश एक एकने हेठलछे ए प्रश्न । तेनो उत्तर हे गौतम एमज छे ए प्रकारे जावत् हेठली सातमी पर्यंत प्रश्न उत्तर जाणवा ॥ हे भगवन

टीका.

गि द्वेशते त्रिनवत्यधिके ९९९२९३ उक्तंच तेणउया दोन्निसया नवनउयसहस्स नवयलरकाय पंकाएसोढिगया सत्तसया दुन्नेति सत्तहिया उजयमीलने नरकावासाना दशलक्षा १०००००० धूमप्रजाया पंचप्रस्तटाः प्रथमे च प्रस्तटे एकैकस्यां दिशि नवनव आवलिकाप्रविष्टनरकावासा विदिशि अष्टौमध्ये चैको नरकेन्द्रक इति सर्वसंख्यया एकोनसप्ततिः ६९ शेषेषु च चतुर्षु प्रस्तटेषु पूर्ववत् प्रत्येकं क्रमेणाधोधोऽष्टकहानि स्ततः सर्वसंख्यया तत्रावलिकाप्रविष्टा नरकावासा द्वेशते पंचषष्ट्यधिके शेषाः पुष्पावकीर्णका द्वे लक्षे नवनवतिसहस्राणि सप्तशतानि पंचत्रिंशदधिकानि २९९७३५ उक्तंच सत्तसया पणतीसा नवनउय

मूल.

कबहुले कंडे केवतियं बाहल्लेणं पण्णत्ते गो० चतुरासीति जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ते। इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए आपबहुले कंडे केवतियं बाहल्लेणं पं० गो० असीतिं जोयण

भाषा.

रत्नप्रभापृथिवी संबंधि जे खरकांड छे ते बाहल्यपणे जाडपणे केटलो कह्यो छे? हे गौतम सोल हजार योजन बाहल्यपणे कह्यो छे। हे भगवन् रत्नप्रभापृथिवी संबंधि जे रत्नकांडछे ते बाहल्यपणे केटलो कह्योछे? हे गौतम एक हजार योजन बाहल्यपणे कह्योछे ए प्रकारे जावत् रिष्टकांड पर्यंत प्रत्येके२ एकेक

सहस्सदोयलखाय धूमाएसेढिगया पण्णाठा दोसयाहोंति सर्वसंख्यया तिस्रोलक्षा नरकावासानां तमःप्रभायां त्रयः प्रस्तटास्तत्र प्रथमे प्रस्तटे प्रत्येकं दिशि चत्वा
टी. रि आवलिकाप्रविष्टा नरकावासा विदिशि त्रय स्त्रयोमध्ये चैकोनरकेंद्रक इति सर्वसंख्यया एकोनत्रिंशत् २९ शेषयोस्तु प्रस्तटयोः प्रत्येकं क्रमेणाधोधोएकहा
निस्ततः सर्वसंख्यया आवलिकाप्रविष्टा नरकावासास्त्रिषष्टिः शेषास्तु नवनवतिसहस्राणि नवशतानि द्वात्रिंशदधिकानि पुष्पावकीर्णकाः ९९९३२ उक्तंच
नवनउइ सयसहस्सनव चेव सया हवंति बत्तीसा पुढवीए छठीए पइण्णगाणे ससंखेवो ल्लजयमीलने पंचोनं नरकावासानां लक्षं ९९९९५ संप्रति प्रतिपृथिवि

सहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ते इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधिकेवतियं बाहल्लेणं पं०
मू. गो० वीसं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ते इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए घणवाते केवयं

हजार योजन एटले सोले कांम थईने सोल हजार योजन बाहल्यपणे जाणवा ॥ हे भगवन् रत्नप्रभापृ
थिवीनो पंकबहुलकांम बाहल्यपणे केटलो कह्योछे हे गौतम चोराशि हजार योजन बाहल्यपणे कह्योछे
बा. हे भगवन् रत्नप्रभापृथिवीनो अप्बहुलयकांम बाहल्यपणे केटलो कह्यो छेः हे गौ० ऐंशी हजार योजन

पा. ७७७ घनोदधिप्रतिपादनार्थमाह ॥ अत्थिणं भंते इत्यादि अस्ति भदंत अस्याः प्रत्यक्षत उपलभ्यमानाया रत्नप्रभायाः पृथिव्या अधोघनः स्त्यानीभूतोदक उदधि र्घनोदधिरितिवा घनः पिंडीभूतो वातो घनवात इति वा तनुवात इतिवा अवकाशांतर मितिवा अवकाशांतरं नामशुद्धमाकाशं भगवानाह हंतास्ति एवं प्रतिपृथिवी तावद्वाच्यं

टीका. यावदधः सप्तम्या इमीसेणं भंते इत्यादि अस्या भदंत रत्नप्रभायाः पृथिव्याः संबंधि यत् प्रथमं खरं खराभिधानं कांडं तत् कियत् बाहल्येन प्रज्ञप्तं भगवानाह गौत म षोडशयोजनसहस्राणि ॥ इमीसेणमित्यादि । अस्या भदंत रत्नप्रभायाः पृथिव्या रत्नं रत्नाभिधानं कांडं तत् कियत्बाहल्येन प्रज्ञप्तं भगवानाह गौतम एकं योज

मूल: बाहल्लेणं पं० गो० असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ताइं एवं तणुवातेति उवासंतरेवि

भाषा. बाहल्यपणे एटले जाडपणे कह्यो छे ॥ हे भगवन् रत्नप्रभापृथिवीनो घनोदधि बाहल्यपणे केटलो कह्यो छे? हे गौ० वीशहजार योजन बाहल्यपणे कह्यो छे। हे भगवन् रत्नप्रभापृथिवीनो घनवात बाहाल्यपणे केटलो कह्यो छे? हे गौ. असंख्यात हजार योजन बाहल्यपणे जाणवो एप्रकारे तनुवात पण असंख्यात हजार योजन बाहल्यपणे जाणवो ए प्रकारे अवकाशांतर पण ए प्रमाणे जाणवो सर्व संख्याये करि

ा. नसहस्रं शेषाण्यपि काण्डानि वक्तव्यानि यावन्नरिष्टं रिष्टाभिधानं काण्डं एवं पंकबहुलापूर्वबहुलकाण्डसूत्रेऽपि व्याख्येये पंकबहुलं काण्डं चतुरशीतियोजनसहस्राणि बाहल्येन अब्बहुलं काण्डं अशीतियोजनसहस्राणि सर्वसंख्यया रत्नप्रभाया बाहल्यमशीति सहस्राधिकं लक्षं तस्या अधो घनोदधिः विंशतियोजनसहस्राणि बाहल्येन तस्या ऽधो घनवातो ऽसंख्येयानि योजनसहस्राणि बाहल्येन तस्याप्यधो ऽसंख्येयानि योजनसहस्राणि तनुवातो बाहल्येन तस्याप्यधो ऽसंख्येयानि

ा. सक्करप्पभाए णं भंते पुढवीए घणोदधि केवतियं बाहल्लेणं पण्णत्ते गो० वीसं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं पण्णत्ताइं सक्करप्पभाए पुढवीए घणवाते केवइए पं० गो० असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं

षा. ने रत्नप्रभापृथिवीनु बाहल्यपणे परिमाण एक लाखने अेंशी योजननुं छे तेनी हेठल घनोदधि वीश हजार योजननो बाहल्यपणे छे तेनी हेठल घनवात असंख्यात हजार योजननो बाहल्यपणे छे, तेनी हेठल असंख्यात हजार योजननो तनुवात बाहल्यपणे छे तेनी पण हेठल असंख्यात सहस्र योजन नो अवकाशांतर छे हे भगवन् शर्कराप्रभापृथिवीये घनोदधि बाहल्यपणे केटलो कह्यो छे: हे गोतम

टीका. योजनसहस्राणि बाहल्येनावकाशांतरं एवं शेषाणामपि पृथिवीनां घनोदध्यादयः प्रत्येकं तावद्वक्तव्या यावदधः सप्तम्याः ॥ इमीसेणं भंते इत्यादि अस्यां भदंत रत्नप्रभायां पृथिव्यामशीत्युत्तरयोजनशतसहस्र बाहल्यायां क्षेत्रछेदनबुध्या मतरकाण्डविभागेन छिद्यमानायां अस्तीति निपातोत्र बहुवचनार्थगर्भः संतिद्रव्याणि वर्णतः कालानि

मूल. बाहल्लेणं पण्णत्ताइं एवं तणुवाएवि उवासंतरेवि जहासक्करप्पभाए पुढवीए एवं जाव अहेसत्तमा ॥ ॥ इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर जोयणसतसहस्स बाहल्लाए खेत्तछित्तेणं छिज्जमा

भाषा. वीश हजार योजन बाहल्यपणे कह्यो छे घनवात तनुवात तथा अवकाशांतर पण असंख्यात हजार योजन कह्या छे ए प्रकारे जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत घनोदधि आदिक जाणवा ॥ हे भगवन् आ रत्नप्रभापृथिवी एकलाख अेंशीहजार योजन जाडपणेछे ते क्षेत्र छेदवेकरिने छेदीए विभाग करे छते ते द्रव्यवर्ण थकी कालाछे नीलाछे लालछे पीलाछे धोलाछे गंध थकी सुगंधिछे दुर्गंधिछे रस थकी तिखाछे कडवाछे कषायेलाछे खाटाछे मीठाछे फरस थकी कर्कशछे कठिणछे कोमलछे भारेछे हलवाछे

ा. नीलानि लोहितानि हारिद्राणि शुक्लानि गंधतः सुरभिगंधीनिच रसतस्तिक्तरसानि कटुकानि कषायानि अम्लानि मधुराणि स्पर्शतः कर्कशानि मृदूनि गुरुकाणि लघूनि शीतानि उष्णानि स्निग्धानि रूक्षाणि संस्थानतः परिमंडलानि वृत्तानि त्र्यस्राणि चतुरस्राणि आयतानि कथंभूतान्येतानि सर्वाण्यपीत्यतआह अन्नमन्नपुट्ठाइं इत्यादि

ञ. णाए अत्थि दव्वाइं वण्णतो कालनील लोहित हालिद्दसुक्किलाइं गंधतो सुब्भिगंधाइं दुब्भिगंधाइं रसतो तित्तकडुयकसाय अंबिलमहुराइं फासउ कक्खडमउयगरुलहुयसीतउसिणणिद्धलुक्खाइं संठाणतो परिमंडलवट्ट तंस चउरंस आययसंठाणपरिणयाइं अण्णमण्णबद्धाइं अण्णमण्णपुट्ठाइं

षा. शीतछे उष्णछे चीकणाछे लुखाछे संठाण थकी गोल आकारेछे वाटला आकारेछे त्रीखुणीयाछे चउखुणीयाछे लांबा संस्थाने परिणम्याछे मांहोमांही बंधायेलाछे अन्योअन्य मांहोमांही फरसायेलाछे मांहोमांही अवगाढछे जिहां एक द्रव्य तिहां देशथी सर्व अवगाही रह्याछे अन्योअन्य मांहोमांही स्नेहेकरि प्रतिबद्धछे जेणेकरि एक चलावे थके सर्वे चले अन्योअन्य मांहोमांही घटयाछे जेण करि मांहोमांही संबंध

पा० २२४ टीका. मन्योन्यं परस्परं स्पृष्टानि स्पर्शमात्रोपेतानि तथा अन्योन्यं परस्परमवगाढानि यत्रैकं द्रव्यमवगाढं तत्रान्यदपि देशतः क्वचित्सर्वतोऽवगाढमित्यर्थः तथा अन्योन्यं परस्परं स्नेहेन प्रतिबद्धानि येनैकस्मिन्चाल्यमाने गृह्यमाणे वा परमपि चलनादिधर्मोपेतं भवति एवमन्योन्यघडत्ताए चिट्ठंति इति अन्योन्यं परस्परं घटंते संबध्नंतीति अन्योन्यघटा स्तद्भावोन्योन्यघटता तया परस्परं संबद्धतया तिष्ठंति भगवानाह हंताअच्छि हंतेति प्रत्यवधारणे संत्येवेत्यर्थः एवमस्यामेव रत्नप्रभायां

मूल. अण्णमण्णओगाढाइं अण्णमण्णसिणेहपडिबद्धाइं अण्णमण्णघडत्ताए चिट्ठंति हंता अच्छि । इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए खरस्स कंडस्स सोलस जोयणसहस्स बाहल्लस्स खेत्तछेएणं छिज्जं तंचेव जाव हंता अत्थि एवं जाव रिट्ठस्स । इमीसेणं भंते रयणप्पभाएपुढवीए पंकबहुलस्स कंडस्स चउ

भाषा. पणे रह्याछे ए सर्व प्रश्न तेनो उत्तर हे गौतम एमजछे हे भगवन् रत्नप्रभापृथिवीनो खरकांड सोलहजार योजन बाहल्यपणेछे ते क्षेत्र छेदवेकरि प्रतरकांड विभागेकरि छेदे छते द्रव्यवरणथी काला जावत् पूर्वनी पेठे परिणम्याछे? हे गौतम एमजछे हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीनो रतनकांड हजार योजन बाहल्यप

टीका. पृथिव्या खरकांडस्य षोडशयोजनसहस्रप्रमाणबाहल्यस्य तदनंतरं रत्नकांडस्य योजनसहस्रबाहल्यस्य ततो वज्रकांडस्य यावद्रिष्टकांडस्य तदनंतरमस्यामेव रत्नप्रभायां पृथिव्या पंकबहुलकांडस्य चतुरशीतियोजनसहस्रबाहल्यस्य तदनंतरमब्बहुलकांडस्य अशीतियोजनसहस्रबाहल्यस्य तदनंतरमस्या एव रत्नप्रभाया घनोदधे र्योजनविंश

मू. रासीतिं जोयणसहस्स बाहल्लस्स खेत्तं तंचेव । एवं आउबहुलस्सवि असीति जोयणसहस्सबाहल्लस्स । इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए घणोदहिस्स वीसं जोयणस्स बाहल्लेस खेत्तछेदे तहेव एवं घणवातस्स असंखेज्जजोयणहस्स बाहल्लस्स तंचेव सक्करप्पभाए णं भंते पुढवीए बत्तीसुत्तर

भाषा. पणेछे ते क्षेत्र छेदवेकरि विभागेकर्या छेदे छते० इत्यादि पूर्वनी पेठे जावत् रिष्टकांड पर्यंत प्रश्न उत्तरनो पाठ जाणवो हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीनो पंकबहुलकांड चोराशिहजार योजननो बाहुल्यपणेछे ते क्षेत्र पण तेमज एटले पूर्वनी पेठे जाणवो अपूबहुलकांड अेंशीहजार योजननो ते पण एमज जाणवो हे भगवन् रतनप्रभापृथिवी हेठल घनोदधि वीसहजार योजन बाहल्यपणे क्षेत्र छेदवेकरि विभागे० इत्यादि प्रश्न हे

पा. ११८ टीका. तिसहस्रप्रमाणबाहल्यस्य ततोऽसंख्यातयोजनप्रमाणबाहल्यस्य घनवातस्य तत एतावत्प्रमाणबाहल्यस्य तनुवातस्य ततोवकाशांतरस्य तावत्प्रमाणस्य ततः श
र्कराप्रभायाः पृथिव्या द्वात्रिंशत्सहस्रोत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्यपरिमाणायास्तस्याएवाधस्ताद्यथोक्तबाहल्यानां घनवाततनुवातावकाशांतराणामेवं यावदधः सप्त
म्यां पृथिव्या अष्टसहस्राधिकयोजनशतसहस्रपरिमाणबाहल्यायास्ततस्तस्या एवाधः सप्तमपृथिव्या अधस्तामपि घनोदधिघनवाततनुवातावकाशांतराणां प्रश्न

मूल: जोयणसतसहस्स बाहल्लए खेत्तछेदेणं छिज्जमाणाए अत्थि दव्वाइ वण्णतो जाव घडत्ताए चिट्ठंति
हंता अत्थि एवं घणोदहिस्स वीसं जोयणसहस्स बाहल्लस्स घणवातस्स असंखेज्जजोयण

भाषा. गौतम तिमज पूर्वनी पेठे निश्चे जाणवो घनवात असंख्यात योजन हजार तथा तनुवात तथा अवकाशां
तर० इत्यादि प्रश्ननो उत्तर पूर्वनी पेठे जाणवो ॥ हे भगवन् शर्कराप्रभापृथिवी बत्रीशहजार योजन बा
हल्यपणेछे ते क्षेत्रने छेदे विभागे करे छते द्रव्य वर्ण थकी० जावत् संबंधपणे रह्याछेत्यां पर्यंतनो पाठ प्रश्न
रूप जाणवो तेनो उत्तर पण हे गौतम एमजछे एज प्रकारे घनोदधि वीसहजार योजननो ते संबंधी तथा

टी. निर्वचनसूत्राणि यथोक्तद्रव्याविषयाणि भावनीयानि ॥ संप्रति संस्थानप्रतिपादनार्थमाह इमाणं भंते इत्यादि इयं भदन्त उपलभ्यमाना णमिति वाक्यालंकृतौ रत्नप्रभापृथिवी किमिव संस्थिता प्रज्ञप्ता भगवानाह गौतम झल्लरीव संस्थिता प्रज्ञप्ता विस्तीर्णवलयाकारत्वात् एवमस्यामेव रत्नप्रभायां पृथिव्यां खरकाण्डं तत्रापि

मू: सहस्स बाहल्लस्स एवं जाव उवासंतरस्स जहा सक्करप्पभाए एवं जाव अहेसत्तमाए ॥ ॥ इमाणं भंते रतणप्पभापुढवीकिं संठिता पं० गो० झल्लरिसंठिया पण्णत्ता इमीसेणं भंते रय णप्पभाएपुढवीए खरे कंडे किंसंठित्ते पण्णत्ते गो० झल्लरिसंठिते पण्णत्ते इमीसेणं भंते रयणप्प

बा. घनवात असंख्यात हजार योजननो ते संबंधी तथा तनुवात शुद्ध अवकाशांतर ए संबंधी प्रश्न तथा तेनो उत्तर एमज जाणवो शर्कराप्रभापृथिवीये जिम पाठ एटले प्रश्न तथा उत्तर तिमज हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवो ॥ हे भगवन् रत्नप्रभापृथिवी शे प्रकारे रही कहीछे? हे गौतम झालरने संस्थाने एटले विस्तीर्ण वलयाकारे रहीछे हे भगवन् रत्नप्रभापृथिवीने विषे खरकांड शे प्रकारे रह्योछे? हे गौतम

।. ११५ टीका. तिसहस्रप्रमाणवाहल्यस्य ततोऽसंख्यातयोजनप्रमाणवाहल्यस्य घनवातस्य तत एतावत्प्रमाणबाहल्यस्य तनुवातस्य ततोवकाशांतरस्य तावत्प्रमाणस्य ततः श
र्कराप्रभायाः पृथिव्या द्वात्रिंशत्सहस्रोत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्यपरिमाणायास्तस्याएवाधस्ताद्यथोक्तबाहल्यानां घनवाततनुवातावकाशांतराणामेवं यावदधः सप्त
म्यां पृथिव्या अष्टसहस्राधिकयोजनशतसहस्रपरिमाणबाहल्यायास्ततस्तस्या एवाधः सप्तमपृथिव्या अधस्तामणे घनोदधिघनवाततनुवातावकाशांतराणां प्रश्न

मूलः जोयणसतसहस्स बाहल्लए खेत्तछेदेणं छिज्जमाणाए अत्थि दव्वाइ वण्णतो जाव घमत्ताए चिट्ठंति
हंता अत्थि एवं घणोदहिस्स वीसं जोयणसहस्स बाहल्लस्स घणवातस्स असंखेज्जजोयण

भाषा. गौतम तिमज पूर्वनी पेठे निश्चे जाणवो घनवात असंख्यात योजन हजार तथा तनुवात तथा अवकाशां
तर० इत्यादि प्रश्ननो उत्तर पूर्वनी पेठे जाणवो ॥ हे भगवन् शर्कराप्रभापृथिवी बत्रीशहजार योजन बा
हल्यपणेछे ते क्षेत्रने छेदे विभागे करे छते द्रव्य वर्ण थकी० जावत् संबंधपणे रह्याछे त्यां पर्यंतनो पाठ प्रश्न
रूप जाणवो तेनो उत्तर पण हे गौतम एमजछे एज प्रकारे घनोदधि वीसहजार योजननो ते संबंधी तथा

निर्वचनसूत्राणि यथोक्तद्रव्याविषयाणि भावनीयानि ॥ संप्रति संस्थानप्रतिपादनार्थमाह इमाणंभंते इत्यादि इयं प्रत्यक्षत उपलभ्यमाना णमिति वाक्यालंकृतौ रत्नप्रभापृथिवी किमिव संस्थिता प्रज्ञप्ता भगवानाह गौतम झल्लरीव संस्थिता प्रज्ञप्ता विस्तीर्णवलयाकारत्वात् एवमस्यामेव रत्नप्रभाया पृथिव्या खरकाण्डं तत्रापि

सहस्स बाहल्लस्स एवं जाव उवासंतरस्स जहा सक्करप्पभाए एवं जाव अहेसत्तमाए ॥ ॥ इमाणं भंते रतणप्पभापुढवीकिं संठिता पं० गो० झल्लरिसंठिया पण्णत्ता इमीसेणं भंते रय णप्पभाएपुढवीए खरे कंडे किंसंठित्ते पण्णत्ते गो० झल्लरिसंठिते पण्णत्ते इमीसेणं भंते रयणप्प

घनवात असंख्यात हजार योजननो ते संबंधी तथा तनुवात शुद्ध अवकाशांतर ए संबंधी प्रश्न तथा तेनो उत्तर एमज जाणवो शर्कराप्रभापृथिवीये जिम पाठ एटले प्रश्न तथा उत्तर तिमज हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवो ॥ हे भगवन् रत्नप्रभापृथिवी शे प्रकारे रही कहीछे? हे गौतम झालरने संस्थाने एटले विस्तीर्ण वलयाकारे रहीछे हे भगवन् रत्नप्रभापृथिवीने विषे खरकांड शे प्रकारे रह्योछे? हे गौतम

टीका.

एवं दक्षिणस्यामपरस्या मुत्तरस्या चापांतरालं वक्तव्यं दिग्ग्रहणं चोपलक्षणं तेन सर्वासु विदिक्ष्वपि यथोक्तमपांतरालमवसातव्यं शेषाणां तु पृथिवीनां सर्वासु दिक्षु च चरमपर्यंतादलोकः क्रमेणाधोधस्त्रिभागोनेन योजनेनाधिकै र्द्वादशभि र्योजनैरवगंतव्य स्तद्यथा शर्कराप्रभायाः पृथिव्याः सर्वासु दिक्षु विदिक्षु च चरम पर्यंतादलोकादर्वागपांतरालं त्रिभागोनानि त्रयोदशयोजनानि वालुकाप्रभायाः सत्रिभागानि त्रयोदशयोजनानि पंकप्रभाया. परिपूर्णानि चतुर्दशयोजनानि धूमप्रभायास्त्रिभागो

मूल.

धाए लोयंते पण्णत्ते गो० दुवालसहिं जोयणेहिं अबाधालोयंते पण्णत्ते एवं दाहिणिल्लातो पच्चत्थिमिल्लातो उत्तरिल्लाउ सक्करप्पभाए णं भंते पुढवीए पुरत्थिमिल्लातो चरिमंतातो केवतियं

भाषा.

आगल ने अलोकथी छेहरो अपांतराल आंतरु बार योजन अबाधाये लोकांतछे ए प्रकारे दक्षिणदिशि चरम छेहल्या अंतथी एमज जाणवुं पश्चिमदिशि तथा उत्तरदिशि एमज जाणवुं॥ हे भगवन् शर्कराप्रभापृथिवीना पूर्वदिशि भागना छेहल्या अंतथकी केटली अबाधाये लोकांत कह्योछे? हे गौतम त्रीजे भाग ऊणा तेर जोजन एटले तेर जोजन पूरा मांहिथी एक जोजननो त्रीजो भाग काढतां बाकी रहे

ा. नानि पंचदशयोजनानि अधःसप्तमपृथिव्याः परिपूर्णानि षोडशयोजनानि,सूत्राक्षराणि पूर्ववत् योजनीयानि अथामूनि रत्नप्रभादीनां द्वादशयोजनप्रमाणादीनि अपांतरालानि किमाकाशरूपाणि उत घनोदध्यादिव्याप्तानि उच्यते घनोदधादिव्याप्तानि तत्र कस्मिन्नपांतराले कियान् घनोदध्यादिरिति प्रतिपादनार्थमाह ॥

अबाधाए लोयंते पं० गो० तिभागूणेहिं तेरसहि जोयणेहिं अबाधाए लोयते पण्णत्ते एवं चतुद्दि
ा. सिं वालुयप्पभाए णं भंते पुढवीए पुरत्थिमिल्लाओ पुछा गो. सति भागेहिं तेरसेहिं अबाधाए लो
यंते पण्णत्ते एवं चउद्दिसिंपि एवं सव्वासिं चउसु विदिसासु पुछियव्वं पंकप्पभाए चोद्दसहिं जो

तेटलो अबाधाये लोकनो अंत कह्योछे एम च्यार दिशिये लेवु वालुकाप्रभाना पूर्वदिशि भागना चर
षा. मांतथकी एहवीज पृछाये हे गौतम त्रीजा भागे सहित तेर योजन अबाधाये लोकांत जाणवो एम च्या
रे दिशाये पण जाणवुं एम सघली पृथिवीये दिशि विदिशिने विषे प्रश्न उत्तर जाणवा पंकप्रभापृथिवी
ये चउद योजन अबाधाये लोकांत जाणवो धूमप्रभापृथिवीये त्रिभाग ऊणा पन्नर योजननो अबाधा

ा. ११८ टीका. इमीसेणं भंते इत्यादि अस्या भदंत रत्नप्रभायाः पृथिव्याः पूर्वदिग्भावी चरमांतो पांतराललक्षण कतिविधः कतिप्रकारः कतित्रिभाग इत्यर्थः. प्रज्ञप्तः भगवानाह गौतम त्रिविधः प्रज्ञप्तस्तद्यथा घनोदधिवलयो वलयाकारघनोदधिरूप इत्यर्थः एवं घनवातवलयस्तनुवातवलयश्च इयमत्र भावना सर्वासा पृथिवीनामधो यत् प्राक् बाहुल्येन घनोदध्यादीना परिमाणमुक्तं तन्मध्यभागे द्रष्टव्यं ते हि मध्यभागे यथोक्तप्रमाणबाहल्यास्ततः प्रदेशहान्या२ हीयमानाः स्वस्वपृथिवीपर्यंतेषु तनुतरभूता (तनुतरी

मूल. यणेहिं अबाधाए लोयंते पण्णत्ते धूमप्पभाए तिभागूणेहिं पण्णरसहिं जोयणेहिं अबाधाए लोयंते पण्णत्ते छठीसते भागेहिं पण्णरसहिं जोयणेहिं अबाधाए लोयंते पण्णत्ते सत्तमाए सोलसएहिं

भाषा. ये लोकांत कह्योछे छठीपृथिवीये त्रिभागे सहित पन्नर योजननो अबाधाये लोकांत कह्योछे सातमीपृथिवीये सोल योजन अबाधाये लोकांत कह्योछे हे गौतम त्रण प्रकारे एम यावत् शब्देकरिने पश्चिम दिशि दक्षिणदिशि उत्तरदिशि लेवो। एटले आ जगाये आ प्रकारनी भावना जाणवी जे सघली पृथिवीने हेठल पूर्वे बाहुल्यपणे घनोदधि आदि देई परिमाण कह्युं ते मध्य भागे जाणवुं ते मध्य भागने

भूत्वा) स्वस्वपृथिवीं वलयाकारेण वेष्टयित्वा स्थिताः अतएवामूनि वलयान्युच्यंते तेषां वलयानामुच्चैस्त्वं सर्वत्र स्वस्वपृथिव्यनुसारेण परिभावनीयं तिर्यग्बाहल्यं पुरस्तादेवक्ष्यते इदानीं तु विभागमात्रमेवापांतरालस्य प्रतिपादयितुमिष्टमिति तदेवोक्तं एवमस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः शेषासु दिक्षु एवं शेषाणामपि पृथिवीनां चतसृ

जोयणेहिं अबाधाए लोयंते पण्णत्ते एवं जाव उत्तरिल्लातो। इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए पुरत्थिमिल्ले चरिमंते कतिविधे पं० गो० तिविहे पं० तं० घणोदधिवलये घणवायवलये तणुवातवलये। इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए दाहिणिल्ले चरिमंते कतिविधे पं० गो० तिविधे पं०

विषे पूर्वे कह्या प्रमाणे जाडपणेछे माटे त्यार पछी प्रदेशहानी हानिवते पोत पोतानी पृथिवीना अंत पर्यंत सूक्ष्म थया छतां पोतपोतानी पृथिवीने वलयाकारे वींटी रह्याछे एहीज कारणे तेमनुं नाम वलय कहेवायछे ते वलयनुं उंचपणुं पोतपोतानी पृथिवीने अनुसारे भाववुं ने तिरछुबाहुल्य आगल कहेशे इहांतो विभाग मात्रज अपांतराल आंतरु कहेवानी इछा जाणवी हे भगवन् रत्नप्रभापृथिवीनो पूर्वदि

टीका. ऽपि दिक्षु प्रत्येकं विभागसूत्रं भणितव्यं संप्रति घनोदधिवलयस्य तिर्यग् बाहल्यमानमाह ॥ इमीसेणमित्यादि अस्यां भदंत रत्नप्रभायाः पृथिव्याः सर्वासु दिक्षु चरमांते घनोदधिवलयः कियत् बाहल्येन तिर्यग्बाहल्येन प्रज्ञप्तः भगवानाह गौतम षट्योजनानि बाहल्येन प्रज्ञप्तः ततऊर्द्ध । प्रतिपृथिवी योजनस्य त्रिभागोवक्त

मूलः तं० एवं चेव जाव उत्तरिल्ले एवं सव्वासिं जाव अहेसत्तमाए उत्तरिल्ले इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधिवलए केवतियं बाहल्लेणं पं० गो० छज्जोयणाणि बाहल्लेणं पण्णत्ते सक्करप्पभाए णं भंते पुढवीए घणोदधिवलए केवतियं बाहल्लेणं पं० गो० सतिभागाइं छज्जोयणाइं बाहल्लेणं

भाषाः श भावी चरमांत केटला प्रकारनो कह्योछे? हे गौतम त्रण प्रकारनो कह्योछे जिम घनोदधिवलय घन वातवलय तनुवातवलय ए प्रकारे दक्षिणदश भावी चरमांत पश्चिमदिश भावी चरमांत उत्तरदिश भावी चरमांत संबंधी प्रश्न उत्तर लेवा । ते जावत् हेठली सातमीपृथिवी पर्यंत सघली दिश संबंधि जाणवा ॥ हे भगवन् रत्नप्रभापृथिवीनो घनोदधिवलय बाहल्यपणे केटलो कह्योछे? हे गौतम छ योजननो बा

प्तयोजनानि तमःप्रभायास्त्रिभागोनान्यष्टौ योजनानि अधः सप्तमपृथिव्याः परिपूर्णान्यष्टौ योजनानि सूत्राक्षराणि तु सर्वत्र पूर्ववत् योजनीयानि ॥
व्यमस्तथा शर्कराप्रभायाः सत्रिभागानि वालुकाप्रभायास्त्रिभागोनानि सप्तयोजनानि पंकप्रभायाः परिपूर्णानि सप्तयोजनानि धूमप्रभायाः सत्रिभागानि स

पं० वालुयप्पभाए पुच्छा गो० तिभागूणाइं सत्तजोयणाइं बाहल्लेणं पं० एवं एतेणं अभिलावेणं पं
कप्पभाए सत्तजोयणाइं वाहल्लेणं धूमप्पभाए सतिभागाइं सत्तजोयणाइं पण्णत्ते तमप्पभाए
तिभागूणाइं अट्ठजोयणाइं वाहल्लेणं पण्णत्ते अहेसत्तमाए अट्ठजोयणाइं वाहल्लेणं पण्णत्ते ॥

हल्यपणे एटले जाडपणे जाणवो हे भगवन् शर्कराप्रभापृथिवीनो घनोदधिवलय बाहल्यपणे केटलो
कह्योछे? हे गौतम त्रीजे भागे सहित एटले अधिक एहवा ७ योजन जाणवा हे भगवन् वालुकाप्रभा
पृथिवीनो घनोदधिवलय बाहल्यपणे केटलो कह्योछे? हे गौतम त्रीजे भागे ऊणा एटले ओछा एहवा
सात योजन जाणवा ए प्रकारे सघली पृथिवीये जाणवा । एटले पंकप्रभापृथिवीये सात योजन परिपूर्ण

पा० १३० ॥ संप्रति घनवातवलयस्य तिर्यग्बाहल्यपरिमाणप्रतिपादनार्थमाह इमीसेणं भंते इत्यादि अस्यारत्नप्रभायाःपृथिव्या घनवातवलय स्तिर्यग्बाहल्येन अर्द्धपंचमानि

मूल. ॥ इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए घणवातवलए केवतियं बाहल्लेणं पं० गो० अद्धपंचमाइं जोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ताइं सक्करप्पभाएपु० गो० कोसुणाइं पंचजोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ताइं एवं एएणं अभिलावेणं वालुयप्पभाए पंचजोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ताइं पंकप्पभाए सक्करप्पभा

भाषा. जाणवा धूमप्रभापृथिवीये त्रीजे भागे सहित सात योजन जाणवा तमःप्रभापृथिवीये त्रीजे भागे ऊणा आठ योजन जाणवा सातमीपृथिवीये पूरा आठ योजननो घनोदधिवलय जाणवो ॥ हे भगवन् आ रतनप्रभा पृथिवीनो घनवातवलय बाहल्यपणे केटलो कह्यो छे? हे गौतम साढाच्यार योजन बाहल्य पणे कह्यो छे ए प्रकारे सर्कराप्रभा पृथिवीनो प्रश्न तेनो उत्तर हे गौतम एक कोसे ऊणा पांच योजन बाहल्यपणे जाडपणे जाणवु एज प्रकारना आलावाए करिने वालुकाप्रभापृथिवीये पांच योजन जाड

सार्द्धानि चत्वारि योजनानि प्रज्ञप्तः अतऊर्द्ध्वं तु प्रतिपृथिवि गव्यूतं वर्द्धनीयं तथाचाह द्वितीयस्या. पृथिव्याः क्रोशोनानि पंचयोजनानि तृतीयस्याः पृथिव्याः परिपूर्णानि पंचयोजनानि चतुर्थ्याः पृथिव्याः सक्रोशानि पंचयोजनानि पंचम्याः पृथिव्याः अर्द्धषष्ठानि सार्द्धानि पंचयोजानि षष्ठ्याः पृथिव्याः क्रोशोनानि

ए सक्कोसाइं पंचजोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ताइं धूमप्पभाए अद्धछठाइं जोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ताइं धूमप्पभाए कोसूणाइं छजोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ताइं अहेसत्तमाए छजोयणाइं बाहल्लेणं पण्णत्ताइं इमीसेणं भंते रतणप्पभाएपुढवीए तणुवायवलये केवतियं बाहल्लेणं पं० गो० छक्कोसेणं

पणे कह्यो छे पंकप्रभापृथिवीये एक कोसे सहित पांच योजन जाणवा धूमप्रभापृथिवीये साढापांच योजन बाहल्यपणे कह्यो छे तमःप्रभापृथिवीए एक कोसे उणा छ योजन बाहल्यपणे कह्यो छे सातमीपृथिवीये छ योजन पुरा बाहल्यपणे कह्यो छे हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीनो तनुवातवलय बाहल्यपणे केटलो कह्यो छे? हे गौतम छ कोस जाडपणे कह्यो छे ए प्रकारना आलावाये करिने शर्कराप्रभापृथि

।' ७३२ टीका।

षट्योजनानि सप्तम्याः पृथिव्याः परिपूर्णानि षट्योजनानि संप्रति तनुवातवलयस्य तिर्यग्बाहल्यपरिमाणप्रतिपादनार्थमाह इमीसेणं भंते इत्यादि अस्या भदंत रत्नप्रभायाः पृथिव्यास्तनुवात वलयः कियत् किंप्रमाणं बाहल्येन प्रज्ञप्तः भगवानाह षट्क्रोशं बाहल्येन प्रज्ञप्तः अतऊर्द्धंतु पृथिविक्रोशस्य त्रिभागो वर्द्धनीयः

मूल.

बाहल्लेणं पं० एवं एतेणं अभिलावेणं सक्करप्पभाए सतिभागे छक्कोसे बाहल्लेणं पण्णत्ते वालुप्प भाए तिभागूणे सत्तक्कोसे बाहल्लेणं पण्णत्ते पंकप्पभाए पुढवीए सत्तकोसे बाहल्लेणं पण्णत्ते धूम प्पभाए सतिभागे सत्तकोसे बाहल्लेणं पण्णत्ते तमाए तिभागूणे अठकोसे बाहल्लेणं पण्णत्ते अहे

भाषा.

वीये त्रीजा भागे सहित छ कोस जाडपणे जाणवो वालुकाप्रभापृथिवीये त्रीजे भागे उणा सात कोस जाडपणे कह्या छे पंकप्रभापृथिवीये पूरा सात कोस जाडपणे कह्या छे धूमप्रभापृथिवीये त्रीजे भागे स हित सात कोश जाडपणे कह्या छे तमःप्रभापृथिवीये त्रीजे भागे उणा आठ कोश जाडपणे कह्या छे ए हेठली सातमी पृथिवीये आठ कोस पूरा जाडपणे कह्या छे हे भगवन् रतनप्रभा

का. तथाप्याह द्वितीयस्याःपृथिव्याः सत्रिभागोनान्षट् क्रोशान् बाहल्येन प्रज्ञप्तः तृतीयस्याः पृथिव्याः त्रिभागोनान् सप्तक्रोशान् चतुर्थ्याः पृथिव्याः परिपूर्णान्

सत्तमाए पुढवीए अद्धकोसे बाहल्लेणं पण्णत्ते। इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए घणोदधि

प्र. वलयस्स छजोयण बाहल्लस्स खेत्त छेएणं छिज्जमाणस्स अत्थिदव्वाइं वण्णउकाल जाव हंता अ

त्थि सक्करप्पभाए णं भंते पुढवीए घणोदधिवलयस्स सतिभाग छज्जोयण बाहल्लस्स खेत्त छेए

पृथिवीनो घनोदधिवलय छ योजननो बाहल्यपणे छे ते क्षेत्र छेदवे करिने विभाग प्रतररूप द्रव्य वर्णथकी काला आदिछे एम जावत् पाठ लेवो ए प्रश्न हे गौतम एमजछे हे भगवन् शर्कराप्रभापृथि

भा. वीनो घनोदधिवलय त्रीजे भागे सहित छ योजननो बाहल्यपणेछे ते क्षेत्र छेदवेकरिने छेदि प्रतररूप विभाग करे छते पूर्वनी पेरे प्रश्न तथा उत्तर जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवा हे भगवन् रत्नप्रभापृथिवीनो धनवातवलय साडाच्यार योजन बाहल्यपणेछे ते क्षेत्र छेदवेकरिने छेदि विभागे करे

पा. ९३९ सप्तक्रोशान् पंचम्याः पृथिव्या सत्रिभागान् षष्ट्याः पृथिव्यास्त्रिभागोनान् अष्टौ क्रोशान् अधःसप्तम्याः परिपूर्णान् अष्टौ क्रोशान् उक्तंच उक्तेव अद्धपं

टीका. चमजोयण सद्धं च होइ रयणाए उदहीघणतनुवाया जहासंखेणनिद्दिट्ठा १ तिभागो गाउयंचेव तिभागो गाउयस्सय आइधुवे पक्खेवो मज्झेअहो भावसत्तमिया २

णं छेज्जमाणस्स जाव हंता अत्थि एवं जाव अहेसत्तमाए जंजस्स बाहल्लं इमीसेणं भंते रयण

मूल. प्पभाए पुढवीए घणवायवलयस्स अद्धपंचमजोयण बाहल्लस्स खेत्त छेदेणं छिज्ज जाव हंता अ

त्थि एवं जाव अहेसत्तमाए जंजस्स बाहल्लेणं एवं तणुवातवलयस्सवि जाव अहेसत्तमा जंजस्स

थके पूर्वनी पेठे प्रश्न तथा तेना उत्तर जावत् हेठली सातमीपृथिवी पर्यंत जाणवा एमज तनुवातव

लयनो पण प्रश्न उत्तर हेठली सातमीपृथिवी पर्यंतनो जाणवो ने जेम जेनुं जाडपणुं कह्युंछे तेम जा

भाषा. णवुं हवे घनोदधि प्रमुखनां संस्थानने केहेवानुं प्रश्नसूत्र कहेछे हे भगवन् रत्नप्रभापृथिवीनो घनोदधि

वलय केवा संस्थाने रह्योछे एटले केनी पेरे रह्योछे हे गौतम वाटलो (वलय) (चूडी) ए प्रकारना

एतेषां च त्रयाणामपि घनोदध्यादिविभागानां एकत्रमीलने प्रतिपृथिवि यथोक्तं अपांतरालमानं भवति संप्रति एतेष्वेवघनोदध्यादि वलयेषु क्षेत्रभेदेन छ

ण्णवर्ण्णा सुपेतं द्रव्यास्तित्वप्रतिपादनार्थमाह इमीसेणं भंते इत्यादि अस्या भदंत रत्नप्रभायाः पृथिव्या घनोदधिवलयः किमिव संस्थितः किसन्स्थित. प्रश्नः भ

गवानाह गौतम वृत्तः चक्रवालतया परिवर्तुलो वलयस्य मध्यशुषिर वृत्तविशेषस्याकार आकृति र्वलयाकार इव संस्थानं वलयाकारसंस्थानं तेन संस्थितो वलयाकारसं

वाहल्लं इमीसेणं भंते रयणप्पभाएपुढवीए घणोदधिवलये किं संठिए पं० गो० वट्टवलयागार संठाण संठिते पण्णत्ते जेणं इमं रयणप्पभ पुढविं सव्वतो समं तासं परिक्खिवित्ताणं चिट्ठंति एवं जाव अहेसत्तमाए पुढवीए घणोदधिवलये णवरं अप्पाणं पुढविं संपरिक्खिवित्ताणं चिट्ठंति इमी

आकारे रह्यो छे जे कारण माटे रतनप्रभापृथ्वीने च्यारे पास सघली दिशाये वीटीने रह्यो छे एम जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवुं वली एटलो विशेष जे पोतपोतानी पृथिवीने वींटी रह्यो छे हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीनो घनवातवलय कीये आकारे रह्यो छे? हे गौतम पूर्वनी पेठे एटले घनोद

॥. ७३३ स्थानसंस्थितः कथमेवं गम्यते वलयाकारसंस्थानसंस्थित इति तत्राह जेणमित्यादि येन कारणेन इमां रत्नप्रभां पृथिवीं सर्वतः सर्वासु दिक्षु विदिक्षु च संप रिक्षिप्य सामस्त्येन वेष्टयित्वा तिष्ठति वर्त्तते तेन कारणेन वलयाकारसंस्थानसंस्थितः प्रज्ञप्तः एवं घनवातवलयसूत्रं तनुवातवलयसूत्रं च परिभावनीयं नवरं

मूलः सेणं भंते रयणप्पभाएपुढवीए घणवातवलए किं संठिते पं० गो० वट्टवलायागारे तहेव जाव जेणं इमीसेणं रयणप्पभाएपुढवीए घणोदधिवलयं सव्वतो समं तासं परिखिवित्ताणं चिट्ठइ एवं जाव अहेसत्तमाए घणवातवलयं इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए तणुवातवलये किं संठिते पं० गो० वट्टवलयागार संठाण संठिए जाव जेणं। इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए घणवातव

भाषा. धिवलयनी पेठे घनवातवलय पण चूडीने आकारे वींटीने रह्यो छे जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवुं हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीनो तनुवातवलय केवा संस्थाने एटले आकारे रह्यो छे? हे गौतम पूर्वनी पेठे वलयाकार संस्थाने रह्यो छे जावत् शब्दे करिने जेम घनवातवलय रतनप्रभापृथिवीने

घनवातवलयो घनोदधिवलयं संपरिक्षिप्येति वक्तव्यं तनुवातवलयो घनवातवलयं संपरिक्षिप्येति एवं शेषास्वपि पृथिवीषु प्रत्येकं त्रीणि त्रीणि सूत्राणि भाव
नीयानि ॥ इमाणं भंते इत्यादि इयं भदंत रत्नप्रभापृथिवी कियता आयामविष्कंभेन समाहारोद्वंद्वः आयामविष्कंभाभ्या प्रज्ञप्ता भगवानाह असंख्येयानि योजन
सहस्राणि आयामविष्कंभेन किमुक्तं भवत्यसंख्येयानि योजनसहस्राणि आयामतोऽसंख्येयानि योजनसहस्राणि विष्कंभेन आयामविष्कंभयोस्तु परस्परमल्पबहु

लयं सव्वतो समं तासं परिक्खिवित्ताणं चिट्ठंति एवं जाव अहेसत्तमाए तणुवातवलयं ॥
॥ इमाणं भंते रयणप्पभापुढवी केवतियं आयामविक्खंभेणं पं० गो० असंखेज्जाइं जोयणसह

वींटी रह्यो तेम एम सघली दिशिये तनुवातवलय पण वींटी रह्यो छे ए प्रकारे जावत् हेठली सातमी पृ
थिवी पर्यंत जाणवुं ॥ हे भगवन् रतनप्रभापृथिवी लांबपणे तथा पोहलपणे केटली छे? हे गौतम रतन
प्रभापृथिवी लांबपणे असंख्याता हजारो योजनछे ने पोहलपणे असंख्याता हजारो योजनछे. लांबपणानुं
तथा पोहोलपणानुं अल्पबहुत्व विचारतां बरोबरपणुं जाणवुं असंख्याता हजारो योजन परिधिपणे कह्योछे

।॰ ७३४

टीका.

त्वचिंतने तुल्यत्वं तथा असंख्येयानि योजनसहस्राणि परिक्षेपेण परिधिना प्रज्ञप्ता एवमेकैका पृथिवी तावद्वक्तव्या यावदधः सप्तमी पृथिवी इमाणंभंते इत्यादि इयं भदंत रत्नप्रभापृथिवी अंते च मध्ये च सर्वत्र समा बाहल्येन पिंडभावेन प्रज्ञप्ता भगवानाह गौतमेत्यादि सुगमं एवं क्रमेणैकैकापृथिवी तावद्वक्तव्या यावत्सप्तमी । इमीसेणं भंते इत्यादि अस्यां रत्नप्रभायांपृथिव्यां सर्वजीवा सामान्येन उपपन्नपूर्वाः कालक्रमेण तथा सर्वजीवा उपपन्नाउत्पन्ना युगपत् भगवानाह गौ

मूलं.

स्साइं आयामविरकंभेणं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिरक्खेवेण पण्णत्ता एवं जाव अधोसत्तमा इमाणं भंते रतणप्पभापुढवी अंतेयमज्जेय सव्वत्थसमा बाहल्लेणं पं० हंता गो० इमाणं रतण

भाषा.

एम हेठली सातमी पृथिवी सुधी जाणवुं । हे भगवन् रतनप्रभापृथिवी अंते मध्ये सघले ठेकाणे सरखी पिंडभावे जाडपणे कहीछे? हे गौतम रतनप्रभापृथिवी अंते मध्ये सघले सरखी जाडपणेछे एम जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवु हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीने विषे सर्वे जीव सामान्यपणे कालना अनुक्रमे पूर्वे उत्पन्न थया तथा सर्वे जीव समकाले उत्पन्न थया हे गौतम रतनप्रभापृथिवीने विषे सांव्यवहारिक रा

टी. तत्र अस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यां सर्वजीवाः सांव्यवहारिकजीवराश्यंतर्गताः प्रायोवृत्तिमाश्रित्य सामान्येन उपपन्न पूर्वा उत्पन्नपूर्वाः कालक्रमेण संसारस्यानादि त्वात् नपुन सर्वजीवा उपपन्ना उत्पन्ना युगपत् सकलजीवानामेककाल रत्नप्रभापृथिवीत्वेनोत्पादे सकलदेवनारकादिभेदाभावप्रसक्ते नचैतदस्ति तथा जगत्स्वा भाव्यात् एवमेकैकस्याः पृथिव्या स्तावद्वक्तव्यं यावदधः सप्तम्या इमाणामित्यादि इयं भदंत रत्नप्रभापृथिवी सर्वजीवैर्विजढपुव्वा इति सर्वजीवैः कालक्रमेण

मू. प्पभाएपुढवीए अंतेयमझेय सव्वत्थसमा बाहल्लेणं एवं जाव अधोसत्तमा इमीसेणं भंते रतण

भा. शिमां आवेला सर्वे जीव बाहुल्लपणे कालना अनुक्रमे उत्पन्न थया केमजे कालनुं अनादिपणु छे माटे प ण सर्वे जीव समकाले उत्पन्न थया नथी केमजे सकल जीव एक काले रतनप्रभापृथिवीने विषे उत्प न्न थाय तो सकल देव तथा नारकी एहवा भेदनो अभाव थाय ने तेहवा भेदनो अभाव देखातो नथी केमजे तेहवो जगत्नो सद्भाव छे स्वभाव छे ए हेतु माटे एम जावत् सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवुं हे भग वन् रतनप्रभापृथिवी सर्व जीवे कालना अनुक्रमे पूर्वे परित्याग करी तथा सर्व जीवे समकाले परित्या

गा॰ ७३५ टीका. परित्यक्तपूर्वा तथा सर्वजीवै र्युगपत् विलढा परित्यक्ता भगवानाह गौतम इयं रत्नप्रभापृथिवी प्रायोवृत्तिमाश्रित्य सर्वजीवैः सांव्यवहारिकैः कालक्रमेण परित्यक्तपूर्वा नतु युगपत् परित्यागस्या संभवात् तथानिमित्ताभावात् एवं तावद्वक्तव्यं यावदधः सप्तमी पृथ्वी इमीसेणमित्यादि अस्यां भदंत रत्नप्रभायां पृथिव्यां सर्वे पुद्गला लोकोदरविवरवर्त्तिनः कालक्रमेण प्रविष्टपूर्वा स्तद्भावेन परिणतपूर्वाः तथा सर्वे पुद्गला. प्रविष्टा एक काले तद्भावेन परिणता भगवानाह गौतम

मूल. प्पभाएपुढवीए सव्वजीवा उववन्नपुव्वा सव्वजीवा उववन्ना गो॰ इमीसेणं रतणप्पभाएपुढवीए सव्वजीवा उववणपुव्वा नोचेवणं सव्वजीवा उववण्णा एवं जाव अधेसत्तमाएपुढवीए इमाणं भंते

भाषा. ग करी? हे गौतम आ रतनप्रभापृथिवी सर्वे व्यवहारीक जिवोये कालक्रमे करीने पूर्वे परीत्याग करी नतु कहेतां नही समकाले एकेकाले परित्याग करवानो संभव नथी ए हेतु माटे तथा ते प्रकारना निमित्तनो अभावछे ए हेतु माटे ए प्रकारे जावत् सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवुं ॥ हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीने विषे सघला पुद्गल पूर्वे प्रविष्ट कहेतां ते भावे परिणम्या तथा एक काले ते भावे परिणम्या हे गौतम रत

अस्यां रत्नप्रभायां सर्वे पुद्गला लोकवर्त्तिनः प्रविष्टपूर्वा स्तद्भावेन परिणतपूर्वाः संसारस्यानादित्वात् नपुनरेककालं सर्वपुद्गला· प्रविष्टा स्तद्भावेन परिणताः

.ञा. सर्वपुद्गलानां तद्भावेन परिणतौ रत्नप्रभाव्यतिरेकेणान्यत्र सर्वत्रापि पुद्गला भावप्रसक्ते र्नचैतदस्ति तथा जगत्स्वाभाव्यात् एवं सर्वासु पृथिवीषु क्रमेण वक्तव्यं यावदधः सप्तम्यां पृथिव्यामिति इमाणं भंते इत्यादि इयं भदंत रत्नप्रभापृथिवी सर्वपुद्गलै कालक्रमेण विजढपुव्वा इति परित्यक्तपूर्वा तथा सर्वपुद्गलैरेकका

ल रयणप्पभापुढवी सव्वजीवेहिंविजढपुव्वा सव्वजीवेहिंविजढा गो० इमाणं भंते रयणप्पभापुढवी

नप्रभापृथिवीने विषे सर्वे पुद्गल ते भावे पूर्वे परिणम्या पण सर्वे पुद्गल एक काले ते भावे नथी परिण म्या केमजे सर्व पुद्गल ते भावे परिणति थाय तो रतनप्रभा विना बीजे सघले पण पुद्गलनो अभाव

षा. थाय ने तेवो अभाव तो नथी दीसतो केमजे ते प्रकारना जगतना सद्भावथी स्वभावथी ए प्रकारे जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवुं ॥ हे भगवन् रत्नप्रभापृथिवी सघला पुद्गले कालना अनुक्रमे पूर्वे परित्याग करि तथा सर्वे पुद्गले समकाले परित्याग करी? हे गौतम रत्नप्रभापृथिवी सर्वे पुद्गले

।. ७३६ लं परित्यक्ता भगवानाह गौतम इयं रत्नप्रभापृथिवी सर्वपुद्गलै कालक्रमेण परित्यक्तपूर्वा संसारस्यानादित्वात् नपुनः सर्वपुद्गलैरेककालं परित्यक्ता सर्वपुद्ग

टीका. लैरेककालं परित्यागे तस्याः सर्वथा स्वरूपाभावप्रसक्ते नंचैनदस्ति तथा जगत्सभाव्यत शास्वतत्वादेतच्चानंतरमेववक्ष्याति एवमेकैका पृथिवी क्रमेण तावद्वाच्या यावदधःसप्तमीपृथिवी ॥ इमाणं भंते इत्यादि इयं भदंत रत्नप्रभापृथिवी किंशास्वती अशास्वती भगवानाह गौतम स्यात् कथंचित् कस्यापि नयस्याभिप्रायेणे

मूल. सव्वजीवेहिंविजढपुव्वा नोचेवणं सव्वजीवेहिंविजढा एवं जाव अधेसत्तमा इमीसेणं भंते रयण प्पभाएपुढवीए सव्व पोग्गलापविठ्ठपुव्वा सव्वपोग्गलापविठ्ठा गो० इमीसेणं रयणप्पभाएपुढवीए

पूर्वे तजी परित्याग करी पण समकाले सर्वे पुद्गले नथी परित्याग करी केमजे सर्वे पुद्गले एके का ले परित्याग करी होत तो ते पृथिवी सर्वथा स्वरूपथीज न होत अने तेहवुं तो दीसतु नथी केमजे ते हवोज जगतनो सद्भावछे स्वभावछे माटे एटले शास्वतापणाथी ते आगल कहेशे एम जावत् हेठली सा तमीपृथिवी पर्यंत जाणवुं। हे भगवन् रत्नप्रभापृथिवी शुं शास्वतीछे के अशास्वतीछेः हे गौतम शास्वती

त्यर्थः शास्वती स्यात् कथंचित् असास्वती एतदेव सविशेषं जिज्ञासुः पृच्छति सेकेणट्ठेणमित्यादि सेशब्दोथशब्दार्थः सचप्रश्ने केनार्थेन कारणेन भदंत एवमु
च्यते यथा स्यात् शास्वती स्यादशास्वतीति भगवानाह गौतम दव्वट्ठयाए इत्यादि द्रव्यार्थतया शास्वती तत्र द्रव्यं सर्वत्रान्वयिसामान्यमुच्यते द्रवति गच्छति तान्
का. तान् पर्यायान् विशेषानिति वा द्रव्यमिति व्युत्पत्तेः द्रव्यमेवार्थ स्तात्विकपदार्थो यस्य न तु पर्यायाः सद्रव्यार्थो द्रव्यमात्रास्तित्व प्रतिपादको नयविशेषस्तद्भावो

सव्वपोग्गलापविट्ठपुव्वा नोचेवणं सव्वपोग्गलापविट्ठा एवं जाव अहेसत्तमाए पुढवीए इमाणं
ल. भंते रयणप्पभाए पुढवी सव्वपोग्गलेहिं विजढपुव्वा सव्वपोग्गलाविजढा गो० इमाणं

पण छे ने अशास्वती पण छे। हे भगवन् ते शे कारणने अर्थे एम कहोछो जे शास्वती पण छे ने अशास्वती
पण छे: हे गौतम द्रव्यार्थपणाथी शास्वती ने वर्णपर्यायथकी तथा गंधपर्यायथकी तथा रसपर्यायथकी त
षा. था स्पर्शपर्यायथकी अशास्वती। एटले कोइक प्रकारे कोइक नयना अभिप्राये शास्वती ने कोइक नयना
अभिप्राये अशास्वती तेमां द्रव्यार्थ नय मते शास्वती देखाडेछे जे द्रव्य ने अर्थ ए बे शब्दनो ए अर्थछे

भा. ९३५ द्रव्यार्थता तयाऽन्यमात्रास्तित्व प्रतिपादक नयाभिप्रायेणेति यावत् शास्वती द्रव्यार्थिक नयमतपर्यालोचनायामेवंविधस्य रत्नप्रभायाः पृथिव्या आकारस्य सदा

टीका. भावात् वर्णापर्यायैः कृष्णादिभिर्गंधपर्यायैः सुरभ्यादिभिः रसपर्यायैस्तिक्तादिभिः स्पर्शपर्यायैः कठिनत्वादिभिः अशास्वती अनित्या तेषां वर्णादीना प्रतिक्षणं कियत्कालानंतरं वा न्यथान्यथा भवनात् अतादवस्थ्यस्य चानित्यत्वात् नचैवमपिभिन्नाधिकरणे नित्यत्वानित्यत्वे द्रव्यपर्याययो

मूल. भंते रयणप्पभाए पुढवी सव्वपोग्गलेहिं विजढपुव्वा नोचेवणं सव्वपोग्गलेविजढा एवं जाव

भाषा: जे ते ते सविशेष पर्यायने पामे तेने द्रव्य कहीये एहवो ए द्रव्य शब्दमां अर्थ रह्योछे जेनो द्रव्य एहीज अर्थ एटले तात्विक पदार्थ छे तेने द्रव्यार्थ कहीये पण पर्याय अर्थ नथी एहीज द्रव्य मात्रनुं अस्ति पणु एटले छतापणु तेने प्रतिपादन करनार एटले कहेनार एहवो जे नय विशेष तेहना अभिप्राये क रिने शास्वती द्रव्यार्थिक नयमतनो विचार करतां ए प्रकारे रतनप्रभापृथिवीनो आकार सदा वरते छे ने वर्णपर्याये करिने एटले कालादि वर्णे करिने तथा गंध पर्याये करिने एटले सुरभिआदि गंध पर्याये

जेदाजेदोपगमात् । अन्यथोजयोरप्यसत्वापत्तेः तथाहि शक्यते वक्तुं परपरिकल्पितं द्रव्यमसत् पर्यायव्यतिरिक्तत्वात् बालत्वादिपर्यायशून्य वंध्या सुतवत् तथा परपरिकल्पिताः पर्याया असतः द्रव्यत्वव्यतिरिक्तत्वात् वंध्यासुतगत बालत्वादिपर्यायवत् उक्तंच द्रव्यं पर्यायवियुतं पर्याया द्रव्य वर्जिताः क्व
का. कदा केनकिंरूपा दृष्टा मानेन केनवा इति कृतंप्रसंगेन विस्तरार्थिना धर्मसंग्रहणि टीका तु निरूपणीया सेएएणठेणमित्याद्युपसंहारमाह से शब्दो थ शब्दार्थः

अहेसत्तमा इमाणं जंते रयणप्पत्ना पुढवी किंसासता असासता गो० सिय सासता सिय
ज: असासता सेकेणठे णं जंते एवं वुच्चइ सिय सासता सिय असासता गो० दव्वठयाए सासता

करिने तथा रस पर्याये करिने एटले तिखाआदि पर्याये करिने तथा स्पर्श पर्याये करिने एटले क ठिणआदि पर्याये करिने अशास्वती अनित्या केमजे ते वर्णादिकनो क्षणे२ अथवा केटलाक कालने
षा. अनंतर अन्यथा२पणानुं देखावापणुं थाय ठे माटे तदवस्थपणु नथी माटे अनित्य ठे ने जो द्रव्यनु तथा पर्यायनुं नित्यपणु तथा अनित्यपणु ए बेनुं अधिकरण जिन्न२ होय तो ए बेनुं पण असत्पणु थाय जे

टीका. सचात्र वाक्योपन्यासे अथ एतेनानंतरोदितेन कारणेन गौतम एवमुच्यते स्यात् शास्वती स्यादशास्वती एवं प्रतिपृथिवि तावद्वक्तव्यं यावदधः सप्तमी पृथिवी इह यत् यावत्संजवास्पदं तच्च तावंतं कालं शश्वद्भवति तदा तदपि शास्वतमुच्यते यथा तंत्रांतरेषु आकप्पट्ठाईपुढवीसासया इत्यादि ततः संशये किमेषा रत्नप्रजा पृथिवी सकलकालावस्थायितया शास्वती उतान्यथा यथा तंत्रांतरीयैरुच्यते इति ततस्तदपनोदार्थं पृछति इमाणं जंते इत्यादि इयं जदंत रत्नप्रजा पृथिवी कालतः

मूल. वण्णपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासता सेतेणठे णं गोयमा एवं वुच्चति

भाषा. म अन्यदर्शनी लोकोये कल्पेलुं द्रव्य असत् छे केमजे पर्याय रहित छे माटे जिम बालपणुआदिक पर्याये रहित वांझणीनो छोकरो असत् छे तेनी पेठे वली अन्यदर्शनी लोकोये कल्पेला पर्याय पण असत् छे केमजे द्रव्य रहित छे माटे जिम वांझणीना छोकराने विषे बालपणुआदि पर्याय कहे तेनी पेठे माटे द्रव्य छे ते पर्याय रहित नथी ने पर्याय छे ते द्रव्य रहित नथी ए वातनो विस्तार धर्मसंग्रहणिआदिकनी टीकाथी जाणवो ए प्रकारे हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत शास्वता असाश्वतापणानो विचार जाण

टीका. देवस्य शाश्वती शश्वद्भाव प्रजयाजावात् शाश्वतत्वादेव च सतत गंगासिंधुप्रवाहप्रवृत्ता वपि पौंमरीकहृदइयान्यतरपुद्गलविचटनेऽप्यन्यतरपुद्गलो पचयजावादक्षया अक्षयत्वादेव चाव्यया मनुषोत्तराद्बहि. समुद्रवत् अव्ययत्वादेवावस्थिता स्वप्रमाणावस्थिता सूर्यमंमलादिवत् एवं सदावस्थानेन चिंत्यमानानित्या जीवस्वरूपवत् यदिवा ध्रुवादयः शब्दा इंद्रशक्रादिवत् पर्यायशब्दा नानादेशजविनेयानुग्रहार्थमुपन्यस्ता इत्यदोषः एवमेकैका पृथिवी क्रमेण तावद्वक्तव्या यावदधः सप्तमी ॥ ॥ संप्रति पृथिवीषु विजागतोंतरं विचिंतयिषुरिदमाह इमीसेणं जंते इत्यादि अस्या जदंत रत्नप्रजायाः पृथिव्या रत्नकांमस्य प्रथमस्य खरकांमविजागस्य उवरि

मूल. जविस्सतिय धुवाणितया सासता अखया अव्वया अव्वठिता णिच्चा एवं जाव अहेसत्तमा ॥

जाषा. निषेधपणु निवारण करिने ठतापणु कहेठे जे पूर्वे पण हती ने वर्त्तमान काले पण ठे ने आगामिकाले पण हशे एम त्रणकाल जावीपणे करिने ध्रुव ठे स्थिर ठे निश्चे शास्वती ठे अक्षय ठे अव्यय ठे एटले कोई काले व्यय केतां नाश नथी थतो माटे अवास्थितठे एटले पोताने प्रमाणे रही ठे माटे नित्य ठे इम जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जांणवुं ॥ हे जगवन् रतनप्रजापृथिवीनो उपरल्यो चरमांत एटले

का. ल्लाठ इति उपरितमा खरमांतात् परतो योधस्तनश्चरमांतश्चरमपर्यंतः एसणामित्यादि एतत्सूत्रे पुंस्त्वनिर्देशः प्राकृतत्वात् अंतरं कियद्योजनप्रमाणं अबाधया अंत
रव्याघातरूपया प्रज्ञप्तं जगवानाह गौतम एकं योजनसहस्रं एकयोजनसहस्रप्रमाणमंतरं प्रज्ञप्तं इमसिणामित्यादि अस्या जदंत रत्नप्रजायांपृथिव्या रत्नकांडस्य

उ. इमीसेणं जंते रयणप्पजाए पुढवीए उवरिल्लातो चरिमंतातहेठिल्ले चरिमंते एसणं केवतियं अबाधाए अंतरे पं० गो० असिउत्तरं जोयणसत सहस्सं अबाधाये अंतरे पण्णत्ते । इमीसेणं जंते रयणप्पजाए पुढवीए उवरिल्लातो चरिमंताती खरकंमस्स हेठिल्ले चरिमंते एसेणं केवतियं

षा. छेमो त्यांथी मांमीने हेठल्यो छेमो एहोने केटला योजननु अबाधाये अतर कह्युं छे? हे गौतम एकलाख ने ऍशीहजार योजननुं अबाधाये अंतर कह्युंछे हे जगवन् रतनप्रजापृथिवीना उपरल्या छेमाथी मांमीने खरकांमनो हेठल्यो छेमो एहोने केटला योजननु अबाधाये अंतर कह्युं छे? हे गौतम सोलहजार योजननुं अबाधाये अंतर कह्युं छे हे जगवन् रतनप्रजापृथिवीना उपरल्या छेमाथी मांमीने रतनकांमनो हेठ

।. १४० उपरितना च्चरमांतात्परतो योवज्रकांमस्योपरितनश्चरमांत एतत् अंतरं कियत् किं प्रमाणमबाधया प्रज्ञप्तं भगवानाह गौतम एकं योजनसहस्रमबाधया अंतरं प्र
टीका. ज्ञप्तं रत्नकांमाधस्तनचरमांतस्य वज्रकांमोपरितनचरमांतस्य च परस्परसंलग्नतया उभयत्रापि तुल्य प्रमाणभावात् इमीसेणमित्यादि अस्या भदंत रत्नप्रभायाः पृ
थिव्या रत्नकांमस्योपरितनाच्चरमांतात् वज्रकांमस्य योऽधस्तनश्चरमांत एतत् अंतरं कियत् अबाधया प्रज्ञप्तं भगवानाह गौतम द्वे योजनसहस्रे अबाधया अंतरं

मूल. अबाधाए अंतरे पं० गो० सोलसजोयण सहस्साइं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते । इमीसेणं भंते
रयणप्पभाए पुढवीए उवरिल्लातो चरिमंतातो रयणस्स कंमस्स हेठिल्ले चरिमंते एसणं केवतियं
अबाधाए अंतरे पं० गो० एक्कं जोयण सहस्सं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते । इमीसेणं भंते

भाषा. ल्यो छेडो एहोने केटला योजननुं अबाधाये अंतर कह्युं छे? हे गौतम एक हजार योजननुं अबाधाये
अंतर कह्युं छे हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीना उपरल्या छेडाथी मांमीने वज्रकांमनो उपरल्यो जे छेडो
तेहोने केटलुं अबाधाये अंनर कह्युं छे? हे गौतम एकहजार योजननुं अबाधाये अंतर कह्युं छे हे भगवन्

टी. प्रज्ञप्तं एवं कांडेकांडे द्वौ द्वावालापकौ वक्तव्यौ कांडस्य चाधस्तने चरमांते चिंत्यमाने योजनसहस्रपरिवृद्धि. कर्त्तव्या यावत् रिष्टस्य कांडस्याधस्तने चरमांते चिंत्यमाने षोड शयोजनसहस्राणि अबाधया प्रज्ञप्तमिति वक्तव्यं इमीसेणामित्यादि अस्या भदंत रत्नप्रभायाः पृथिव्या रत्नकांडस्यो परितनाच्चरमांतात् परतो यः पंकबहुलस्य कांडस्यो परितनश्चर तत् कियत् किंप्रमाणमबाधया अंतरं प्रज्ञप्तं भगवानाह गौतम षोडशयोजनसहस्राणि अबाधया अंतरं प्रज्ञप्तं इमीसेणामित्यादि तस्यैव पंकबहुलस्य कांडस्या

मू. रयणप्पभाए पुढवीए उवरिल्लातो चरिमंतातो वइरस्स कंडस्स उवरिल्ले चरिमंते एसणं भंते केवतियं अबाधाए अंतरे पण्णते गो० एक्कं जोयणसहस्सं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते। इमीसेणं भंते रयणप्प भाए पुढवीए उवरिल्लातो चरिमंताते वइरस्स कंडस्स हेठिल्ले चरिमंतो एसणं भंते केवतियं अबाधाए

भा. रतनप्रभापृथिवीना उपरल्या छेडाथी मांडीने वज्रकांडनो हेठल्यो छेडो एहोने केटलो अबाधाये अंतर क ह्यो छे! हे गौतम बेहजार योजननो अबाधाये अंतर कह्यो छे ए प्रकारे कांडेकांडना हेठल्या चरमांत एटले छेडा त्यां लगे विचार करतेथके एक एक योजन वधारवुं जावत् रिष्टकांडनो उपरल्यो छेडो पन्नर

॥

. ७४१ धस्तनचरमांतएकं योजनशतसहस्रमबाधयांतरं प्रज्ञप्तं इमीसेणमित्यादि अस्या भदंत रत्नप्रभायाः पृथिव्या रत्नकांडस्योपरितनात् चरमांतात् परतोऽब्बहुलस्य य
टीका. उपरितनश्चरमांत एतत् अंतरं कियत् अबाधया प्रज्ञप्तं भगवानाह गौतम एकं योजनशतसहस्रमबाधया अंतरं प्रज्ञप्तं इमीसेणमित्यादि अस्या भदंत रत्नप्रभायाः पृथि

अंतरे पं० गो० दोजोयण सहस्साइं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते एवं जावरिठस्स उवरिल्ले पन्नरस
मूल. जोयण सहस्साइं हेठिल्ले चरिमंते सोलसजोयणसहस्साइं। इमीसेणं भंते रतणप्पभाए पुढवीए
उवरिल्लाउ चरिमंताउ पंकबहुलस्स कंडस्स उवरिल्ले चरिमंते एसणं अबाधाए केवतियं अंतरे पं० गो०

हजार योजन प्रमाणे थाय ने हेठल्यो छेडो सोलहजार योजन थाय हे भगवन् रत्नप्रभापृथिवीना उ
भाषा. परल्या अंतथकी पंकबहुलकांडनो उपल्यो जे छेडो एहोने अबाधाये केटलो अंतर कह्योछे? हे गौतम
सोलहजार योजननो अबाधाये अंतर कह्योछे ने हेठल्यो चरमांत एटले छेल्यो अंत ते एकलाख योज
ननो कह्योछे ए प्रकारे अपबहुलकांडनो उपरल्यो चरमांत ते एकलाख योजननो कह्योछे ने हेठल्यो

टी. ठया रत्नकांमस्योपरितनाच्चरमांतात् परतोऽब्बहुलस्य योऽधस्तनश्चरमांत एतत् अंतरं कियत् अबाधया प्रज्ञप्तं जगवानाह गौतम अशीत्युत्तरं योजनशतसहस्रं घनोदधेरुपरितने चरमाते पृष्टे एतदेव निर्वचनमशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रं अधस्तने पृष्टे इदं निर्वचनं द्वे योजनशतसहस्रे अवाधया अंतरं प्रज्ञप्तं, घनवातस्योपरितने चरमाते पृष्टे इदमेव निर्वचनं घनोदध्यधस्तनचरमांतस्य घनवातोपरितन चरमातस्य च परस्परं संलग्नत्वात् घनवातस्याधस्तने चरमाते एतान्निर्वचनं अ

मू. सोलसजोयणसहस्साइं अबाहाते अंतरं पं० हेठिल्ले चरिमंते एक्कंजोयणसयसहस्सं आपबहुलस्स उवरि एक्कं जोयणसयसहस्सं हेठिल्ले चरिमंते असीउत्तरं जोयणसयसहस्सं घणोदधिस्स उवरिल्ले असीउत्तरं जोयणसयसहस्सं हेठिल्ले चरिमंते दोजोयण सयसहस्साइं। इमीसेणं जंते रतणप्पजाए

बा. चरमांत एकलाखने अंशीहजार योजननो कह्योछे। घनोदधिनो उपरल्यो चरमांत एकलाखने अंशी हजार योजननो कह्योछे ने हेठल्यो चरमांत बेलाख योजननो कह्योछे ने रत्नप्रजापृथिवीना घनवातनो उपरल्यो चरमांत बेलाख योजननो कह्योछे ने हेठल्यो चरमांत असंख्यातलाख योजननो कह्योछे ने

।।· २४२ संख्येयानि योजनशतसहस्राण्यबाधया अंतरं प्रज्ञप्तं एवं तनुवातस्योपरितने चरमांते अवकाशांतरस्याप्युपरितने चरमांते इत्थमेव निर्वचनं वक्तव्यं असंख्येयानि योजनशतसहस्राण्यबाधया अंतरं प्रज्ञप्तमिति सूत्रपाठस्तुप्रत्येकं सर्वत्रापि पूर्वोक्तानुसारेण स्वयं परिभावनीयः सुगमत्वात् ॥ दोच्चाएणं भंते इत्यादि द्वितीयस्या

मूल. पुढवीए घणवातस्स उवरिल्ले चरिमंते दोजोयणसहस्साइं हेठिल्ले चरिमंते असंखेज्जाइं जोयणसय सहस्साइं । इमीसेणं भंते रतणप्पभाए पुढवीए तणुवातस्स उवरिल्ले चरिमंते असंखेज्जाइं जोयण सतसहस्साइं अबाधाए अंतरे हेठिल्ले वि संखेज्जाइं जोयणसतसहस्साइं एवं उवासंतरेवि ॥ सक्करप्पभाए णं भंते पुढवीए उवरिल्लातो चरिमंतातो हेठिल्ले चरिमंते एसणं केवतियं अबाधाए अंतरे

भाषा. रत्नप्रभापृथिवीना तनुवातना उपरल्या चरमांते असंख्यात हजार योजननो अबाधाये अंतर कह्योछे ने हेठल्या चरमांते असंख्यात लाख योजननो अंतर कह्योछे ए प्रकारे अवकाशांतरने विषे पण समजवुं ॥ हे भगवन् बीजी शर्कराप्रभा नामे पृथिवीनो उपल्यो चरमांत तेथी हेठल्यो चरमांत एहने केटलो अ

टी. भदंतास्याः पृथिव्या उपरितनाच्चरमांतात् परतो योधस्तनश्चरमांत एतत् किंप्रमाणमबाधया अंतरं प्रज्ञप्तं भगवानाह गौतम द्वात्रिंशदुत्तरं द्वात्रिंशत्सहस्राधिकं योजनशतसहस्रं अबाधया अंतरं प्रज्ञप्तं घनोदधेरुपरितने चरमांते पृष्टे एतदेव निर्वचनं द्वात्रिंशदुत्तरं योजनशतसहस्रं अधस्तने चरमाते पृष्टे इदं निर्वचनं द्विपंचाशदुत्तरं योजनशतसहस्रं एतदेव घनवातस्यो परितनचरमांत पृछायामपि घनवातस्याधस्तनचरमांतपृछायां तनुवातावकाशांतरयो

मू. पं० गो० बत्तीसुत्तरं जोयणसतसहस्सं अबाहाए अंतरे पण्णत्ते सक्करप्पभाए णं भंते पुढवीए उवरि घणोदधिस्स हेठिल्ले चरिमंते बावण्णुत्तरं जोयणसयसहस्सं अबाधाए घणवातस्स असंखेज्जाइं जोयण

भा. बाधाये अंतर कह्योछे? हे गौतम एकलाख ने बत्रीशहजार योजननो अबाधाये अंतर कह्योछे हे भगवन् शर्कराप्रभापृथिवीनो उपलयो चरमांत तेथकी घनोदधिना हेठल्या चरमांतनुं आंतरु केटलुं कह्युंछे? हे गौतम एकलाखने बावनहजार योजननुं अबाधाये आंतरु कह्युंछे ने घनवातने असंख्यात लाख योजननुं आंतरु कह्युंछे ए प्रकारे जावत् जिहां लगि अवकाशांतर तिहां पर्यंत आंतरु कहेवुं ने जावत्

टीका. रुपरितनाधस्तनचरमांतपृछा सुच यथा रत्नप्रजायां तथा वक्तव्यमसंख्येयानि योजनशतसहस्राण्यबाधया अंतरं प्रज्ञप्तमिति वक्तव्यमितिजावः तच्चाए एांजंते इत्यादि तृतीयस्या जदंत पृथिव्या उपरितनाच्चरमांतात् अधस्तनश्चरमांत एतदंतरं कियत् अबाधया प्रज्ञप्तं जगवानाह अष्टाविंशत्युत्तरं अष्टाविंशति सहस्राधिकं योजनशतसहस्रमबाधयांतरं प्रज्ञप्तं एतदेव घनोदधेरुपरितनचरमांतपृछायामपि निर्वचनं अधस्तनचरमांतपृछायामष्टाचत्वारिंशडुत्तरं योजनशतसह

मूल. सहस्साइं पण्णत्ताइं एवं जाव उवासंतरस्सवि जावअहेसत्तमाए णवरं जीसे जं बाहल्लं तेण घणोदही सं बंधेयव्वो बुद्धीए सक्करप्पजाए अणुसारेणं घणोदधिसहिताणं इमं पमाणं वालुयप्पजाए अमयालीसुत्त

जाषा. जिहां सुधी सातमीपृथिवी तिहां पर्यंत आंतरु कहेवुं तेमां एटलो विशेष जे जेनुं जेटलुं जाडपणुंबे ते संघाथे घनोदधिनो संबंध पोतानी बुद्धिये जोडवो शर्कराप्रजापृथिवीना जाडपण साथे घनोदधिने मेल वीए त्यारे एज प्रकारनुं प्रमाण थाय वालुकाप्रजाने घनोदधिनुं मान ते एकलाखने अडतालीसहजार योजन थाय पंकप्रजापृथिवीये घनोदधि जलवे बते एकलाख चालीसहजार योजन थाय धूमप्रजापृ

ऽमवाधया अंतरं प्रज्ञप्तमिति वक्तव्यं एतदेव घनवातस्योपरितनचरमांतपृच्छायामपि अधस्तनचरमांते पृच्छायां तनुवातावकाशांतरयोरुपरितनाधस्तनचरमांतपृच्छ
सुच यथा रत्नप्रभायां तथा वक्तव्यं एवं चतुर्थ पंचमषष्टसप्तमपृथिवी विषयसूत्राण्यपि भावनीयानि । इमाणं भंते इत्यादि इयं भदंत रत्नप्रभापृथिवीद्वितीया श
र्कराप्रभा प्रणिधायाश्रित्य बाहल्येन पिंडभावेन किंतुल्या विशेषाधिका संख्येयगुणा बाहल्यमधिकृत्येदं प्रश्नत्रयं ननु एकाशीत्युत्तरयोजनलक्षमाना अपरा द्वात्रिंश ४

रं जोयणसतसहस्सं पंकप्पभाए पुढवीए चत्तालीसुत्तरं जोयणसतसहस्सं धूमप्पभाए पुढवीए अठ्ठतीसु
त्तरं जोयणसतसहस्सं तमाए पुढवीए छत्तीसुत्तरं जोयणसतसहस्स अधसतमाए पुढवीए अठ्ठावीसुत्तर
जोयणसतसहस्सं जावअहेसत्तमाए एसणं भंते पुढवीए उवरिल्लातो चरिमंतातो उवासंतरस्स हेठिल्ले

थिवीये घनोदधिनुं प्रमाण भलवे छते एकलाख अडत्रीशहजार योजन थायतमःप्रभापृथिवीये ८
एकलाख छत्रीशहजार योजन थाय हेठली सातमीपृथिवीये एकलाख अठावीशहजार योजन थाय ए
प्रकारे सातमीपृथिवी पर्यंत जाणवुं हे भगवन् ए सातमीपृथिवीनो उपल्यो चरमांत तेथी अवकाशांतर

1. ७४४ टीका. उत्तरयोजनलक्ष्माणीत्युक्तं तदर्थविगमे सत्युक्तलक्षणं प्रश्नत्रयमयुक्तं विशेषाधिकेति स्वयमेवार्थपरिज्ञानात् सत्यमेतत् केवलं ज्ञप्रश्नोयं तदन्यमोहापोहार्थः एत
दपि कथमवसीयते इतिचेत् स्वावबोधाय प्रश्नांतरोपन्यासात् तथाचाह विस्तरेण विष्कंभेन किं तुल्या विशेषहीना संख्येयगुणहीनेति भगवानाह गौतम इयं

मूल. चरिमंते केवतियं अबाधाए अंतरे पण्णत्ते गो० असंखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं अबाधाए अंतरे पण्ण
त्ते इमाणं भंते रतणप्पभाए पुढवीए दोच्चं पुढविं पणिहाव वाहल्लेणं किं तुल्ला विसेसाहिया संखेज्जगुणा
वित्थारेणं किं तुल्ला विसेसहीणा संखेज्जगुणहीणा गो० इमाणं भंते रयणप्पभाए पुढविं दोच्चं पुढविं प

भाषा. नो हेठल्यो चरमांत तेहने केटलुं अबाधाये आंतरु कह्युंछे? हे गौतम असंख्याता योजनना शतसहस्र
एटले लाखो गमे अबाधाये आंतरु कह्युंछे। हे भगवन् आ रत्नप्रभापृथिवी ने बीजी शर्कराप्रभा
पृथिवी ए बे आश्रिने बाहल्यपणे एटले जाडपणे शुं तुल्यछे एटले बराबरछे के विशेषाधिकछे के सं
ख्यातगुणीछे ए त्रण प्रश्न तेमां विस्तारपणे शुं बराबरछे१ विशेष हीनछे२ संख्यातगुणे हीन३ ए पण त्र

टी. रत्नप्रभा पृथिवीद्वितीयां पृथिवीं प्रणिधाय वाहल्येन च तुल्या किंतु विशेषाधिका नापि संख्येयगुणा कथमेतदेवमिति चेत् उच्यते इह रत्नप्रभापृथिवी अशी
त्युत्तरयोजनलक्षमाना शर्कराप्रभाद्वात्रिंशदुत्तरयोजनलक्षमाना तदत्रांतरमष्टाचत्वारिंशत् योजनसहस्राणि ततो विशेषाधिकोंघटते न तुल्या नापि संख्येयगुणा

णिहात वाहल्लेणं नो तुल्ला विसेसाहिता नो संखेज्जगुणा वित्थारेणं नोतुल्ला विसेसहीणा णोसंखेज्ज
मू. गुणहीणा दोच्चा ण भंते पुढवी तच्चं पुढविं पणिहात वाहल्लेणं किं तुल्ला एवं चेवभाणिय
व्वा एवं तच्चा चउत्थी पंचमी छठ्ठी । छठ्ठीणंभंते पुढवी सत्तामिं पुढविं पणिहाय वाहल्लेणं किं

ण प्रश्न संघाथे जाणवा? हे गौतम आ रत्नप्रभापृथिवी बीजी शर्कराप्रभापृथिवी आश्रिने जाडपणे तु
भा. ल्य कहेतां बरोबर नथी विशेष अधिकछे संख्यातगुणी पण नथी विस्तारपणे पुद्गलपणे तुल्य बरोब
र नथी विशेषहीनछे ते किम तो प्रदेशादिकनी वृद्धिवते वधतु तेटलुं क्षेत्र तेने विषे शर्कराप्रभापृथिवीनीज
वृद्धिनो संभवछे माटे संख्यातगुणहीन नथी ए प्रकारे बीजीपृथिवी ने त्रीजीपृथिवी आश्रिने प्रश्न उत्तर

भा. १४५ टीका. विस्तरेण न तुल्या किंतु विशेषहीना नापि संख्येयगुणा प्रदेशादिवृद्ध्या प्रवर्द्धमाने तावति क्षेत्रे शर्कराप्रभाया एव वृद्धिसंभवादेवं सर्वत्र भावनीयं ॥ ॥ संप्रति कस्यां पृथिव्यां कस्मिन् प्रदेशे नरकावासा इत्येतत्प्रतिपादनार्थं तावदिदमाह कइणं भंते इत्यादि कति भदंत पृथिव्यः प्रज्ञप्ता इति विशेषाभिधाना र्थमेतदभिहितमुक्तंच । पुव्वभणियं जं भन्नई तत्थकारणं अत्थि पडिसेहो अणुण्णाकारणविसेसोवलंभोवा भगवानाह गौतम सप्त पृथिव्यः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा रत्न प्रभा यावत्तमस्तम प्रभा इमीसेणमित्यादि अस्या भदंत रत्नप्रभायाः पृथिव्या उपरि कियत्किं प्रमाणमवगाह्य उपरितनभागात् कियत् अतिक्रम्येत्यर्थः अध

मूल. तुल्ला विसेसाहिया संखेज्जगुणा एवं चेव भाणियव्वं सेवं भंते२ नेरतिय उद्देसउ पढमो ॥ ॥ कइणं भंते पुढवीउ पं० गो० सत्तपुढवीउ पं० तं०रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा इमीसेणं भंते

भाषा. जाणवा एज प्रकारे त्रीजी ने चोथी आश्रिने तथा चोथी ने पांचमी आश्रिने तथा पांचमी ने छठी आश्रिने तथा छठी ने सातमीपृथिवी आश्रिने प्रश्न उत्तर जाणवा ए प्रकारे नारकीनो पेहेलो उद्देशो समाप्त थयो ॥ हवे केई पृथिवीने विषे कोण२ दिशे केटला नरकावासाछे ते प्रश्ननुं सूत्र कहेछे हे भगवन् केटली पृथिवी

स्मात् कियत् किंप्रमाणं वर्जयित्वा मध्ये कियति किं प्रमाणे कियंति नरकावासाः शतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि भगवानाह गौतम अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या
अशीत्युत्तर योजनशतसहस्रबाहल्यायां उपरि एकं योजनसहस्रमवगाह्याधस्तादेकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये मध्यभागे अष्टसप्तत्युत्तरे अष्टसप्ततिसहस्राधिके
टी. योजनशतसहस्रं अत्र एतस्मिन् रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां योग्यानि त्रिंशन्नरकावासशतसहस्राणि भवंतीत्याख्यातं मया शेषैश्च तीर्थकृद्भि रनेन सर्वतीर्थ ४
कृतामविसंवादिवचनता प्रवेदिता तेणं नरगाइत्यादि ते नरका अंतरमध्यभागे वृत्ता वृत्ताकारा बाह्ये बहिर्भागे चतुरस्राश्चतुरस्राकारा इदं च पीठोपरिवर्त्तिनं

रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसतसहस्सबाहल्लाए उवरिं केवतियं ओगाहित्ता हेट्ठा केवतियं
मू. वज्जेत्ता मज्झे केवतिये केवतिया निरयावाससयसहस्सा पं० गो० इमीसेणं रयणप्पभाए

यो कहीछे: हे गौतम सात पृथिवीयो कहीछे ते रत्नप्रभाथी आरंभीने जावत् हेठली सातमीपृथिवी प
भा. र्यंत जाणवी हे भगवन् आ रत्नप्रभापृथिवी एकलाख अेंशीहजार योजन जाडपणे कही तेना उपल्यो केट
लो भाग अवगाहिने एटले उपल्यो केटला प्रमाणनो भाग अतिक्रमीने ने हेठल्यो केटलो भाग वर्जिने

भा० २४६

टीका. मध्यभागमधिकृत्य प्रोच्यते सकलपीठाद्यपेक्षया तु आवलिकाप्रविष्टा वृत्तत्र्यस्रचतुरस्रसंस्थानाः पुष्पावकीर्णास्तु नानासंस्थानाः प्रतिपत्तव्याः एतच्चाग्रे स्वयमेव वक्ष्यति अहेखुरप्पसंठाणसंठिया इति अधोभूमितले क्षुरप्रस्येव प्रहरणविशेषस्य यत् संस्थानमाकारविशेषस्तीक्ष्णतालक्षणं स्तेन संस्थिताः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता स्तथाहि तेषु नरकावासेषु भूमितले मसृणत्वाभावतः शर्करिलेपादेषु न्यस्यमानेषु शर्करामात्रसंस्पर्शेपि क्षुरप्रेव पादाः कृत्यंते (कृत्यंते) निच्चंधकारतमसा इति नित्यांधकाराः उद्योताभावतो यत्तमस्तेन तमसा नित्यं सर्वकालमंधकारोयेषु नित्यांधकाराः तत्रापवरकादिष्वपि नामांधकारोस्ति केवलं बहिः सूर्यप्रकाशे मंदं तमोभवति नरकेषु तु तीर्थंकरजन्मदीक्षादिकाल व्यतिरेकेणान्यदा सर्वकालमपि उद्योतलेशस्याप्यभावतो जात्यंधस्येवमघेछन्नकालार्द्धरात्र इवातवि

मूल. पुढवीए असीउत्तर जोयणसयसहस्स बाहल्लाए उवरिं एगं जोयण सहस्सं उगाहित्ता

भाषा. मध्ये केटला प्रमाणमां केटला नरकावासा एटले केटलां नारकी रहेवानां स्थानक शतसहस्र लाखो गमे कह्यांछे? हे गौतम आ रत्नप्रभापृथिवी एकलाख ने ऐंशीहजार योजन जाडपणेछे तेनो उपरि एक हजार जोजन अवगाहिने हेठल पण एकहजार जोजन वर्जिने मध्ये एकलाख ने इठ्योतेरहजार यो

का. बहलतरोभवति ततउक्तं तमसा नित्यांधकाराः तमश्च तत्र सदावस्थितमुद्योतकारिणामभावात्तथाह ववगय गहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा व्यपगतः परिभ्रष्टो ग्रह चंद्रसूर्यनक्षत्ररूपाणामुपलक्षणमेतत् ताराऊपाणां ज्योतिष्काणां पंथामार्गोयत्र व्यपगतग्रहसूर्यनक्षत्रज्योतिष्कपथाः तथा मेयवसापूयरुहिरमंसचिक्खल्ललित्ताणुलेवणतलाइति स्वभावतः संपन्नैर्मेदोवसापूतिरुधिरमांसै र्यश्चिखिल्लः कर्दम स्तेन लिप्तमुपदिग्धं अनुलेपनेन सकृल्लिप्तस्य पुनः पुन रुपलेपनेन तलंभूमिका येषांते मेदोवशापूतिरुधिरमांसचिक्खिल्ललिप्तानुलेपनतला अतएवाशुचयो ऽपवित्रा बीभत्स्या दर्शनेप्यतिजुगुप्सोत्पत्तेः परमदुरभिगंधाः मृतगवादिकलेवरेभ्योप्यतीवानिष्टदुरभिगंधाः काऊ अगणिवन्नाभा इति लोहे धम्यमाने यादृक्कपोतो बहुकृष्णरूपोऽग्नेर्वर्णः किमुक्तं भवति यादृशी बहुकृष्णवर्णरूपा अग्निज्वाला

मू. हेठावि एगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झे अठुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थणं रयणप्पभाए

षा. जन एहने विषे रत्नप्रभापृथिवीने विषे नारकीने योग्य त्रीशलाख नरकावासा नारकीने रहेवानां स्थानक कह्यांछे ते नरकावासा मध्ये वाटला आकारना ने बाहिर भागे चउखुणीया कह्याछे ने अशुभ एटले मांठी नरकने विषे वेदना जाणवी ए आलावे करिने सर्व नरकने विषे वेदना जाणवी एटले ए नर

टीका. यिनिर्गछनीति तादृशी आजा वर्णास्वरूपं येषांते कपोताग्निवर्णाजाः तथा कर्कशोऽतिडुस्सहोऽसिपत्रस्येव स्पर्शो येषांते कर्कशस्पर्शो अतएव डुरहियासा इति डःखेनाऽध्यास्यंते सह्यंते डुरध्यासाः अशुजा दर्शनतोनरकास्तथा गंधरसस्पर्शशब्देरशुजा अतीवासातरूपा नरकेषु वेदना एवं सर्वास्वपि पृथिवी ष्वालापकोव क्तव्यः सचैवं सक्करप्पजाएणं जंते पुढवीए उत्तीसुत्तरजोयणसतसहस्सबाहल्लाए उवरि केवइये उगाहेत्ता हेठा केवइए केवइया निरयावाससयसहस्साए पण्णत्ता गोयमा सक्करप्पजाएणं पुढवीए उत्तीसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्समोगाहित्ता हिठा एगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे तीसुत्तरजोय णसहस्से एठणं सक्करप्पजापुढविनेरइयाणं वणवीसनेरयावाससयसहस्सा जवंतीति मरकाया तेणं नरगा अंतोवट्ट जाव असुजनेरऐसु वेयणा वालुप्पजाए णं

मूल. पुढवीए नेरतियाणं तीसं नेरयावाससयसहस्सा जवंतित्तिमरवाया तेणं णरगा अंतो

जाषा. क मध्य जागने विषे गोल आकारना छे ने बहिर्जागने विषे चउखुणीया छे पीठ (बाजोठ) तेना उप रि बीजोपीठ तेनो मध्य जाग तेना जेवुं संस्थान ते आश्रीने एम कह्युं छे सकल पीठनी अपेक्षाये तो आवालिका गत गोल त्रिकोण चउरंस पुष्पावकीर्ण एटले नाना प्रकारना संस्थाने रह्या छे हेठल

भंते पुढवीए अठावीसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं केवइयं उगाहित्ता हेठा केवइयं वज्जेत्ता मझ्झे केवइए केवइया निरयावाससयसहस्साए पण्णत्ता गो यमा वालुवप्पजाए पुढवीए अठावीसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लए उवरिं एगं जोयणसहस्समोगाहित्ता हेठाए एगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मझ्झे छव्वीसुत्तरजोयण का. सयसहस्से एच्छणं वालुप्पजापुढविनेरइयाणं पण्णरसं निरयावाससयसहस्सा भवंतीति मख्खायं तेणं नरगा जाव असुभा नरगेसु वेयणा पंकप्पजाएणं भंते पुढ वीए वीसुत्तर जोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि केवइयं उगाहेत्ता हेठा केवइयं वज्जेत्ता मझ्झे केवइया नरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता गोयमा पंकप्पजाए णं पुढवीए वीसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्स मोगाहिता हेठावि एगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मझ्झे अठारसजोयणसयसहस्सेइच्छणं पंकप्प

ल. वट्टा बाहिं चउरंसा जाव असुभा णरयेसु वेयणा एवं एएणं अभिलावेणं उववज्जिऊणं

पृथिवीतल क्षुरप्र एटले कोई आयुध विशेष तेना जेवुं संस्थान आकार विशेष अतिशे तीखु आकरु षा. कठोर कह्युछे एटले ए नरकपृथिवीना तलीयाने विषे कोमलपणु लवलेश नथी तथा नित्य अंधकारे सहितछे तीर्थंकरनो जन्म तथा दीक्षाकाल ते विना अजवालानो लवलेश मात्र पण नथी तीर्थंकरना कल्याणक

।. २४८ टीका.	ना पुढविनेरइयाणं दसनिरयावाससयसहस्सा नवंतीति मख्खायं तेणं नरगा जाव असुना नरगेसु वेयणा धूमप्पनाएणं पुढवीए अठारसुत्तरजोयणसयसहस्स वाहल्लाए उवरिं केवइयं उगाहित्ता हेठा केवइयं वज्जेत्ता मज्झे केयइए केवइया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता गो० धूमप्पनाएणं पुढवीए अठारसुत्तरजोयण सयसहस्स वाहल्लाए एगं जोयणसहस्स मोगाहित्ता हेठावि एगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे सोलसुत्तरे जोयणसहस्से इच्छणं धूमप्पनापुढविनेरइयाणं तिन्नि निरयावाससयसहस्सा नवंतीति मख्खायं तेणं नरगा अंतो वट्टा जाव असुना नरगेसु वेयणा तमप्पनाएणंजंते पुढवीएं सोलसुत्तर जोयणसयसहस्सवाहल्लाए उवरिं केवइयं उगाहित्ता हेठा केवइयं वज्जित्ता मझ्झे केवइए केवइया निरयावाससयसहस्सा पण्णत्ता गो० तमप्पनाए णं पुढवीए सोलसुत्तरजोयणसयसहस्स
मूल.	नाणियव्वं ठाणपयाणुसारेणं जत्थ जं वाहल्लं जतिया वा नेरइयावाससयसहस्सा जाव
नाषा.	ने विषे बे घमी सुधी अजवालु थाय बे वली जिहां ग्रह चंद्र सूर्य नक्षत्रनो प्रकाश नथी परु रुधिर मांसना कादव वते जेनु नूमितल लीपायेलुं बे एवी रीत्ये नरकावास घणो बीनत्सबे तेने विषे परम डुर्गंधी बे मरेला ढोरना कलेवरथकी पण अति डुर्गंधी बे काली अग्नि ज्वालायो निकले बे धिगधिगता का

वाहल्लाए उवरिं जोयणसहस्समोगाहित्ता हेट्ठाएगं जोयणसहस्सं वज्जेत्ता मझ्झे चौदसुत्तरजोयणसयसहस्से एछणं तमाए पुढविनेरइयाणं एगे पंचूणे नरगावास
सयसहस्से भवंति इति मख्खायं तेणं नरगा अंतोवट्टा जाव असुजा नरगेसुवेयणा अहेसत्तमाएणं भंते पुढवीए अठोत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं केवइ
यं उगाहेत्ता हेठा केवइया अणुत्तरा महइ महालया नरगावासा पण्णत्ता गोयमा अहेसत्तमाए पुढवीए अठुत्तरजोयणसयसहस्सवाहल्लाए उवरिं अठतेवण्णं
जोयणसहस्साइं उगाहेत्ता हेठावि अठतेवण्णं जोयणसहस्साइं वज्जेत्तामझ्झेति सुजोयणसहस्सेसु एछणं अहेसत्तमपुढविनेरइयाणं पंच अणुत्तरा महइ महाल

अहेसत्तमाए पुढवीए अहेसत्तमाए मझ्झे केवतिये कति अणुत्तरा महति महालया महाणि

पीतवर्ण अग्नि सरखी कांतिछे देखवाथीजछे अति दुस्सह गंधरस फरस आति अशुभछे इत्यादि घणी असा
ता वेदना ए सर्व नरकोने विषेछे सघली पृथिवीए एक हजार जोजन उपर तथा हेठल मुकीने मध्ये जेवुं
जेहनुं जाडपणु छे तिहां तेवा नरकावासा कहेवा जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत कहेवा हेठली
सातमी पृथिवीने मध्ये मोटा मोटु छे आलय ठेकाणुं जेनुं एवा मोटा नरकावासा गुरु शिष्यने संवादे

, ७४९

टीका.

गा महानिरया पण्णत्ता तंजहा काले महाकाले रोरुए महारोरुए मज्झे अपइट्ठाणे तेणं महानरगा अंतोवट्टा जाव असुभा महानरगेसु वेयणा इति इदं च सकलमपि सूत्रं सुगमं तत्र बाहल्ये परिमाणनरकावासयोग्यमध्यभागपरिमाणे नरकावाससंख्यानामिमाः संग्रहिगाथाः ॥ असीयं बत्तीसं अठावीसं तहेव वीसं च अठारसं सोलसगं अठुत्तरमेव हेट्ठिमया । अठुत्तरं बत्तीसं छव्वीसं चेव सयसहस्सं तु अठारस सोलसगं चोद्दसमहियं तु छट्ठीए अठतिवण्णा सहस्सा उवरिमा होवज्जि ऊणा तो भणिया। मज्झे तिसु सहस्सेसु होंति नरगा तमतमाए तीसाए पण्णवीसा पण्णरस दसेव सयसहस्साइं तिण्णियं पंचूणेगं पंचेव अणुत्तरा निरया पाठसिद्धाः ॥ ॥ संप्रति नरकावाससंस्थानप्रतिपादनार्थमाह इमीसे णं भंते इत्यादि अस्यां भदंत रत्नप्रभायां पृथिव्यां नरकाः किमिव संस्थिताः प्रज्ञप्ताः भगवानाह गौतम नरका द्विविधाः

मूल.

रया पण्णत्ता एवं पुच्छितव्वं वागरेयव्वं पि तहेव छट्ठी सत्तमासु काऊ अगणि वण्णा भाणियव्वा ॥ ॥ इमीसे णं भंते रयणप्पभाए पुढवीए णरगा किं संठिता पं० गो० दुविधा पं० तं० आवलि

भाषा.

पुछवा तथा तेम कहेवा तेमज छठी सातमी पृथिवीये कपोत अग्निवर्ण एटले घणो कालो अग्निवर्ण कहेवो ॥ हे भगवन् ए रतनप्रभा पृथिवीने विषे नरकावासा कये संस्थाने रह्या कह्या छे एटले केटला प्रकारना क

ीका. प्रज्ञप्ता स्तद्यथा आवलिकाप्रविष्टाश्च आवलिकाबाह्याश्च चशब्दावुभयेषामप्यशुभता सूचकौ आवलिकाप्रविष्टा नाम अष्टासु दिक्षु समश्रेण्यवस्थिताः आवलिकासु श्रेणिषु प्रविष्टाव्यवस्थिताः आवलिकाप्रविष्टा स्ते संस्थानमधिकृत्य त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा वृत्ता त्र्यस्रा श्चतुरस्रा स्तत्र ये ते आवलिकाबाह्या स्ते नानासंस्था

मूलः यपविठाय आवलियवाहिराय तछणं जेते आवलियपविठा तेतिविहा पं० तं० वट्टा तंसा चउ

ाषा. ह्या छे! हे गौतम बे प्रकारना कह्या छे आवलिकागत १ आवलिका एटले श्रेणि तेने विषे रह्या छे ने बीजा आवलिकाथी बाहिर रह्या छे तेमने विषे जे आवलिकाना आठे दिशे समश्रेणिने विषे रह्या छे ते त्रण प्रकारना कह्या छे वाटला आकारे१ त्रिखुणीया २ चउखुणीया ३ तेमां जे आवलिकाथी बाहिर रह्या छे ते आठ दिशीथी अलगा ने नाना प्रकारना संस्थाने रह्या कह्या छे ते कहुछु अयकोष्ट एटले लोहमय कोठो तेहनी पेरे रह्या छे तथा पिष्टपचनक एटले सुरा मदिरा तेमां अनुसंधान करवा वास्ते पिष्ट एटले लोट जेमां पचावीये तेना जेवा संस्थाने रह्या छे पाकसंस्थानक एटले रसोडु ते आ

I. ७५० नसंस्थिताः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा अयःकोष्ठोलोहमयः कोष्टस्तद्वत् संस्थिताः पिष्ठपयणागसंठिया इति यत्र सुरासंधानाय पिष्टं पच्यते तत् पिष्टपचनकं तद्वत् संस्थिता

टीका. मरसंप्रदाणिगाथे अयकोष्टपिठपयणागकंमूलोहीकमाह संठाणा थालीपिहमगार्कि ष्हडमए मुरवेमुइंगे सुनंदिमुइंगे आलिंगि सुघोसेदद्दरेय पणावेयपमहगझल्लरि भेरीकु

ष्टुंयगनालिलाम्सिंठाणा कंमुः पाकसंस्थानं लोहीकटाहौ प्रतीतौ तद्वत्संस्थानाःस्थाली उखा पिहमंयत्र प्रभूतजनयोग्यं धान्यं पच्यते उटजस्तापसाश्रमोमुरजो मर्द

मूल. रंसा तत्थणं जेते आवलियबाहिरा ते णाणासंठाणसंठिता पण्णत्ता तं० अयकोठसंठिता पिम्प

भाषा. कारे रह्या छे तथा कम्हाईयाना आकारे रह्या छे तथा कटाह। मोटा कम्हाइया विशेष ते आकारे रह्या छे तथा स्थाली हांल्ली रांधवानी ते आकारे रह्या छे तथा जेमां घणा माणसने काजे धान्य पचावीये ते पिहम्ग कहीये ते आकारे रह्याछे तथा काला उटज तापस लोकने रहेवानु स्थानक आश्रम ते आकारे रह्याछे तथा मुरज मांदलविशेष (मृदंगविशेष) ते आकारे रह्या छे तथा मृदंगने आकारे रह्या छे एटले मृदंग बे प्रकारनी एक मुकुंद ने बीजी मर्द्दल तेमां उपरथी संकोच वालीमे हेठलथी विस्तारवंत ते मु

लविशेषः नंदीमृदंगो द्वादशविधतूर्यांतर्गतो मृदंगः सच द्विधा तद्यथा मकुंदो मर्द्दलश्च तत्रोपरिसंकुचितोऽधोविस्तीर्णो मकुंदः उपर्यधश्च समो मर्द्दलः आ
टीका. लिंगो मृन्मयो मुरजः सुघोषो देवलोकप्रसिद्धो घंटाविशेषः आतोद्यविशेषो वा दर्दरो वाद्यविशेषः पणवो भाण्डानां पटहः प्रतीतः भेरी ढक्का झल्लरी चर्म्मावि
नद्धा विस्तीर्णवलयाकारा कुस्तुंबकः संप्रदायगम्यः नालीघटिका एवं शेषास्वपि पृथिवीषु तावद्वक्तव्यं यावत् षष्ठ्याः सूत्रपाठस्त्वेवं सक्करप्पभाए णं भंते पुढवी

सूत्र. यणयसंठिया लोहीसंठिया कम्हाहसंठिया थालीसंठिया पिहडगसंठिया किण्णमुंडसंठिया मुरवसं
ठिया मुइंगसंठिया णंदिमुइंगसंठिया आलिंगसंठिया सुघोससंठिया दद्दरसंठिया पणवसंठिया

कुंद कहीये ने उपर तथा हेठल बरोबरय ते मद्दल कहीये तेमां आ जगाये मुकुंद जाणवी तथा नंदी
भाषा. मृदंग एटले बार प्रकारना वाजीत्रमां जे नंदीमृदंग छे ते आकारे रह्या छे तथा आलींगक एटले मा
टीनुं मढेलुं वादित्र विशेष ते आकारे रह्या छे तथा सुघोष देवलोकनी घंटा विशेष ते आकारे रह्या
छे तथा दद्दर नामे वादित्र विशेष ए आकारे रह्या छे तथा पणव ते चामडानो ते आकारे रह्या छे त

ा. १५० नसंस्थिताः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा अयःकोष्ठोलोहमयः कोष्ठस्तद्वत् संस्थिताः पिठपयणगसंठिया इति यत्र सुरासंधानाय पिष्टं पच्यते तत् पिष्टपचनकं तद्वत् संस्थिता

टीका. अत्रसंग्रहणिगाथे अयकोट्ठपिठपयणगकंडूलोहीकडाह संठाणा थालीपिहडगकिण्हउडए मुरवेमुइंगे सुनंदिमुइंगे आलिंगिगे सुघोसेयद्दरेय पणवेपणहगझल्लरि भेरीकु स्तुंबगनालियाभिसंठाणा कंडुः पाकसंस्थानं लोहीकटाहौ प्रतीतौ तद्वत्संस्थानाः स्थाली उखा पिठरं यत्र प्रभूतजनयोग्यं धान्यं पच्यते उटजमाश्रमो मुरजो मर्दे

मूल. रंसा तत्थणं जेते आवलियबाहिरा ते णाणासंठाणसंठिता पण्णत्ता तं० अयकोठसंठिता पिठप

कारे रह्या छे तथा कमाईयाना आकारे रह्या छे तथा कटाह । मोटा कमाईया विशेष ते आकारे रह्या छे तथा स्थाली हांल्ली रांधवानी ते आकारे रह्या छे तथा जेमां घणा माणसने काजे धान्य पचावीये ते

भाषा. पिहडग कहीये ते आकारे रह्याछे तथा कालो उटज तापस लोकने रहेवानुं स्थानक आश्रम ते आकारे रह्याछे तथा मुरज मांदलविशेष (मृदंगविशेष) ते आकारे रह्या छे तथा मृदंगने आकारे रह्या छे एटले मृदंग बे प्रकारनी एक मुकुंद ने बीजी मर्द्दल तेमां उपरथी संकोच वालीमे हेठलथी विस्तारवंत ते मु

ग. लविशेषः नंदीमृदंगो द्वादशविधतूर्यांतर्गतो मृदंगः सच द्विधा तद्यथा मकुंदो मर्द्दलश्च तत्रोपरिसंकुचितो ऽधोविस्तीर्णो मकुंदः उपर्यधश्च समो मर्द्दलः आ लिंगो मृन्मयो मुरजः सुघोषो देवलोकप्रसिद्धो घंटाविशेषः आतोद्यविशेषो वा दर्दरो वाद्यविशेषः पणवो भांडानां पटहः प्रतीतः भेरी ढक्का झल्लरी चर्म्मावनद्धा विस्तीर्णवलयाकारा कुस्तुंबकः संप्रदायगम्यः नालीघटिका एवं शेषास्वपि पृथिवीषु तादृक्त्वं यावत् षष्ठ्यांः सूत्रपाठस्त्वेवं सक्करप्पभाए णं भंते पुढवी ४

त. यणयसंठिया लोहीसंठिया कम्हाहसंठिया थालीसंठिया पिहम्मगसंठिया किण्णमुंम्मसंठिया मुखसंठिया मुइंगसंठिया णंदिमुइंगसंठिया आलिंगसंठिया सुघोससंठिया दद्दरसंठिया पणवसंठिया

षा. कुंद कहीये ने उपर तथा हेठल बरोबरथ ते मर्द्दल कहीये तेमां आ जगाये मुकुंद जाणवी तथा नंदी मृदंग एटले बार प्रकारना वाजीत्रमां जे नंदीमृदंग छे ते आकारे रह्या छे तथा आलींगक एटले माटीनुं मढेलुं वादित्र विशेष ते आकारे रह्या छे तथा सुघोष देवलोकनी घंटा विशेष ते आकारे रह्या छे तथा दद्दर नामे वादित्र विशेष ए आकारे रह्या छे तथा पणव ते चामडानो ते आकारे रह्या छे त

१५१ टीका. तावत्पीठानि उपरि संकुचितानि विस्तारीकृत्य संकोचनागणनया योजनसहस्रं ॥ . एवं सर्वसंख्यया नरकावासानां त्रीणि योजनसहस्राणि यावत्पुनो नरकं ... पृथिव्यां२ यावत्सप्तम्यां यावत्पृथ्व्यां सप्तम्यां तथान्योन्यकमन्याणि तेषां प्रमाणं ॥ ... संकोचनतो सहस्रं पृथग्वो यावत् पृथिवी तिमिर नरकपृथिवी इत्या ॥ ॥संप्रति नरकावासानामायाम परिक्षेपप्रतिपादनार्थमाह इमीसेणं भंते इत्यादि ॥ ... ॥ अस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यां नरकावासा ... भगवानाह गौतम ... सप्तभागो इंत.

मूल. हे चरिमंते घणाराहस्सं मज्झे सुसिराराहस्स ॥ ॥ संकुयासहस्सं एवं जाव अहेसत्तमाए ॥

नाषा. जाडपणे केटला कह्या छे? हे गौतम त्रणहजार योजन पिंडजाडे एटले उंचपणे जाडपणे कह्या छे ते जिम छे तिम कहुं छुं हेठे पादपीठे घननिचित हजार योजन मध्ये पाठने उपरि मध्य नागने विषे सुषिरा सहस्र सुषिरा एक हजार योजन उपरि संकोच पामतां शिखरनी पेठे संकोचवा एक हजार योजन एम सर्व संख्याये त्रणहजार योजन जाणवा ए प्रकारे जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवुं हे रतनप्रजा पृथिवीने विषे नरकावासा आयामपणे लांबपणे तथा पोहलपणे केटला तथा केटला परि

आयामविष्कंजाच्यामित्यर्थः कियत् परिक्षेपेण परिरयेण प्रज्ञप्ता नगवानाह गौतम द्विविधाःप्रज्ञप्ताः तद्यथा संख्येयविस्तृताश्च असंख्येयाविसताश्च संख्येयं संख्येय
टा. योजनप्रमाणं विस्तृतं विस्तारो येषांते संख्येयविस्तृता एवमसंख्येयं विस्तृतं येषाते असंख्येयाविस्तृताश्चशब्दौ स्वगतानेकनेदप्रकाशनपरौ तत्र ये ते संख्येयविस्तृतास्ते

॥ इमीसेणं नंते रयणप्पन्नाए पुढवीए नरगा केवतियं आयामाविक्खंनेणं केवइयं परिक्खेवेणं
मू. गो० छुविधा पं० तं० संखेज्जवित्थमा असंखेज्जवित्थमा तत्थणं जेते संखेज्जवित्थमा तेणं संखेज्जाइं
जोयणसहस्साइं आयामविक्खंनेणं संखेज्जाइं जोयणसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णत्ता । तत्थणं

पेष परिधिपए कह्या छेः हे गौतम बे प्रकारे कह्या छे ते कहुंछु संख्यात योजन प्रमाणे छे विस्तार ते जे
मनो एहवा ने असंख्याता योजन छे विस्तार ते जेमनो एहवा छे तेमां जे संख्यात योजन विस्तारवाला
भा. छे ते संख्यात योजनना हजारोगमे लांबपणे तथा पोहलपणे छे ने संख्यात योजनना हजारोगमे परिधि
पणे कह्या छे ने जे असंख्याता योजन विस्तारवंत छे ते असंख्याता योजननां हजारोगमे लां

१५३ टीका. संख्येयानि योजनसहस्राणि आयामविष्कंभेण संख्येयानि योजनसहस्राणि परिक्षेपेण तत्र ये ते असंख्येयविस्तृतास्ते असंख्येयानि योजनसहस्राणि आयामवि
ष्कंभेण असंख्येयानियोजनसहस्राणि परिक्षेपेण प्रज्ञप्तानि एवं प्रतिपृथिवि तावद्वक्तव्यं यावत्षष्ठी पृथ्वी सूत्रपाठस्त्वेवं सक्करप्पभाए णं पुढवीए नरगा केवइयं
आयामविक्खंभेणं केवइयं परिक्खेवेणं पण्णत्ता गोयमा दुविहापण्णत्ता तं संखेज्जवित्थडाय असंखेज्जवित्थडाय इत्यादि अहेसत्तमाए णं भंते इत्यादि प्रश्नः स

मूल. जेते असंखेज्जवित्थडा तेणं असंखेज्जाइं जोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं असंखेज्जाइं जो
यणसहस्साइं परिक्खेवेणं पण्णत्ता एवं जाव तमाए अहेसत्तमाए णं भंते पुच्छा गो० दुविधा
पं० तं० संखेज्जवित्थडेय असंखेज्जवित्थडाय तत्थणं जेसे संखेज्जवित्थडे सेणं एक्कं जोय

भाषा. बपणे तथा पोहलपणे कह्या छे ने असंख्याता योजनना हजारोगमे परिधिपणे कह्या छे
ए प्रकारे जावत् तमाए एटले छठी पृथिवी पर्यंत जांणवुं हवली सातमी पृथि
वीनो प्रश्न पूर्वनी पेठे पुछ्यो तेनो उत्तर हे गौतम बे प्रकारे जे संख्यात योजन विस्तारवंत ने असं

प्रभ्या जदंत पृथिव्यां नरका: किंपदायामविष्कंजेण कियत्परिक्षेपेण प्रज्ञप्ता जगवानाह गौतम द्विविधा स्तद्यथा संख्येयविस्तृतएकः सचा प्रतिष्ठानाजिधानो
ग. नरकेंद्रको यसातत्यः असंख्येयविस्तृताश्चत्वारः तत्र योसौ संख्येयविस्तृतो प्रतिष्ठानाजिधानो नरकेंद्रकः स एकं योजनशतसहस्रमायामविष्कंजेन त्रीणि योजन
शतसहस्राणि षोडशसहस्राणि द्वे योजनशते सप्तविंशे सप्तविंशत्यधिके त्रयः क्रोशा अष्टाविंशं धनुःशतं त्रयोदश अंगुलानि अर्द्धांगुलं च किंचिद्विशेषाधि

एगतसहस्सं आयामविक्खंजेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलसयसहस्साइं दोण्णि
म. यसत्तावीसे जोयणसये तिण्णि कोसे अठ्ठावीसं धणुसयाइं तेरसयअंगुलाइं अद्धंगुल
यं च किंचि विसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ते तत्थणं जेते असंखेज्जवित्थडा तेणं

ख्यात योजन विस्तारवंत तेमां जे संख्यात योजन विस्तारवंत अप्रतिष्ठान नामे ते एक लाख योजन लां
षा. बपणे तथा पोहोलपणे कह्याछे ने त्रणलाख सोलहजार बसे सत्तावीश योजन ते उपरि त्रण कोश ए
कसोने अठ्ठावीश धनुष ते उपरि तेर अंगुल उपरि कांईक अर्द्धु अंगुल कांईक विशेषाधिक परिधि

।' १५४

टीका.

कं परिक्षेपेण प्रज्ञप्तः इदं परिक्षेपपरिमाणं गणितभावनया जंबूद्वीपपरिक्षेपपरिमाणवद्भावनीयं येते शेषाश्चत्वारोऽसंख्येयविस्तृतास्तेऽसंख्येयानि योजनसहस्रा ण्यायामविष्कंभेन असंख्येयानि योजनसहस्राणि परिक्षेपेण प्रज्ञप्तानि ॥ संप्रति नरकावासानां वर्णप्रतिपादनार्थमाह इमीसेणं भंते इत्यादि अस्यां भदंत रत्नप्रभायां पृथिव्या नरकाः कीदृशा वर्णेन प्रज्ञप्ता भगवानाह गौतम कालाः तत्र केपि निःप्रभतया मंदकालोपि आशंक्येत तत स्तदाशंकाव्यवछेदार्थं विशेषणांतरमाह कालोवभासाः कालः कृष्णोवभासः प्रतिभाविनिर्गमो येभ्यस्ते कालावभासाः कृष्णप्रभापटलोपचिता इति

मूल.

असंखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं असंखेज्जाइं जावपरिक्खेवेणं पण्णत्ता ॥
॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीये नरया केरिसया वण्णेणं पं० गो० काला कालावभासा गंभीरा

भाषा.

पणे कह्याछे ने जे असंख्यात विस्तारपणेछे ते असंख्याता योजन लाख लांबपणे तथा पोहोळपणे तथा जावत् परिधिपणे कह्या छे॥ हवे नरकावासाना वर्ण कहेवाने अर्थे प्रश्न सूत्र कहे छे हे भगवन् रतनप्रभा पृथिवीने विषे नरक केहवा वर्णे करिने कह्या छे? हे गौतम काला वर्णना कोईक प्रभा रहित

भावः अतएव गंभीररोमहर्षाः गंभीरोऽतीवोत्कटो रोमोद्धर्षो भयवशात् येभ्यस्ते गंभीररोमहर्षाः किमुक्तं भवति एवं नाम ते कृष्णाः कृष्णावभासा यद्दर्शनमात्रे नारकजंतूना भयसंपादनेन मात्रार्गल रोमहर्षमुत्पादयंतीति अतएव भीमा भयानका भीमत्वादेव उत्त्रास्यंते नारकाजंतव एभिरिति उत्त्रासना उत्त्रासनाएव उत्त्रासनकाः वर्ण्णेन वर्ण्णमधिकृत्य परमकृष्णाः प्रज्ञप्ताः यत ऊर्द्ध्वनकिमपि भयानकं कृष्णमस्तीति भावः एवं प्रतिपृथिवि तावद्वक्तव्यं यावदधः सप्तम्या गंधमधिकृत्यह ॥ इमीसेणं भंते इत्यादि प्रश्नसूत्रं सुगमं भगवानाह गौतम तद्यथा नाम अहिमृतइतिवा अहिमृतोनाम मृताहिदेह एवं सर्वत्र भावनीयं गोमृतइ

लोमहरिसा भीमा उत्तासणया परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता एवं जाव अहेसत्तमाए इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए णरगा केरिसया गंधेणं पं० गो० सेजहानामए अहिमडेतिवा गोमडेतिवा

थको मंद कालो होय एवी आशंकाये करिने कहे छे जे कालि छे अवभास कहेतां कांतिपटल जेनां एवा एज माटे गंभीर छे अत्यंत ऊंचो थयो छे लोमहर्ष जेथी एटले जेना दर्शन मात्रथी अतिभये करिने नारकी जीवने रोमहर्ष थाय छे एटले अतिशे रुवां ऊभां थाय छे एज माटे बीहामणा एज माटे अ

टीका॰ तिवा श्वमृतइतिवा मार्जारमृतइतिवा हस्तिमृतइतिवा सिंहमृतइतिवा व्याघ्रमृतइतिवा द्वीपकमृतइतिवा द्वीपकाश्चित्रकः सर्वत्र अहिश्चासौमृतश्च अहिमृत इत्येवं विशेषणसमासः इहमृतकं सद्यःसंपन्नं न विगंधि भवति ततआह मयकुहियविणठ कुणिमवावण्णेत्यादि मृतः सन् कुथितः पूतिभावमुपगतो मृतकुथितः सचोत्सूनावस्थामात्रगतोपिभवति नच स तथाविगंधस्ततआह विनष्टउत्सूनावस्था प्राप्य स्फुटित इतिभावः सोपि तथा दुरभिगंधो तथा न भवति ततआह कुणिमवावन्नेति व्यापन्नं विशरारुभूतं कुणिमं मांसं यस्यस तथा ततोविशेषणसमासे दुरभिगंध इति दुरभिः सर्वेषामाभिमुख्येन दुष्टोगंधोयस्यासौ दुरभिगंधः अशु

मूल. सुणगमडेतिवा मज्जारमडेतिवा मणुस्समडेतिवा महिसमडेतिवा मूसगमडेतिवा आसमडेतिवा हत्थिमडेतिवा सीहमडेतिवा वग्घमडेतिवा विगमडेतिवा दीवियमडेतिवा मयकुहियचिरविनठकुणिमवावण्णदुरभिगंधे किमिजालाउलसंसत्ते। असुयचिलीणविगयबीभत्सदरिसणिज्जे भवेएयारूवेसिया

भाषा. तिशे त्रास उपजावनारा एज माटे परम उत्कृष्ट कालावर्णना एथी बीजु बीहामणु कालावर्णनु कांई नथी एवा कह्या छे ए प्रकारे जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवुं हे भगवन् रतनप्रभा पृथि

टी. चिभ्रिलीनो मनसः कलिमलपरिणामहेतुः विगयं इति विप्रनष्टं तदभिमुखतया प्राणिनां गतं गमनं यस्मिन्स तथा बीभत्सया निंदया दर्शनीयो बीभत्सादर्शनीयस्ततो विशेषणसमासः अशुचिर्विगतबीभत्सादर्शनीयः किमिजालाउलसंसत्ते इति संसक्तः सन् कृमिजालाकुलोजातः कृमिजालाकुलसंसक्तः मयूरव्यंसकादित्वात्समासः संसक्तशब्दस्य च परनिपातः एतावदुक्ते गौतम आह भवेएयारूवेसिया इति स्यात् भवेत् एतत् यदुत भवेयुर्नरूपा यथोक्त विशेषणविशिष्टोहि मृतादिरूप गंधेनाधिकृता नरकाः सूत्रे च बहुवचनेपि एकवचनं प्राकृतत्वात् भगवानाह गौतम नायमर्थः समर्थो नायमर्थ उपपन्नो यतोऽस्यां रत्नप्रभाया

मू. णोति णठ्ठे समठ्ठे गो० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए णरगा एत्तो अणिठ्ठतरकाचेव अकंत तरकाचेव जाव अमणामतराचेव गंधेणं पण्णत्ता एवं जाव अहेसत्तमाए पुढवीए। इमीसेणं भंते रयणप्पभाए

बा. वीने विषे नरक गंध आश्रिने केहवा कह्या छे? हे गौतम जेवां एमनां नाम छे ते प्रकारना जेम अहिमृतक एटले सर्पनुं कलेवर गंधाय तेथी पण अधिक दुर्गंधवाला गायनुं कलेवर कुतरानुं कलेवर बिलाडानु कलेवर मनुष्यनुं कलेवर भेंशनुं कलेवर उंदरनुं कलेवर घोडानुं कलेवर हाथीनुं कलेवर सिंहनुं क

टीका. पृथिव्यां नरका इतो यथोक्तविशेषणविशिष्टाहिमृतादनिष्टतरा एव तत्र किंचिद्द्रव्यमपि कस्याप्यनिष्टतरं भवति ततआह अकांततरा एव स्वरूपतोप्यकमनीयतरा एव अभव्या एवेति भावः तत्राकांतमपि कस्यापि प्रियं भवति यथागर्त्ताशूकरस्याशुचिः ततआह अप्रियतरा एव न कस्यापि प्रिया इतिभाव. अतएव मनोज्ञतरा एव अमनआपतरा एव गंधमधिकृत्य प्रज्ञप्ताः तत्र मनोज्ञं मनोनुकूलमात्रं यत् पुनः स्वविषये मनोऽत्यंतमासक्तं करोति तत् मन आपं एकार्थिका वा एते सर्वे शब्दाः शक्रेन्द्रपुरंदरादिवत् नानादेशजविनेयजनानुग्रहार्थमुपात्ता एवं पृथिव्या तावद्वक्तव्यं यावदधः सप्तम्यां स्पर्शमधिकृत्याह इमीसेणमित्यादि प्रश्नसूत्र

मूल. पुढवीए णरया केरिसया फासेणं पं० गो० से तहानामए असिपत्तेवा खुरपत्तेइवा कलंबचीरिया पत्तेइवा कुंतग्गेवा तोमरग्गेतिवा नारायग्गेतिवा सूलग्गेतिवा लउडग्गेतिवा

भाषा. लेवर वाघनुं कलेवर बिगद कोई जीव विशेष तेनुं कलेवर दीपडो चित्रो तेनुं कलेवर तेमनी दुर्गंध थकी पण अतिशे दुर्गंधवाला छे इंहां तत्काल मरण पामेलानुं कलेवर न जाणवुं ते उपर कहे छे जे मरण पाम्या पछी कोही गयेलुं घणा कालनुं विनष्ठ एटले फुलीने फाटेलु जेनुं मांस कोहीने अतिशे

टीका. सुगमं भगवानाह गौतम तद्यथा नाम असिपत्रमिति वा असिः खड्गं तस्य पत्रमसिपत्रं क्षुरपत्रमितिवा कदंबचिरिकापत्रमिति वा कदंबचिरिकातृणविशेषः स चदर्भादप्यतीव तुदकः शक्तिः प्रहरणविशेष स्तदग्रमितिवा कुंताग्रमितिवा तोमराग्रमितिवा भिंभिमाल, प्रहरणविशेष स्तदग्रमितिवा सूचीकलापइतिवा वृश्चिकदंशइतिवा कपिकच्छूरितिवा कपिकच्छूः कंडूतिजनकोवल्लीविशेष, अंगारइतिवा अंगारोनिर्धूमाग्निः ज्वालेति वाज्वाला अनलसंबद्धा मुम्मुर इतिवा मुर्मुरः फुंफु

मूल. भिंभिमालग्गेतिवा सूचिकलावएतिवा कविच्छुतिवा विछुकंटेतिवा इंगालेतिवा जालाएतिवा मुम्मुर

भाषा. दुर्गंधि थयेलुं ने कमिया कीडाना समूह वते अतिशे व्याप्त थयेलुं ने असुची ने मनना क्लेश परिणामनुं कारण विणठु देखातुं बिहामणुं देखवाथी एहवुं कलेवर पूर्वे कह्या ते सर्व जीवनुं तेनो जे दुर्गंध ते सर खो नारकीने दुर्गंध होय त्यारे भगवान् कहे छे जे ए अर्थ समर्थ न होय एटले ए सर्वेना दुर्गंध करतां पण ए नारकीनो दुर्गंध अधिकछे ए भाव ॥ हे गौतम रत्नप्रभापृथिवीने विषे नरक पूर्वे कही जे वस्तु तेथकी अनिष्टतर एटले घणाज दुर्गंधिछे निश्चे एज माटे स्वरूपथीज अतिशे माठा नठारा जावत्

.१५१ कादौ मृसृणोग्निः आर्ब्बारीतिवा अर्चिरनलविछिन्ना ज्वाला अलातमुल्मुकं शुद्धाग्नि रयः पिंडानुगतोग्निः विद्युदादिर्वा इतिशब्दः सर्वत्रापि उपमानूनरत्नुस्वरूप

टीका. परिसमाप्तिद्योतकः वाशब्दः परस्परसमुच्चये इह कस्यापि नरकस्य स्पर्शः शरीरावयवछेदको ऽपरस्य भेदको ऽन्यस्य व्ययाजनको ऽपरस्य दाहक इत्यादिः नन. साम्यप्रतिपत्त्यर्थमसिपत्रादीना नानाविधानामुपमानानामुपादानं भवे एयारूवेसिया इत्यादि प्राग्वत् ॥ संप्रति नरकावासानां महत्वमभिधित्सुराह इमीसेणमित्या

मूल. एतिवा अच्चितिवा आलाएतिवा शुद्धागणीएवा भवेता एया रूवेसिया णोति णेति णठ समठे ॥

भाषाः अमनोहर नही मनोहर त्यां सुधीनो पाठ लेवो ए प्रकारे गंध आश्री कह्याछे ते जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवुं ॥ हवे फरस आश्री प्रश्नसूत्र कहेछे। हे भगवन् रत्नप्रभापृथिवीने विषे नरकावासा केहवा फरशे करिने कह्याछे? हे गौतम जेहवां जेनां नामछे तेहवां कह्यांछे ते कहुछु असिपत्र एटले तरवारनी धारा सरीखो जेनो फरशछे ते असिपत्र कहीये एम खुरपत्र खुरीनी धारा सरीखो जेनो फरशछे ते तथा कदंबचीरिका एवा नामनुं कोई तृण विशेष तेहना पत्रनी धारा सरिखो जेनो फरशछे ते भा

नथकी पण अतीव छेदक होय तथा बरछीनी अणि सरिखो तथा तोमर आयुध विशेष तेहना अग्र स
रिखो तथा तीरना अग्र सरिखो तथा शुलना अग्र सरिखो तथा लाकमां घम्रवानुं कोई शस्त्र विशेष
तेना अग्र सरिखो (ए पाठ कोईक पुस्तकमां नथी) तथा भिंडमाल पण कोईक शस्त्र विशेष तेना अग्र
सरिखो तथा सोईनो समुह एकठो करयो होय तेना अग्र सरीखो तथा कउच एटले चेख करनार व
षा. छी विशेष तेना जेवो तथा विछुनो कांटो होय ते सरिखो तथा अंगारो घूमाडाये रहित तेना जेवो तथा
ज्वाला अग्निनी झाल ते सरिखो तथा अग्निना कणिया तणखा ते सरिखो तथा आर्चि एटले अग्निथी
जुदी पडेली झाल ते सरिखो तथा आलात एटले उल्मुक बलेलु खोईणु ते सरिखो तथा शुद्धाग्नि
एटले धिगधिगता लोढाना गोलामां जे अग्निछे ते अथवा विजली प्रमुखनो अग्नि ते सरिखो फरस हो
य एटले ए सर्व वस्तु कही तेना जेवो ए नरकोनो फरश होय ए प्रश्न तेनो उत्तर हे गौतम ए सर

१५८ टीका दि अस्यां भदंत रत्नप्रभायां पृथिव्यां नरकाः किं महांतः किंप्रमाणमहांतः प्रज्ञप्ताः पूर्वद्वयसंख्येयविस्तृता इति कथितं तत्रासंख्येयत्वं नावगम्यते इतिभूयः प्रश्नः अतएवात्र निर्वचनं भगवानुपमया ऽभिधत्ते गौतम अयमिति यत्र स्थिता वयं णमिति वाक्यालंकारे अष्टयोजनोच्छ्रितया रत्नमय्या जंब्वा उपलक्षितो द्वीपो जंबूद्वीपः सर्वद्वीपसमुद्राणां धातकीखंडलवणादीनां सर्वाभ्यंतरआदिभूतः सर्वक्षुल्लकः सर्वेभ्यो द्वीपसमुद्रेभ्यः क्षुल्लको ह्रस्वः सर्वक्षुल्लक स्तथाहि सर्वे लवणादयः समुद्राः सर्वे धातकीखंडादयो द्वीपाः अस्मात् जंबूद्वीपादारभ्य प्रवचनोक्तक्रमेण द्विगुण द्विगुणायामविष्कंभपरिधयः ततोयं शेषसर्वद्वीपसमुद्रापेक्षया सर्वलघुरिति

मूल. गो. इमीसेणं रतणप्पभाए पुढवीए णरगा एत्तो अणिठतराचेव जाव अमणामतरकाचेव वा फासेणं

भाषा. खो फरश न होय एटले एथकी पण अधिक जाणवो ॥ हे गौतम रतनप्रभापृथिवीने विषे नरक एथकी एटले पूर्वे कह्या थकी पण अतीव अनिष्ट अतिशे भयानक निश्चे जावत् अमनोहर त्यां सुधीनो पाठ लेवो ए प्रकारे फरशे करिने कह्या छे ते जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवुं ॥ हवे नरकावासा नु महत्वपणु कहे छे ॥ हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीने विषे नरक केटला मोटा स्थानकवाला कह्या छे

टी० तथावृत्तो यत स्तैलापूपसंस्थानसंस्थित: तैलेन एकोऽपूप स्तैलापूपस्तैलेन हि एकोऽपूप: प्राय: परिपूर्णवृत्तोभवति न घृतेन पक्व इति तैलविशेषणं तस्यैव संस्थानं तेन संस्थित स्तैलापूपसंस्थान संस्थित: तथावृत्तो यत: पुष्करकर्णिकासंस्थानसंस्थितस्तथा वृत्तो यतो रथचक्रवालसंस्थानसंस्थित: तथावृत्तो यत: परिपूर्णचंद्रसंस्थानसंस्थित: अनेकधोपमानोपमेयभावो नानादेशजविनेय प्रतिपत्त्यर्थ: एकं योजनशतसहस्रमायामविष्कंभेन त्रीणि योजनशतसहस्राणि षोडशस

मू० पण्णत्ता एवं जाव अहेसत्तमाए पुढवीए इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए नरगा केमहालया पं० गो. अयणं जंबुद्दीवे २ सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतरए सव्वखुड्डाए वट्टे तेल्लापूत (तेल्लपूप) (तेल्लापूप)

भा० एटले पूर्वे असंख्यात विस्तारवंत जे कह्याछे ते असंख्यातु समजवामां न आव्यु माटे फरीथी प्रश्न पुछ्युं एम समजवुं माटे उपमाए करिने भगवान् ते असंख्यातपणाने कहेछे। हे गौतम आपण जेने विषे रह्या छीये ते आठ योजन उंचो ने रतनमय जंबूवृक्ष ते उपलखातो एहवो जंबूनामे द्विपछे ते द्वीप सर्व द्वीप समुद्र तथा धातकीखंड लवणादिकनी मध्ये आदिभूतछे ने सघला द्वीप समुद्रमां लघुछे एटले लव

१५८ टीका॰ सहस्राणि द्वेयोजनशते सत्रार्विंशोनय: क्रोशा अष्टाविंशं धनु:शतं त्रयोदश अंगुलानि अर्धांगुलं च किंचिद्विशेषाधिकं परिक्षेपेण प्रज्ञप्त: परिक्षेपपरिमाणगणि तभावना क्षेत्रसमासटीकातो जंबूद्वीपप्रज्ञप्तिटीकातो वा वेदितव्या देवेयणामित्यादि देवश्च णामितिवाक्यालंकारे महर्द्धिक: महती ऋद्धिर्विमानपरिवारादिका यस्यस महर्द्धिक: महती द्युति: शरीराभरणविषया यस्यस महाद्युतिक: महत्बजंशरीर: प्राणो यस्यस महाबल:महत्यश: ख्यातिर्यस्यस महायशा: तथामहेसख्ये इति महेशइति महान् ईश्वरइत्याख्यायस्यसमहेशाख्य: अथवा ईशनमीशो भावे घञ् प्रत्यय: ऐश्वर्यमित्यर्थ: ईशऐश्वर्ये इतिवचनात् तत ईशमैश्वर्यमात्मन: ख्या

मूल॰ संघाणसंठिते वट्टे रह चक्कवाल संघाणसंठिते (ठिए वट्टे पुक्खरकण्णिया संठाण संठिते वट्टे पम्पिपुण्ण

भाषा. णादिक समुद्र धातकीखंडादिक द्वीप ते सर्व आ जंबूद्वीपथी आरंभीने प्रवचनमां कहेला अनुक्रमे करि ने बमणा२ लांबा पोहोला परिधिवालाछे माटे आ जंबूद्वीप सर्व द्वीप समुद्रनी अपेक्षाये सर्वथी लघु नानो कह्यो ने वाटला आकारेछे ने तेलवते तलेलो जे अपूप पुडो तेना जेवो एटले एक अपूप तेल मां तल्यो होय ते बहुधा परिपूर्ण गोल आकारे थाय तेवो घीईये पचावेलो न थाय माटे तेले पचावे

टी. ति. अंतर्भूतण्यर्थतया ख्यापयति प्रथयति ईशाख्यः महांश्चासावीशाख्यश्च महेशाख्यः क्वचित् महासौख्ये इतिपाठः तत्र महत्सौख्यं यस्य प्रभूतसद्वेद्योदयव शात् समहासौख्यः अन्ये पठंति महासख्खे इति तत्रायं शब्द संस्कारो महाश्वाक्षः इयंचात्र पूर्वाचार्यप्रदर्शिता व्युत्पत्तिः आशुगमनादश्वो मनःअक्षाणि इंद्रियाणि स्वविषयव्यापकत्वात् अश्वश्चाक्षाणि च अश्वाक्षाणि महांति अश्वाक्षाणि यस्यासौ महाश्वाक्षः तथामहाणुभागे इति अनुभागोविशिष्टवैक्रियाधिकरणाविषया

मू. चंदसंठाण संठिते एक्कं जोयणसतसहस्सं आयामविक्खंभेणं जावकिंचि विसेसाहिये परिक्खेवेणं देवेणं महिड्ढीए जावमाहाणुभावे जावइणामेव इणामेवत्ति कट्टु इमं केवलकप्पं जंबुद्दीवं तिहिं

भा. जो एक अपूप तेना जेवा संठाणे आकारे रह्योछे एम विशेषण दीधुं तथा गोल अरघट्ट एटले रहेंट तेना जेवो गोल संठाणे आकारे कह्योछे तथा गोल पुष्कर कर्णिका एटले कमलनो मोभो तेना जेवा आकारे रह्योछे तथा गोल परिपूर्ण चंद्रमा तेना जेवा आकारे रह्योछे ने एक लाख योजन लांबपणे तथा पोहोलपणे जावत् शब्दे करीने कांइक विशेषाधिक परिधिये करीने रह्योछे कोईक देव मोटी जेनी रि

टीका.

अचिंत्या शक्तिः भागोऽचिंतासत्ती इति वचनात् महान् अनुभागोयस्यसमहानुभागः अमूनि महर्द्धिक इत्यादीनि विशेषणानि तत्सामर्थ्यातिशयप्रतिपादकानि यावदिति चपुटिकात्रय करणकालावधिप्रदर्शनपरं इणामेवेति कट्टु एवमेवमुधिकया एवमेव मोरकल्ला (कुल्ला) मुहायमुहिपत्तिनायव्वा इतिवचनात् अवज्ञयेति भावः उक्तंच मूलटीकायां इणामेव इणामेवेतिकट्टु एवमेव मुधिकया अवज्ञयेति इतिकृत्वेति हस्तदर्शितचप्पुटिकात्रयकरणसूचकं केवलकल्पं परिपूर्णं जंबूद्वीपं त्रिभिरप्सरोनिपातै अप्सरोनिपातो नाम चप्पुटिका तत्रत्रिसृभिश्चप्पुटिकाभिरिति द्रष्टव्यं चप्पुटिकाश्च कालोपलक्षणं ततो यावता कालेन तिस्रश्चप्पुटिकाः

मूल.

अछराणि वा तिहिं ति सत्त खुत्तो अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागछेज्जा सेणं देवे ताए उक्किटाए

भाषा.

छे एवो जावत् मोटो जेनो महिमाछे एवो त्यां पर्यंत विशेषण देवतानां लेवां एटले मोटुं जेनुं बलछे तथा मोटुं जेनुं ऐश्वर्यछे अथवा मोटुं जेने सुखछे बीजा केटलाक आचार्य एम अर्थ कहेछे जे मोटां छे मन इन्द्रियो ते जेनां एवो जेनी अचिंत्य शक्तिछे चिंतवनमां न आवे एवुं जेनुं सामर्थ्यछे एवो देवता ते अवज्ञाये करीने ते परिपूर्ण जंबूद्वीपने त्रण चपटी पूरी थाय एटला कालमां एकवीस वार परिभ्रमण करीने

टीका. पर्यंते तावत्कालमध्ये इत्यर्थः त्रिसप्तकृत्व एकविंशतिवारान् अनुपरिवर्त्य सामस्त्येन परिभ्रम्य हव्वंशीघ्रमागच्छेत् सइत्थंभूतगमनशक्ति योगयो देवस्तथा देवजन प्रसिध्द्या उत्कृष्टया प्रशस्तविहायोगतिनामोदयात् प्रशस्तया शीघ्रसंचरणात् त्वरितया त्वरासंजाता अस्यामिति त्वरिता तया त्वरितया शीघ्रतरमेव तया प्र देशांतराक्रमणामिति चपलेव चपला तया क्रोधविष्टस्येव श्रमासंवेदनात् चंडेव चंडातया निरंतर शीघ्र व गुणयोगात् शीघ्रा तया शीघ्रया परमोत्कृष्टवेग प

मूल. तुरियाये चवलाये चंडाए सिग्घाए उद्धुयाए ताए जइणाए दिव्वाए देवगईये वीत्तिवयमाणेश जहण्णेणं एगाहंवा छुयाहंवा तियाहंवा उक्कोसेणं छमासे वीतिवएज्जा अछेगतिए णारगे

भाषा. करीने शीघ्र उतावळो आवे ते देवता तेहवी उत्कृष्ट गतिये करीने उतावळी गतिये करीने चपळ गति ये करीने एटले जेम कोई क्रोधयुक्त चाले ने तेने श्रम न जणाय एवी चपळ गतिये करिने निरंतर उतावळ जेमांछे ते चंड गतिये करिने जेमां घणो वेगछे एवी गतिये करिने तथा उद्धूत गतिये करिने ए टले वायुये उडायेलुं रज धूळ तेनाथी अधिक वेगवाळी गतिये करिने तथा देवलोक संबंधि देवतानी

टीका॰ रिणामो पेता जवना सया अन्ये तु जैनया विपक्षजेतृत्वेनेति व्याचक्षते छेकया निपुणया वातोद्धुतस्य दिगंतव्यापिनो रजस इव या गतिः सा उद्धूता तया अन्ये त्वाहु रुद्धतया तदर्थातिशयेनेति दिव्या दिवि देवलोके भवा दुव्या तया देवगत्या व्यतिव्रजन् जघन्यत एकाहंवा एकमहर्यावत् एवं द्व्यहं त्र्यह मुत्कर्षत: षण्मासान् यावत् व्यतिव्रजन् तत्रास्त्येतत् यद्धुत एककान् कांचन नरकान् व्यतिव्रजेत् उल्लंघ्य परतो गछेत् तथा स्त्येतत् यद्धुत उद्धूतयापि गत्या षण्मासानापि यावत् निरंतरं गछन् एककान् कांश्चननरकान् न व्यतिव्रजेत् नोल्लंघ्यपरतो गछेत् अतिप्रभूतायामतया तषामंतस्य प्राप्तुमशक्यत्वात् एतावंतो महांतो गौतम अस्यां रत्नप्रभाय,

---

मूलं॰ वीतिवएज्जा अत्थेगतिए णोवीतिवएज्जाए महालताएणं गो० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए णरगा

भाषा॰ गतिये करिने जतो थको जघन्यपणे एक दिवस सुधी बे दिवस सुधी त्रण दिवस सुधी जावत् उत्कृष्टा छ मास सुधी अतिक्रमे एटले एवी गतिये जतां जतां केटलाएक नरक उल्लंघीने आगल जाय छ मासे पण उल्लंघन करि जाय ए प्रश्न हे गौतम एवी मोटी गतिये करिने पण न उल्लंघन करे एवा रत्नप्रभा पृथिवीने विषे नरकावासा कह्याछे ते जावत् हेठली सातमीपृथिवी पर्यंत जाणवुं तेमां आटलुं

नरकाः प्रज्ञप्ताः एवमेकैकस्यां पृथिव्यां तावद्वक्तव्यं यावदधः सप्तम्यां नवरमधःसप्तम्यामेवं वक्तव्यं अह्रेगइयं नरगं वईवएज्जा अह्रेगईए नरगे नो वईवएज्जा अप्रतिष्ठानाभिधस्यैकस्य नरकस्य लक्षयोजनायामविष्कंभतया अंतस्य प्राप्तुंशक्यत्वात् शेषाणां च चतुर्णामपि प्रभूतासंख्येययोजनकोटीकोटीप्रमाणत्वेनांतस्य प्राप्तुमशक्यत्वात् ॥ संप्रति किंमया नरका इतिनिरूपणार्थमाह इमीसेणं भंते इत्यादि अस्या भदंत रत्नप्रभायां पृथिव्यां नरका. किम्मयाः किंविकाराः प्रज्ञप्ताः

पण्णत्ता एवं जाव अहेसत्तमाए अत्थेगतियं नरगं वीई वएज्जा अत्थेगईयं नरगं नो वीति वएज्जा ॥ इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए नरगा किंमया पं. गो. सव्ववइरामया पं. तत्थणं नरएसु बहवे

विशेष जाणवुं जे अप्रतिष्ठान नामे नरक एक लक्ष योजननो लांबो तथा पोहोलो कह्यो छे तेनो अंत पमाय तेनुं उल्लंघन थाय ने बीजा च्यारनुं पण घणा असंख्यात कोटाकोटि योजननुं प्रमाण कह्युं छे माटे तेनो अंत पामवानुं असमर्थपणुं छे एम जाणवुं ॥ हे भगवन् रत्नप्रभापृथिवीने विषे नरक शे प्रकारे शी जातिना कह्याछे? हे गौतम सघला वज्ररत्नमय

॥. १६१ **टीका.** भगवानाह गौतम सव्ववइरामया इति सर्वात्मनावज्रमयाः प्रज्ञप्ताः वज्रशब्दस्य सूत्रे दीर्घता प्राकृतत्वात् तत्रच केषु नरकेषु णमिति वाक्यालंकारे बहवो जीवाश्च खरबादरपृथिवीकायिकरूपाः पुद्गलाश्च अपक्रामंति च्यवंते व्युत्क्रामंति उत्पद्यंते एतदेव शब्दद्वयं यथाक्रमं पर्यायद्वयेन व्याचष्टे वयंति उववज्जंति च्यवंते उत्पद्यंते किमुक्तं भवति एकेजीवाः पुद्गलाश्च यथायोगं गछंति अपरेत्वागछंति यस्तु प्रतिनियतसंस्थानादिरूप आकारः स तदवस्थ एवेति अतएवाह

मूल. जीवाय पोग्गलाय अवक्कमंति विउक्कमंति चवंति उववज्जंति सासताणं ते नरगा दव्वछयाए वण्णप ज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासता एवं जाव अहेसत्तमा ॥ इमीसेणं भंते

भाषा. सघले ठेकाणे वज्ररत्नमय कह्याछे तिहां नरकने विषे घणा जीव खरबादरपृथिवीकायरूप पुद्गल च वेछे ने उत्पन्न थायछे एज बे शब्द अनुक्रमे बे पर्याये सूत्रकार कहेछे भावार्थ एछे जे केटलाक जीव तथा पुद्गल यथायोग जेम घटे तेम जायछे ने बीजा आवेछे ने जे नियत नियमाये संस्थानादिरुप आकार तेतो तदवस्थ एटले तेमनो तेम रहेछे माटे कहेछे जे शाश्वता एटले द्रव्यार्थपणे तथाविध ते प्रकारनो

टीका. शाश्वताणमिति पूर्ववत् ते नरका द्रव्यार्थतया तथाविधप्रतिनियतसंस्थानादिरूपतया वर्णपर्यायै गंधपर्यायैः रसपर्यायैः स्पर्शपर्यायैः पुनरशाश्वता वर्णादीनाम न्यथाजवनात् एवं प्रतिपृथिवि तावद्वक्तव्यं यावदधः सप्तमीपृथिवी साम्प्रतमुपपातं विचिंतयिषुराह ॥ इमीसेणमित्यादि अस्यां जदंत रत्नप्रजायां पृथिव्या नैरयिकाः

मू. रयणप्पन्नाए पुढवीए नेरइया कतोहिंतो उववज्जंति उववातो सव्वो नाणिऊणं ततो पुछा किं के असन्नीहिंतो उववज्जंति सिरिसवेहिंतो उववज्जंति परकीहिंतो उववज्जंति चउप्पएहिंतो उववज्जंति

भाषा. प्रतिनियत संठाणादिरुपपणे शाश्वती ने वर्णपर्यायेकरिने तथा गंधपर्यायेकरिने तथा रसपर्यायेकरिने अशाश्वती केमजे वर्णादिकनुं अन्यथापणुं थायछे माटे ए प्रकारे सर्वे पृथिवीने विषे जाणवुं जावत् हेठली सातमीपृथिवी पर्यंत हवे उपपात उपजवा आश्रि विचार करे छे ते पुछे छे जे हे जगवन् रत्नप्रजापृथिवीने विषे नारकी कीहांथी आविने उपजेछे शुं असंज्ञीथकी आवि उपजेछे के सरीसृप एटले गोधा नकुल आदिथकी आवि उपजेछे के पक्षीथकी आवि उपजेछे के चउपदथकी आवि उपजेछे के सर्प जाति

सू. १६१ टीका. भगवानाह गौतम सव्ववइरामया इति सर्वात्मनावज्रमयाः प्रज्ञप्ताः वज्रशब्दस्य सूत्रे दीर्घता प्राकृतत्वात् तत्रच केषु नरकेषु णमिति वाक्यालंकारे बहवो जीवाश्च खरबादरपृथिवीकायिकरूपाः पुद्गलाश्च अपक्रामंति च्यवंते व्युत्क्रामंति उत्पद्यंते एतदेव शब्दद्वयं यथाक्रमं पर्यायद्वयेन व्याचष्टे चयंति उववज्जंति च्यवंते उत्पद्यंते किमुक्तं भवति एकेजीवाः पुद्गलाश्च यथायोगं गछंति अपरेत्वागछंति यस्तु प्रतिनियतसंस्थानादिरूप आकारः स तदवस्थ एवेति अतएवाह

मूल. जीवाय पोग्गलाय अवक्कमंति विउक्कमंति चवंति उववज्जंति सासताणं ते नरगा दव्वठ्ठयाए वण्णप ज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासता एवं जाव अहेसत्तमा ॥ इमीसेणं भंते

भाषा. सघले ठेकाणे वज्ररत्नमय कह्याछे तिहां नरकने विषे घणा जीव खरबादरपृथिवीकायरूप पुद्गल च वेछे ने उत्पन्न थायछे एज बे शब्द अनुक्रमे बे पर्याये सूत्रकार कहेछे भावार्थ एछे जे केटलाक जीव तथा पुद्गल यथायोग जेम घटे तेम जायछे ने बीजा आवेछे ने जे नियत नियमाये संस्थानादिरुप आकार तेतो तदवस्थ एटले तेमनो तेम रहेछे माटे कहेछे जे शाश्वता एटले द्रव्यार्थपणे तथाविध ते प्रकारनो

गा० ३६३ टीका. कुतउत्पद्यंते किं असंज्ञिभ्य उत्पद्यंते सरीसृपेभ्यउत्पद्यंते पक्षिभ्य उत्पद्यंत चतुष्पदेभ्यउत्पद्यंते स्त्रीभ्यउत्पद्यंते उरगेभ्यउत्पद्यंते मत्स्यमनुष्येभ्य उत्पद्यंते भगवानाह गौतम असंज्ञिभ्योप्युत्पद्यंते यावन्मत्स्यमनुष्येभ्योप्युत्पद्यंते सेसासु इमाए गाहाए अणुगंतव्वा इति शेषासु शर्कराप्रभादिषु पृथिवीष्वनया गाथया ज्ञातावेकवचनं गाथा द्विकेनेत्यर्थः उत्पद्यमाना अनुगंतव्याः तदेव गाथा द्विकमाह असण्णी खलु पढमामित्यादि असंज्ञिनः संमूर्छिमपंचेंद्रियाः खलु प्रथमां नरकपृथिवीं गच्छंति

मूल. उरएहिंतो उववज्जंति इत्थियाहिंतो उववज्जंति मछमणुएहिंतो उववज्जंति गो० असन्नी

भाषा. थकी आवि उपजेछे के स्त्रीथकी आवि उपजेछे के मत्स्य तथा मनुष्यथकी आवि उपजेछे एम सघली पृथिवी आश्री प्रश्न लेवा उत्तर हे गौतम असंज्ञीथकी आवि उपजेछे ते जावत् मछमनुष्यथकी आवि उपजेछे एम आलावो जाणवो एटले आ गाथानो अर्थ देखाडेछे तेम जाणवुं असंज्ञी समूर्छिमपंचेंद्रिय पेहेली पृथिवी लगि जाय आगल न जाय ए गाथामां खलु शब्द मुक्योछे तेनो अवधारण एटले निश्चेरुपी अर्थछे ते अवधारण आ प्रकारनुं जाणवुं जे असंज्ञी पेहेलीजपृथिवी पर्यंत जाय पण आगल न

यक्तुशब्दो वधारणे तथात्रधारणमेवमसंज्ञिनः प्रथमामेव यावद्गच्छंति नपरतइति नतु त एव प्रथमामिति गर्भजसरीसृपादीनामपि उत्तरपृथिवी षट्क गामिन तत्र गमनात् एवमुत्तरत्राप्यवधारणं भावनीयं । दोच्चेवसरीसवा इति द्वितीयामेव शर्कराप्रभाख्यां पृथिवीं यावद्गच्छंति सरीसृपा गोधा नकुलादयो गर्भव्युत्क्रांता न परतः तृतीयामेव गर्भजाः पक्षिणो गृध्रादयश्चतुर्थी मेव सिंहाः पंचमीमेव गर्भजा उरगाः षष्ठीमेव स्त्रिय स्त्रीरत्नाद्या महाक्रूराऽध्यवसायिन्यः सप्तमीं यावत्

हिंतो उववज्जंति जाव सत्तमपुढवीएहिंतो उववज्जंति एवं एतेणं अभिलावेणं इमा गाथा घोसेयव्वा

जाय पण तेहीज पेहेलीपृथिवीये जाय एम न जाणवुं केमजे आगलीछ पृथिवीमां जनारा गर्भज सरीसृपनुं पण त्यां गमन थायछे माटे एम आगल पण भावना करवी हवे सरीसृपं एटले घो नकुल प्रमुख गर्भज ते बीजी शर्कराप्रभापृथिवी पर्यंत जाय पण आगल न जाय२ गर्भज पंखी गृध्रादिक ते त्रीजीपृथिवी लगी जाय३ सिंह चोथी लगि उपजे४ गर्भज उरग पांचमी लगि उपजे५ स्त्रीयो छठी लगि उपजे केमजे स्त्री रत्नादिक महा क्रूर अध्यवसायवालीछे तोपण छठी पर्यंत जाय पण सातमीये

गा. ७६४

टीका. गर्भजा मत्स्यमनुजा अतिक्रूराध्यवसायिनो महापापकारिण आलापकश्च प्रतिपृथिवि एवं सक्करप्पभाए णं पुढवीए नेरइया किं असण्णीहिंतो उववज्जंति जाव मच्छमणुएहिंतो उववज्जंति गोयमा नो असण्णीहिंतो उववज्जंति सरीसवेहिंतो उववज्जंति जावमच्छमणुएहिंतो उववज्जंति वालुयप्पभाए णं भंते पुढवीए नेरइया किं असण्णीहिंतो उववज्जंति जावमच्छमणुएहिंतो उववज्जंति गोयमा नो असन्नीहिंतो उववज्जंति नो सरीसवेहिंतो उववज्जंति पक्खीहिंतो उववज्जंति जावमच्छ

मूल. असण्णी खलु पढमं दोच्चंच सिरीसिवा ततियपक्खी सीहाजंति चउत्थी उरगा पुण पंचमीजंति छट्ठि च इत्थियाओ मच्छामणुयाय सत्तमिजंति जाव अहेसत्तमा पुढवी णेरातिगा णो

भाषा. न जाय माटेह गर्भज मत्स्य मनुष्य अति क्रूर अध्यवसायवाळा महा पापि ते सातमी पर्यंत उपजेछे ए प्रकारे सर्व पृथिवीनो आलावो कहेवो एटले हे भगवन् शर्कराप्रभापृथिवीये नारकी शुं असंज्ञीथकी उपजे जावत् मच्छमनुष्यथकी उपजे त्यां पर्यंत प्रश्न तेनो उत्तर हे गौतम असंज्ञीथकी न उपजे सरीसृपथकी उपजे जावत् मच्छमनुष्यथकी उपजे हे भगवन् वालुकाप्रभापृथिवीये नारकी शुं असंज्ञीथकी उ

टी. मणुस्सेहिंतो उववज्जंति एवमुत्तरोत्तरपृथिव्यां पूर्वपूर्वप्रतिषेधस्तावद्वक्तव्यो यावदधः सप्तम्यां स्त्रीभ्योपि प्रतिषेधः तत्सूत्रंचैवं अहेसत्तमाए णं भंते पुढवीए नेरइया किं असण्णीहिंतो उववज्जंति जाव मच्छमणुस्सेहिंतो उववज्जंति गोयमा नो असंन्नीहिंतो उववज्जंति जाव नो इत्थीहिंतो उववज्जंति मच्छमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ॥ ॥ संप्रत्येकस्मिन् समयेकियंतोऽस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यां नरका उत्पद्यंते इति निरूपणार्थमाह रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया इत्यादि रत्नप्रभापृथिव्यां नैरयिका

मू. असण्णीहिंतो उववज्जंति जावणो इत्थियाहिंतो उववज्जंति मच्छमणुएहिंतो उववज्जंति ॥ इमसिणं भंते रयणप्पभाए पुढवी णेरतिया एक्कसमएणं केवतिया उववज्जंति गो॰ जहण्णेणं ए

भा. पजे जावत् मच्छमनुष्यथकी उपजे त्यां पर्यंत प्रश्न तेनो उत्तर हे गौतम असंज्ञीथकी न उपजे सरीसृप थकी न उपजे पंखीथकी उपजे जावत् मच्छमनुष्यथकी उपजे एम उत्तरोत्तर पृथिवीने विषे पूर्व पूर्वनो प्र तिषेध कहेवो ते हेठली सातमीपृथिवी पर्यंत स्त्रीथकी सातमीपृथिवीने विषे उपजवानो निषेध कह्योछे ॥ हावे एक समये कटला रतनप्रभापृथिवीने विषे नारकी उपजे ते निरूपण करवाने प्रश्नसूत्र कहे छे ॥

पा. १६५

टीका· भदंत एकसमयेन कियंत उत्पद्यंते भगवानाह गौतम जघन्यत एको द्वौ त्रयोवा उत्कर्षत: संख्येयावा असंख्येयावा एवं पृथिव्यां२ तावद्वक्तव्यं यावदध:सप्तम्यां। संप्रति प्रतिसमयमेकैकनारकापहारे सकलनारकापहारकालमानं विचिंतयिषुरिदमाह ॥ रयणप्पभापुढवीइत्यादि रत्नप्रभापृथिवी नैरयिका भदंतसमये२ एकैकसंख्यया अपह्रियमाणा कियता कालेन सर्वात्मनाऽपह्रियंते भगवानाह गौतम तेणं असंखेज्जा इत्यादि रत्नप्रभापृथिवी नैरयिका असंख्येया स्तत: समये२ एकैकसंख्यया अपह्रियमाणा असंख्येयाभिरुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभिरपह्रियंते इदंच नारकपरिमाणप्रतिपत्त्यर्थं कल्पनामात्रं चेवणं अवहिया सिया इति पुनरपहृता: स्यु· किमुक्तं भवति नपुन

मूल: क्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जावा असंखेज्जावा उववज्जंति एवं जाव अहेसत्तमाए इमी

भाषा. हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीने विषे नारकी एक समये केटला उपजे? हे गौतम जघन्यपणे एक अथवा बे अथवा त्रण उत्कष्टपणाथकी संख्याता अथवा असंख्याता उपजे एम जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत कहेवुं हावे समय समय प्रत्ये एक एक नारकी अपहार करे छते सकल नारकीना अपहार कालनुं मान पुछवानुं सुत्र कहे छे हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीना नारकी समय समयने विषे एक

रेवं कदाचनापि अपहृता अभवन् नाप्यपहरिष्यंते इति एवं पृथिव्यां२ तावद्वक्तव्यं यावदधः सप्तम्यां ॥ संप्रति शरीरपरिमाणप्रतिपादनार्थमाह रयणप्पभाएपुढवी त्यादि रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदंत किंमहती किंप्रमाणमहती शरीरावगाहना प्रज्ञप्ता जहापण्णवणाए ओगाहणसंठाणपदे इतियथा प्रज्ञापनायामवगाहना

ा. संस्थानाख्ये पदे तथा वक्तव्यं साचैवं द्विधा रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां शरीरावगाहना भवधारणीया उत्तरवैक्रिया च तत्र या भवधारणीया सा जघन्यतो ंगुलासंख्येयभागः उत्कर्षतः सप्तधनूंषि त्रयोहस्ताः षट्परिपूर्णान्यंगुलानि उत्तरवैक्रिया जघन्यतोंगुलसंख्येयभाग उत्कर्षतः पंचदशधनूंषि द्वौ हस्तावेका वित

ू. सेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए नेरतिया समये२ अवहीरमाणा२ केवति कालेणं अवहिता सिता

एक अपहरण करे छते एटले ओछा करते छते केटले काले सरवे ओछा थाय? हे गौतम रत्नप्रभा पृथिवीना नारकी असंख्याता कह्या छे माटे समये समये एक एक संख्याये अपहरण करे छते एटले

षा. ओछा करे छते अनेक उत्सर्पिणी अवसर्पिणी जाय तोपण सर्वे नारकीनो अपहार एटले ओछा करते क रते क्यारे पण निश्चे सर्वे नारकी ओछा थता पण नथी ने थया पण नथी ने थशे पण नही एम स

टीका. स्तिः शर्कराप्रजायां जवधारणी या जघन्यतों गुलासंख्येयजागः उत्कर्षतः पंचदश धनूंषि द्वौ हस्ता वेका वितस्तिः उत्तरवैक्रिया जघन्यतोगुलसंख्येयजाग उत्क र्षत एकत्रिंशत् धनूंषि एको हस्तः वालुकाप्रजायां जवधारणीया जघन्यतो गुलासंख्येयजागः उत्कर्षत एकत्रिंशत्धनूषि एकोहस्तः उत्तरवैक्रिया जघन्यतो गुलसं ख्येयजागः उत्कर्षत सार्द्धानि द्वाषष्टि धनूंषि । पंकप्रजायां जवधारणीया जघन्यतो गुजासंख्येयजागः उत्कर्षतः सार्द्धानि द्वाषष्ठिधनूंषि उत्तरवैक्रिया जघन्यतो

मूल. गो॰ तेणं असंखेज्जा समए२ अवहीरमाणा२ असंखेज्जाहिं उसप्पिणी उसप्पिणीहिं अवहीरंति नोचेवणं अवहीता सिता जाव अहेसत्तमा। इमीसेणं नंते रयणप्पनाए पुढवीए नेरतियाणं केम

नाषा. वें पृथिवीये कहेवुं जावत् हेठली सातमीपृथिवी पर्यंत प्रश्न तथा तेनो उत्तर जाणवो ॥ हवे नारकीना शरीरनुं परिमाण कहेवाने अर्थे प्रश्नसूत्र कहेछे हे नगवन् रत्नप्रनापृथिवीने विषे नारकीना शरीर नी अवगाहना एटले शरीरनुं परिमाण केटलुं मोटुं कह्युंछे? हे गौतम बे प्रकारे शरीरनी अवगाहना कहीछे एकतो नवधारणीक ने बीजी उत्तरवैक्रियिक तेमां जे नवधारणीकछे ते जघन्यपणे अंगुलना

गुलसंख्येयसंख्येयभागः उत्कर्षत पंचविंशं धनु शतं । धूमप्रभायां भवधारणी या जघन्यतोगुलासंख्येयभाग उत्कर्षत: पंचत्रिंशं धनु:शतं उत्तरवैक्रिया जघन्यतों
गुलसंख्येयभागः उत्कर्षतोर्द्धतृतीयानि धनुःशतानि । तमःप्रभाया भवधारणी या जघन्यतोगुलासंख्येयभागमात्रा उत्कर्षतोऽर्द्धतृतीयानि धनुःशतानि उत्तरवैक्रिया
का. जघन्यतोंऽगुल संख्येयभाग उत्कर्षतः पंचधनुःशतानि । तमस्तमप्रभाया भवधारणीया जघन्यतोंगुलासंख्येयभाग उत्कर्षतः पंच धनुःशतानि उत्तरवैक्रिया जघ
न्यतोंऽगुलसंख्येयभाग उत्कर्षतो धनुःसहस्रमिति ॥ यदिपुनः प्रतिप्रस्तटे ताःक्रियते तदैवमवगंतव्यं तत्रजघन्या भवधारणीया सर्वत्राप्यंगुलासंख्येयभाग उत्तर

ज. हालिया सरीरोगाहणा पं. गो. दुविधा सरीरोगाहणा पं. तं भवधारणिज्जाय उत्तरवेउव्वियाय

असंख्यातमा भाग प्रमाणे जाणवी ने उत्कृष्टपणे सात धनुषने त्रण हाथ ने छ अंगुल संपूर्ण एटली
षा. जाणवी ने जे उत्तरवैक्रियछे ते जघन्यपणे अंगुलना संख्यातमे भागे ने उत्कृष्टपणे पंदर धनुषने हढी
हाथ एटले बे हाथ ने एक वेंहेंत ए प्रमाणे जाणवी हवे बीजी शर्कराप्रभापृथिवीने विषे भवधारणीक
जघन्यपणे अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे पंदर धनुष ने हढी हाथ जाणवी ने उत्त

ा. १६७ टीका. वैक्रिया अंगुलसंख्येयभाग । उक्तंच मूलटीकाकारेण भ्यत्र उत्तरवैक्रिया तु तथाविधप्रयत्नभावादाद्यसमये प्यंगुलसंख्येयभागमात्रैवेति उत्कृष्टा तु भवधारणी या रत्नप्रभायाः प्रथमे प्रस्तटे त्रयोहस्ता अतऊर्ध्वक्रमेण प्रतिप्रस्तटं सार्द्धानि षट्पंचाशदंगुलानि प्रक्षिप्यंते ततएवं परिमाणं भवति द्वितीये प्रस्तटे धनुरेकमेकोहस्तः सार्द्धानि चाष्टावंगुलानि तृतीयेधनुरेकं त्रयो हस्ताः सप्तदशांगुलानि चतुर्थे द्वे धनुंषि द्वौ हस्तौ सार्द्धमेकमंगुलं पंचमे त्रीणि धनूंषि दशांगुलानि षष्ठे त्रीणि धनूंषि द्वौ हस्तौ सार्द्धान्यष्टादशांगुलानि सप्तमे चत्वारि धनूंषि एको हस्तः त्रीणि चांगुलानि अष्टमे चत्वारि

मूल. तत्थणं जंसे भवधारणिज्जा से जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जतिभागं उक्कोसेणं सत्तधणूइं तिण्णिरयणीउ

भाषा. रवैक्रिय जघन्यपणे अंगुलना संख्यातमा भाग प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे एकत्रीश धनुष ने एक हाथ प्रमाणे जाणवी हवे त्रीजी वालुकाप्रभापृथिवीने विषे भवधारणीक जघन्यपणे अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाणे जाणवी ने उत्कृष्टपणे एकत्रीश धनुष ने एक हाथ प्रमाणे जाणवी उत्तरवैक्रिय बासठ ६२ धनुष ने बे हाथ प्रमाणे जाणवी हवे चोथी पंकप्रभापृथिवीने विषे भवधारणीक जघन्यपणे अंगुलना असंख्या

धनूंषि त्रयो हस्ताः सार्द्धान्येकादशांगुलानि नवमे पंच धनूंषि एको हस्तो विंशतिरंगुलानि दशमे षट् धनूंषि सार्द्धानि चत्वारि अंगुलानि

टी. एकादशे षट् धनूंषि द्वौ हस्तौ त्रयोदशांगुलानि द्वादशे सप्त धनूंषि सार्द्धान्येकाविंशतिरंगुलानि त्रयोदशे सप्तधनूंषि त्रयो हस्ताः षट् परिपूर्णानि न्यंगुलानि उक्तं च रयणाए पढमपयरे हत्थतियं देहउस्सए जणियं छप्पअंगुलसंखापयरे२ हवइवुढी शर्कराप्रजायां प्रथमे प्रस्तटे सप्तधनूंषि त्रयो हस्ता षट् चांगुलानि अतऊर्द्ध तु प्रतिप्रस्तटं त्रयो हस्तो त्रीणि चांगुलानि क्रमेण प्रक्षेप्तव्यानि तत एवं परिमाणं जवति द्वितीये प्रस्तटे अष्ट धनूंषि द्वौ हस्तौ नव चांगुलानि तृतीये नव

छत्रअंगुलाइं तत्रणं जेसे उत्तरवेउव्विए से जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जत्तिजागं उक्कोसेणं पण्णरस्सध

तमे जागे ने उत्कृष्टपणे बासठ ६२ धनुष ने बे हाथ प्रमाणे जाणवी उत्तरवैक्रिय जघन्यपणे अंगुलना संख्या

बा. तमे जागे ने उत्कृष्टपणे एकसोने पच्चीस १२५ धनुष प्रमाणे जाणवी हवे पांचमी धूमप्रजापृथिवीने विषे जवधारणीक जघन्यपणे अंगुलने असंख्यातमे जागे ने उत्कृष्टपणे एकसोने पच्चीस १२५ धनुष प्रमाणे जाणवी उत्तरवैक्रिय जघन्यपणे अंगुलना संख्यातमे जागे ने उत्कृष्टपणे अढीसे २५० धनुष प्रमाणे जा

गा॰ १६८ टीका.

धनूंपि एको हस्तो द्वादशचांगुलानि चतुर्थे दश धनूंषि पंचदश अंगुलानि पंचमे दश धनूंषि त्रयो हस्ता अष्टादश अंगुलानि पष्ठे एकादश धनूंपि द्वौ हस्ता वेकाविंशतिरगुलानि सप्तमे द्वादश धनूंषि द्वौ हस्तौ अष्टमे त्रयोदश धनूंषि एको हस्त स्त्रीणि चांगुलानि नवमे चतुर्दश धनूंपि पट् चांगुलानि दशमे चतुर्दश धनूंषि त्रयो हस्ता नवचांगुलानि एकादशे पंचदश धनूंषि द्वौ हस्ता वेका वितास्तिः उक्तंच सो चेवय वीयाए पढमे पयरंमि होउ उस्सेहो हत्तियतिन्नि अंगुल पयरे२यवुढीउ एकारसमे पयरे पण्णरस धणूणि दोण्णि रयणीउ बारसय अंगुलाइं देहपमाणं तु विन्नेयं । अत्र सोचेत्रय वीयाए इति यएव प्रथमपृ

मूल.

एइं अढ्ढाइज्जातो रयणीउ उत्तर वेउव्विया जहण्णेणं अंगुलस्स संखेयभागं उक्कोसेणं एकतीसं धणूइं

भाषा.

एवी हवे छठ्ठी तमःप्रभापृथिवीने विषे भवधारणीक जघन्यपणे अंगुलना असंख्यातमे भागे ने उत्कृष्टपणे अढीसे २५० धनुष प्रमाणे जाणवी उत्तरवैक्रिय जघन्यपणे अंगुलना संख्यातमे भागे ने उत्कृष्टपणे पांचशे ५०० धनुष प्रमाणे जाणवी हवे सातमी तमतमापृथिवीने विषे भवधारणीक जघन्यपणे अंगुलना असंख्यातमे भागे ने उत्कृष्टपणे पांचशे ५०० धनुष प्रमाणे जाणवी उत्तरवैक्रिय जघन्यपणे अंगुलना

टीका. थिव्या त्रयोदशे प्रस्तटे उत्सेधो भणितो यथा सप्त धनूंषि त्रयो हस्ताः षट् चांगुलानीति सएव द्वितीयस्यां शर्कराप्रभायां पृथिव्या प्रथमे प्रस्तटे उत्सेधो भवति शेषं सुगमं वालुकाप्रभायाः प्रथमे प्रस्तटे पंचदश धनूंषि द्वौ हस्तौ द्वादश चांगुलानि अतऊर्ध्वं तु प्रतिप्रस्तटं सप्तहस्ताः सार्द्धानि एकोनविंशतिरंगुलानि क्रमेण प्रक्षेप्तव्यानि ततएवं परिमाणं भवति द्वितीये प्रस्तटे सप्तदश धनूंषि द्वौ हस्तौ सार्द्धानि सप्तांगुलानि तृतीये एकोनविंशति धनूंषि द्वौ हस्तौ त्रीण्यंगुलानि चतुर्थे एकविंशति धनूंषि एको हस्तः सार्द्धानि च द्वाविंशतिरंगुलानि पंचमे त्रयोविंशतिधनूंषि एकोहस्तो ऽष्टादश चांगुलानि षष्ठे पंचविंशतिधनूंषि एको

मूल. एकारसयणी तइआए भवधारणिज्जे एकतीसं धणू एकारसयणी उत्तरवेउव्विया बावट्ठिं धणूइं दोण्णियरयणीउ

भाषा. संख्यातमे भागे ने उत्कृष्टपणे हजार १००० धनुष प्रमाणे नारकीना शरीरनी अवगाहना जाणवी ॥ हवे रत्नप्रभाना प्रस्तट प्रस्तटने विषे विचार करतां आ प्रकारे जाणवुं तेमां जे जघन्यपणे भवधारणी सर्व जगाये पण अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाणे ने उत्तरवैक्रिय अंगुलना संख्यातमा भाग प्रमाणे मूल टीकाकारे कह्युंछे जे उत्तरवैक्रिया तो आद्य समयने विषे पण अंगुलना संख्यात भाग मात्रज होय ॥ उत्कृष्ट

गा' २६८ टीका. धनूंषि एको हस्तो द्वादशचांगुलानि चतुर्थे दश धनूंषि पंचदश अंगुलानि पंचमे दश धनूंषि त्रयो हस्ता अष्टादश अंगुलानि षष्ठे एकादश धनूंषि द्वौ हस्ता वेकाविंशतिरगुलानि सप्तमे द्वादश धनूंषि द्वौ हस्तौ अष्टमे त्रयोदश धनूंषि एको हस्त स्त्रीणि चांगुलानि नवमे चतुर्दश धनूंषि षट् चांगुलानि दशमे चतुर्दश धनूंषि त्रयो हस्ता नवचांगुलानि एकादशे पंचदश धनूंषि द्वौ हस्ता वेका वितास्तिः उक्तंच सो चेवय वीयाए पढमे पयरंमि होउ उस्सेहो हत्थतियतिन्नि अंगुल पयरे२यवुढीउ एकारसमे पयरे पण्णरस धणूणि दोण्णि रयणीउ बारसय अंगुलाइं देहपमाणं तु विन्नेयं । अत्र सोचेवय वीयाए इति यएव प्रथमपृ

मूल. एूइं अड्ढाइज्जातो रयणीउ उत्तर वेउव्विया जहण्णेणं अंगुलस्स संखेयन्नागं उक्कोसेणं एकतीसं धणूइं

नाषा. एवी हवे छठी तमःप्रनापृथिवीने विषे नवधारणीक जघन्यपणे अंगुलना असंख्यातमे नागे ने उत्कृष्टपणे अढीसे २५० धनुष प्रमाणे जाणवी उत्तरवैक्रिय जघन्यपणे अंगुलना संख्यातमे नागे ने उत्कृष्टपणे पांचशे ५०० धनुष प्रमाणे जाणवी हवे सातमी तमतमापृथिवीने विषे नवधारणीक जघन्यपणे अंगुलना असंख्यातमे नागे ने उत्कृष्टपणे पांचशे ५०० धनुष प्रमाणे जाणवी उत्तरवैक्रिय जघन्यपणे अंगुलना

थिव्यां त्रयोदशे प्रस्तटे उत्सेधो भणितो यथा सप्त धनूंषि त्रयो हस्ताः षट् चांगुलानीति सएव द्वितीयस्यां शर्कराप्रभायां पृथिव्या प्रथमे प्रस्तटे उत्सेधो नव
ति शेषं सुगमं वालुकाप्रभाया. प्रथमे प्रस्तटे पंचदश धनूंषि द्वौ हस्तौ द्वादश चांगुलानि अतऊर्ध्वं तु प्रतिप्रस्तटं सप्तहस्ताः सार्द्धानि एकोनविंशतिरंगुलानि
क्रमेण प्रक्षेप्तव्यानि ततएवं परिमाणं भवति द्वितीये प्रस्तटे सप्तदश धनूंषि द्वौ हस्तौ सार्द्धानि सप्तांगुलानि तृतीये एकोनविंशति धनूंषि द्वौ हस्तौ त्रीण्यंगुला
नि चतुर्थे एकविंशति धनूंषि एको हस्तः सार्द्धानि च द्वाविंशतिरंगुलानि पंचमे त्रयोविंशतिधनूंषि एकोहस्तो ऽष्टादश चांगुलानि षष्टे पंचविंशतिधनूंषि एको

एकारयणी तच्चाए भवधारणिज्जे एकतीसं धणू एकारयणी उत्तरवेउव्विया बावट्ठिं धणूइं दोण्णियरयणीउ

संख्यातमे भागे ने उत्कृष्टपणे हजार १००० धनुष प्रमाणे नारकीना शरीरनी अवगाहना जाणवी ॥ हवे
रत्नप्रभाना प्रस्तट प्रस्तटने विषे विचार करतां आ प्रकारे जाणवुं तेमां जे जघन्यपणे भवधारणी सर्व
जगाये पण अंगुलना असंख्यातमा भाग प्रमाणे ने उत्तरवैक्रिय अंगुलना संख्यातमा भाग प्रमाणे मूल
टीकाकारे कह्युंछे जे उत्तरवैक्रिया तो आद्य समयने विषे पण अंगुलना संख्यात भाग मात्रज होय ॥ उत्कृष्ट

गा. २६९ टीका.

हस्तः सार्द्धानि त्रयोदश अंगुलानि सप्तमे सप्तविंशतिधनूंषि एको हस्तो नव चांगुलानि अष्टमे एकोनत्रिंशद्धनूंषि एको हस्तः सार्द्धानि चत्वारि अंगुलानि न
वमे एकत्रिंशद्धनूंषि एको हस्तः उक्तंच सोच्चेव यत इयाए पढमे पयरंमि होइ उस्सेहो सत्तयरयणी अंगुलगुणवास सद वुढीया पयरे पयरे यतहा नवमे पयरंमि
होउ उस्सेहो धणुयाणि एगतीसं एक्कारयणीय नायव्वा अत्रापि सच्चेव यतइयाए पढमे पयरमि होइ उस्सेहो इति यएव द्वितीयस्या शर्कराप्रभायामेकादशे प्र
स्तटे उत्सेधः सएव तृतीयस्या वालुकाप्रभायां प्रथमे प्रस्तटे भवति शेषं सुगमं पंकप्रभायाः प्रथमे प्रस्तटे एकत्रिंशत् धनूंषि एकोहस्तः ततऊर्द्ध्वं तु प्रतिप्रस्तटं
पंच धनूंषि विंशतिरंगुलानि क्रमेण प्रक्षेप्तव्यानि ततएवं परिमाणं भवति द्वितीये प्रस्तटे षट् त्रिंशद्धनूंषि एको हस्तो विंशतिरंगुलानि तृतीये एकचत्वारिंशद्ध

मूल.

चउत्थिए भवधारणिज्जे बावट्ठिं धणूइं दोण्णिरयणीउ उत्तरवेउव्विया पणवीसं धणुसयं पंचमीए भवधार

भाषा.

पणे तो भवधारणी रत्नप्रभाना पेहेला प्रस्तटने विषे त्रण हाथनी ए थकी उपर अनुक्रमे प्रस्तट प्रस्तट
ने विषे साढीछपन्न ५६॥ अंगुल प्रखेपवां तेथी आ प्रकारनुं परिमाण थाय एटले बीजा प्रस्तटने विषे
एक धनुष एक हाथने साढाआठ अंगुल प्रमाणे। त्रीजाने विषे एक धनुष त्रण हाथ सात अंगुल प्र

नूंपि द्वौ हस्तौ षोडश अंगुलानि चतुर्थे षट् चत्वारिंशद्धनूंषि त्रयो हस्ता द्वादश अंगुलानि पंचमे द्विपंचाशद्धनूंषि अष्टावंगुलानि षष्ठे सप्त पंचाशद्धनूंषि एको हस्तश्चत्वारि अंगुलानि सप्तमे षष्टि धनूंषि द्वौ हस्तौ उक्तं च सा चेत्र चउत्थीए पढमे पयरंमि उस्सेहो पंचवणुवीसं अंगुल पयरेपयरेय वुढीय । जासत्तमए पय रे नेरइयाणं तु होइ उस्सेहो बावठी धणुयाइं दोण्णिय रयणीयं बोधव्वा अत्रापि साचेत्रेत्यस्यार्थः पूर्वानुसारेण भावनीयः धूमप्रभायाः प्रथमे प्रस्तटे द्वाषष्टि र्धनूंषि द्वौ हस्तौ तत ऊर्द्धं तु प्रतिप्रस्तटं पंचदशधनूंषि सार्द्धहस्तद्वयाधिकानि क्रमेण प्रक्षेप्तव्यानि तेनेदं परिमाणं भवति द्वितीये प्रस्तटे अष्टसप्तति धनूंषि

णिज्जे पणवीसं धणुसयं उत्तरवेउव्विया अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं छठीए भवधारणिज्जे अढाइज्जाइं धणुस

माणे चोथाये बे धनुष बे हाथ दोढ अंगुल प्रमाणे पांचमे त्रण धनुष दश अंगुल प्रमाणे छठाये त्रण धनुष बे हाथ साढाअढार अंगुल प्रमाणे सातमाये चार धनुष ने एक हाथ त्रण अंगुल प्रमाणे आठमाये चार धनुष त्रण हाथ साढाअगीयार अंगुल प्रमाणे नवमे पांच धनुष ने एक हाथ विश अंगुल प्रमाणे दशमे छ धनुष साढाचार अंगुल प्रमाणे अगीयारमे छ धनुप बे हाथ ने तेर अंगुल प्रमाणे बारमे

ा. १७० टीका. एका वितस्तिः तृतीये भिनवातिधनूंषि त्रयो हस्ताः चतुर्थे नवोत्तरं धनुःशतं एकोहस्तः एका वितस्तिः पंचमे पंचविंशं धनुःशतं उक्तंच सोचेव पंचमीए पंचम पयरंमि होइ उस्सेहो पण्णरसधणूणि दोहछ सढपयरेसु वढीय तह पंचमएपयरे उस्सेहो धणुसयंतु पणवीसं। सोचेवय इत्यस्यार्थोत्रापि पूर्ववत् तमःप्रभायां प्रथमे प्रस्तटे पंचविंशं धनुःशतं ततः पतरे तु प्रस्तटद्वये क्रमेण प्रत्येकं सार्द्धानि द्वाषष्टि धनूंषि प्रक्षेप्तव्यानि ततएवं परिमाणं भवति द्वितीये सार्द्धसप्ता शीत्याधिकं धनुःशतं तृतीये अर्द्धतृतीयानि धनुःशतानि उक्तंच साचेवय छठीए पढमेपयरंमि होइ उस्सेहो बावंछ धणुयसढा पयरेपयरे य होइ वुढीय। छठीए तइयपयरे दोसयपण्णासया होंति सप्तम्यां पृथिव्यां पंचधनुःशतानि उत्तरवैक्रियातु सर्वापि भवधारणीयापेक्षया द्विगुणप्रमाणा वक्तव्या ॥

मूल. याइं उतरवेउव्विया पंचधणुसयाइं सत्तमीए भवधारणिज्जे पंचधणुसयाइं उत्तरवेउव्विया धणुसहस्सं ॥

भाषा. सात धनुष सार्द्धएकविश अंगुल प्रमाणे तेरमे सातधनुष त्रण हाथ ने छ अंगुल संपूर्ण ए प्रकारे रतनप्रभापृथिवीने विषे भवधारणी शरीरनी अवगाहना जाणवी ने उत्तरवैक्रियतो सर्व जगाये भवधारणीकनी अपेक्षाये बमणी जाणवी ॥ हावे संघयण प्रतिपादन करवाने कहे छे हे भगवन् रतनप्रभा

संप्रति संहनप्रतिपादनार्थमाह रयणप्पजेत्यादि रत्नप्रजापृथिवीनैरयिका जदंत किं संहनिनः केन संहनेन संहननवंतः प्रज्ञप्ता जगवानाह गौ छण्हं संघयणाण
संप्रति संहनप्रतिपादनार्थमाह । रयणप्पजेत्यादि रत्नप्रजापृथिवीनैरयिकाणां जदंत शरीर
मित्यादि प्राग्वत् एवं प्रतिपृथिवि तावद्वक्तव्यं यावदधः सप्तमी ॥ संप्रति संस्थानप्रतिपादनार्थमाह गौतम रत्नप्रजापृथिवीनैरयिकाणां शरीराणि द्विविधानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा जवधारणियाणि
काणि किं संस्थितानि केन संस्थानेन संस्थानवंति । प्रज्ञप्तानि जगवानाह गौतम

॥ इमीसेणं जंते रयणप्पजाए नेरइयाणं सरीरया किं संघयणी पं० गो० छण्हं संघयणाणं असं
घयणी णेवट्ठी णेवछिरा णेवण्हारु णेव संघयणमत्थि जे पोग्गला अणिठा जाव अमणामा तेसिं

पृथिवीना नारकीनुं शरीर कीया संघयणनुं कह्युं छे हे गौतम छ संघयणमांनु एके नही माटे ते असं
घयणी कह्या छे केमजे तेने हाडकां नथी शिरा नथी स्नायु नथी माटे संघयण रहित छे विशेष पूर्वे कह्यो छे
तेम जाणवो ते पुद्गल घणा माठा ने मनने न गमे एवा बीहामणा ते शरीरना समुदायपणे परिणमे छे
ए प्रकारे जावत् हेठली सातमी पृथिवी सुधी जाणवुं ॥ हे जगवन् रतनप्रजापृथिवीना नारकीनुं शरीर

पा. १९१ उत्तरवैक्रियाणि च तत्र भवधारणीयानि तानि तथा भवस्वाभाव्यादवश्यं हुंडनामकर्म्मोदयतो हुंडसंस्थानानि चान्यान्यपि चोत्तरवैक्रियरूपाणि तान्यपि शुभमहं वैक्रियं कारिष्यामीति चिंतयति तथापि भवस्वाभाव्यतो हुंड संस्थाननामकर्म्मोदयत उत्पादितसकलरोमपिछ कपोतपक्षिण इव हुंडसंस्थानानि भवंति एवं प्रतिपृथिवी तावद्वक्तव्यं यावदधः सप्तम्यां ॥ संप्रति नारकशरीरेषु वर्णप्रतिपादनार्थमाह रयणप्पभेत्यादि रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदंत शरीराणि कीदृशानि वर्णेन प्रज्ञ

टीका.

मूल.

सरीरसंघायत्ताए परिणमंति एवं जाव अहेसत्तमाए इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए णेरतियाणं सरीरा किं संठिता पं० गो० दुविहा पं० तं० भवधारणिज्जाय उत्तरवेउव्वियाय तत्थणं

भाषा.

किया संस्थाने एटले कीये संठाणे रह्युं छे? हे गौतम बे प्रकारे रह्युं छे भवधारणीक ने बीजुं उत्तरवैक्रिय शरीरं तिहां जे भवधारणीक छे ते हुंड संस्थाने रह्युं छे ने जे उत्तरवैक्रिय छे ते पण हुंड संस्थाने रह्युं छे एम जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवुं ॥ हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीना नारकीनुं शरीर केहेवा वरणे करिने कह्युं छे? हे गौतम कालावर्णनुं कालि छे कांति जेहनी जावत् परम कालावर्णनुं विशे

प्तानि भगयानाह गौतम कालाकालोवभासा इत्यादि प्राग्वत् एवं प्रतिपृथिवि तावद्वक्तव्यं यावदधः सप्तमपृथिव्यां ॥ अधुना गंधप्रतिपादनार्थमाह रत्नप्रजापृ थिवी नैरयिकाणां भदंत शरीराणि कीदृशानि गंधेन प्रज्ञप्तानि भगवानाह । गौतम जहा नामए अहिमडेइवा इत्यादि प्राग्वत् एवं पृथिव्यां पृथिव्यां तावद्यावद अध. सप्तम्या संप्रतिस्पर्शप्रतिपादनार्थमाह रयणप्पभापुढाविनेरइयाणं भंते इत्यादि रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदंत शरीराणि कीदृशानि स्पर्शेन प्रज्ञप्तानि भगवानाह

जे ते भवधारणिज्जाते हुंड संठिया पण्णत्ता तत्थणं जे ते उत्तरवेउव्विया तेवि हुंडसंठिया पं० एवं जाव अहेसत्तमाए इमीसेणेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए णेरतियाण सरीरगा केरिसता वण्णेणं

ष पूर्वनी पेठे ए प्रकारे जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवुं ॥ हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीना नारकीनुं शरीर केहेवा गंधे करिने कह्युं छे हे गोतम सर्पना कलेवरना जेवुं इत्यादि पूर्वनी पेठे निश्चे जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवु॥हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीना नारकीना शरीरनो फरश कहे ो कह्यो छे: हे गौतम फाटी छे चामडी जेनी एज माटे कांति रहित अति कठिन दग्ध छाया घणां छि

टीका. उत्तरवैक्रियाणि च तत्र भवधारणीयानि तानि तथा भवस्वाभाव्यादवश्यं हुंडनामकर्म्मोदयतो हुंडसंस्थानानि चान्यान्यपि चोत्तरवैक्रियरूपाणि तान्यपि शुभमहं वैक्रियं करिष्यामीति चिंतयति तथापि भवस्वाभाव्यतो हुंड संस्थाननामकर्म्मोदयत उत्पाटितसकलरोमपिच्छ कपोतपक्षिण इव हुंडसंस्थानानि भवंति एवं प्रतिपृथिवी तावद्वक्तव्यं यावदधः सप्तम्यां ॥ संप्रति नारकशरीरेषु वर्णप्रतिपादनार्थमाह रयणप्पभेत्यादि रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदंत शरीराणि कीदृशानि वर्णेन प्रज्ञ

मूल. सरीरसंघायत्ताए परिणमंति एवं जाव अहेसत्तमाए इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए णेरतियाणं सरीरा किं संठिता पं० गो० दुविहा पं० तं० भवधारणिज्जाय उत्तरवेउव्वियाय तत्थणं

भाषा. किया संस्थाने एटले कीये संठाणे रह्यां छे? हे गौतम बे प्रकारे रह्यां छे भवधारणीक ने बीजुं उत्तरवैक्रिय शरीरं तिहां जे भवधारणीक छे ते हुंड संस्थाने रह्युं छे ने जे उत्तरवैक्रिय छे ते पण हुंड संस्थाने रह्युं छे एम जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवुं ॥ हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीना नारकीनुं शरीर केहवा वरण करीने कह्युं छे? हे गौतम कालावर्णनुं कालि छे कांति जेहनी जावत् परम कालावर्णनुं विशे

टीका.

प्तानि भगवानाह गौतम कालाकालोवभासा इत्यादि प्राग्वत् एवं प्रतिपृथिवि तावद्वक्तव्यं यावदधः सप्तमपृथिव्यां ॥ अधुना गंधप्रतिपादनार्थमाह रत्नप्रभापृथिवी नैरयिकाणां भदंत शरीरकाणि कीदृशानि गंधेन प्रज्ञप्तानि भगवानाह । गौतम जहा नामए अहिमडेइवा इत्यादि प्राग्वत् एवं पृथिव्यां पृथिव्यां तावद्यावद अधःसप्तम्यां संप्रतिस्पर्शप्रतिपादनार्थमाह रयणप्पभापुढविनेरइयाणं भंते इत्यादि रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदंत शरीराणि कीदृशानि स्पर्शेन प्रज्ञप्तानि भगवानाह

मूल.

जे ते भवधारणिज्जा ते हुंड संठिया पण्णत्ता तत्थणं जे ते उत्तरवेउव्विया तेवि हुंडसंठिया पं० एवं जाव अहेसत्तमाए इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए णेरतियाणं सरीरगा केरिसता वण्णेणं

भाषा.

प पूर्वनी पेठे ए प्रकारे जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवुं ॥ हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीना नारकीनुं शरीर केहेवा गंधे करिने कह्युं छे? हे गौतम सर्पना कलेवरना जेवुं इत्यादि पूर्वनी पेठे निश्चे जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवुं॥ हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीना नारकीना शरीरनो फरश कहेवो कह्यो छे? हे गौतम फाटी छे चामडी जेनी एज माटे कांति रहित अति कठिन दग्ध छाया घणां छि

गा॰ १११

टीका. गौतम स्फटिकछविविच्छवयः इह एकत्र छविशब्दस्त्वग्वाची अपरत्र छायावाची ततोयमर्थः स्फटितया राजिशतसंकुलया त्वचा विच्छवयोविगतछायाः स्फटितछविविच्छवयः तथा खरमतिशयेन परुषाणि खरपरुषाणि ध्यामानि दग्धछायानि शुषिराणि शुषिरशतकलितानि ततः पदत्रयस्यापि पदद्वयपदद्वयमीलनेन विशेषण समासः सुपक्वेष्टकध्यामतुल्यानीतिभावः स्पर्शेन प्रज्ञप्तानि एवं प्रतिपृथिवि तावत् यावदधः सप्तम्या ॥ संप्रत्युच्छ्वासप्रतिपादनार्थमाह रयणेत्यादि रत्नप्रभापृथिवी

मूल. पं० गो० काला कालोभासा जाव परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता एवं जाव अहेसत्तमा इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए नेरतियाणं सरीरया केरिसया गंधेणं पं० गो० सेजहानामए अहिम

भाषा. छवाली एवी चामडी फरशे करीने कही छे ए प्रकारे जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवुं ॥ हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीना नारकीना केहेवा पुद्गला उच्छ्वासपणे परिणमेछे? हे गौतम जे पुद्गल अति माठा जावत् अमनोज्ञ घणा बीहामणा त्यां पर्यंतनो पाठ लेवो तेवा उच्छ्वासपणे परिणमे छे एम जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवुं एम आहारनो पण आलावो जाणवो एटले हे भगवन् रतन

का.

नैरयिकाणां भदंत कीदृशाः पुद्गलाः उछ्वासतया परिणमंति भगवानाह गौतम ये पुद्गला अनिष्टा अकांता अप्रिया अशुभा अमनोज्ञा अमनआपा अभीप्सिता प
दानीं व्याख्यानं प्राग्वत् तेषां रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणामुछ्वासतया परिणमंति एवं प्रतिपृथिवि तावद्वक्तव्यम् यावदधः सप्तम्या सांप्रतमाहार प्रतिपादनार्थमा
ह रयणेत्यादि रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदंत कीदृशाः पुद्गला आहारतया परिणमंति भगवानाह गौतम ये पुद्गला अनिष्टा अकांता अप्रिया अशु

मूल.

मंतिवा तंचेव अहेसत्तमा इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए नेरतियाणं सरीरता केरिसया
फासेणं पं० गो० फुटितगवि विगविया खरफरुसा झझामसुसिरा फासेणं पण्णत्ता एवं जावअहेसत्तमा

भाषा.

प्रभा पृथिवीना नारकीने केहेवा पुद्गल आहारपणे परिणमे छे? हे गौतम जे पुद्गल अनिष्ट माठा अ
प्रिय अशुभ अमनोहर ते तेहोने आहारपणे परिणमे छे एम हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत कहेवुं ॥ हा
वे लेश्या कहेवाने प्रश्नसूत्र कहे छे हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीना नारकीने केटली लेश्याओ कही छे? हे
गौतम एक कापोत लेश्या कही छे ए प्रकारे शर्कराप्रभापृथिवीने विषे पण जाणवी एटले विशषने का

११३ टीका

या अमनोज्ञा अमनआपास्तेषामाहारतया परिणमंति एवं प्रतिपृथिवि तावद्वक्तव्यं यावदधः सप्तम्यां इह पुस्तकेषु बहुधान्यथान्यथा दृश्यते अतएव वाचनाभेदो पि समग्रो दर्शयितुं नशक्यते केवलं बहुषु पुस्तकेषु योऽविसंवादीपाठ स्तत्प्रतिपत्त्यर्थं सुगमान्यप्यक्षराणि संस्कारमात्रेण विन्नियंतेऽन्यथा सर्वमेतदुत्तानार्थं सूत्रमिति ॥ संप्रति लेश्याप्रतिपादनार्थमाह रयणेत्यादि रत्नप्रज्ञापृथिवीनैरयिकाणां नदंत कति लेश्याः प्रज्ञप्ताः जगवानाह गौतम कापोतलेश्या प्रज्ञप्ता एवं शर्क

इमीसेणं नंते रयणप्पनाए पुढवीए नेरतियाणं केरिसया पोग्गलाऊसासत्ताए परिणमंति गो० जेपोग्गलाअणिठा जाव अमणामा एतेसिं ऊसासत्ताए परिणमंति एवं जावअहेसत्तमाए एवं आहा रस्सवि सत्तण्हवि इमीसेणं रयणप्पनाए पुढवीए नेरतियाणं कतिलेसाउ पं० गो० एका काउ लेसा

पोतलेश्या अति संक्लिष्टपणे कही छे वालुकाप्रनापृथिवीनो पण एमज प्रश्न तेनो उत्तर हे गौतम बे लेश्यायो कही छे नीललेश्या ने कापोतलेश्या तेमां जे कापोतलेश्या छे ते अतिशे घणाने छे उपलया प्रतरने विषे एटले उपलया पाथमाने विषे नारकी घणा छे तेमने कापोतलेश्या छे ने ते अतिशे घणाछे

टीका. तरा ये कृष्णलेश्याका भावनात्रापि प्राग्वत् तमःप्रभापृथिवीनैरयिकाणां कृष्णलेश्या साच पंचमपृथिवीगतकृष्णलेश्यापेक्षया अविशुद्धतरा अधःसप्तमपृथिवीनैरयिकाणामेका परमकृष्णलेश्या । उक्तंच व्याख्याप्रज्ञप्तौ काऊय दोसु तइयाएमीसिया नीलिया चउत्थीए पंचमियाए मीसा कण्हा तत्तो परम कण्हा ॥
॥ संप्रति सम्यग्दृष्टित्वादिविशेषप्रतिपादनार्थमाह रयणेत्यादि रत्नप्रभापृथिवीनैरयिका भदंत किं सम्यक्दृष्टयो मिथ्यादृष्टयः सम्यक्मिथ्यादृष्टयः सम्यग्मिथ्यादृ

सूत्र. त्ता धूमप्पभाए पुढ़ा गो० दो लेस्सा पं० तं० किण्हलेसाउ नीललेसाउ ते बहुतरका जे नीललेस्सा ते थोवतरका जे किण्हलेसा तमाए पुढ़ा गो. एका किण्हलेस्सा अहेसत्तमाए एक्का परमकिण्हलेस्सा पं.॥
॥ इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए नेरतिया किं० सम्मद्दिठी मिछदिठी सम्मामिछादिठ्ठी गो०

भाषा. नी अपेक्षाये अतिशे अविशुद्ध छे ॥ हेठली सातमीपृथिवीना नारकीने एक परम कृष्णलेश्या छे एटले अतिशे कृष्णलेश्या छे ए प्रकारे सर्वे नरक पृथिवी आश्री लेश्याना प्रश्न तथा तथा उत्तर जाणवा ॥
हावे सम्यग्दृष्टिआदि विशेष कहेवाने प्रश्नसूत्र कहेछे हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीना नारकी शुं सम्य

जगवानाह गौतम सम्यग्दृष्टयोपि मिथ्यादृष्टयोपि एवं पृथिव्यां पृथिव्यां तावद्वक्तव्यं यावत्तमस्तमायां संप्रति ज्ञान्यज्ञानिचिंतां कुर्व

ष्टयादीनां स्वरूपं प्रागुपवर्णितं

न्नाह । रयणेत्यादि रत्नप्रजापृथिवीनैरयिका जदंत किं ज्ञानिनो ऽज्ञानिनः जगवानाह गौतम ज्ञानिनोपि अज्ञानिनोपि सम्यग्दृशां ज्ञानित्वात् मिथ्यादृशामज्ञा

सम्मदिठ्ठीवि मिछदिठ्ठीवि सम्ममिछदिठ्ठीवि एवं जाव अहेसत्तमाए इमीसेणं नंते रयणप्पन्नाए पुढवीए नेरतिया किंणाणि अण्णाणि गो० णाणीवि अन्नाणीवि जेणाणी ते नियमा तिन्नाणि तं

गृदृष्टि छे के मिथ्यादृष्टि छे के मिश्रदृष्टि छे? हे गौतम सम्यक्दृष्टि पण छे ने मिथ्यादृष्टि पण छे ने मिश्र
दृष्टि पण छे एम जावत् हेठली सातमी पृथिवी सुधी कहेवुं ॥ हावे ज्ञानी अज्ञानी नीवक्तव्यतानुं प्र
श्नसूत्र कहे छे । हे जगवन् रतनप्रजापृथिवीना नारकी शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? हे गौतम ज्ञानी प
षां. ण छे ने अज्ञानी पण छे जे ज्ञानी छे ते नियमाये त्रण ज्ञानना धणी छे केमजे तेमने अपर्याप्तावस्था
मां पण अवधिज्ञाननो संजव छे संज्ञि पंचेंद्रिय थकी तेमनी उत्पत्ति छे हावे ते त्रणज्ञानी देखाडे छे म

निरुपाम तत्र ये ज्ञानिन स्ते नियमात् त्रिज्ञानिनो ऽपर्याप्तावस्थायामपि तेषामवधिज्ञानसंभवात् संज्ञिपंचेंद्रियेभ्यस्तेषामुत्पादात् त्रिज्ञानित्वमेव भावयति तद्यथा भा
...भोधिकज्ञानिन. श्रुतज्ञानिनोऽवधिज्ञानिनः ये भज्ञानिन स्ते भज्जेगइया इति भस्तीति निपातोऽत्रबहुवचनगर्भः संत्येकका द्व्यज्ञानिन स्तत्रये भसंज्ञिपंचेंदि

आभिणि बोहियणाणी सुयणाणी अहिणाणी जे अन्नाणी ते अत्थेगतिया दुअण्णाणी अत्थेगतिया
तियन्नाणी जेदुअण्णाणी तेनियमा मतिअन्नाणीय सुयअण्णाणीय जेति अण्णाणी ते नियमा

टी.

येभ्य उत्पद्यन्ते तेषामपर्याप्तावस्थायां विभंगासंभवात् द्व्यज्ञानिनः शेषकाले तु तेषामपि त्र्यज्ञानिना संज्ञिपंचेंद्रियेभ्य उत्पन्नानां तु सर्वकालमपि त्र्यज्ञानितैवा पर्याप्तावस्थायामपि तेषां विभंगभावात् तत्र ये द्व्यज्ञानिनः ते मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनः ये त्र्यज्ञानिनस्ते मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनो विभंगज्ञानिनश्च ॥

मू.

मतिअण्णाणी सुतअण्णाणी विभंगणाणी सेसाणं णाणीवि अण्णाणीवि तिन्नि जावअहेसत्तमाए इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए किं मणजोगी वइजोगी कायजोगी गो० तिण्णिवि एवं जाव अहेसत्तमाए इमीसेणं भंते रतणप्पभाये पुढवीए नेरइया किं० सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता

भाषा.

नी ने जे त्रण अज्ञानी छे ते नियमाये मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी ने विभंगज्ञानी। हे भगवन् शर्कराप्रभापृथिवीना नारकी शुं ज्ञानी छे के अज्ञानी छे? हे गौतम ज्ञानी पण छे ने अज्ञानी पण छे आहियां पण समकितदृष्टिवाळानो संभव छे ने मिथ्यादृष्टिमां जे ज्ञानी छे ते नियमाये त्रण ज्ञानवंत छे आभिनिबोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी जे अज्ञानी छे ते नियमाये त्रण अज्ञानवंत छे केमजे संज्ञिपंचें

||

सक्करप्पभापुढवीत्यादि । शर्कराप्रभापृथिवी नैरयिका भदंत किं ज्ञानिनो ऽज्ञानिनः भगवानाह गौतम ज्ञानिनोपि अज्ञानिनोपि अत्रापि सम्यग्दृशां तत्र च भा
वात् मिथ्यादृशां ये ज्ञानिनस्ते नियमात्त्रिज्ञानिन स्तद्यथा आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनो ऽवधिज्ञानिनश्च ये अज्ञानिनस्ते नियमात्त्र्यज्ञानिनः संज्ञिपंचेंद्रिये
भ्य एव तत्रोत्पादात् त्र्यज्ञानित्वमेव दर्शयति तद्यथा मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनो विभंगज्ञानिनश्च एवं शेषास्वपि पृथिवीषु वक्तव्यम् तत्रापि संज्ञिपंचेंद्रियेभ्य ए

गो० सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि एवं जाव अहेसत्तमाए पुढवीए इमीसेणं भंते रतणप्प
भाए पुढवीए नेरतिया ओहिणाणा केवति खेत्तं जाणंति पासंति गो० जहण्णेणं अद्धुट्ठ गयाइं
उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं सक्करप्पभाए पुढवीए जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं उक्कोसेणं अद्धुट्ठाइं एवं

द्रिय थकीज त्यां उत्पन्न थाय छे माटे ते त्रण अज्ञानी देखाडे छे मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी विभंगज्ञा
नी ए प्रकारे शेष बाकी रहेली पृथिवीने विषे कहेवुं जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत ॥ हावे यो
गनी वक्तव्यता कहे छे हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीना नारकी शुं मनोजोगी छे वचनजोगी छे के का

नोत्पादात् ॥ संप्रति योगप्रतिपादनार्थमाह ॥ रयणप्पभेत्यादि रत्नप्रभापृथिवीनैरयिका भदंत किं मनोयोगिनो वाग्योगिनः काययोगिनः भगवानाह ..
विधाअपि एवं प्रतिपृथिवि तावत् यावदधः सप्तम्यां ॥ अधुना साकारानाकारोपयोगचिंतां कुर्वन्नाह रयणेत्यादि रत्नप्रभापृथिवीनैरायिका भदंत किंसाकारोपयु
क्ता अनाकारोपयुक्ता· भगवानाह गौतम साकारोपयुक्ता अपि अनाकारोपयुक्ताअपि एवं तावत् यावदधः सप्तम्यां ॥ अधुना समुद्घातचिंतां करोति । रयणेत्या

अद्धगाउयाइं२ परिहारयति जावअहेसत्तमाए जहं अद्धगाउयं उक्कोसेणं गाउयं इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवी नेरतियाणं कति समुग्घाता पं० गो० चत्तारि समुग्घाता पं० तं० वेदणा

य जोगी पण छे हे गौतम त्रणे जोग छे एम हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत कहेवुं ॥ हावे साकार अनाकारनी वक्तव्यता कहे छे । हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीना नारकी शुं साकारोपयुक्त छे के अनाकारोपयुक्त छे? हे गौतम साकारोपयुक्त पणछे ने अनाकारोपयुक्त पणछे एम जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवुं ॥ हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीना नारकी अवधिज्ञाने करीने केटलुं क्षेत्र जाणे देखे? हे गौतम जघ

टीका. सक्करप्पभापुढवीत्यादि । शर्कराप्रभापृथिवी नैरयिका भदंत किं ज्ञानिनो ऽज्ञानिनः भगवानाह गौतम ज्ञानिनोपि अज्ञानिनोपि अत्रापि सम्यग्दृशां तत्र च भावात् मिथ्यादृशां ये ज्ञानिनस्ते नियमात्त्रिज्ञानिन स्तद्यथा आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनो ऽवधिज्ञानिनश्च ये अज्ञानिनस्ते नियमात्त्र्यज्ञानिनः संज्ञिपंचेंद्रियेभ्य एव तत्रोत्पादात् त्र्यज्ञानित्वमेव दर्शयति तद्यथा मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनो विभंगज्ञानिनश्च एवं शेषास्वपि पृथिवीषु वक्तव्यम् तत्रापि संज्ञिपंचेंद्रियेभ्य ए

मूल. गो० सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि एवं जाव अहेसत्तमाए पुढवीए इमीसेणं भंते रतणप्पभाए पुढवीए नेरतिया उहिणाणा केवति खेत्तं जाणंति पासंति गो० जहण्णेणं अद्धुढ्ग उयाइं उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं सक्करप्पभाए पुढवीए जहण्णेणं तिण्णि गाउयाइं उक्कोसेणं अद्धुट्ठाइं एवं

भाषा. द्रिय थकीज त्यां उत्पन्न थाय छे माटे ते त्रण अज्ञानी देखाडे छे मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी विभंगज्ञानी ए प्रकारे शेष बाकी रहेली पृथिवीने विषे कहेवुं जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत ॥ हावे योगनी वक्तव्यता कहे छे हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीना नारकी शुं मनोजोगी छे वचनजोगी छे के का

टी.	योत्पादात् ॥ संप्रति योगप्रतिपादनार्थमाह ॥ रयणप्पनेत्यादि रत्नप्रनापृथिवीनैरयिका नदंत किं मनोयोगिनो वाग्योगिनः काययोगिनः नगवानाह गौतम त्रि
का.	विधाअपि एवं प्रतिपृथिवि तावत् यावदधः सप्तम्यां ॥ अधुना साकारानाकारोपयोगार्चिंतां कुर्वन्नाह रयणेत्यादि रत्नप्रनापृथिवीनैरयिका नदंत किंसाकारोपयु
क्ता अनाकारोपयुक्ताः नगवानाह गौतम साकारोपयुक्ता अपि अनाकारोपयुक्ताअपि एवं तावत् यावदधः सप्तम्यां ॥ अधुना समुद्घातचिंता करोति । रयणेत्या

मूल. अधगाउयाइं२ परिहारयति जावअहेसत्तमाए जहं अद्धगाउयं उक्कोसेणं गाउयं इमीसेणं नंते रयणप्पनाए पुढवी नेरतियाणं कति समुग्घाता पं० गो० चत्तारि समुग्घाता पं० तं० वेदणा

नाषा. य जोगी पण छे हे गौतम त्रणे जोग छे एम हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत कहेवुं ॥ हावे साकार अनाकारनी वक्तव्यता कहे छे । हे नगवन् रतनप्रनापृथिवीना नारकी शुं साकारोपयुक्त छे के अनाकारोपयुक्त छे? हे गौतम साकारोपयुक्त पणछे ने अनाकारोपयुक्त पणछे एम जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवुं ॥ हे नगवन् रतनप्रनापृथिवीना नारकी अवधिज्ञाने करीने केटलुं क्षेत्र जाणे देखे? हे गौतम जघ

, २११

टीका.

दि रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदंत कति समुद्घाताः प्रज्ञप्ता भगवानाह गौतम चत्वारः समुद्घाताः प्रज्ञप्ता स्तद्यथाः वेदनासमुद्घातः कषायसमुद्घातो मारणांतिक समुद्घातो वैक्रियसमुद्घातश्च एवं प्रतिपृथिवि तावद्वक्तव्यं यावदधः सप्तम्यां ॥ संप्रति क्षुत्पिपासे चिंतयति रयणेत्यादि रत्नप्रभापृथिवीनैरयिका

मूल.

समुग्घाए कसायसमुग्घाये मरणंतियसमुग्घाए वेउव्विसमुग्घाए एवं जावअहेसत्तमाए इमीसेणं भंते रयणप्पहाए णेरतिया केरिसयं खुहपिवासपच्चणुब्भवमाणा विहरंति गो० एकमेकस्सणं रतण

भाषा.

न्यथी साढात्रण गाउ जाणे देखे ने उत्कृष्टपणाथी चारगाउ देखे जाणे सर्कराप्रभापृथिवीना नारकी जघन्यपणे त्रणगाउ देखे उत्कृष्टपणाथी साढात्रण गाउ देखे एम अर्द्धअर्द्धगाउ परिहार करते थके उगे करते थके जावत् हेठली सातमी पृथिवीये जघन्यपणाथी अर्द्धगाउ देखे ने उत्कृष्टपणाथी एक गाउ देखे ॥ हावे समुद्घातनो प्रश्न तेनुं सूत्र कहे छे हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीना नारकीने केटला समुद्घात कह्या छे? हे गौतम च्यार समुद्घात कह्या छे वेदना समुद्घात १ कषाय समुद्घात २ मारणांतिक

भदंत कीदृशं दुधं पिपासां प्रत्यनुभवंतः प्रत्येकं वेदयमाना विहरंत्यवतिष्ठंति ॥ भगवानाह । गौतम एगमेगस्सणमित्यादि एकैकस्य रत्नप्रभापृथिवी नैरयिकस्य
ा. असद्भावस्थापनया असद्भावकल्पनया ये केचन पुद्गला उदधयश्चेतिशेषः तान् आस्यके मुखे सर्वपुद्गलान् सर्वोदधीन् प्रक्षिपेत् तथापि णोचेवणमित्यादि नै
व स रत्नप्रभापृथिवीनैरयिक स्तृप्तोवा वितृप्तोवा स्यात् लेशतोऽत्र प्रबलभस्मकव्याध्युपेतः पुरुषो दृष्टांतः। एरिसियाणमित्यादि ईदृशीं णमिति वाक्यालंकृतौ गौतम

प्पभा पुढवि नेरतियस्स असब्भाव पथवणाए सव्वोदधीवा सव्वपोग्गलेवा आसयंसि पक्खिव
त. वेज्जा णोचेवणंसे रयणप्पभाए पुढवीए नेरइए वितित्तेवासित्ता वि तण्हे वासिता एरिसियेणं गो०

समुद्घात३ वैक्रिय समुद्घात४ ए प्रकारना समुद्घात जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवा ॥
षा. हावे भूख तरशनो विचार कहे छे हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीना नारकी केहवी भूख तरश प्रत्येके वे
दता थका एटले अनुभव करता थका रहे छे हे गौतम एक एक रतनप्रभापृथिवीना नारकीने असद्भा
व थापनाये एटले खोटि कल्पनाये सर्वे समुद्र अथवा सर्वे पुद्गल एमना मुखने विषे प्रक्षेपिये एटले

भ. ११८ टीका. रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाः क्षुधं पिपासां प्रत्यनुभवंतो विहरंति एवं प्रतिपृथिवि तावद्वक्तव्यं यावदधः सप्तमी ॥ संप्रति वैक्रियशक्तिं विचिंतयिषुरिदमाह । रय णप्पभेत्यादि रत्नप्रभापृथिवी नैरयिका भदंत प्रत्येकं किमेकत्वरूपमेकं रूपं विकुर्वितुं प्रभवः उत पृथक्त्वं पृथक्शब्दो बहुवाची आहच कर्मप्रकृति संग्रहि चूर्णिण

मूल. रयणप्पभाए जेणरइयाखुधप्पिवासं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति एवं जाव अहेसत्तमाए ॥
॥ इमीसेणं भंते रयणप्पभापुढवीए नेरतिया किं एकत्तं पभू विउव्वित्तए पुहुतंपि पभू विउव्वित्तए

भाषा. घालीये तोपण निश्चे ते रतनप्रभापृथिवीना नारकी विशेषे तृप्त नथाय क्यारेपण वितृष्ण एटले तृषा रहित न थाय एहवी हे गौतम रतनप्रभापृथिवीना नारकी भुख तथा तरशने प्रत्येक अनुभव करताछता ए टले वेदताछता रहे छे इहां प्रबल भस्मकव्याधि युक्त पुरुषनुं दृष्टांत लेवुं एम जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवुं ॥ हावे वैक्रिय शक्तिनी वक्तव्यता कहे छे हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीना नारकी ए क रुप विकुर्वाने समर्थ छे के घणां रुप विकुर्वाने समर्थ छे? हे गौतम एक रुप विकुर्वाने पण समर्थ छे

कारोपि पुहुत्तसद्दो बहुत्तवाई इति प्रभूतानि रूपाणि विकुर्वितुं प्रभवः इह विकुर्व इत्यागमप्रसिद्धो धातुरस्ति यस्य विकुर्वणोति प्रयोग स्ततो विकुर्वितुमित्युक्तं
।. भगवानाह एकत्वमपि प्रभवोविकुर्वितुं पृथक्त्वंमपि प्रभवो विकुर्वितुं तत्रैकं रूपं विकुर्वता मुद्गररूपं वा मुद्गरः प्रतीतः मुषंढिरूपं वा मुषंढि प्रहरणविशेषः करप
त्ररूपंवा असिरूपंवा शक्तिरूपंवा हलरूपंवा गदारूपंवा मुशलरूपंवा चक्ररूपंवा नाराचरूपंवा कुंतरूपंवा तोमररूपंवा शूलरूपंवा लकुटरूपंवा भिंडमालरू

गो० एकत्तंपि पभू विउव्वित्तए पुहुत्तंपि पभू विउवित्तए एगतं विउव्वेमाणा एगंमहं मोग्गररूवंवा मु
मू. सुंढरूवंवा एवं मोग्गरमुसुंढिकरकत असि सत्ती हल गता मुसल चक्कं णाराय कुंत तोमर सूल लउड

ने घणा रुप विकुर्वाने पण समर्थ छे त्यां एक रुप विकुर्वते थके एक मोटो मुद्गर मोगरनुं रुप तथा मुषं
पा. ढि कोई शस्त्र विशेष ते रुप विकुर्वाने समर्थ छे तेमज मुद्गर मुषंढि करवत तरवार्य बरछी हल गदा
मुशल चक्र तीर भालो तोमर एटले कोई शस्त्र विशेष त्रिशुल लकुट भिंढिमाल कोई शस्त्र विशेष
ए सर्व रुप एटले जावत् भिंढिमाल पर्यंत घणां रुप विकुर्वाने समर्थ छे मुद्गर रुप जावत् भिंढिमा

श. १५७। टीका. पंता निकुर्वंति करपत्रादयः प्रतीताः भिंडमालः शस्त्रजातिविशेषः अत्र संग्रहणिगाथा क्वचित् पुस्तके मुग्गरमुसुंढि करकय असि सत्ति हलंगया मुशल चक्का नाराय कुंततोमर सूलउलभिंडमालाय । गतार्था नवरं करकयत्ति क्रकचं करपत्रमित्यर्थः पृथक्त्वं विकुर्वंतो मुद्गररूपाणि वा यावत् भिंडमालरूपाणि वा तान्यपि सदृशानि समानरूपाणि तथा संख्येययानि परिमितानि ना संखेययानि संख्यातीतानि विसदृशकरणे असंख्येयकरणे वा शक्त्यभावात् तथा संबद्धानि स्वात्म

मूल. भिंडिमालाय जावभिंडमालरूवंवा जावपुहुत्तंपि विउव्वेमाणा मोग्गररूवाणिवा जाव भिंडमालरूवाणिवा ताइं संखेज्जाइं नो असंखेज्जाइं संबद्धाइं नो असंबद्धइं सरिसाइं नो असरिसाइं विउव्वित्ता

भाषा. ल रुप ते सर्वेरुपसंख्याता परिमित करवानी शक्ति छे पण तेवां असंख्यातां अपरिमित विकुर्वानी शक्तिनो अभाव छे पोताना आत्माने मिलेलां करे जुदां न करे पोताना शरीरथी जुदां रुप विकुर्वानी शक्ति नथी माटे सरखां रुप करे पण असदृश एटले असरखां पोताना रुपथी बीजां न करे ए प्रकारना रुप विकुर्विने मांहोमांही काया प्रते अथडातो थको वेदनाने उदेरे वेदना सहन करे । ते वे

शरीरसंलग्नानि नासंबद्धानि स्वशरीरात् पृथग्भूतानि स्वशरीरात् पृथग्भूतकरणे शल्यभावात् विकुर्वंति विकुर्वित्वा अन्योन्यस्य कायमभिघ्नतोऽभिघ्नतो वेदनामु दीर्ण्यंति किंविशिष्टामित्याह उज्वलां दुःखरूपतया जाज्वल्यमाना सुखलेशेनाप्यकलंकितामितिभावः विपुलां सकलशरीरव्यापितया विस्तीर्ण्णां प्रगाढां प्रकर्षेण मर्मप्रदेश व्यापितया अतीवरामवगाढां कर्कशामिव कर्कशा किमुक्तं भवति यथा कर्कशपाषाणसंघर्ष. शरीरस्य खंडानि त्रोटयति एव मात्मप्रदेशान् त्रोटयंतीव

अण्णमण्णस्सकायं अभिहणमाणा वेदण उदिरंति उज्जलं विउलं पगाढं कक्कसं कडुयं परुसं णिठुरं चंम तिव्वं दुक्खं दुग्गं दुरहियासं एवं जाव धूमप्पभाए पुढवीए छठ सत्तमा सुणं पुढवीसु नेरइया

दना दुःखपणे जाज्वमान जेमां सुखनो लवलेश मात्र पण नथी एवी तथा विपुल विस्तारवंत बधा शरीरने व्यापती एवी तथा प्रगाढ एटले प्रकर्षपणे मर्मस्थल भेदीने व्यापती एवी तथा कठोर कर्कश एटले जेम कर्कश पाषाणनो संघर्ष थाय ते शरीरने तोडे तेम आत्म प्रदेशने जाणे तोडतीज होयने शुं एवी वेदनाने कर्कश कहीये ते वेदना तथा कटुकवेदना एटले जेम कोइने पित्त प्रकोप थय

ा. १८० टीका. या वेदनोपमायने सा कर्कशा तां कटुकामिव कटुकां पित्तप्रकोपे परिकलित वपुषो रोहिण्यादि कटुकद्रव्यमिवोपभुज्यमानमतिशयेनाप्रीतिजनिकामितिभावः त
था परुषा मनसोऽतीवरौक्ष्यजनिकां निष्ठुरामशक्यप्रतीकारतयाऽभेद्यां चंडां रुद्रां रौद्राध्यवसायहेतुत्वात् तीव्रा मतिशायिनीं दुःखां दुःखरूपां दुर्गां दुर्लंघ्या
मतएव च दुरधिसह्यां एवं पृथिव्यां पृथिव्यां तावद्वक्तव्यं यावत्पंचम्यां । छठसत्तमीसुणमित्यादि । षष्ठसप्तम्योः पुनः पृथिव्यो नैरयिका बहूनि महांति महांति

मूल. पभू महत्ताइं लोहियकुंथूरूवाइं वयरामयतुंडाइं गोयमकीडसमाणाइं विउव्वंति कीडसमाणेइं विउव्वि
ता अन्नमन्नस्सकायं समतुरंगेमाणा२ खायमाणा२ सयपोरगकिमियाइं चालेमाणा२ अंतो२ अणु

ापा. होय ने तेने रोहिणिआदि अति कडवुं द्रव्य खातां अतिशे अप्रीति उत्पन्न थाय ते वेदना तथा परुष
वेदना ते अतिशे लुखाश जणावनारी तथा निष्ठुर एटले जेनो उपाय नथी एवी वेदना तथा चंड ए
टले रौद्र अध्यवसायनी हेतु तथा तीव्र एटले दुःखथकी पण अतिशे दुःख देनारी तथा दुर्ग एटले
जेनुं उल्लंघन न थाय एवी माटेज सहन न करी सकाय एवी ए सर्वे वेदनायोने नारकी भोगवे छे एम

टीकाः गोमयकीटमहत्प्रमाणत्वात् लोहितकुंथुरूपाणि आरक्तकुंथुरूपाणि वज्रमयतुंडानि गोमयकीटसमानानि विकुर्वंति विकुर्वित्वा अन्योन्यस्य परस्परस्य कायं शरीरं समतुरगमाणा समतुरंगा इवाचरंतः समतुरंगायमाणाः अश्वाइव अन्योन्यमारूढं तइत्यर्थः खायमाणा खायमणा भक्षयंतो भक्षयंतः अंतरंतरनुविशंतो नुविशंतः शयपोराग

मूल. प्पविस्समाणा२ वेयणं उदिरयंति एवंखलु जाव दुरहियासं ॥ इमीसेणं भंते रयणप्पहाए पुढवीए जे नेरईया किं सीयवेयणं वेयंति उसिणवेयणं वेयंति सीउसिणवेयणं वेयंति गो० णोसीयवेयणं वेयंति

भाषा. जावत् धूमप्रभापृथिवी सुधी कहेवुं ने छठ्ठी ने सातमीपृथिवीना नारकी घणा तो छाणना कीडा सरखा मोटां लाल कुंथु रुप वज्रमय चांचना कीट सरखां रुप विकुर्विने परस्परना शरीरने विषे पेसे छे नेकिले छे आरोहण करे छे बरोबरीया घोडानी पेठे आक्रमण करेछे एक एकनुं भक्षण करता२ एक एकमां पेसेछे जेम सेंकडो कीडाये व्याप्त शेलडीनो सांठो होय तेनी पेठे शरीरना मध्यमां पेशनिकल करताछता मोटी वेदना उपजावेछे ते वेदनानां विशेषण पूर्वनी पेठे जाणवां ॥ हावे क्षेत्रना स्वभावथी थएली वेदना

पा. ९८१ टीका.

किमिगा इवशनपर्वकमय इव इक्षुपर्वकमय इव चालेमाणा चालेमाणा शरीरस्य मध्यभागेन संचरंतो वेदनामुत्पादयंत्युज्ज्वलामित्यादि प्राग्वत् ॥ संप्रति क्षेत्रस्वभावज वेदना प्रतिपादयति। रयणेत्यादि रत्नप्रभापृथिवी नैरयिका भदंत किंशीतां वेदनां वेदयंति उष्णां वेदनां वेदयंति शीतोष्णां वा भगवानाह गौतम नशीतां वेदनां वेदयंति किंतु उष्णा वेदना वेदयंति तेऽपि शीतयोनिकाः शीतयोनिस्थानिनो केवलहिमानी प्रख्यशीतप्रदेशात्मकत्वात् योनिस्थानव्यतिरेकेण चान्यत् सर्वमपि भूम्या

मूल.

उसिणवेयणं वेयंति नोसीउसिणवेयणं वेयंति अप्पयरा उण्हजोणिया वेयंति एवं जाव वालुयप्पभा

भाषा.

कहेछे। हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीना नारकी शुं शीत वेदना वेदेछे के उष्ण वेदना वेदेछे के शीतोष्ण वेदना वेदेछे? हे गौतम शीत वेदना वेदता नथी उष्ण वेदना वेदेछे शीतोष्ण वेदना वेदता नथी शीतोष्ण वेदनानो नरकने विषे मूलथीज संभव नथी ए प्रकारे शर्कराप्रभा तथा वालुकाप्रभा तथा पंकप्रभापृथिवीनो प्रश्न तथा तेनो उत्तर जाणवो ने नरकावासाना भेदे घणा घणा सीतयोनियाछे माटे उष्ण वेदना वेदेछे ने ते थोडा छे जे शीत वेदना वेदे छे ए प्रकारे धूमप्रभानो प्रश्न तेनो उत्तर हे गौतम सीत वेदना पण

टिका. वि च्यादिर्गगागादपि महाप्रतत्यमतम्ने उष्णा वेदनामनुनवंति नापि शीतोष्णां वेदनां वेदयंते शीतोष्णास्वनावाया वेदनाया नरकेषु मूलतोप्यसंनवात् एवं शर्करा प्रना वालुकाप्रना नैरयिका अपि वक्तव्याः पंकप्रनापृथिवीनैरयिकपृछाया नगवानाह गौतम शीतामपि वेदनां वेदयंते नरकवासनदेन उष्णामपि वेदना वेदयंते नरकवासनेदेनैव नतु शीतोष्णा तत्र ते बहुतराये उष्णा वेदयंते प्रनूततराणा शीतयोनिकत्वात् ते स्तोकतरा ये शीतां वेदना वेदयंते अल्पतराणामुष्णयोनिक

मूल. ए पंकप्पनाए पुढ णो० सीयवेयणं वेयंति उसिणवेयणं वेयंति नोसीउसिणवेयणं वेयंति ते बहुय रगा जे उसिणवेयणं वेयंति ते थोवयरगा जे सीयवेयणं वेयंति धूमप्पहाए पुढ णो० सीयंपि वेयणं

नाषा. वेदे छे ने उष्ण वेदना पण वेदे छे पण शीतोष्ण वेदना वेदता नथी ते घणा घणा छे जे शीत वेदना वेदे छे ते थोमा छे जे उष्ण वेदना वेदे छे ए प्रकारे तमःप्रनानो प्रश्न तथा तेनो उत्तर जे हे गौतम शीत वेदना वेदे छे पण उष्ण वेदना नथी वेदता तथा शीतोष्ण वेदना नथी वेदता त्यांना रहेला सर्वेनी उष्णयोनि छे माटे योनिस्थान विना अन्य सर्व नरकनूमिआदि जेने महा हिम समानपणुं छे मा

पा. ७८१

टीका. भिभीया श्वशनपर्वकमय इव इक्षुपर्वकमय इव चालेमाणा चालेमाणा शरीरस्य मध्यभागेन संचरंतो वेदनामुत्पादयंत्युज्ज्वलामित्यादि प्राग्वत्॥ संप्रति क्षेत्रस्वभावज वेदनां प्रतिपादयति। रयणेत्यादि रत्नप्रभापृथिवी नैरयिका भदंत किंशीता वेदनां वेदयंति उष्णां वेदनां वेदयंति शीतोष्णां वा भगवानाह गौतम नशीतां वेदनां वेदयंति किंतु उष्णा वेदना वेदयंति तेहि शीतयोनिकाः शीतयोनिस्थानिनो केवलाहिमानी प्रख्यशीतप्रदेशात्मकत्वात् योनिस्थानव्यतिरेकेण चान्यत् सर्वमपि भूम्या

मूल. उसिणवेयणं वेयंति नोसीउसिणवेयणं वेयंति अप्पयरा उण्हजोणिया वेयंति एवं जाव वालुयप्पभा

भाषा. कहेछे। हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीना नारकी शुं शीत वेदना वेदेछे के उष्ण वेदना वेदेछे के शीतोष्ण वेदना वेदेछे? हे गौतम शीत वेदना वेदता नथी उष्ण वेदना वेदेछे शीतोष्ण वेदना वेदता नथी शीतोष्ण वेदनानो नरकने विषे मूलथीज संभव नथी ए प्रकारे शर्कराप्रभा तथा वालुकाप्रभा तथा पंकप्रभापृथिवीनो प्रश्न तथा तेनो उत्तर जाणवो ने नरकावासाना भेदे घणा घणा सितयोनियाछे माटे उष्ण वेदना वेदेछे ने ते थोडा छे जे शीत वेदना वेदे छे ए प्रकारे धूमप्रभानो प्रश्न तेनो उत्तर हे गौतम सीत वेदना पण

का. वि खादिरांगारादपि महाप्रतत्यमतस्ते उष्णा वेदनामनुभवंति नापि शीतोष्णां वेदनां वेदयंते शीतोष्णास्वभावाया वेदनाया नरकेषु मूलतोऽप्यसंभवात् एवं शर्करा प्रभा वालुकाप्रभा नैरयिका अपि वक्तव्याः पंकप्रभापृथिवीनैरयिकपृछया भगवानाह गौतम शीतामपि वेदना वेदयंते नरकवासभेदेन उष्णामपि वेदना वेदयंते नरकवासभेदेनैव नतु शीतोष्णा तत्र ते बहुतराये उष्णां वेदयंते प्रभूततराणा शीतयोनिकत्वात् ते स्तोकतरा ये शीता वेदना वेदयंते अल्पतराणामुष्णयोनिक

उ. ए पंकप्पभाए पुच्छा गो० सीयवेयणं वेयंति उसिणवेयणं वेयंति नोसीउसिणवेयणं वेयंति ते बहुयरगा जे उसिणवेयणं वेयंति ते थोवयरगा जे सीयवेयणं वेयंति धूमप्पभाए पुच्छा गो० सीयंपि वेयणं

भा. वेदे छे ने उष्ण वेदना पण वेदे छे पण शीतोष्ण वेदना वेदता नथी ते घणा घणा छे जे शीत वेदना वेदे छे ते थोडा छे जे उष्ण वेदना वेदे छे ए प्रकारे तमःप्रभानो प्रश्न तथा तेनो उत्तर जे हे गौतम शीत वेदना वेदे छे पण उष्ण वेदना नथी वेदता तथा शीतोष्ण वेदना नथी वेदता त्यांना रहेला सर्वैनी उष्णयोनि छे माटे योनिस्थान विना अन्य सर्व नरकभूमिआदि जेने महा हिम समानपणुं छे मा

॥. ९८३ टीका. स्यं या नामिना त्रासं ग्राहिताः तथा नित्यमुद्विग्ना यथोक्तरूपडःखानुजवतस्तद्गतत्रासपराङ्मुखचित्ताः तथा नित्यं सर्वकालमुपप्लुताः उपप्लवेनोपेताः मनु
मागाणि गतिमासादयंति एवं नित्यं सर्वकालं परममशुजं अतुलमशुजत्वेन अनन्यसदृशमनुबद्धमशुजत्वेन निरंतरमुपचितं निरयजवं प्रत्यनुजवंतः प्रत्येकं वेदय

मूल. सयं निरयजवं पच्चणुजवमाणा विहरंति गो० तएणं तत्र निच्चंजीया निच्चंवाहिया निच्चंतासिया निच्चं
तछा निच्चंउव्विया निच्चंउड्डुया निच्चंपरमसुजमतुलमणुवद्धं निरयजवं पच्चणुजवमाणा विहरंति एवं

जाषा. ना करनारा पुरुष उपजे छे बीजा नही ए अर्थ देखाडवाने पांच पुरुषने नामथी देखाडे छे हेठली सातमी
पृथिविने विषे पांच अनुत्तर एटले सर्वथी मोटा मोटा स्थानकवाला नरक कह्याछे तेनां नाम जे काल१
महाकाल २ रौरव ३ महारौरव४ अप्रतिष्ठान ५ ए प्रकारे तिहां पांच महा पुरुष सर्वोत्तम प्रकर्ष पा
म्यो एहवो जे दंभ तेनुं समादान एटले प्राणीनी हिंसाना महाक्रुर अध्यवसायथी काल
मासे काल करीने एटले आउखु पुरु थया पछी मरीने अप्रतिष्ठान नरकने विषे नार

टी. माना विचरंति एवं पृथिव्या पृथिव्या तावद्वक्तव्यं यावदधः सप्तमी अस्यां चाधः सप्तम्यां क्रूरकर्माणः पुरुषा उत्पद्यंते नान्ये तथा चास्यैवार्थस्य प्रदर्शनार्थं पंच पुरुषान् उपन्यस्यंति अहेसत्तमाएणमित्यादि अधःसप्तम्यां पृथिव्यामप्रतिष्ठाने नरके इमेअनंतरं वक्ष्यमाणस्वरूपाः पंच महापुरुषा अनुत्तरैः सर्वोत्तमप्रकर्षप्राप्तै र्दंडसमादानैः समादीयते कर्म एभिरिति समादानानि कर्म्मोपादानहेतवः दंडाएव मनोदंडादयः प्राणव्यपरोपणाध्यवसायरूपाः समादानानि दंडसमादानानि

सू. जाव अहेसत्तमाए णं पुढवीए पंच अणुत्तरा महति महालया महाणरगा पं० तं० काले महा काले रोरुए महारोरुए अपइट्ठाणे तत्थइमे पंच महापुरिसा अणुत्तरेहिं दंड समादाणेहिं का

भाषा. ळपणे उत्पन्न थया तेनां नाम कहे छे राम एटले जमदग्निनो पुत्र जेने परशुराम कहे छे ते दाढा दाळ जेने छायापुत्र कहे छे ते२ तथा वसुराजा उपरिचर३ ते एक दिवस देवताधिष्ठित ने आकाश जेवुं स्वछ स्फटिकना सिंहासन उपर बेठो हतो आकाश स्फटिकमय सिंहासनथी अद्धर आकाशने विषे राजा बेसे छे माटे महासत्यवादी छे प्राणनो अंत थाय तोपण क्यारेय आ राजा असत्य बोलतो नथी एवी लो

टीका. तिः सप्तमासे कालं कृत्वा तत्रत्या स्तथा रामो जमदग्निसुतः परशुराम इत्यर्थः दाढदाल' छायासुतः वसुराज उपरिचरः सहिदेवताधिष्ठिताकाशस्फटिकसिंहास
नोपरिचः सन्नाकाशस्फटिकमयस्य सिंहासनस्यादर्शनेन लोकेष्वेवं प्रसिद्धिमगमत् सत्यवादी किलैष राजा वसु र्न प्राणात्यये ऽप्यलीकं जायते ततः सत्वावर्जि
तदेवताकृतप्रातिहार्य एषगगनतलाकाशे चरतीति सचान्यदा हिंसावेदार्थप्ररूपकस्य पर्वतकस्य पक्षमाश्रित्य सम्यग्दृष्टे र्नारदस्य पक्षमनाश्रित्यालीकवादित्वात् कु

मूल. लमासे कालं किच्चा अप्पइठाणे निरए नेरइत्ताए उववन्ना तं रामे जमदग्गिपुत्ते दढाऊले
छइपुत्ते वसूउवरिचरे सुभूमे कोरव्वे बंभदत्ते चुलणीसुए तेणं तत्थनेरइया जाया काला का

भाषा. कमां विख्याति थई त्यार पछी पोताना सत्वथी वश करेला देवताये सेव्यो थको रह्यो छे एक दि
वस वेदनो अर्थ हिंसामय छे एवुं पर्वतनुं कहेवुं छे ने वेद हिंसामय नथी एवुं समकितदृष्टिवालो जे नार
द तेनुं कहेवुं छे ते बे जण विवाद करे छते साचो न्याय कराववा ए वसुराजा पासे आव्या त्यारे वसुरा
जाये पर्वतनो पक्ष लीधो पण समकीती नारदनो पक्ष न लीधो ने जुठु बोल्यो जे वेद हिंसामय छे पछी

पितदेवना चपेटाहतः सिंहासनात् परिभ्रष्टो रौद्रध्यानमधिरूढ सप्तमपृथिव्यामप्रतिष्ठाननरकमयासीत् सुभूमोऽष्टम चक्रवर्त्ती कौरव्यः कौरव्यगोत्रोब्रह्म
दत्तश्चुलनीसुतः तेणंतत्थवेयणं वेयंतीत्यादि तेपरशुरामादयस्तत्रा प्रतिष्ठाननरके वेदनां वेदयंते उज्ज्वलां यावत् दुरध्यासामिति प्राग्वत् ॥
॥ संप्रति नरकेषूष्णवेदनायाः स्वरूपमभिधित्सुराह उसिणवेयणिज्जेसुणं भंते उष्णवेदनेषु णमिति पूर्ववत् भदंत नरकेषु नैरयिकाः कीदृशीमुष्णवेदनां प्रत्य

का. लो जावपरमाकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता तेणं तत्थवेयणं वेयंति उज्जलं विउलं जाव दुरधियासं ॥

उ. ॥ उसिणवेयणिज्जेसु णं भंते नेरइया केरिसयं उसिणवेयणं पच्चणुभवमाणा विहरंति गो० से जहा

देवताये कोप करिने लात मारि सिंहासनथी भ्रष्ट कर्यो ते महारौद्र ध्यानथी सातमी नरके अप्रतिष्ठान
नरकने विषे नारकीपणे उत्पन्न थयो ते तथा सुभूम जे आठमो चक्रवर्त्ती कौरवगोत्रनो४ तथा ब्रह्मदत्त बा
पा. रमो चक्रवर्त्ती चुलणीनो पुत्र ५ ए पांच पुरुष तिहां नारकी थया वर्णे करिने काला जावत् परम काला
त्यां सुधीनो पाठ कहेवो ते तिहां पूर्वे कही तेवी वेदना वेदे छे उज्ज्वल जाज्वल्यमान जावत् दुःखे सहवा

।. १८५ टीका॰ पुणंतः प्रत्येकं वेदयमाना विहरंति भगवानाह गौतम सयथानामको निर्दिष्टनामकः कश्चित् कम्मारदारको लोहकार दारकः स्यात् किंविशिष्टइत्याह तरुणः प्रवर्द्धमानवया आह दारकः प्रवर्द्धमानवया एवभवति नच तस्य विशिष्टसामर्थ्यसंभवः आसन्नमृत्युत्वादेव विशिष्टसामर्थ्यप्रतिपादनार्थश्च एष आरंभः ततोर्थव र्विशेषणं मन्येत्वन्याव्याचक्षते तरुणं प्रत्यग्रं विशिष्टवर्णादिगुणोपेतमभिनवंच तत्तरुणमिति लोकेप्रसिद्धं यथा तरुणमिदमश्वत्थपत्रमिति ततः स कर्मारदारकस्तरुण

मू. नामए कम्मारदारएसिया तरुणे बलवं जुगवं अप्पायंके थिरग्गहत्थे दढपाणि पायपासपिठ्ठंतरो रुपरिणए लंघणपवणजइण (वायामण) पमद्दण समत्थे तलजमलजुयल बाहु (फलिहनिभबाहु)

भाषा. योग्य ए सर्वे वेदनाना विशेषणनो पाठ लेवो ॥ हावे नरकने विषे उष्णवेदनानुं स्वरुप कहेवाने प्रश्न सूत्र कहे छे हे भगवन् उष्ण वेदनीक नरकने विषे नारकी केवी उष्णवेदनाने प्रत्येके वेदता थका रहेछे? हे गौतम ए वात दृष्टांते करिने कही छे कोइक नामनो लोहकारनो पुत्र जुवान एटले वृद्धि पामता वर्णादि गुण सामर्थ्य तेणे सहित ने बलवंत एटले कालना उपद्रवे रहित अतिशे बलयुक्त ने ज्वरादि

टी. इति किमुक्तं भवति बलिनो विशिष्टवर्णादिगुणोपेतश्चेति बलं सामर्थ्यं तत् यस्यास्तीति बलवान् तथा युगं सुषमदुःषमादिकालः सस्वेनरूपेण यस्यास्ति न दोषदुष्टः सयुगवान् किमुक्तं भवति कालोपद्रवोपि सामर्थ्यविघ्नहेतुः सचास्य नास्तीति प्रतिपत्त्यर्थमेतद्विशेषणं युवा यौवनस्थ. युवावस्थायां हि बलातिशय इत्येतदुपादानं अप्पायंके इति अल्पशब्दोऽभाववाची अल्पः सर्वथा अविद्यमान आतंकोज्वरादिर्यस्यासावल्पातंकः स्थिरोऽग्रहस्तो यस्यस स्थिराग्रहस्तः। दढपाणिपायपासपिठन्तरोरुपरिणए इति दृढानि अतिनिविडतामापन्नानि पाणिपादपार्श्वपृष्ठांतरोरूणि परिणतानि यस्यस दढपाणिपादपार्श्वपृष्ठान्तरोरुपरिणतः मुखादिदर्शनात्यार्थे

मू. घणणिचितवलियवदखंधे चम्मेठगदुघणमुठियसमाहयनिचिय गायगत्ते (कायगुत्ते) उरस्सबलसम

भा. रोग रहित ने स्थिर छे हाथनो अग्रभाग जेनो तथा दृढ छे हाथ पग पीठ पासां साथल ते जेनां एवो तथा अतिशे लष्ट पुष्ट गोल छे खभा जेना एवो तथा चर्मेष्टक चामडाना गोटीला घण मुष्टि इत्यादिके करिने घडेलां सारी रीते दृढता पमाडेलां जे गात्र तेना जेवां छे गात्र जेनां एवो तथा अंतरनो उत्साह वीर्य तेणे युक्त छातिना जोरवालो तथा बेतालवृक्षनुं जुगल होय तेवा बरोबर सरल लांबा तथा पुष्ट

.७८६ टीका. कोशिलंतस्य परनिपातः तथा घनमतिशयेन निचितौ निबिडतरत्वमापन्नौ वलिताविव वलितौ वृत्तौ स्कंधौ यस्य स घननिचितवलितवृत्तस्कंधः चम्मेठग दुघण मुट्ठिय समाहय निचिय गायगत्ते चर्म्मेष्टकेन दुघणेन मुष्टिकया च मुष्ट्या च समाहत्य ये निचितीकृतगात्रास्ते चर्म्मेष्टकदुघणमुष्टिकसमाहतनिचितगात्राणामिव गात्रं यस्य स चम्मेष्टकदुघणमुष्टिकसमाहतनिचितगात्रगात्रः उरस्सबलसमन्नागए इति उरसि भवमुरस्यं तच्च तत् बलंच उरस्यबलं तत्समन्वागतः

मूल. न्नागए छेए दक्खे पट्ठे कुसले निउणे मेहावि णिउणसिप्पोवगए एगंमहं अयपिंडं उदगवारसमा णं गहाय तंतावियकोट्टिय२ उब्भिंदिय२ चुण्णिय२ जावएगाहंवा दुयाहंवा तियाहंवा उक्कोसेणं

भाषा. एवा छे बे हाथ जेना एवो तथा अति शीघ्रगतिने विषे तथा अति मेहेनत करवा विषे समर्थ तथा कोईनुं मर्द्दन करवुं होय एटले मसलवुं होय कोई वस्तुनो चुरो करवो होय तेने विषे समर्थ एवो तथा छेक एटले चतुर बोहोतेर कलाने विषे पंडित तथा विलंब रहित कार्यनो करनार एवो तथा कुशल एटले सारी रीते पोताने करवा योग्य क्रियानो जाण एवो तथा परस्पर बाध न आवे एम पूर्वापरनुं जे अ

मगनुप्राप्तः उपागतः समन्वागतः अंतरोत्साहवीर्ययुक्त इतिभावः तलतमलजुयलबाहू इति तलौ तालवृक्षौ तयो र्यमलयुगलं समश्रेणिकं युगलं तलयमलयुगलं तद्वत् अति सरलौ पीवरौ बाहू यस्यस तलयमलयुगलबाहु. लंघणपवण जइण पमद्दणसमत्थे इति लंघने अतिक्रमणे प्लवने मनाक् पृथुतरे विक्रमवाति गमने जवने अतिशीघ्रगतौ प्रमर्दने कठिनस्यापि वस्तुनश्चूर्णनकरणेसमर्थः लंघनप्लवनजवनप्रमर्दनसमर्थ क्वचित् लंघणवग्गण जइणवायामणसमत्थ इतिपाठः तत्रऽव्यायामने

अद्धमासं साहणेज्जा सेणंतं सीयभूयं आउमयेणं संडासएणं गहाय असब्भाव पठवणाए उसिण

नुसंधान करवुं तेमां डाह्यो निपुण तथा सारी रीते क्रियाने विषे कुशलपणाने पामेलो एवो लोहकारनो पुत्र ते एक नाना घडा जेवो लोढानो गोलो तपावि तपाविने घाणवते कुटि कुटिने घडे वारंवार तेने चूरि चूरिने घडे जावत् एक दिवस अथवा बे दिवस अथवा त्रण दिवस अहो रात्र घडे उत्कृष्टपणे पंदर दिवस सुधी ए लोहना गोलाने ए रीते घडीने त्यार पछी ए गोलो शीतल थाय सारी पेठे शीतल थया पछी साणसावते ते गोलाने झालीने उष्णवेदनावाला नारकीना शरीर मध्ये घाले घालिने

टीका. कोहिलाम्य परानिपात: तथा घनमानिशयेन निचितौ निविडतरचयमापन्नौ वलिताविव वलितौ वृत्तौ स्कंधौ यस्यास घनानिचितवलितवृत्तस्कंध: चम्मेठग डुघण मुट्ठिय समाहय निचिय गायगत्ते चर्म्मेष्टकेन डुघणेन मुष्टिकया च मुष्ट्या च समाहत्य ये निचितीकृतगात्रास्ते चर्म्मेष्टकडुघणमुष्टिकसमाहतनिचितगा त्रास्तेषामिव गात्रं यस्यस चम्मेष्टकडुघणमुष्टिकसमाहतनिचितगात्रगात्र: उरस्सबलसमन्नागए इति उरसि जातमुरस्यं तच्च तत् बलंच उरस्यबलं तत्समन्वागत

मूल. न्नागए छेए दख्खे पट्ठे कुसले निउणे मेहावि णिउणसिप्पोवगए एगंमहं अयपिंडं उदगवारसमा णं गहाय तंताविथकोट्टियश् उब्भिंदियश् चुण्णियश् जावएगाहंवा दुयाहंवा तियाहंवा उक्कोसेणं

भाषा. एवा छे बे हाथ जेना एवो तथा अति शीघ्रगतिने विषे तथा अति मेहेनत करवा विषे समर्थ तथा कोईनुं मर्दन करवुं होय एटले मसलवुं होय कोई वस्तुनो चुरो करवो होय तेने विषे समर्थ एवो तथा छेक एटले चतुर बोहोतेर कलाने विषे पंडित तथा विलंब रहित कार्यनो करनार एवो तथा कुशल एटले सारी रीते पोताने करवा योग्य क्रियानो जाण एवो तथा परस्पर बाध न आवे एम पूर्वापरनुं जे अ

मगनुप्राप्तं उरस्यबलसमन्वागतः अंतरोत्साहवीर्ययुक्त इतिभावः तलतमलजुयलबाहू इति तलौ तालवृक्षौ तयो र्यमलयुगलं समश्रेणीकं युगलं तलयमलयुगलं
नन्नत् अति सरलौ पीवरौ बाहू यस्यस तलयमलयुगलबाहुः लंघणपवण जइण पमद्दणसमत्थे इति लंघने अतिक्रमणे प्लवने मनाक् पृथुतरे विक्रमवति गमने
जवने अतिशीघ्रगतौ प्रमर्द्दने कठिनस्यापि वस्तुनश्चूर्णनकरणेसमर्थः लंघनप्लवनजवनप्रमर्द्दनसमर्थ क्वचित् लंघणवग्गण जइणवायामणसमत्थ इतिपाठः तत्रव्यायामने

अद्धमासं साहणेज्जा सेणंतं सीयभूयं ओमएणं संडासएणं गहाय असब्भाव पट्ठवणाए उसिण

नुसंधान करवुं तेमां डाह्यो निपुण तथा सारी रीते क्रियाने विषे कुशलपणाने पामेलो एवो लोहका
रनो पुत्र ते एक नाना घडा जेवो लोढानो गोलो तपावि तपाविने घाणवते कुटि कुटिने घडे वारंवार
तेने चूरि चूरिने घडे जावत् एक दिवस अथवा बे दिवस अथवा त्रण दिवस अहो रात्र घडे उत्कृष्टपणे
पंदर दिवस सुधी ए लोहना गोलाने ए रीते घडीने त्यार पछी ए गोलो शीतल थाय सारी पेठे शीत
ल थया पछी साणसावते ते गोलाने झालीने उष्णवेदनावाला नारकीना शरीर मध्ये घाले घालिने

१८१ का. उ. था

पाणामकरणो हरि स्याच्छेयं छेको वृासप्रातिकलापंक्तिः दक्ष·कार्याणा मविलंबकारी प्रेष्टो वाग्मी कुशलः सम्यक्स्वाक्रिया परिज्ञानवान् मेधावी परस्पराव्याहतपूर्वा परानुसंधानदक्ष.माएरानिपुणा सिप्पोवगए निपुणं यथा भवति एवं शिल्पं क्रियासु कौशलं उपगतः प्राप्तो निपुणाशिल्पोपगतः एकं महांतमयस्पिंडं दकवारकसमानं अग्गालिय घटसमानं गृहीत्वा तमयस्पिंडं तापयित्वा तापयित्वा ततोघनेन कुट्टयित्वा कुट्टयित्वा यावदेकाहं वा द्व्यहं वा यावदुत्कर्षतोऽर्द्धमासं संहन्यात् वा णमिति वाक्यालंकारे तमयस्पिंडं शीतं सच शीतो वह्निर्मनागमात्रेणापि स्यादत आह शीतीभूतं सर्वात्मनाशीतत्वेन परिणतं आयामयेन संदंशकेन गृहीत्वा असद्भाव

वेयणिज्जेसुय नरएसु पक्खिवेज्जा से णं तं उम्मिसिय णिमिसिएणं णिमिसियंतरेण पुणरवि पच्चुद्ध

मनमां ते पुरुष एम चिंतवे जे हुं एक मेषोन्मेष एटले आंख मीचिये उघाडिये एटलो काल एटली वेलाये वली ए गोलो पाछो शरीरमांथी काढिश एम चिंतवीने काढवा वांछतो थको ते गोलाने वेरातो थको मांखणनी पेठे गलि जतो थको देखे ते गोलाने भस्म थईने नाश पामतो देखे पण ए उद्यम न करि शके जे पाछो ते गोलाने साजो काढवा अथवा ते गोलाने अणगली जतो थको

टीका. स्थापनया असद्भावकल्पनया नैतद्भूत् भवति भविष्यति वा केवलमिदमसद्भूतमिदं कल्पते इति उष्णवेदनेषु प्रक्षिपेत् प्रक्षिप्य च स पुरुषो यामिति वाक्यालंकारे उन्मिषित निमिषितपंतरेण उन्मिषितनिमिषितांतरेण यावता अंतरेण व्यवधानेन उन्मेषनिमेषौ क्रियेते तावदंतरप्रमाणेन कालेनातिक्रांतेन पुनरपि प्रत्युद्धरि ष्यामीति कृत्वा यावदुद्धर्तुं प्रवर्त्तते तावत् प्रविनरमेव प्रस्फुटितमेव यदिवा प्रविलीनमेव नवनीतमिव सर्वथा गलितमेव यदिवा प्रध्वस्तमेव सर्वथा असमसाद्भूत

मूल. रिस्सामित्ति कट्टु पविरायमेव फासेज्जा पविलीणामेव फासेज्जा पविद्धत्थमेव फासेज्जा (पासेज्जा) नो

भाषा. काढवा अथवा ते गोलो न नाश पामतो थको काढवा उद्यम न करि शके एटले घाल्या पछी काढि न शके एवी नरक मध्ये नारकीने उष्णवेदनाछे ए दृष्टांत असद्भावेछे एटले अछते भावे ए दृष्टांतनी कल्पनाछे वली एज अर्थनी अतिशे स्पष्ट भावनाने अर्थे बीजु दृष्टांत कहेछे आ दृष्टांत कहेवाने इछित एवो जे अर्थ ते पाम वा भणी जाणवुं जेम कोई मदवालो मातंग एटले हस्ति मातंग तो अंत्यजनुं पण नामछे माटे ते शंका नाश करवाने अर्थे तथा नाना प्रकारना देशना शिष्य जनोने अनुग्रह थाय तेने अर्थे बीजो पर्याय शब्द कहे

टीका. ...गे ... नो पुनः शकुनात् मरिवानं वा अप्रस्फुटितं अविलीनं वा अविध्वस्तं वा पुनरपि प्रत्युद्धर्त्तुं एवंरूपा नामतत्रोष्णवेदना । अस्यैवार्थस्य स्पष्टतरभावना ... दृष्टांतं गरमाह । सेजहा नामए इत्यादि स सकलजनप्रसिद्धो यथेति दृष्टांतत्वोपदर्शने वा शब्दो विकल्पने अयंच दृष्टांतोविवक्षितार्थ प्रतिपत्तये बोद्धव्य ... विकल्पन ... मत्तो मदकलितोमातंगो हस्ती इह मातंगोऽन्त्यजोपि संजायते ततस्तदाशंकाव्युदासार्थं नानादेशजविनेयजनानुग्रहाय पर्यायद्वयमाह द्विपः ... करेण चेत्यर्थः पिबतीति द्विप. मुलविभुजादय इति कप्रत्ययः कौ जीर्यतीति कुंजरः यदिवा कुंजे वनगहने रमते रतिमाबध्नातीतिकुंजरः । क्वचिदि

मूल. चेयणं संचाएइ अविरायंवा अविलीणंवा अविद्धत्थंवा पुणरवि पच्चुद्धरित्तए सेजहावा मत्ते मातंगे

भाषा. जे जे द्विप एटले मुखवते तथा सुंढवते पान करे माटे द्विप हस्ती अथवा कुंजर वनमां रमे प्रीति बांधे माटे कुंजर ते हाथी साठ वरषनो होय ते प्रथम शरत्काल समयने विषे एटले कार्त्तिक मासने विषे अथवा चरम निदाघकालने विषे एटले जेष्ट मास पर्यंत कालने विषे एटले इहां बहुधा ऋतु ते सूर्य ऋतुग्रहण करवा ते आषाढ मासआदि बे बे मास प्रमाणे प्रवचनने विषे कहेला क्रमवते आ प्रकारे जाणवा जे प्रथम

टीका.

निहप्रत्यर्थ: पाप्ति गयना संवत्सरा यम्पस पाद्विहायनः प्रथम शरत्कालसमये कार्त्तिकमाससमये इह प्राय ऋतवः सूर्यर्त्तवो गृह्यंते तेचाषाढादय। ।६।५म। सप्रमाणाः प्रवत्तनेच क्रमेणैवं नामान न्यथा प्रथम.प्रावृट् द्वितीयः वर्षारात्रः तृतीयः शरद् चतुर्थो हेमंतः पंचमो वसंतः षष्ठो ग्रीष्म. तथाचाह पादलिप्तसूरि: पाउस वसरत्तो सरउ हेमंत वसंत गिम्हहोये एए खलु छप्पि उऊ जिणवर दिठामए सिठा । ततः प्रथमशरत्कालसमयः कार्त्तिक समय इति विवृत्तं

मूल.

उपाए कुंजरे सन्निहायणे पढमसरय(रए)कालसमयंसिवा चरिमनिदाहकालसमयंसिवा उण्हाभि

भाषा.

प्रावृट१ बीजो वर्षारात्र२ त्रीजो शरद्३ चोथो हेमंत४ पांचमो वसंत५ छठो ग्रीष्म६ तेज प्रकारे पादलिप्ताचार्ये कह्युं छे माटे प्रथम शरद्काल ते कार्त्तिक मास जाणवो । संक्रांति प्रमाणे पण एमज, मकर। कुंभ। शिशिर१ मीन। मेष । वसंत२ वृष। मिथुन। ग्रीष्म३ कर्क। सिंह ।वर्षा४ कन्या। तुला। शरद५ वृश्चिक। धन सक्रांतिये हेमंत६ ए रीते छ रुतु लेईये त्यारे कार्त्तिके पेहलो शरद थाय ने ग्रीष्मरुतुनो छेल्लो मास ते ज्येष्टमास थाय तेने विषे आकरा सूर्यना किरणवते अतिशे तपेलो थयो होय सर्व अं

१. ७८० पादस्य मृज्झटिका छउ् प्रथमशरत् कार्त्तिकमासः तस्मिन् वा शब्दोविकल्पने चरमनिदाघकालसमये वा चरमनिदाघ कालसमयो ज्येष्ठमासपर्यंतस्तस्मिन् वा
टीका. गतो रिकल्पने च पानिलनः सूर्यखरकिरणप्रतापाभिभूतोऽतएवोष्णैः सूर्यकिरणैः सर्वतः प्रतप्तांगतया शोषजावतस्तृषाऽभिहतस्तत्रापि पानीयगवेषणार्थमित
स्ततः स्वेच्छया परिभ्रमतः कथंचिद्दवाग्निप्रत्यासत्तौ गमनतो दवाग्निहतोऽतएवातुरः क्वचिदपि स्वास्थ्यमलभमानः सन् आकुलः सर्वांगपरिताप संभवेन गलता

मूल. हए तण्हाभिहए दवग्गिजालाभिहए आउरे झुसिए (झुसिए) (झिंझिए) (झिंझिए) पिवासिए
दुब्बले किलंते एक्कं महं पुक्खरिणिं पासिज्जा चाउक्कोणं समतीरं अणुपुव्वसुजायवप्पगंभीरसी

गे शोष पम्यो होय तृषा घणी उपजि होय ते पाणि खोलवाने अर्थे च्यारे पास पोतानी इच्छाये वन
१. मां परिभ्रमण करे करतेः कोई प्रकारे दावानलने समीप थयो माटेज अतिशे आतुर थयो कोई जगो
ये पण स्वस्थपणाने न पामतोथको अतिशे आकुलव्याकुल थयो सर्व अंगे परितापनो संभव तेणे क
रिने गलु तथा तालु सुकातुं होय असाधारण तृषावेदनाना उदयथी दुर्बल थतो शरीरनी तथा मननी

क्षुधोपतापात् क्षुधितः क्वचित् झिंझिए इतिपाठः तत्राक्षीनः क्षीणशरीर इति व्याख्येयं असाधारणतृड्वेदनासमुच्छलनात् पिपासितः अतएव दुर्बलः शरीरमान
का. सामर्थ्यरहितत्वात् क्लान्तोग्लानिमुपगतः क्लमूग्लानाविति वचनात् एकां महतीं पुष्करिणीं पुष्कराण्यस्यां विद्यन्ते इति पुष्करिणी तां किंविशिष्टामित्याह चतुः
कोणा चत्वारः कोणा अश्रयो यस्यासा तथा ता समं विषमोन्नतिवर्जितं सुखावतारं तीरंतटं यस्याः समतीरा तां अनुपूर्वेण नीचैर्नीचैस्तरभावरूपेण नत्वेकहेलयैव क्वचिद्ग

तलजलं संछन्न (पउम) पत्तभिसमुणालं बहुउप्पलकुमुयणलिणसुभगसोगंधियपुंमरीय (महापुंम
मू. रीय) सयपत्तसहस्सपत्तकेसरफुल्लोवचियं छप्पयपरिभुज्जमाणकमलं अच्छविमलसलिलपुण्णं

थिरता नथी माटे ग्लानिने पामेलो ते हाथी एक मोटी पुष्करिणी वाव्य तेने देखे ते वाव्यनु वर्णन ले वाव्य के
हेवीछे चारछे खुणा जेना एटले चोखंमी तथा सम एटले विखम तथा उंचाणपणु तेणे रहित तथा सुखकारीछे ती
षा. रतट उतारो जेनो एवी एटले कोई जगाये जेमां एकदम खामो तथा टेकरो नथी अनुक्रमे नीची एवी तथा
सारुछे जलस्थान जेनुं तथा गंभीर ने शीतलछे जल जेमां एवी तथा जलवते ढंकातांछे कमलनां नाल तथा क

. ५१५०

टीका· सांकणा काविचलनिकणा इति भावः सुष्टु अतिशयेन योजातोवप्रः केदारो जलस्थानं गंजीरमगाधस्ताघं शीतलं जलं यस्यां सानुपूर्व्यसुजातवप्रगंजीरशीतल
पना ता संछिण्णपत्तनिसमुणालामिति संछिन्नानि जलेनातरितानि पत्र बिसमृणालानि यस्यां सा संछिन्नपत्रबिसमृणाला तां इह बिसमृणालसाहचर्यात् पत्रा
णि पद्मिनीपत्राणि इत्यन्यानि बिसानि कंदाः मृणालानि (पद्मनालाः) पद्मलता: तथा बहुजिरुत्पलकुमुदनलिनसुजगसौगंधिकपुंमरीकमहापुंमरीकशतपत्रसहस्रपत्रैः
केसरैः केसरप्रधानैः फुलैः विकासिनै रुपचिता बहूत्पलकुमुद नलिनसुजगसौगंधिकपुंडरीकमहापुंमरीकशतपत्रसहस्रपत्रकेसरपुल्लोपचितातां तथा षट्पदै भ्रमरैः

मूल· परिहत्थभमंतमछकछभं अणेगसउणगणमिहुण विचरिय (विरइय) सद्दुन्नइमहुरसरनाइयं (तं

भाषा· मलनां पत्र ते जेमां एवी कोई ताम्रपत्रना पुस्तकमां पद्मलता एवो पण पाठछे तथा घणांछे सूर्य विकाशी तथा
चंद्रविकाशी कमल जेमां तथा सुंदर बीजी जात्यनां कमल सुगंधिक कमल तथा श्वेत कमल लाल क
मल श्याम कमल सो पांखडीनां कमल हजार पांखडीनां कमल तथा केसरप्रधान कमल तेमनुं वि
कस्वरपणु तेणे सहित एवी तथा भ्रमरजातिये नोगव्यां छे कमल जेनां एवी तथा स्वछ स्फटिक जेवा

परिभुज्यमानानि कमलानि उपलक्षणमेतत् कुमुदादीनि च यस्यां सा षट्पदपरिभुज्यमानकमला तां तथा अच्छेन स्वरूपतः स्फटिकवत् शुद्धेन विमलेनागतुंकमल

का. रहितेन सलिलेन पूर्णा अच्छविमलसलिलपूर्णा तां तथा परिहत्था अतिरेकिता अतिप्रचुरा इत्यर्थः भ्रमंतो मत्स्यकच्छपा यस्यां सा परिहत्थभ्रमन्मत्स्यकच्छपा तथा अने

कै शकुनिगणमिथुनकैः गणशब्दस्य प्राकृतत्वादस्थानेप्युपनिपातः शकुनिमिथुनकै र्विचरितैरितस्ततः स्वेच्छया प्रवृत्तैः शब्दोन्नातिकमुन्नतशब्दं मधुरस्वरंनादितं

यस्यां सा अनेक शकुनिगण मिथुनकविचरित शब्दोन्नातिकमधुरस्वरनादिता तत. विशेषणसमासः तां दृष्ट्वा अवगाहते अवगाह्यच उष्णामपि परिदाहमपि

मूल. पासइ) पासित्ता तं उगाहइ उगाहित्ता सेणं तत्थ उण्हंपिपविणेज्जा तिण्हंपिपविणेज्जा खुहंपि

भाषा. जल वते संपूर्ण भरेली तथा अतिशे भमता बे मत्स्य कछप ते जेमां एवी तथा अनेक प्रकारना पंखी

ना समूह तथा तेनां जोडवां एटले स्त्रीपुरुष तेमणे रचेला उंचास्वर मधुर स्वर तेणे करीने शब्दायमा

न थती एवी ते वाव्यने देखे देखिने अवगाहन करे एटले ते हाथी ते वाव्यमां पेसे पेसीने त्यां शरी

रनो दाह पण नाश करे तथा तृषानो पण नाश करे समीपतटने विषे रहेलां जे शल्लकी प्रमुख तृण विशेष

१. ७।।१ शरीरं च परितापेन प्रकर्षेण सर्वात्मना स्फोटयेत् तथा क्षुधमपि प्रविनयेत् प्रत्यासन्नतटवर्त्तिशल्लक्यादिकिसलयजक्षणात् तृषमपि प्रविनयेत् जलपानात् ज्वरमपि
परितापसमुत्थं प्रविनयेत् परिदाघक्षुत्पिपासापगमात् एवं सकलक्षुदादि दोषापगमतः सुखासिकाजावेन निद्रायेत प्रचलायेत तत्रनिद्रावान् जवतीति स्वार्थविवक्षा

टीका. वा निद्रादिभ्यो धर्मिणि कपाणिनि क्यप्रत्ययः एवं प्रचलाशब्ददपि निद्रादेराकृतिगणत्वात् निद्राप्रचलयोस्त्वयं विशेषः सुखप्रबोधा स्वापावस्था निद्रा ऊर्ध्वस्थितस्यापि
या पुनः स्वापावस्था अस्फुटीकुर्वती समुपजायते निद्रा सा प्रचलाण्य च क्षणमात्र निद्रालाभतोतिस्वस्थीजूतः स्मृतिं वा पूर्वानुजूतस्मरणं रतिं वा तदवस्थाशक्तिरूपा धृतिं वा

मूल. पविणेज्जा जरंपिपविणेज्जा दाहंपिपविणेज्जा णिद्दाएज्जवा पयलाएज्जवा सुत्तिंवा रतिंवा धि

तेनुं जक्षण करि क्षुधाने पण शमावे तथा जलपान थकी परितापनो ज्वर पण शमावे तथा क्षुधा तृषानी
जाषा. शांति थया पछी साता सुखे करिने निंद्रा करे तथा प्रचला करे निंद्रामां ने प्रचलामां आटलो जेद छे जे
सुखे समाधाये जगाय एवी जे स्वाप अवस्था तेने निंद्रा कहीये ने उन्नां उन्नां पण जे चेतनापणु अप्रग
ट करी उपजे एवी जे निंद्रा तेने प्रचला कहीये ए प्रकारे क्षणमात्र निंद्राना लाजथी स्वस्थ थाय स्मृ

टीका. चित्तस्वास्थ्यं मतिंवा सम्यगीहापोहरूपां उपजनेन प्राप्नुयात् ततः शीतोबाह्यशरीरप्रदेशशीतीभावात् शीतीभूतः शरीरांतरपि निर्वृतीभूतः सन् संक्रासमाण इति समेकी
भावेन क्रमन् गच्छन् मानसौख्ययुक्तश्चापि सातमाल्हादस्तत्प्रधानं सौख्यं सातसौख्यं। नत्वभिमानमात्रजनितमाल्हादविरहितं सातसौख्येन बहुलो व्याप्तः सात
सौख्यबहुलश्चापि विहरेत् परिभ्रमेत् ॥ एवमेव अनेनैवानंतरोदितदृष्टांत प्रकारेण हे गौतम असद्भावप्रस्थापनया असद्भावकल्पनया नेदं वक्ष्यमाणमभूत् केवलं

सूत्र. इंवा उवलभेज्जा सीए सीयभूए संकममाणे संकश्साया सुख्खबहुले यावि विहरिज्जा ॥
॥ एवामेव गो० असब्भाव पठ्ठवणाए उसिण वेयणिज्जेहिंतो नरएहिंतो नेरइए उव्वट्टिए समाणेजाइं

भाषा. ति पामे तथा रति पामे तथा चितना स्वस्थपणाने पामे तथा मति पामे एटले ऊहापोह करवारुप म
ति बुद्धिने पामे तथा बाह्य प्रदेशथी तथा अंतरथी शितल थाय निर्वृति पामे साता सुख पामे एटले अ
भिमानमात्र थकी उत्पन्न थयेलो जे आल्हाद तेणे रहित ते साता सुख कहीये तेने पामतो छतो विचरे
एटले परिभ्रमण करे ॥ ए प्रकारे निश्चे हे गौतम असद्भाव कल्पनाये करिने एटले आगल कहीशुं

गा. १७।१ शरीरस्य प्रविनयेत् प्रकर्षेण सर्वात्मना स्फोटयेत् तथा क्षुधमपि प्रविनयेत् प्रत्यासन्नतटवर्त्तिशल्लक्यादिकिसलयभक्षणात् तृषमपि प्रविनयेत् सजलपानात् ज्वरमपि परिसंतापसमुत्थंप्रविनयेत् परिदाघक्षुत्पिपासा पगमात् एवं सकलक्षुदादि दोषापगमतः सुखासिकाभावेन निद्रायेत प्रचलायेत तत्रानिद्रावान् भवतीति च्यर्थविवक्षा

टीका. यां पिद्रादिभ्यो धर्मिणि क्यापीति क्यप्प्रत्ययः एवं प्रचलाशब्ददापि निद्रादेराकृतिगणत्वात् निद्राप्रचलयोस्त्वयं विशेष. सुखप्रबोधा स्वापावस्था निद्रा ऊर्द्धस्थितस्यापि या पुनश्चैतन्यमस्फुटीकुर्वती समुपजायते निद्रा सा प्रचला एवं च क्षणमात्र निद्रालाभतोतिस्वस्थीभूतः स्मृतिं वा पूर्वानुभूतस्मरणं रतिं वा तदवस्थाशक्तिरूपा धृतिं वा

मूल. पविणेज्जा जरंपिपविणेज्जा दाहंपिपविणेज्जा णिद्दाएज्जवा पयलाएज्जवा सुत्तिंवा रतिंवा धि

तेनुं भक्षण करि क्षुधाने पण शमावे तथा जलपान थकी परितापनो ज्वर पण शमावे तथा क्षुधा तृषानी

भाषा. शांति थया पछी साता सुखे करिने निंद्रा करे तथा प्रचला करे निंद्रामां ने प्रचलामां आटलो भेद छे जे सुखे समाधाये जगाय एवी जे स्वाप अवस्था तेने निंद्रा कहीये ने उभां उभां पण जे चेतनापणु अप्रगट करी उपजे एवी जे निंद्रा तेने प्रचला कहीये ए प्रकारे क्षणमात्र निंद्राना लाभथी स्वस्थ थाय स्मृ

टीका. भित्तमात्मंयमातिंयामनयगीतापोतरूपां उपलभेत प्राप्नुयात् ततः शीतोबाह्यशरीरप्रदेशशीतीभावात् शीतीभूतः शरीरांतरपि निर्वृतिभूतः सन् संकासमाण इति समेकी नागेन फलन् गत्तन् मानमोदयरहुलश्चापि सातमाल्हादस्तत्प्रधानं सौख्यं सातसौख्यं। नत्वाभिमानमात्रजनितमाल्हादविरहितं सातसौख्येन बहुलो व्याप्तः सात सौख्यबहुलश्चापि विहरेत् परिभ्रमेत् ॥ एवमेव अनेनैवानंतरोदितदृष्टांत प्रकारेण हे गौतम असद्भावप्रस्थापनया असद्भावकल्पनया नेदं वक्ष्यमाणमभूत् केवलं

मूल. इंवा उवलभेज्जा सीए सीयभूए संकममाणे संकमसाया सुक्खबहुले यावि विहरिज्जा ॥ ॥ एवामेव गो० असब्भाव पठवणाए उसिण वेयणिज्जेहिंतो नरएहिंतो नेरइए उव्वट्टिए समाणेजाइं

भाषा. ति पामे तथा रति पामे तथा चितना स्वरुथपणाने पामे तथा मति पामे एटले ऊहापोह करवारुप मति बुद्धिने पामे तथा बाह्य प्रदेशथी तथा अंतरथी शितल थाय निर्वृति पामे साता सुख पामे एटले अभिमानमात्र थकी उत्पन्न थयेलो जे आल्हाद तेणे रहित ते साता सुख कहीये तेने पामतो छतो विचरे एटले परिभ्रमण करे ॥ ए प्रकारे निश्चे हे गौतम असद्भाव कल्पनाये करिने एटले आगल कहीशुं

पा. २९२ टीका

नरकगतोष्णवेदना याथात्म्यप्रतिपत्तये असत्कल्प्यते इतिभावः उष्ण वेदनेभ्यो नरकेभ्यो नैरयिकोऽनंतरं उद्वर्त्तितो विनिर्गतः सन् यानीमानि प्रत्यक्ष उपलभ्यमानानि इहलोके मनुष्यस्थानानि भवंति तद्यथा गोलियालिंगाणिवा सोण्डियालिंगाणिवा भोंडियालिंगाणिवा एते अग्नेराश्रयविशेषा अन्येतु देशभेदनीत्या पिष्टपाचनभाण्डादिभेदेनैतेषां स्वरूपं कथयंति तदप्यविरुद्धमेव तिलाग्निरितिवा तुषाग्निरितिवा बुसाग्निरितिवा नलाग्निरितिवा नलस्तृणविशेषः अयागराणीतिवा

मूल.

इमाइं मणुस्सलोयंसि भवंति त अयागराणिवा तं वागराणिवा तउगराणिवा सीसागराणिवा रुप्पा

भाषा.

ते थयु नथी केवल नरकनी उष्ण वेदनानु यथायोग्य स्वरूप जाणवाने अर्थे असत्कल्पना छे पण ए भाव थयेलो नथी उष्ण वेदनीक नरकथकी नारकी निकल्योछतो उधर्त्यो छतो जे आ मनुष्य लोकमां होय एटले आ प्रत्यक्ष जणाता जे मनुष्य लोकना अग्नि जेमां लोढानां दलियां नांखीने लोह उकालाय छे उपजावाय छे ते महामूषा नामे पात्र विशेष ते अय आकर कहीये एज प्रकारे त्रांबाना आकर सीसानो आकर रूपानो आकर हिरण्यनो आकर सुवर्णनो आकर हिरण्य ने सुवर्ण ए बेनो भेद

टीका मार्गत्वात् नपुंसकनिर्देशः अयमाकरा इतिवा येषु निरंतरं महामूषास्वयोदलं प्रक्षिप्याय उत्याव्यते ते अयआकराः एवं ताम्राकरा इतिवा त्रपाकरा इतिवा सीस काकरा इतिवा रूप्याकरा इतिवा सुवर्णाकरा इतिवा हिरण्याकरा इतिवा सुवर्णहिरण्ययोरत्र विशेषो वर्णादिना कृतोवेदितव्यः इष्टकापाक इतिवा कुंभकारपाक इतिवा कवे(कवे)लुकापाक इतिवा लोहकाराऽंबरीष इति वांबरीषकः कोष्ठकः यंत्रवाम चुल्लीइवेति। यंत्रमिक्षुपीडनयंत्रं तत्प्रधानः पाटको यंत्रपाटक स्तत्रचुल्लीयत्रे

मूल. गराणिवा हिरन्नागराणिवा सुवन्नागराणिवा कुंभागराणिवा (कुंभाराग‌गराणीवा कुंभारागणीवा) तुसागिणीवा इट्टयागिणीवा कवेलुयागिणीवा लोहारंबरेसिवा जंतवाडचुल्लीवा हंडियलिंबाणिवा सों

भाषा. वर्णे करीने छे एक अणघडेलुं ने बीजुं घडेलुं तथा कुंभारनो आकर हांडलानो पाक अथवा जिहां इटचो पकवे छे ते अग्नि निभाडानो अग्नि जेने नाह्ठि कहे छे ते अग्नि तथा तुषाग्नि छाणां प्रमुखनो अग्नि तथा कवेलु अग्नि नळीया प्रमुखनो अग्नि तथा लुहारनी कोढोडनो अग्नि तथा जिहां शेलडीनो रस पचावेछे ते अग्नि शेलडी पीलवानो प्रधान पाटक पाडाडो ते यंत्रपाटक कहियें तेनी चुल्लीनो अग्नि तथा

पा. १९३ टीका. स्फुरतः पच्यते इङ्गभूतानि यानि मनुष्यलोके स्थानानि तप्तानि वन्हिसंपर्केन रक्तीभूतानि तानि च कानिचित् अयआकरप्रभृतीनि कदाचिदुष्णस्पर्शमात्राण्यपि संभवंति ततोविशेषण प्रतिपादनार्थमाह समजोईभूयाइं प्राकृतत्वात् समशब्दस्यपूर्वनिपातः ज्योतिः समभूतानि साक्षादग्निवर्णानि जातानीतिभावः एतदेवोपमया स्पष्टय

मूल. भियालिंगाणिवा णलागणीतिवा तिलागणीतिवा वुसागणीइवा तत्ताइं समजोईभूयाइं फुल्लकिंसुय समाणाइं उक्कासहस्साइं विणिमुयमाणाइं जालासहस्साइं मुच्चमाणाइं इंगालसहस्साति पविरुख रमाणाइं अंतोरहुहूयमाणाइं चिठंति ताइं पासति ताइं पासित्ता ताइं उगाहइ ताइं उगाहित्ता

भाषा. हंभिका हांली ते संबंधी अग्नि तथा सौभकाग्नि कोई आश्रयभेदे देशभेदे जाणवो तथा नभाग्नि कोई तृण विशेष तेनो अग्नि तथा तिलाग्नि तिलसिरानो अग्नि इत्यादिक परितप्त थयेला एटले साक्षात् अग्नि रूप थयेलां लालवर्ण थयेलां प्रफुल्लित अतिशे फुलेलां केसुभानां फुल खाखरनां फुल ते सरीखां मूल अग्निथी अग्निना कणिया निकले ते उलकाग्नि कहीये तेवा हजारो अथवा विजली प्रमुखना अग्नि

टीका.

ति किंशुककुसुमानि प्रफुल्लपलाशकुसुमकल्पानि उक्कासहस्साइं इति ये मुक्ताग्नितो विमुच्य विमुच्याग्नि कणाः प्रसर्पंति ते उल्का उच्यंते तासां सहस्राणि प्रमुंचंति ज्वालासहस्राणि विनिर्मुंचंति अंगारसहस्राणि प्रविकिरंति अंतरंतर्हूहूयमानानि अतिशयेन जाज्वल्यमानानि क्वचित् अंतो हुहुयहुयासाणे इतिपाठः अंतरंतः मुहुर्हुताशनानि मुहुर्मुहुर्नो हुताशनो येपुनानि तथातिष्टंति तानि पश्येत् दृष्ट्वा चावगाहते अवगाह्य च उष्णामपि नरकोष्णवेदनाजनितं वाह्यः शरीर

मूल.

सेणं तत्थ उण्हंपि पविणिज्जा तण्हंपि पविणिज्जा खुहंपि पविणिज्जा जरंपि पविणिज्जा दाहंपि पवि णिज्जा णिद्दाएज्जवा पयलाएज्जवा सइंवा रइंवा धिइंवा मतिं वाउवलभेज्जा सीए सीयभूए सं

भाषा.

हजारो मुकतां थकां तेनी हजारो ज्वालायो मुकतां थकां हजारो अंगारा विखरतां थकां मांहोमांही जा ज्वल्यमान धिग धिगता थका ते सर्व रहे ते अग्नि समूहने देखि देखिने तेमां अवगाहन करे प्रवेश करे प्रवेश करीने ते नारकी उष्णपणे नरकनी उष्ण वेदनाने निवारे खोवे शमावे विसारे एटले नरक ग तिना अति उष्ण फरश आगल ते सर्वे अग्निनो मंद फरश कह्यो माटे ते नारकी तरषने पण शमावे

भा. १९४ टीका: स्य परितापमपि प्रविनयेत् नरकगताडुष्णस्पर्शादय आकरादिषूष्णस्पर्शस्यातीव मंदत्वात् एवं च सुखासिकाजावत स्तृषमपि क्षुधमपि दाहमपि अंतःशरीरसमुत्थं प्रविनयेत् तथाच सति तृडादिदोषापगमतो निद्रायेत वा प्रचलायेत वा स्मृतिं वा रतिं वा धृतिं वा उपलभेत ततः शीतीभूतः सन् संकसन्२ संक्रामन्२ सात

मूल. कममाणे२ सायसुक्खं बहुलेयावि विहरेज्जा भवेएयारूवेसिया नोइणट्ठे समट्ठे गो. उसिणवेयणिज्जेसु नरएसु नेरइया एत्तो अणिट्ठतरियं चेव उसिणवेयणं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ॥ सीय वेयणि

भाषा. भूखने पण शमावे एटले विसारे तथा ज्वरने पण विसारे तथा दाहने पण अंतरथी निवारे ते सर्व विसारवाथी निंद्रा पामे प्रचला पामे स्मृति पामे रति पामे धृति पामे ए शब्दोना अर्थ पूर्वे कह्या छे तार पछी शीतल थयोछतो घणु साता सुखने पामतोछतो विचरे ए प्रकारे कह्योछते गौतमस्वामी पुछे छे हे भगवन् उष्ण वेदनीक नरकने विशे नारकीने एवी उष्ण वेदनाछे के एवी उष्ण वेदनानो संभव छे त्यारे भगवान कहे छे ए अर्थ समर्थ नही एटले ए वेदना थकी पण अधिक उष्ण वेदना नरकमां छे ए थकी प

टीका. सौख्यमनुजवो विहरेत् अमीषां पदानामर्थः प्राग्वद्भावनीयः एतावत्युक्ते जगवान् गौतमः पृछति जवेण्यारूवेसिया स्यात् संजाव्यते एतत् यथाजवेत् उष्णवेदनीये

षु नरकेषु एतदुपा उष्णवेदना जगवानाह गौतम नायमर्थः समर्थः यतउष्णवेदनीयेषु नरकेषुनैरयिका अतोऽनंतरप्रतिपादितस्वरूपाया उष्णवेदनाया अनिष्टतरि

मूल. जंसु एं जते नरएसु नेरइया केरिसयं सीयवेयणं पच्चणुजवमाणा विहरंति गो० से जहानामए कम्मारदारएसिया तरुणे जुगवं वलवं जाव सिप्पोवगए एकं महं अयपिंम दगवारसमाणं गहा यताविय२ कुट्टिय२ जाव. एगाहं डुयाहंवा तियाहंवा उक्कोसेणं मासं हणिज्जा सेणं तं उसिणं उसि

जाषा. ए अति घणी माठी उष्ण वेदना प्रत्येके२ अनुजवकरता बता रहे बे॥ हावे शीत वेदनीय नरकने वि षे शीत वेदनानुं स्वरूप कहे बे हे जगवन् शीत वेदनीय नरकने विषे नारकी केहेवी शीत वेदनाने प्र त्येके२ अनुजव करताबता रहे बे! हे गौतम जे पूर्वे कहेलो कोइक पुरुष कम्मारदारक लोहकार तरु ण जुवान बलवान जावत् शिल्पे सहित ते एक मोटो लोह पिंम पाणिना घमा सरखो तेने ग्रहण करि

शा. १८८५ टीका॰ कामेव अप्रियतरिकामेव अमनोज्ञतरिकामेव अमनआपतरिकामेव वेदनां प्रत्यनुभवंतः प्रत्येकं वेदयमाना विहरंति ॥ संप्रति शीतवेदनीयेषु नरकेषु शीतवेदनास्वरूपं प्रतिपादयति सीयवेयणिज्जेसुणमित्यादि शीतवेदनीयेषु भदंत निरयेषु नैरयिकाः कीदृशीं शीतवेदनां प्रत्यनुभवंतो विहरंति सयथानामकः कर्म्मादारकः स्यात् तरुण इत्यादिविशेषण कदंबकं प्राग्वत् तावत् यावत् संहन्यात् नवरमुत्कर्षतो मासामित्यत्र ब्रूयात् ततः सकर्म्मारदारक स्तमयसिंपमुण्णं सचोण्णो बाह्य

मूल॰ णभूयं आयामएणं संमासएणं गहाय असब्भावपठ्ठवणाए सीयवेयणिज्जेसु नरएसु पक्खिविज्जा सेयं उम्मिसिय निम्मिसिएणं पुणरवि पच्चुद्धरिस्सामित्तिकट्टु पविरायमेव पासिज्जा तंचेवणं जाव

भाषा. ने तपावी तपावीने कुटि कुटिने जावत् एक दिवस बे दिवस त्रण दिवस उत्कृष्टपणे एक मास पर्यंत घमे ते गोलो उष्ण थयेलो सारी पेठे उष्ण थयलो एवाने साणसावते ग्रहण करिने असद्भाव कल्पनाथी कहेबे जे ते उष्ण गोलाने शित वेदनावाला नारकीना शरिरमां घाले घालतां मनमां चिंतवे जे ते हुं लोह गोलाने आंख मीचीये उघाडीये तेटलो वेलामां वली पाछो काढीस एम करिने घाले पण ते घालतां वांत

टीका. प्रदेशमात्राणि स्यादत आह तच्छीघ्रमेवं सर्वात्मना अभिवर्णो नूनमिति जावः अयोमयेन संदंशकेन गृहीत्वा असद्भावप्रस्थापनया शीतवेदनीयेषु नरकेषु प्रक्षिपेत्
नन. न पुनरागमिष्यमित्यादि प्राग्वत् तावद्वक्तव्यं यावद्विहरति तच्चैवं सेणं तं उम्मिसिय निमिसियंतरेण पुणरवि पच्चुद्धरिस्सामि त्तिकट्टु पविरायमेव पासेज्जा
पविलीणमेव पासेज्जा पविद्धत्थमेव पासेज्जा नोचेवणं संचाएइ अविरायं अविलीणं अविद्धत्थं पुणरवि पच्चुद्धरित्तए सेजहानामए मत्ते मायंगे जाव साया सो

मूलं. णोचेवणं संचाएज्जा पुणरवि पच्चुद्धरित्तए से जहानामए मतमायंगेवा तहेव जाव सुखबहुलेया विवि
हरेज्जा एवामेव गो० असब्भावपठवणाए सीय वेयणेहिंतो णेरइए उवट्टिए समाणेज्जाइं इमाइं इहम

भाषा. लोह गोलो चूर्ण थई जतो वेराई जतो नाश पामतो देखे एम पूर्वनी पेठे कहेवुं पुरुष उद्यम न करि सके
ए लोह गोलाने साजो, काहाडवा वली न समर्थ थाय उद्धरवा उपाडी लेवा ॥ वली जेम पूर्वे कहेलो
मदोन्मत्त हाथी तेनुं दृष्टांत तिमज लेवुं घणी सुखसाताये विचरे त्यां पर्यंत ए प्रकारे निश्चे हे गौतम
असद्भाव कल्पनाये शीत वेदनीय नरकथी नारकी काहाड्यो थको जे आ मनुष्य लोकने विषे छे ते हि

ा. १एद टीका. ल्पबहुलेपावि विहरास्ति एवामेवेत्यादि अनेनैव अधिकृतदृष्टांतो ऽनेन प्रकारेण गौतम असद्भाव प्रस्थापनया शीतवेदनीयेभ्यो नरकेभ्यो ऽनंतरमुद्वृत्तः सन् यानि
इमानि मनुष्यलोके स्थानानि भवंति तद्यथा हिमानिवा हिमपुंजा वा सूत्रे नपुंसक निर्देशः प्राकृतत्वात् हिमपटलानि वा हिमकुटानि वा एतान्येव पदानि नाना

मूल. एगस्सलाए हवंति तं० हिमाणिवा हिमपुंजाणिवा हिमपम्लाणिवा हिमपम्लपुंजाणिवा तुसाराणि
वा तुसारपुंजाणिवा हिमकूम्हाणिवा हिमकूम्हपुंजाणिवा सीयाणिवा ताइं पासाइं पासित्ता ताइं उग्गा

मनो समूह तथा हिमपटलनो समूह तथा तुषार हिमकणिया तथा तुषार पुंज हिमकणियानो समूह त
था ताढा शीतरूप हिमना कुंम तथा हिमकुंमना समूह तथा शीतनो समूह तथा शीतपुंजनो समूह
भाषा. आ जगाए पर्याय शब्दनुं ग्रहण कर्युं छे ते नाना प्रकारना देशना शिष्य जन तेमना अनुग्रहने अर्थे जा
णवुं ते सर्वने देखे देखीने तेमां प्रवेश करे तारे नरकमां उत्पन्न थयेलुं शीतपणुं तेने नाश करे शमावे
एटले विसारे तार पछी शीतपणुंआदि दोष गया पछि एटले विसारया पछी स्वस्थपणाथी निंद्राने पा

टी. का. ेजगनिवेशानुप्रकारा पर्यायै व्यांचष्टे सीयाणिवा सीयपुत्राणिवा इत्यादि तानि पश्येत् दृष्ट्वा तानि अवगाहेत अवगाह्य शीतमपि नरकजनितं शीतत्वमपि प्रवि
नयेत् ततः मृगागिकानातनगृषमपि क्षुधमपि ज्वरमपि नरकवेदनीयं नरकसंपर्कसमुत्थं जाड्यमपि प्रविनयेत् ततः शीतत्वादिदोषापगमतोऽनुत्तरं स्वास्थ्यं लभमा
नो निद्रायेत वा प्रचलायेत वा स्मृतिं वा रतिं वा धृतिं वा लभेत ततो नरकगतजाड्यापगमात् उष्णं च बहिःप्रदेशमात्रतोऽपि स्यात् तत आह उष्णाभूतः अंतरापि नर

मू. हइ उग्गाहित्ता सेणं तत्थ सीयंपि पविणिज्जा तण्हंपि पविणिज्जा खुहंपि पविणिज्जा जरंपि पविणिज्जा
निद्दाएज्जवा पयलाएज्जवा जाव उसिणे उसिणब्भूए संकममाणे संश्सायं सुक्खं बहुले ताविविहरेज्जा

भा. मे प्रचलाने पामे स्मृतिने पामे रतिने पामे धृतिने पामे ए शब्दोनो अर्थ पूर्वनी पेठ जाणवो नरकमांथी
थयेलुं जे शीतपणु जड्यपणु ते जवाथी उष्णपणु पण बाहिर प्रदेश मात्र पण थाय ते हेतु माटे कहे छे
जे उष्ण थयेलो अंतरे पण उष्ण थयेलो नरकथी थयेलुं जे जड्यपणुं ते जवाथी उत्साहवालो थाय एटलो
भावार्थ छे ते नारकी ए प्रकारनो थयोछतो जेम पोताने सुख थाय तेम संक्रमण करतोछतो सुख साताये

पा. १९६

टीका.

रूपबहुलेपावि विहरइत्ति एवामेवेत्यादि अनेनैव अधिकृतदृष्टांतो स्तेन प्रकारेण गौतम असद्भाव प्रस्थापनया शीतवेदनीयेभ्यो नरकेभ्योऽनंतरमुद्वृत्तः सन् यानि इमानि मनुष्यलोके स्थानानि भवंति तद्यथा हिमानिवा हिमपुंजा वा सूत्रे नपुंसक निर्देशः प्राकृतत्वात् हिमपटलानि वा हिमकुटानि वा एतान्येव पदानि नाना

मूल.

एरूसलाए हवंति तं० हिमाणिवा हिमपुंजाणिवा हिमपडलाणिवा हिमपडलपुंजाणिवा तुसाराणि वा तुसारपुंजाणिवा हिमकूडाणिवा हिमकूडपुंजाणिवा सीयाणिवा ताइं पासाइं पासित्ता ताइं उग्गा

भाषा.

मनो समूह तथा हिमपटलनो समूह तथा तुषार हिमकणिया तथा तुषार पुंज हिमकणियानो समूह तथा ताढा शीतरूप हिमना कुंभ तथा हिमकुंभना समूह तथा शीतनो समूह तथा शीतपुंजनो समूह आ जणाए पर्याय शब्दनुं ग्रहण कर्युं छे ते नाना प्रकारना देशना शिष्य जन तेमना अनुग्रहने अर्थे जाणवुं ते सर्वने देखे देखीने तेमां प्रवेश करे तारे नरकमां उत्पन्न थयेलुं शीतपणुं तेने नाश करे शमावे एटले विसारे तार पछी शीतपणुंआदि दोष गया पछि एटले विसारया पछे स्वस्थपणाथी निंद्राने पा

टीका. देशजविनेयानुग्रहाय पर्यायैर्व्याचष्टे सीयाणिवा सीयभूयाणिवा इत्यादि तानि पश्येत् दृष्ट्वा तानि मनसापि प्रागाह्य शीतमपि नरकजनितं शीतलमपि प्रवि
नयेत् ततः सुखासिकामवाप्तस्तृषमपि क्षुधमपि ज्वरमपि नरकवेदनीयं नरकसंपर्कसमुत्थं दाहमपि प्रविनयेत् ततः शीतलादिदोषापगमतोऽनुत्तर सामर्थ्य ततमा
नो निद्रायेतवा प्रचलायेतवा स्मृतिंवा रतिंवा धृतिंवा अनेन ततो नरकगततापापगमात् उष्णं च नष्टं प्रदेशमात्रोऽपि स्यात् तत मात्र उष्णतया: प्रागपि नर

मूल. इइ उग्गाहित्ता सेए तत्थसीयंपि पविणिज्जा तण्हंपि पविणिज्जा खुहंपि पविणिज्जा जरंपि पविणिज्जा
निद्दाएज्जवा पयलाएज्जवा जाव उसिणे उसिणब्भूए संकममाणे संश्सायं सुरुखं बहुलेताविविहरेज्जा

भाषा. मे प्रचलाने पामे स्मृतिने पामे रतिने पामे धृतिने पामे ए शब्दोनो अर्थ पूर्वनी पेठे जाणवो नरकमांथी
थयेलुं जे शीतपणु जडपणु ते जवाथी उष्णपणु पण बाहिर प्रदेश मात्र पण थाय ते हेतु माटे कहे छे
जे उष्ण थयेलो अंतरे पण उष्ण थयेलो नरकथी थयेलुं जे जडपणुं ते जवाथी उत्साहवालो थाय एटलो
भावार्थ छे ते नारकी ए प्रकारनो थयोछतो जेम पोताने सुख थाय तेम संक्रमण करतोछतो सुख सातायें

. १ए७ रूगतआगमनागमात् जातोत्साहइत्यर्थः सएवं नूतः सन् संक्रमन् २ यथास्वसुखं संक्रामेत् २ सौख्यबहुलो विहरेत् एवमुक्ते गौतम आह जवेएयारूवेसिया इत्यादि प्राग्वत् ॥

॥ संप्रति नैरयिकाणां स्थितिप्रतिपादनार्थमाह इमीसेणं जंते रयणप्पजेत्यादि रत्नप्रजापृथिवी नैरयिकाणां जदंत कियंतं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता जगवानाह गौ

टीका. तम जघन्येन दशवर्षसहस्राणि उत्कर्षतः सागरोपमं एवं शर्कराप्रजापृथिवी नैरयिकाणां जघन्यत एकं सागरोपमं उत्कर्षत स्त्रीणि सागरोपमाणि वालुकाप्रजा

पृथिवी नैरयिकाणां जघन्यतस्त्रीणि सागरोपमाणि उत्कर्षतः सप्तसागरोपमाणि पंकप्रजापृथिवी नैरयिकाणां जघन्यतः सप्तसागरोपमाणि उत्कर्षतो दशसाग

रोपमाणि धूमप्रजापृथिवी नैरयिकाणां जघन्यतो दशसागरोपमाणि उत्कर्षतः सप्तदशसागरोपमाणि तमःप्रजापृथिवी नैरयिकाणां जघन्यतः सप्तदशसागरोपमाणि

सूत्र. गो० सीयवेयणिज्जेसु नरएसु नेरइयातो अणिठतरियं चेव सीयवेयणं पच्चणुन्नवमाणा विहरंति ॥

जुक्त थको विचरे हे गौतम शीत वेदनीय नरकने विषे नारकी जीव एथी पण अतिशे माठी एवी नि

भाषा. श्चे शीत वेदनाने प्रत्येक प्रत्येक अनुजव करताथका रहे बे ॥ हावे नारकीनी स्थिति प्रतिपादन करवा

ने अर्थे कहे बे हे जगवन् रतनप्रजापृथिवीना नारकीने केटला कालनी स्थिति कही बे? हे गौतम ज

उत्कर्षतो द्वाविंशतिसागरोपमाणि तमस्तमःप्रभापृथिवी नैरयिकाणां जघन्यतो द्वाविंशति सागरोपमाणि उत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि । यावत् । तदाप
ज्जत्तयाए ठिईपए इत्यतिदेशः सोप्ययमर्थतोभावनीयः प्रतिपृथिवि स्थितिपरिमाणमुक्तं यदातु प्रतिप्रस्तटं स्थिति परिमाणं चिन्त्यते तदेयमवगंतव्यम् । रत्नप्रभा
याः प्रथमे प्रस्तटे जघन्या स्थिति र्दशवर्षसहस्राणि १०००० उत्कृष्टा नवतिः ९०००० द्वितीये प्रस्तटे एवैव दशगुणिता जघन्या उत्कृष्टा चतेदितव्या तद्य
था जघन्या दशवर्षलक्षा १००००० उत्कृष्टा नवतिवर्षलक्षा ९००००० तृतीये प्रस्तटे जघन्या नवतिवर्षलक्षा उत्कृष्टा पूर्वकोटी । चतुर्थे जघन्या पूर्वकोटी ।
उत्कृष्टा सागरोपमस्यदशमोभागः । पंचमे जघन्या सागरोपमस्य एकोदशभाग. । उत्कृष्टा द्वौदशभागौ । षष्ठे जघन्या सागरोपमस्य द्वौदशभागौ । उत्कृष्टा त्र
यः । सप्तमे जघन्या त्रयः सागरोपमस्य दशभागाः । उत्कृष्टा चत्वारः । अष्टमे जघन्या चत्वार. सागरोपमस्यदशभागा. । उत्कृष्टा पंच । नवमे जघन्या पंच
टीका. सागरोपमस्यदशभागाः । उत्कृष्टा षट् । दशमे जघन्या षट् सागरोपमस्य दशभागा. । उत्कृष्टा सप्त । एकादशे जघन्या सप्त । उत्कृष्टा अष्टौ । द्वादशे जघन्या
अष्टौ । उत्कृष्टा नव । त्रयोदशे जघन्या नव सागरोपमस्य दशभागा. । उत्कृष्टा दश । परिपूर्णमेकं सागरोपममिति भाव ॥ १ ॥ शर्कराप्रभाया प्रथमे प्रस्तटे
जघन्या एकं सागरोपमं।उत्कृष्टा एकंसागरोपमंद्वौ च सागरोपमस्य एकादशभागौ।द्वितीये प्रस्तटे जघन्या एक सागरोपम द्वौ सागरोपमस्यैकादशभागौ । उत्कृ
ष्टा एकं सागरोपमं चत्वार. सागरोपमस्य एकादशभागाः। तृतीये जघन्या एक सागरोपम चत्वार. सागरोपमस्य एकादशभागा. । उत्कृष्टा एकं सागरोपम षट्
सागरोपमस्य एकादशभागाः । चतुर्थे जघन्या एकं सागरोपमं षट् सागरोपमस्य एकादशभागा. । उत्कृष्टा एकं सागरोपमं अष्टौ सागरोपमस्य एकादशभा
गाः । पंचमे जघन्या एकं सागरोपमं अष्टौ सागरोपमस्य एकादशभागा. । उत्कृष्टा एकं सागरोपमं दश सागरोपमस्य एकादशभागाः ॥ षष्ठे जघन्या एक सा

। ३९८ गरोपम दशसागरोपमस्यैकादशभागाः । उत्कृष्टा द्वे सागरोपमे एकः सागरोपमस्य एकादशभागः । सप्तमे जघन्या द्वे सागरोपमे एकः सागरोपमस्य एकादश भागः । उत्कृष्टा द्वे सागरोपमे त्रयः सागरोपमस्य एकादशभागाः । अष्टमे जघन्या द्वे सागरोपमे त्रयः सागरोपमस्य एकादशभागाः । उत्कृष्टा द्वे सागरोपमे पंचसागरोपमस्य एकादशभागाः । नवमे जघन्या द्वे सागरोपमे पंच सागरोपमस्य एकादशभागाः । उत्कृष्टा द्वे सागरोपमे सप्त सागरोपमस्य एकादशभागाः । दशमे जघन्या द्वे सागरोपमे सप्त सागरोपमस्य एकादशभागाः । उत्कृष्टा द्वे सागरोपमे नव सागरोपमस्य एकादशभागाः । एकादशे जघन्या द्वे सागरोपमे नव सागरोपमस्य एकादशभागाः । उत्कृष्टा परिपूर्णानि त्रीणि सागरोपमाणि ॥ २ ॥ वालुकाप्रभायां

टीका प्रथमे प्रस्तटे जघन्या स्थिति स्त्रीणि सागरोपमाणि । उत्कृष्टा त्रीणि सागरोपमाणि चत्वारः सागरोपमस्य नवभागाः । द्वितीये जघन्या त्रीणि सागरोपमाणि चत्वारः सागरोपमस्य नवभागाः । उत्कृष्टा त्रीणि सागरोपमाणि अष्टौ सागरोपमस्य नवभागाः । तृतीये जघन्या त्रीणि सागरोपमाणि अष्टौ सागरोपमस्य नवभागाः उत्कृष्टा चत्वारि सागरोपमाणि त्रयः सागरोपमस्य नवभागाः । चतुर्थे जघन्या चत्वारि सागरोपमाणि त्रयः सागरोपमस्य नवभागाः । उत्कृष्टा चत्वारि सागरोपमाणि सप्तसागरोपमस्य नवभागाः । पंचमे जघन्या चत्वारि सागरोपमाणि सप्तसागरोपमस्य नवभागाः । उत्कृष्टा पंचसागरोपमाणि द्वौ सागरोपमस्य नवभागौ । षष्ठे जघन्या पंचसागरोपमाणि द्वौ सागरोपमस्य नवभागौ । उत्कृष्टा पंचसागरोपमाणि षट् सागरोपमस्य नवभागाः । सप्तमे जघन्या पंचसागरोपमाणि षट् सागरोपमस्य नवभागाः । उत्कृष्टा षट् सागरोपमाणि एकः सागरोपमस्य नवभागः । अष्टमे जघन्या षट् सागरोपमाणि एकः सागरोपमस्य नवभागः । उत्कृष्टा षट् सागरोपमाणि एकः पंचसागरोपमस्य नवभागः । नवमे जघन्या षट् सागरोपमाणि पंचसागरोपमस्य नव

भागाः । उत्कृष्टा परिपूर्णानि सप्तसागरोपमाणि एवोत्रनातर्यांशैः सागरोपमस्य नवभागाः । वर्धितव्या स्वतो यथोक्तं परिमाणं भवति ॥ ३ ॥ पंकप्रभायां
प्रथमे प्रस्तटे जघन्या स्थितिः सप्तसागरोपमाणि । उत्कृष्टा सप्त सागरोपमाणि त्रयः सागरोपमस्य सप्तभागा । द्वितीये जघन्या सप्तसागरोपमाणि
त्रयः सागरोपमस्य सप्तभागाः । उत्कृष्टा सप्तसागरोपमाणि षट् सागरोपमस्य सप्तभागाः । तृतीये जघन्या सप्तसागरोपमाणि षट् सागरो
पमस्य सप्तभागाः । उत्कृष्टा अष्टौ सागरोपमाणि द्वौ सागरोपमस्य सप्तभागौ । चतुर्थे जघन्या अष्टौ सागरोपमाणि द्वौ सागरोपमस्य सप्तभागौ । उत्कृष्टा अष्टौ
सागरोपमाणि पंचसागरोपमस्य सप्तभागा. । पंचमे जघन्या अष्टौ सागरोपमाणि पंचसागरोपमस्य सप्तभागाः । उत्कृष्टा नवसागरोपमाणि एक. सागरोपमस्य
।का. सप्तभागः । षष्ठे जघन्या नव सागरोपमाणि एक सागरोपमस्य. सप्तभाग. । उत्कृष्टा नव सागरोपमाणि चत्वारः सागरोपमस्य सप्तभागाः । सप्तमे
जघन्या नवसागरोपमाणि चत्वार सागरोपमस्य सप्तभागाः । उत्कृष्टा परिपूर्णानि दश सागरोपमाणि । एवमत्र भवता सागरोपमसप्तकस्योपरि त्रयस्त्रय.
सागरोपमस्य सप्तभागाः प्रतिप्रस्तटं क्रमेण वर्धयितव्यास्ततो भवति यथोक्तं परिमाणमिति ॥ ४ ॥ धूमप्रभायां प्रथमे प्रस्तटे जघन्या दशसागरोपमा
णि । उत्कृष्टा एकादश सागरोपमाणि द्वौ च सागरोपमस्य पंचभागौ । द्वितीये जघन्या एकादश सागरोपमाणि द्वौ च सागरोपमस्य पंचभागौ । उत्कृष्टा द्वादश
सागरोपमाणि चत्वारः सागरोपमस्य पंचभागा । तृतीये जघन्या द्वादशसागरोपमाणि चत्वारः सागरोपमस्य पंचभागाः । उत्कृष्टा चतुर्दश सागरोपमाणि एक
सागरोपमस्य पंचभागः । चतुर्थे जघन्या चतुर्दशसागरोपमाणि एक. सागरोपमस्य पंचभागः । उत्कृष्टा पंचदशसागरोपमाणि त्रय सागरोपमस्य पंचभागा. ।
पंचमे जघन्या पंचदशसागरोपमाणि त्रयः सागरोपमस्य पंचभागा. । उत्कृष्टा परिपूर्णानि सप्तदशसागरोपमाणि एवमत्र भागार्ध. सागरोपमदशकस्योपरि

पा. ३०० नी ने उत्कृष्टपणे नेवुलाख वर्षनी २ त्रीजे प्रस्तटे जघन्यपणे स्थिति नेवुलाख वर्षनी ने उत्कृष्टपणे पूर्व
कोटीनी ३ चोथे प्रस्तटे जघन्यपणे स्थिति पूर्वकोटीनी ने उत्कृष्टपणे सागरोपमना दशमा नाग प्रमा
णे ४ पांचमा प्रस्तटमां जघन्यपणे स्थिति सागरोपमना एक दशमा नाग प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे साग
रोपमना बे दसमानागप्रमाणे ५ बठा प्रस्तटमां जघन्यपणे स्थिति सागरोपमना बे दशमा नाग प्रमा
नाषा. णे ने उत्कृष्टपणे सागरोपमना त्रण दशमा नाग प्रमाणे ६ सातमा प्रस्तटमां जघन्यपणे स्थिति सा
गरोपमना त्रण दशमा नाग प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे सागरोपमना च्यार दशमा नाग प्रमाणे ७ आठमा
प्रस्तटमां जघन्यपणे स्थिति सागरोपमना च्यार दशमा नाग प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे सागरोपमना पांच
दशमा नाग प्रमाणे ८ नवमा प्रस्तटमां जघन्यपणे स्थिति सागरोपमना पांच दशमा नाग प्रमाणे ने
उत्कृष्टपणे सागरोपमना ६ दशमा नाग प्रमाणे ९ दशमा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति सागरोपम

ना ढ दशमा न्नाग प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे सागरोपमना सात दशमा न्नाग प्रमाणे १० अगीयारमा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति सागरोपमना सात दशमा न्नाग प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे सागरोपमना आठ दशमा न्नाग प्रमाणे ११ बारमा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति सागरोपमना आठ दशमा न्नाग प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे सागरोपमना नव दशमा न्नाग प्रमाणे १२ तेरमा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति सागरोपमना नव दशमा न्नाग प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे दश न्नाग पुरा एटले संपूर्ण एक सागरोपम प्रमाणे नारकीनी स्थिति जाणवी १३ ॥ १ ॥ हावे शर्कराप्रन्नापृथिवीना पेहेला प्रस्तटने विषे जघन्यपणे नारकीनी स्थिति एक सागरोपमनी ने उत्कृष्टपणे एकसागरोपम ने बे सागरोपमना अगीयारमा न्नाग प्रमाणे १ बीजा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति एक सागरोपम ने बे सागरोपमना अगीयारमा न्नाग प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे एक सागरोपम ने च्यार सागरोपमना अगीयारमा न्नाग प्रमा

१षा.

।. ३०० नी ने उत्कृष्टपणे नेवुलाख वर्षनी ७ त्रीजे प्रस्तटे जघन्यपणे स्थिति नेवुलाख वर्षनी ने उत्कृष्टपणे पूर्व कोटीनी ३ चोथे प्रस्तटे जघन्यपणे स्थिति पूर्वकोटीनी ने उत्कृष्टपणे सागरोपमना दशमा नाग प्रमाणे ४ पांचमा प्रस्तटमां जघन्यपणे स्थिति सागरोपमना एक दशमा नाग प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे साग रोपमना बे दसमानागप्रमाणे ५ छठा प्रस्तटमां जघन्यपणे स्थिति सागरोपमना बे दशमा नाग प्रमा

नाषा. णे ने उत्कृष्टपणे सागरोपमना त्रण दशमा नाग प्रमाणे ६ सातमा प्रस्तटमां जघन्यपणे स्थिति सागरोपमना त्रण दशमा नाग प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे सागरोपमना च्यार दशमा नाग प्रमाणे ७ आठमा प्रस्तटमां जघन्यपणे स्थिति सागरोपमना च्यार दशमा नाग प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे सागरोपमना पांच दशमा नाग प्रमाणे ८ नवमा प्रस्तटमां जघन्यपणे स्थिति सागरोपमना पांच दशमा नाग प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे सागरोपमना ७ दशमा नाग प्रमाणे ए दशमा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति सागरोपम

ना ७ दशमा भाग प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे सागरोपमना सात दशमा भाग प्रमाणे १० अगीयारमा प्रस्त टने विषे जघन्यपणे स्थिति सागरोपमना सात दशमा भाग प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे सागरोपमना आ ठ दशमा भाग प्रमाणे ११ बारमा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति सागरोपमना आठ दशमा भाग प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे सागरोपमना नव दशमा भाग प्रमाणे १२ तेरमा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थि
१या. ति सागरोपमना नव दशमा भाग प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे दश भाग पुरा एटले संपूर्ण एक सागरोपम प्रमाणे नारकीनी स्थिति जाणवी १३ ॥ १ ॥ हावे शर्कराप्रभापृथिवीना पेहेला प्रस्तटने विषे जघन्य पणे नारकीनी स्थिति एक सागरोपमनी ने उत्कृष्टपणे एकसागरोपम ने बे सागरोपमना अगीयार मा भाग प्रमाणे १ बीजा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति एक सागरोपम ने बे सागरोपमना अ गीयारमा भाग प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे एक सागरोपम ने च्यार सागरोपमना अगीयारमा भाग प्रमा

३०१ णे २ त्रीजा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति एक सागरोपम नें च्यार सागरोपमना अगीयारमा ज्ञा
ग प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे एक सागरोपम ने ६ सागरोपमना अगीयारमा ज्ञाग प्रमाणे ३ चोथा प्रस्त
टने विपे जघन्यपणे स्थिति एक सागरोपम ने ६ सागरोपमना अगीयारमा ज्ञाग प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे
एक सागरोपम ने आठ सागरोपमना अगीयारमा ज्ञाग प्रमाणे ४ पांचमा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे
स्थिति एक सागरोपम ने आठ सागरोपमना अगीयारमा ज्ञाग प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे एक सागरोपम
पा० ने दश सागरोपमना अगीयारमा ज्ञाग प्रमाणे ५ छठा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति एक सागरोप
म ने दश सागरोपमना अगीयारमा ज्ञाग प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे बे सागरोपम ने एक सागरोपमनो
अगीयारमो ज्ञाग ते प्रमाणे ६ सातमा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति बे सागरोपम ने एक साग
रोपमनो अगीयारमो ज्ञाग ते प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे बे सागरोपमने त्रण सागरोपमनो अगीयारमो

सागरोपमना नव भाग ते प्रमाणे १ बीजा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे त्रण सागरोपम ने च्यार सागरोपमना नव भाग ते प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे त्रण सागरोपम ने आठ सागरोपमना नव भाग ते प्रमाणे २ त्रीजा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति त्रणसागरोपम ने आठ सागरोपमना नव भाग ते प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे च्याररागरोपम ने त्रण सागरोपमना नव भाग ते प्रमाणे ३ चोथा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति च्यार सागरोपम ने त्रण सागरोपमना नव भाग ते प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे च्यार सागरोपम ने सात सागरोपमना नव भाग ते प्रमाणे ४ पांचमा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति च्यार सागरोपम ने सात सागरोपमना नव भाग ते प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे पांच सागरोपम ने बे सागरोपमना नव भाग ते प्रमाणे ५ छठा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति पांच सागरोपम ने बे सागरोपमना नव भाग ते प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे पांच सागरोपम ने छ सागरोपमना नव भाग ते प्रमाणे ६ सातमा प्रस्तटने विषे जघन्य

३०२ सागरोपमना नव भाग ते प्रमाणे १ बीजा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे त्रण सागरोपम ने च्यार सागरोपम
ना नवभाग ते प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे त्रण सागरोपम ने आठ सागरोपमना नव भाग ते प्रमाणे २ त्रीजा
प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति त्रणसागरोपम ने आठ सागरोपमना नव भाग ते प्रमाणे ने उत्कृ
ष्टपणे च्यारसागरोपम ने त्रण सागरोपमना नव भाग ते प्रमाणे ३ चोथा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे
पा- स्थिति च्यार सागरोपम ने त्रण सागरोपमना नव भाग ते प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे च्यार सागरोपम ने
सात सागरोपमना नव भाग ते प्रमाणे ४ पांचमा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति च्यार सागरोपम ने
सात सागरोपमना नव भाग ते प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे पांच सागरोपम ने बे सागरोपमना नव भाग ते
प्रमाणे ५ छठा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति पांच सागरोपम ने बे सागरोपमना नव भाग ते प्रमाणे
ने उत्कृष्टपणे पांच सागरोपम ने छ सागरोपमना नव भाग ते प्रमाणे ६ सातमा प्रस्तटने विषे जघन्य

पणे स्थिति पांच सागरोपम ने त्रण सागरोपमना नव भाग ते प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे छ सागरोपम ने एक सागरोपमनो नवमो भाग ते प्रमाणे ७ आठमा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति छ सागरोपम ने एक सागरोपमनो नवमो भाग ते प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे छ सागरोपम ने पांच सागरोपमना नव भागे ते प्रमाणे ८ नवमा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति छ सागरोपम ने पांच सागरोपमना नव भाग ते
आ. प्रमाणे ने उत्कृष्टपणे परिपूर्ण सात सागरोपमनी नारकीनी स्थिति जाणवी ए ॥ ३ ॥ हवे पंकप्रभापृथिवीना पेहेला प्रस्तटने विषे जघन्यपणे नारकीनी स्थिति सात सागरोपमनी ने उत्कृष्टपणे सात सागरोपम ने त्रण सागरोपमना सात भाग १ बीजा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति सात सागरोपम ने त्रण सागरोपमना सात भाग ने उत्कृष्टपणे सात सागरोपम ने छ सागरोपमना सात भाग २ त्रीजा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति सात सागरोपम ने छ सागरोपमना सात भाग ने उत्कृष्टपणे आठ सा

गरोपम ने बे सागरोपमना सात भाग ३ चोथा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति आठ सागरोपम ने बे सागरोपमना सात भाग ने उत्कृष्टपणे आठ सागरोपम ने पांच सागरोपमना सात भाग ४ पांचमा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति आठ सागरोपम ने पांच सागरोपमना सात भाग ने उत्कृष्टपणे नव सागरोपम ने एक सागरोपमना सात भाग ५ छठा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति नव सागरोपम ने एक सागरोपमना सात भाग ने उत्कृष्टपणे नव सागरोपम ने च्यार सागरोपमना सात भाग ६ सातमा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति नव सागरोपम ने च्यार सागरोपमना सात भाग ने उत्कृष्टपणे परिपूर्ण दश सागरोपमनी नारकीनी स्थिति जाणवी ॥ ७ ॥ ४ ॥ हवे धूमप्रभापृथिवीना पेहेला प्रस्तटने विषे जघन्यपणे नारकीनी स्थिति दश सागरोपमनी ने उत्कृष्टपणे अगीयार सागरोपम ने बे सागरोपमना पांच भाग १ बीजा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे अगीयार सागरोपम ने बे सागरोपमना पांच भाग ने

उत्कृष्टपणे बार सागरोपम ने च्यार सागरोपमना पांच भाग २ त्रीजा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति
बार सागरोपम ने च्यार सागरोपमना पांच भाग ने उत्कृष्टपणे चउद सागरोपम ने एक सागरोपमनो
पांचमो भाग ३ चोथा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति चउद सागरोपम ने एक सागरोपमनो पांच
मो भाग ने उत्कृष्टपणे पंदर सागरोपम ने त्रण सागरोपमना पांच भाग ४ पांचमा प्रस्त
टने विषे जघन्यपणे स्थिति पंदर सागरोपम ने त्रण सागरोपमना पांच भाग ने उत्कृ
पा. ष्टपणे परिपूर्ण सत्तर सागरोपमनी नारकीनी स्थिति जाणवी ॥ ५ ॥ ५ ॥ हवे तमःप्रभापृथिवीना
पेहेला प्रस्तटने विषे जघन्यपणे नारकीनी स्थिति सत्तर सागरोपमनी ने उत्कृष्टपणे अढार
सागरोपम ने बे सागरोपमनो त्रिजो भाग १ बीजा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति अढार सागरो
पम ने बे सागरोपमनो त्रिजो भाग ने उत्कृष्टपणे वीश सागरोपम ने एक सागरोपमनो त्रिजो भाग

नरनि ॥ ६ ॥ सप्तम्यां तु पृथिव्यामेकएवप्रस्तट इति तत्र पूर्वोक्तमेव परिमाणं द्रष्टव्यम् ॥ ७ ॥ संप्रति नैरयिकाणामुद्वर्त्तनामाह रयणप्पभेत्यादि रत्नप्रभापृ
थिवीनैरयिका भदंत अनंतरमुद्धृत्य क्व गच्छंति एतदेव व्याचष्टे क्व उत्पद्यंते इत्यादि यथा प्रज्ञापनायां व्युत्क्रांतिपदे तथा वक्तव्यं यावत्तमस्तमायां तच्चातिप्रभूत

इमीसेणं भंते रयणप्पहाए नेरइया अणंतरं उव्वट्टिय कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति किं नेरईएसु

---

१ त्रिजा प्रस्तटने विषे जघन्यपणे स्थिति वीश सागरोपम ने एक सागरोपमनो त्रिजो भाग ने उत्कृ
ष्टपणे बावी सागरोपमनी नारकीनी स्थिति जाणवी ।३ ॥ ६ ॥ हावे सातमी पृथिवीने विषे तो एक प्र
स्तट छे माटे त्यांतो पूर्वे कहेलुं जे परिमाण ते एटले जघन्यपणे बावी सागरोपम ने उत्कृष्टपणे तेत्री
श सागरोपमनी नारकीनी स्थिति जाणवी ॥ ७ ॥ हावे नारकीनी उदवर्त्तना कहे छे हे भगवन् रतनप्र
भापृथिवीना नारकी आंतरा रहित त्यांथी उद्वर्तिने एटले चवीने नीकलीने क्यां जायछे क्यां उत्पन्न था
थाय छे एटले केई गतिमां जाय छे शुं नारकीने विषे उपजे शुं तिर्यंच योनिमां उपजे एम उद्वर्तना कहे

टी. पर्यंत एष न संक्षेपार्थः रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाः यावत्तम प्रभापृथिवीनैरयिकाः अनंतरमुद्धृत्य नैरयिकदेवैकेंद्रियविकलेंद्रियसंमूर्छिमपंचेंद्रिया संख्येय वर्षायुष्कवर्जेषु शेषेषु तिर्यग्मनुष्येषूत्पद्यन्ते सप्तमपृथिवी नैरयिकास्तु गर्भजतिर्यक्पंचेंद्रियेष्वेव न शेषेषु ॥ संप्रति नरकेषु पृथिव्यादि स्पर्शस्वरूपमाह रयणप्प भाएणं इत्यादि रत्नप्रभापृथिवी नैरयिका भदंत कीदृशं पृथिवीस्पर्शं प्रत्यनुभवंतोविहरंति भगवानाह गौतम अनिष्टं अकांतं अप्रियं अमनोज्ञं अमनआमं अस्यार्थः प्राग्व

मू. उववज्जंति किं तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति एवं उवट्टणा भाणियव्वा जहावक्कंतिय तहा इहंपि (तथा इहवि) जाव अहेसत्तमाए इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केरिसयं पुढवीफासं

भाषा. ही ते जिम पन्नवणा सूत्रना व्युत्क्रांतिपदने विषे कही छे तिम इहां पण कहेवी ते जावत् हेठली सा तमी पृथिवी पर्यंत केहेवी त्यां अतिशे विस्तारथी कही छे माटे त्यांथी जाणवी पण आ प्रकारे तेनो संक्षेपार्थ छे जे रतनप्रभापृथिवीना नारकीथी आरंभीने जावत् तमःप्रभापृथिवीना नारकी आंतरा रहि त त्यांथी उद्धरिने नारकीमां तथा एकेंद्रियमां तथा विगलेंद्रियमां तथा सम्मूर्छिम पंचेंद्रियमां तथा असंख्य।

टीका. त् एवं प्रतिपृथिवि तावद्वक्तव्यं यावत्तमस्तमायां एवमप्तेजोवायुवनस्पतिस्पर्शसूत्राण्यपि जावनीयानि नवरं तेजः स्पर्शउष्णरूपता परितापनरककुड्यादिस्पर्शः परोदीरितो वैक्रियरूपोवा वेदितव्य ननु साक्षाद्बादराग्नि कायस्पर्शस्तत्रासंजवात् इमीसेणमित्यादि अस्यां जदंत रत्नप्रजायां पृथिव्यां त्रिंशति नरकावासशतसह स्रेषु एकैकस्मिन् नरकावासे सर्वेप्राणा द्वींद्रियादयः सर्वे जूता वनस्पतिकायिका: सर्वे सत्वाः पृथिव्यादयः सर्वे जीवाः पंचेंद्रियादयःउक्तंच प्राणाद्वित्रिचतुः प्रो

पच्चणुब्भवमाणा विहरंति गो० अणिठं जाव अमणामं एवं जाव अहेसत्तमाए। इमीसेणं ज्नंते रयणप्पजाए पुढवीए नेरइया केरिसयं आउफासं पच्चणुब्भवमाणाविहरंति गो० अनिठं जाव अमणामं एवं जाव अहेसत्तमाए। एवं जाव वणस्सई (णफ्फई) फासं अहेसत्तमाए पुढवीए।

त वर्षना आउखावतमां न जाय एटलांने वर्जिने तिर्यंच तथा मनुष्य तेने विषे उत्पन्न थाय ने सातमी

भाषा. पृथिवीना नारकी तो गर्जज तियक्पंचेंद्रियने विशेज उपजे पण बीजे न उपजे ॥ हावे नरकने विषे पृ थिवीआदिकना फरसनुं स्वरुप केहेछे हे जगवन् रतनप्रजापृथिवीना नारकी केहेवी पृथिवीनो स्पर्श प्र

टीका. का भूताश्च तरवः प्राणाः जीवाः पंचेंद्रिया ज्ञेयाः शेषाः सत्वा उदीरिताः पृथिवीकायिकतया अप्कायिकतया वायुकायिकतया वनस्पतिकायिकतया नैरयिकतयः उववन्नपुव्वा। नवरंनाणत्तं हंतेत्यादि हंतेति प्रत्ययधारणे गौतम असकृत् अनेकवारमथवा अनंतकृत्वोऽनंतान् वारान् संसारस्यानादित्वात् एवं प्रतिपृथिवि तावदुक्त एवं यावदधःसप्तमी नवरं यत्र यावंतो नरका स्तत्र तावंत उपयुज्य वक्तव्याः क्वचिदिदमपि सूत्रं दृश्यते । इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए नरय परिसामंते

मूल. इमीसेणं भंते रयणप्पभा (प्पहा) पुढवीए दोच्चं पुढविं पणिहाए सव्वमहंतिया बाहल्लेणं सव्वखु
ड्डिया (खुडुया) सव्वंतेसु हंता गो० इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवी दोच्चं पुढवी पणिहाए जाव

भा. त्येक२ अनुभव करतायता रहे छे? हे गौतम अनिष्ट एटले माठो त्यांथी आरंभिने जावत् अमणाम एटले घणोज मनने न गमतो त्यां पर्यंतनो पाठ पूर्वनी पेठे केहेवो एम जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवुं ॥ हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीना नारकी केहेवो अपकायनो स्पर्श प्रत्येक२ अनुभव करतायता रहे छे? हे गौतम पुर्वनी पेठे एम जावत् वनस्पतिकायनो स्पर्श त्यां पर्यंत प्रश्न तथा तेना उ

पृथ्वं ते वायगुरतिकाइया जाव वणस्सइकाइका तेणं भंते जीवा महाकम्मतरा चेव महाकिरियतरा चेव महावेयणातरा चेव हंता गोयमा जाव महावेयणातरा ते णं जाव महेसत्तमा अस्यां भदंत रत्नप्रभायां पृथिव्यां नरकपरिसमंतेषु नरकावासपर्यंतवर्त्तिषु प्रदेशेषु बादरपृथिवीकायिका जाववणप्फइकाइका इयात्ति बादर.काायिका बादरवायुकायिका यादरवनस्पतिकायिकास्ते भदंत जीवा महाकर्म्मतराएव महाप्रभूतमसातवेदनीयं कर्म्म येषांते महाकम्माणि. अतिशयेन महा

सव्वखुड्डिया सव्वंतेसु हता गो० दोच्चाणं भं पुढवी तच्च (नाच्चि) पुढवी पणिहाय सव्वमहतिया वाहल्लेण पुग्गहंता गो० दोच्चाणं पुढवी जाव खुड्डिया सव्वंतेसु एवं एएणं अभिलावेणं जाव छट्ठि

तर पूर्वनी पेठ जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंतना जाणवा ॥ हे भगवन् रतनप्रभापृथिवी ते बीजी पृथिवी आश्रिने सर्वथी मोटी छे जाडपणे सर्वथी नांहानी छे जाडपणे इत्यादि प्रश्न उत्तर पूर्वनी पेठे जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जाणवा ॥ ए पाठ मूलनी घणी परत्योमां छे माटे तेनी भाषा दिशमात्र दखाडी पण ते आलावो टीकाकारे लीधो नथी ॥ हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीने विषे नरकावासाने

टीका.

कर्म्मणो महाकर्म्मतरा नैतस्यभावो महाकर्म्मतरा एव कुतइत्याह महाक्रियतराएव महतीक्रिया प्राणातिपातादिका आसीत् प्राग्जन्मनि तद्भवेतु तदुध्य वसायात्क्रिया येषां ते महाक्रियाः अतिशयेनमहाक्रियतरा. निमित्तकारणहेतुषु सर्वासां विभक्तीनां प्रायोदर्शनमितिन्यायात् हेतावत्रप्रथमा ततोयमर्थः यतो महाकर्म्मतरास्त महाक्रियतरास्तदपिकुत इत्याह महाश्रवतराएव महांत आश्रवा. पापोपादानहेतव आरंभादयो येषामासीरन् ते महाश्रवा अतिशयेन महाश्रवा म

मूल.

यापुढवी अहेसत्तमि पुढविं पणिहाय जाव सव्वखुड्डिया सव्वं तेसु । इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए निरयपरिसामंतेसु जे पुढविकाइया जाव वणस्सई काइया तेणं भंते जीवा महाकम्मतरा

भाषा

अंत रह्या जे प्रदेश तेहने विषे जे बादर पृथिवी काईयाथी जावत् वनस्पतिकाईया जीव ते महा मोटी असाता वेदनीय कर्मवाला छे। निश्चे तथा महा मोटी क्रियावाला छे एटले मोटी प्राणातिपातादिक क्रिया पूर्व जन्मने विषे ने तद्भवने विषे तो तेहवो अध्यवसाये करीने अति महा क्रियावंत कह्या तथा निश्चे महा मोटा आश्रववाला छे एटले पाप ग्रहण करवाना हेतु जे आरंभादिक ते जेमने छे तथा निश्चे म

टीका. काश्रवतरा। चेवेति पूर्ववत् तदेवं यतो महाकर्मतरा एव ततो महावेदनतरा एव नरकेषु क्षेत्रस्वजावजाया अपि वेदनाया अतिडःसहत्वात् जगवानाह हंता गौत म णेणं जीरा महाकम्मतरा चेवेत्यादिप्राग्वत् एवं प्रतिप्राथिवि तावद्वक्तव्यं यावदधः सप्तमी संप्रत्युद्देशकार्थसंग्रहाणिगाथाः प्राह पुढवीउगाहित्तानरगासंठाण मेवाहल्लं विक्खंजपरिरक्खेवोवण्णोगंधोयफासोय। तेसिंमहालयाए उवमादे वेयाहोइकायव्वा जीवायपोग्गला वक्कमंति तहसासया निरया उववाय परीमाणं अवह

सूत्र. चेव महाआसवतरा चेव महावेयणतरा चेव हंता गो० इमीसेणं रयणप्पन्नाए पुढवीए निरयप रिसामंतेसु तहेव जाव महावेयणतरकाचेवएवं जाव अहेसत्ताए। इमीसेणं नंते रयणप्पन्नाए पुढ

भाषा. हा मोटी वेदनावालाबे एटले नरकने विषे क्षेत्र स्वन्नावथी थयेली पण वेदना अति डःसहबे माटे तेनो उ तर नगवानें कहे बे। हंता गोयमा। एटले हे गौतम एमज बे जेम तमे अवधारण कर्युं तेमज बे। ए प्र कारे सातमी पृथिवी पर्यंत प्रश्न उत्तर जाणवा हे नगवन् रतनप्रन्नापृथिवीने विषे त्रीशलाख नरकावा सामां एक एक नरकावासाने विषे सर्वे प्राणी एटले बेंडियादिक तथा सर्वेन्नूत एटले वनस्पति प्रमुख त

टीका. दयनगेर संरपणं संठाणरगगगंधाफासा उमासमाहारे । लेस्सादिठीनाणे जोगुवउगे तहा समुग्घाया तत्तोखुहा पिवासा विउव्वणा वेयणायजए उववाउे पृथिवीणं उरमं गेयणाए उविहाए । ठिई उवट्टणापुढवी उववाउ सव्वजीवाणं चेत्यादिपंचमूलतोवगंतव्याः आसां भक्तरमात्रगमनिका । प्रथमं पुढवीउ इति पृथिव्यानिधेया भवशया फरणं भंते पुढवीउपण्णत्ताउ इत्यादि तदनंतरं उगाहित्ता नरगा इति यस्यां पृथिव्यां यदवगाह्य यादृशाश्चनरका स्तदानिधेयं इमीसेणं

मूल. बीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एक्क मेक्कं सि निरयावासंसि सव्वेपाणा सव्वेन्नूया सव्वे जीवा सव्वेसत्ता पुढवीकाइयत्ताए (इतत्ताए) जाववणस्सइ काइयत्ताए नेरइयत्ताए उववन्नपुव्वा हंता गो. असइं अडुया अणंत खुत्तो एवं जाव अहेसत्तमाए पुढवीए नवरं (णवरं) जत्थ जत्तिया णरका ॥

भाषा. था सर्वे सत्व एटले पृथिवीआदिक तथा सर्वे जीव एटले पंचेंद्रिय प्रमुख ते सर्वे पृथिवीकायिकपणे तथा अप्कायिकपणे तथा वायुकायिकपणे तथा वनस्पतिकायिकपणे तथा नारकीपणे पूर्वे उत्पन्न थया छे ए प्रश्न हे गौतम अनेकवार अथवा अनंत वार संसारनुं अनादिपणु छे माटे एमज एटले उत्पन्न थया

ते रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर जोयण सयसहस्स बाहल्लाए उवरिं केवइयं उगाहित्ता इत्यादि । ततो नरकाणां संस्थानं । ततो बाहल्यं तदनंतरं विष्कं भादिरो । ततो वर्णो ततो गंध स्ततोनंतरस्पर्श. । ततस्तेषां नरकाणां महत्तायामुपमादेवेनदर्शनी कर्त्तव्या ततो जीवाः पुद्गलाश्च तेषु नरकेषु व्युत्क्रामंतीति

पुढवी उगाहित्ता नरगा संठाणमेव बाहल्लं विक्खंभ परिक्खेवो वन्नो गंधोय फासोय १ तेसिं महाल याए (उपमा) उवमा देवेण होइ कायव्वा जीवाय पोग्गलावक्कमंति तहसासयानिरया २ । उववाय

छे एम प्रत्येक पृथिवीये कहवु जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत एटलो विशेष जे जिहां जेटला न रक वासा त्यां तेटला कहेवा ॥ हावे आ उद्देशाना अर्थने संग्रह करनारी संग्रहणिनी पांच गाथायो मू लनां तथा टीकामां छे तेनो अक्षरार्थ मात्रज कहे छे प्रथम । पृथिवीयो केटली । तारपछी जे पृथिवीने वि षे जे अवगाहि ने जेवा नरक छे ते कह्या तारपछी नरकनां संस्थान तथा जाडपणु तथा पोहोलास त था परिधि तारपछी वर्ण तथा गंध तारपछी स्पर्श तारपछी ते नरकनी महत्ताने विषे उपमा देवे क

टीका. [illegible] वक्तव्य मन्यथा इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए कतो उववज्जंति इत्यादि तत एकसमयेनोत्पद्यमानानां परिमाणं [illegible] संस्थानं ततो वर्णो स्तदनंतरं गंध स्ततः स्पर्शः तत उच्छ्वासवक्तव्यता तदनंतरमाहारस्ततोलेश्या ततो दृष्टिः त [illegible] स्तदनंतरं समुद्घाता स्तत. क्षुत्पिपासा ततो विकुर्वणा स्तद्यथा रयणप्पभापुढवि नेरइयाणं भंते किं एगत्तं पभूविउव्वित्तए

मूल. परीमाण अवहारुच्चत्तमेव संघयणं । संठाण वन्नगंधे फासे (वण्णगंधाफासा) उसासमा
हारे ३ लेस्सादिठी णाणेजोगुवउगे तहा समुग्घाए । तत्तोय खुप्पिवासा (खुहापिवासा)

भाषा. रिने करवा योग्य होय तारपछी जीव तथा पुद्गल ते नरकने विषे व्युत्क्रमे छे उपजे छे तारपछी शाश्व
ता नरकावासा छे ते कह्युं तारपछी उपपात क्यांहाथी आवी उपजे छे ते तारपछी एक समये उत्पन्न थ
वानुं परिमाण तथा त्यांथी अपहार नीकळवुं ते कह्युं तारपछी ते नरकावासानुं उंचपणु तथा नारकी
नुं संघयण अने संस्थान तथा वर्ण तथा गंध तथा फरस तथा सासोस्वास तथा आहार तथा लेस्या

३०॥ पढ्वं पढ़ाविकानाव इत्यादि ततो वेदना ततो भयं तदनंतरं पुरुषाणां पंचानामधः सप्तम्यामुपपातः ततः ऊपम्यं वेदनाया द्विविधायाः शीतवेदनायाः उष्णवेद

ग. नाया भेदाः ततः स्थितिर्वक्तव्या तदनंतरमुद्वर्त्तना ततः स्पर्शः पृथिव्यादिस्पर्शो वक्तव्यः ततः सर्वजीवानामुपपातः तद्यथा इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगंसि निरयावासंसि सव्वे पाणा सव्वे भूया इत्यादि तृतीय प्रतिपत्तौ समाप्तौ द्वितीयो नरकोद्देशकः ॥ संप्रति तृतीय आरभ्यते

त्र. विउवणा वेयणाय भए ४ । उववाउ पुरिसाणं उवम्मं वेयणाय दुविहाय । ठिई उवट्टणा

पुढवी उववाउ सव्वजीवाणं ५ । एयाउ संगहणि गाहाउ ॥ बीउद्देसो समत्तो ॥ २ ॥

तथा दृष्टि तारपणी ज्ञान तारपणी योग तारपणी उपयोग तारपणी समुद्घात तारपणी क्षुधा तृषा

ा. तारपणी विकुर्वणा नारकी एक रुप विकुर्वे बहुरुप विकुर्वे इत्यादि तारपणी वेदना तारपणी भय तार पणी पांच पुरुष हेठली सातमीये गया तेनुं दृष्टांत तारपणी बे प्रकारनी वेदना तारपणी स्थिति तार पणी उद्वर्त्तना तारपणी पृथिवीआदिकना फरस तारपणी उपपात एटले सर्वे जीवनुं उपजवुं एटला बो

टी. [illegible] । रयणप्पभेत्यादि रत्नप्रभापृथिवीनैरयिका भदंत कीदृशं पुद्गल परिणाममाहारादि पुद्गलविपाकं प्रत्यनुभवंतः प्रत्येकं वेदयमाना विहरंति [illegible] गोयम अणिष्टमित्यादि प्राग्वत् एवं प्रतिपृथिवि तावद्वक्तव्यं यावदधः सप्तमी एवं वेदना लेश्या नामगोत्रारतिभयशोकक्षुत्पिपासा व्याधिउछ्वासानु [illegible] क्रोधमानमायालोभाहारभयमैथुन परिग्रहसंज्ञासूत्राणि वक्तव्यानि अत्र संग्रहणिगाथा पोग्गलपरिणामे वेयणाय लेसायनामगोएय । अरइभएय सोगेखुहा

मूल. ॥ इमीसेणं भंते रयणप्पहाए पुढवीए नेरईया केरिसयं पुग्गलपरिणामं पच्चणुभवमाणाविहरंति गो० अणिठ्ठं जाव अमणामं एवं जाव अहेसत्तमाए एवं णेयव्वं पुग्गलपरिणामं (पोग्गलपरिणा

भा. ल आ उद्देशामां पुछ्या तेनो संग्रह छे ॥ ए प्रकारे नारकीना अधिकारने विषे बीजो उद्देशो संपूर्ण थयो ॥ २ ॥ हावे नारकीनो त्रीजो उद्देशो आरंभे छे । हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीना नारकी केहवा पुद्गल परिणामने एटले आहारादि पुद्गल विपाकने प्रत्येक२ वेदताछता रहेछे? हे गौतम अतिशे माठा जावत् अमनोहर त्यां सुधीनो पाठ पूर्वनी पेठे लेवो ए प्रकारे जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जा

पा. ३०॥

टीका.

पवत्नं पवुतिनयनाए इत्यादि ततो वेदना ततो भय तदनंतरं पुरुषाणां पंचानामधः सप्तम्यामुपपातः ततः ऊर्ध्वं वेदनाया द्विविधायाः शीतवेदनायाः उष्णावेद नायाश्चेत्यर्थः ततः स्थितिर्वक्तव्या तदनंतरमुद्वर्त्तना ततः स्पर्शःपृथिव्यादिस्पर्शो वक्तव्यः ततः सर्वजीवानामुपपातः तद्यथा इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए तीसाए निरयावाससयसहस्सेसु एगमेगांसि निरयावासंसि सव्वेपाणा सव्वे भूया इत्यादि तृतीय प्रतिपत्तौ समाप्तौ द्वितीयो नरकोद्देशकः ॥ संप्रति तृतीय आरभ्यते

मूल.

विउव्वणा वेयणायभए ४ । उववाउ पुरिसाणं उवम्मं वेयणाय दुविहाय । ठिई उवट्टणा पुढवी उववाउ सव्वजीवाणं ५ । एयाउ संगहणि गाहाउ ॥ बीउद्देसो समत्तो ॥ २ ॥

भाषा.

तथा दृष्टि तारपणी ज्ञान तारपणी योग तारपणी उपयोग तारपणी समुद्घात तारपणी क्षुधा तृषा तारपणी विकुर्वणा नारकी एक रुप विकुर्वे बहुरुप विकुर्वे इत्यादि तारपणी वेदना तारपणी भय तार पणी पांच पुरुष हेवली सातमीये गया तेनुं दृष्टांत तारपणी बे प्रकारनी वेदना तारपणी स्थिति तार पणी उदवर्तना तारपणी पृथिवीआदिकना फरस तारपणी उपपात एटले सर्वे जीवनुं उपजवुं एटला बो

टीका. त्र नेरइयादिसूत्रम् । रयणप्पभेत्यादि रत्नप्रभापृथिवीनैरयिका भदंत कीदृशं पुद्गल परिणाममाहारादि पुद्गलविपाकं प्रत्यनुभवंतः प्रत्येकं वेदयमाना विहरंति भगवानाह गोतम अनिष्टमित्यादि प्राग्वत् एवं प्रतिपृथिवि तावद्वक्तव्यं यावदधः सप्तमी एवं वेदना लेश्या नामगोत्रारतिभयशोकक्षुत्पिपासा व्याधिउच्छ्वासानु ताप क्रोधमानमायालोभाहारभयमैथुन परिग्रहसंज्ञासूत्राणि वक्तव्यानि अत्र संग्राहणिगाथा पोग्गलपरिणामे वेयणाय लेसायनामगोएय । अरईभएय सोगेखुहा

मूल. ॥ इमीसेणं भंते रयणप्पहाए पुढवीए नेरईया केरिसयं पुग्गलपरिणामं पच्चणुभवमाणाविहरंति गो० अणिठं जाव अमणामं एवं जाव अहेसत्तमाए एवं णेयव्वं पुग्गलपरिणामं (पोग्गलपरिणा

भाषा. ल आ उद्देशामां पुछ्या तेनो संग्रह छे ॥ ए प्रकारे नारकीना अधिकारने विषे बीजो उद्देशो संपूर्ण थ यो ॥ २ ॥ हावे नारकीनो त्रीजो उद्देशो आरंभे छे। हे भगवन् रतनप्रभापृथिवीना नारकी केहवा पुद्ग ल परिणामने एटले आहारादि पुद्गल विपाकने प्रत्येक२ वेदताछता रहेछे? हे गौतम अतिशे माठा जावत् अमनोहर त्यां सुधीनो पाठ पूर्वनी पेठे लेवो ए प्रकारे जावत् हेठली सातमी पृथिवी पर्यंत जा

गा. ३१० पिवासावाहीय । उस्सासे अणुतावे कोहे माणेय मायलोनेय चत्तारिय सण्णाउ णेरइयाणं तु परिणामे २ संप्रति सप्तमनरकपृथिव्यां ये गछंति तान् प्रति
पादयति एगाकिलेत्यादि इह परिग्रहसंज्ञापरिणामवक्तव्यताया चरमसूत्रं सप्तम नरक पृथ्वीविषयं तदनंतरं च इयं गाथा तत एवेत्यनंतरमुक्ताधः सप्तमी पृथिवी परा
टीका. पृथ्वी ३ व प्रथमसप्तमनरकपृथिव्या किलेत्याप्तवादसूचने आप्तवचनमेतादिति भावः अतिव्रजंति अतिशयेन वाहुल्येन गछंति नरवृषभा. केशवा वासुदेवा जल
धरा श्च मंडुलकप्रभृतयो मंडलिका वसुप्रभृतय इव राजान श्चक्रवर्त्तिनः सुभूमादयएव येच महारंजाः कुटुंबिनः कालसौकरिकादय इव ३ संप्रति नरकेषु प्र

मूल. मे) वेयणाय लेसाय णाम गोएय अरई नएय सोगे खुहा पिवासाय वाहीय १ उस्सासे अणु

णवं ए प्रकारे वेदना १ लेश्या २ नामकर्म ३ गोत्रकर्म ४ अरति ५ नय ६ शोक ७ क्षुधा ८ तृषा ९ व्या
भाषा. धि १० उस्वास ११ अनुताप (अनुनव) १२ क्रोध १३ मान १४ माया १५ लोन १६ आहार १७ मैथुन
१८ परिग्रहसंज्ञा १९ ए सर्वनां सूत्र कहेवां ते उपर संग्रहणिनी गाथायो मूलमांथी जाणवी ॥ २ ॥
हावे सातमी नरक पृथिवीने विषे जे जाय छे तेनुं प्रतिपादन करे छे इहां परिग्रहसंज्ञा परिणामनी व

का. स्तारान् निर्यग्गादिषु चोत्तरवैक्रियावस्थानकालमानमाह ॥ भिन्नमुहुत्तोनिरएसु इत्यादि भिन्न. खंमोमुहुत्तो भिन्नमुहूर्त्त अंतर्मुहुर्त्तमित्यर्थः नरकेषू त्कर्षतो विकु र्वणावस्थितिकाल. तिर्यङ्मनुष्येषु चत्वारि अंतर्मुहूर्त्तानि देवेष्वर्द्धमास उत्कर्षतो विकुर्वणावस्थानकालो नणित स्तीर्थिकरगणधरै. ॥ ४ ॥ संप्रति नरकेष्वाहारा दि स्वरूपमाह। तेपोग्गलेत्यादि॥ येषुद्गला अनिष्टा नियमात् स तेषा मत्याहारः संस्थानं तु संस्थानं पुन. हुंमं हुंममपि जघन्यमतिनिकृष्टं वेदितव्यं एतच्च नवधारणी

त्र. नावे कोहे माणेय मायलोनेय चत्तारिय सन्नाउ (सण्णाउ) नेरइयाणं तु परिणामा (णेरइयाणं

ापा. कृष्यताने विषे बेलू सूत्र सातमी नारकी विषेनुं ब तार पबी आ गाथा ते माटे एत्थ एटले इहां हेठली सातमी नारकीने विषे नरमां वृषन सरखा वासुदेव तथा जलचर तंडुल मछआदि तथा राजा सुनूम चक्रवर्तिआदिक तथा मंमलिक वसुआदिक जे मोटा आरंन करनारा तथा कालसौकरिक जेवा कु टंबीआदिक बहुधा जाय बे किल केतां असत्य अथवा आप्त वचन मेतत् एटले ए हितकारीनुं वचन बे ए नावः॥३॥ हावे नरकने विषे प्रसंगथकी तिर्यंच आदिकने विषे उतर वैक्रिय अवस्थानुं कालमान कहे

पा. ३११ टीका.

नारकीनतीकृत्य ने?ति?? पुनरवैक्रियसंस्थानस्याग्रे वक्ष्यमाणत्वात् इयंच प्रागुक्तार्थसंग्रहगाथा ततोन पुनरुक्तदोषः ॥ ५ ॥ संप्रति विकुर्वणास्वरूपमाह भ
वत्यादि उत्पातादि सर्वेषां नैरयिकाणां विकुर्वणा खलु निश्चितमशुजा जवति यद्यपि शुजं विकुर्विष्याय इति चिंतयति तथापि तथाविधप्रतिकूलकर्म्मोदय
तोपामशुभैव विकुर्वणा जवति तदपिच वैक्रियमुत्तरवैक्रियशरीरमसंहननं अस्थ्यजावादुपलक्षणमेतत् जवधारणीयंच वैक्रियशरीरं च संहननं तथा हुंडं संस्था

मूल.

तु परिणामे) २ एत्थ किर अतिवतंती (अतिवयंति) नर (णर) वसजा केसवा जलयराय । राया
णो मंमलिया जेय महारंजकोमुबी ३ जिन्नमुहुत्तो नरएसु तिरिय मणुएसु होइ चत्तारि देवेसु अ

जाषा.

बे नरकने विषे उत्कर्षथकी विकुर्वणाने रहेवानो काल अंतर्मुहुर्त्तनोबे ने तिर्यंच मनुष्यने विषे च्यार अं
तर्मुहुर्त्तनो बे ने देवने विषे पंनर दिवशनो उत्कृष्टो विकुर्वणाने रहेवानो काल कह्यो बे ॥ ४ ॥ हावे नर
कने विषे आहारादिनुं स्वरूप कहे बे जे पुद्गल नियमाये अनिष्ट माठा होय तेहीज तेमने आहार
ने अर्थे बे ने संस्थान तो हुंम बे ते पण अति निकृष्ट जाणवुं ए जवधाराणिय शरीरना अधिकारे जाणवुं

टीका. नं ता उत्तरवैक्रिय शरीरं हुंड संस्थाननाम्न एव जवप्रत्यय उदयजावात् ॥ ६ ॥ असायउववण्णो इत्यादि कश्चित् जीवः सर्वास्वपि पृथिवीषु रत्नप्रजादिषु नरकपाथडेषु सर्वेष्वपि च स्थितिविशेषेषु जघन्यादि रूपेषु असातोऽसातोदयकलित उपपन्न उत्पत्तिकालेपि प्राग्जवमरणकाले जूतमहा दुःखानुवृत्ति जावा त् अवस्थानेऽपि तत्र असातोदयकलित एव सकलमपि निरयजवं त्यजति क्षपयति ननु जातुचिदपि सुखलेशमप्यास्वादयति आह किं तत्र कदाचित् सा

मूल. द्धमासो उक्कोस विउव्वणा जणिया ४ असुजा विउव्वणा खलु नेरइयाणं तु होइ सव्वेसिं । सं
ठाणं पिय तेसिं नियमा (णियमा) हुंडं तु णायव्वं ५ जे पोग्गला (पुग्गल) अणिठा णियमा

जाषा. केमजे उत्तरवैक्रिय संस्थान तो आगल कहेशे माटे आ गाथा पूर्वे कहेला अर्थनो संग्रह करे वे माटे
पुनरुक्त दोष नथी ॥ ५ ॥ हावे विकुर्वणानुं स्वरुप कहे वे सर्वे नारकीनी विकुर्वणा निश्चे अशुज वे जो प
ण ए नारकी एम विचारे जे अमो शुज विकुर्विशुं एम धारिने विकुर्वे तोपण ते प्रकारनां प्रतिकूल मा
ठां कर्मनो उदय वे माटे तेमनी विकुर्वणा अशुजज होय तेमने हाऊ नथी माटे वैक्रिय शरीर असहन

गा. ३१७ णोदगोणि नाणि येनैरमृष्यते उत्पन्ने नवानि ७ । तथाचाह उववाएणेत्यादि उववाएणमित्यत्र सत्यम्यर्थे तृतीया उपपातकाले सातं सातवेदनीयकर्म्मोदयं कश्चिद्वेदयते यः

टीका. पापरेशावकेशादिप्यतिरेकेण मरणागुपगतो ऽननितंरिकरटान्पवसायी समुत्पद्यते तदानि हि तस्य प्राग्जवानुबन्ध माधिरूपं दुःखं नापिक्षेत्र स्वजावजं नापिपरमाधार्मि कृत। नापि परस्परोदीरितं नत एवं त्रिभङ्ग,णाजावादसौ सातं वेदयते इत्युच्यते देवकम्मुणावावि इति देवकर्म्मणा पूर्वसामंतिकदेवप्रयुक्तया क्रियया तथाहि

मूल. (नियमा) सो तेसिं (तेतेसिं) होइ अहारो । वेउव्वियं सरीरं असंघयणहुंम संठाणं ६ असाउ
(उप्पाउ) उववन्नो अस्साउ चेव जहइ (चयइ) निरयजवं । सव्वपुढवीसु जीवा सव्वेसु ठिईविसे

जाषा. नउे हुंम संस्थान तेथी उत्तरवैक्रिय शरीर पण हुंम संस्थाने होय ६ कोइक जीव सघली पृथिवीने वि षे तथा सघली जघन्यादि स्थिति विशेषने विषे असातापणे उपजे तथा असातापणेज नारक जवनो त्याग करे ॥ ७ ॥ कोईक जीव उपपात काले उपजती वखत शातावेदनिय कर्मना उदय वते शाता पामे तथा पूर्व संगतीक देवना समीपपणाथी पण शाता पामे एटले पूर्व जवनो कोइ मित्र देव होय

टीका.

गच्छति पूर्वसांगतिकोदेवः पूर्वसांगतिकमन्नैरयिकस्य वेदनोपशमनार्थं यथा बलदेव कृष्णवासुदेवस्य सच वेदनोपशमो देवकृतो मनाक्कालमात्र एव भवति तत
ऊ[illegible] भूयः पूर्वकर्मोदयतो वेदना प्रवर्त्तते तथा ध्यवसायात् अज्झवसाणनिमित्तमिति अ०यवसानानिमित्तं सम्यक्त्वोत्पादकाले तत ऊर्द्ध्वं वा कदाचि
तथाविधविशिष्टशुभाध्यवसाय प्रत्ययं कश्चिन्नैरयिको बाह्यक्षेत्रस्वभावज वेदनासद्भावेपि सातोदयमेवानुभवति सम्यक्त्वोत्पादकाले हि जात्यंधस्य चक्षुर्लाभ इव
महान् प्रमोद उपजायते तदुत्तरकालमपि कदाचित् तीर्थंकरगुणानुमोदनाद्यनुगता विशिष्टा भावना भावयतः ततो बाह्यक्षेत्रस्वभावजवेदनासद्भावेप्यंतः सातोद

मूल.

रोसु उ उववाएण च सातो नेरइउ देवकम्मुणा वावि । अज्झवसाणनिमित्तं अहवा कम्माणुभावेण

भाषा.

ते नारकीने वेदना समावा काजे आवे ते थोडो काल शाता उपजावे ते देवकर्म कहीये अथवा तीर्थंकर
गुणना अनुभावथी अनुमोदनाथी तथा ते प्रकारना अध्यवसाय निमित्त समकित उदय काले कोई नार
कीने बाहिर क्षेत्रना स्वभावथी वेदनाछे तो पण साता पामे ॥८॥ हावे जे तेमनुं वैक्रिय शरीर ते तेमना मर
ण काले केवुं थायछे ते कहेछे जे तैजसकार्मण शरीर सूक्ष्म नामकर्मना उदयवाला ने सूक्ष्म शरीर पर्याप्तानां

टीका. गोदगोपि जवति येनैरमुत्पने उच्यते नवति ७ । तथाचाह उववाए सोस्पादि उववाएणमित्यत्र सत्यम्यर्थे तृतीया उपपातकाले सातं सातवेदनीयकर्म्मोदयं कश्चिद्वेदयते यः प्राग्नवेद्यघेदादिव्यतिरेकेण मरणमुपगतो ऽनतिक्लिष्टाध्यवसायी समुत्पद्यते तदानि हि तस्य प्राग्जवानुबन्ध माधिरूपं दुःखं नापिक्षेत्र स्वनावजं नापिपरमाधार्मिकजं नापि परस्परोदीरितं तत एवं विषड्:खाजावादसौ सातं वेदयते इत्युच्यते देवकर्मणावापि इति देवकर्म्मणा पूर्वसामंतिकदेवप्रयुक्तया क्रियया तथाहि

मूल. (नियमा) सो तेसिं (तेतेसिं) होइ अहारो । वेउव्वियं सरीरं असंघयणहुंम संठाणं ६ असाउ (उप्पाउ) उववन्नो अस्साउ चेव जहइ (चयइ) निरयजवं । सव्वपुढवीसु जीवा सव्वेसु ठिईविसे

जाषा. नठे हुंम संस्थान तेथी उत्तरवैक्रिय शरीर पण हुंम संस्थाने होय ६ कोइक जीव सघली पृथिवीने विषे तथा सघली जघन्यादि स्थिति विशेषने विषे असातापणे उपजे तथा असातापणेज नारक जवनो त्याग करे ॥ ७ ॥ कोईक जीव उपपात काले उपजती वखत शातावेदनिय कर्मना उदय वते शाता पामे तथा पूर्व संगतीक देवना समीपपणाथी पण शाता पामे एटले पूर्व जवनो कोइ मित्र देव होय

ीका.

गवति पूर्वसांगतिकोदेवः पूर्वभवस्नेहसंबंधिनारकस्य वेदनोपशमनार्थं यथा बलदेव कृष्णवासुदेवस्य सच वेदनोपशमो देवकृतो मनाक्कालमात्र एव भवति तत
ऊर्द्ध [illegible] वेदना प्रवर्त्तते तथा स्वाभाव्यात् अज्झवसाणनिमित्तमिति अध्यवसाननिमित्तं सम्यक्त्वोत्पादकाले तत ऊर्द्धं वा कदाचि
[illegible] प्रत्ययं कश्चिन्नैरयिको बाह्यक्षेत्रस्वभावज वेदनासद्भावेपि सातोदयमेवानुभवति सम्यक्त्वोत्पादकाले हि जात्यंधस्य चक्षुर्लाभ इव
[illegible] प्रमोद [illegible] तदुत्तरकालमपि कदाचित् तीर्थकरगुणानुमोदनाद्यनुगता विशिष्टां भावना भावयतः ततो बाह्यक्षेत्रस्वभावजवेदनासद्भावेप्यंतः सातोद

मूल.

रोसु उ उववाएण च सातो नेरइउ देवकम्मुणा वावि । अज्झवसाणनिमित्तं अहवा कम्माणुभावेण

ापा.

ते नारकीने वेदना समावा काजे आवे ते थोडो काल शाता उपजावे ते देवकर्म कहीये अथवा तीर्थंकर
गुणना अनुभावथी अनुमोदनाथी तथा ते प्रकारना अध्यवसाय निमित्त समकित उदय काले कोई नार
कीने बाहिर क्षेत्रना स्वभावथी वेदनाछे तो पण साता पामे ॥८॥ हवे जे तेमनुं वैक्रिय शरीर ते तेमना मर
ण काले केवुं थायछे ते कहेछे जे तैजसकार्मण शरीर सूक्ष्म नामकर्मना उदयवाला ने सूक्ष्म शरीर पर्याप्तानां

पा. ३१३ टीका. णो निर्भिद्यमाणो नभिद्यते अहवा कम्माणुभावेणामिति अथवा कर्मानुभावेन बाह्यतीर्थंकरजन्मदीक्षाज्ञानापवर्ग कल्याणसंभूति लक्षण बाह्यनिमित्तमाश्रित्य तथाविधस्य सातवेदनीयस्य कर्मणो नुभावेन विपाकोदयेन कश्चित्सातं वेदयते नचैतद्व्याख्यानमनार्षं यतउक्तं वसुदेवचरिते इहनैरयिकाः कुंभ्यादिषु पच्यमानाः कुंभादिषि भिद्यमाना वा भयोत्त्रस्ता स्तथाविधप्रयत्नवशादूर्ध्वमुत्पतंते तत स्तदुत्पातपरिमाण प्रतिपादनार्थमाह नेरइयाणुप्पाउ नैरयिकाणां दुःखेनाभिद्रुत

मूल. ८ तेया कम्मसरीरा सुहुमसरीराय जे अपज्जत्ता । जीवेण विप्पमुक्का (मुक्कमत्ता) वच्चंति सहस्ससो भेदं ९ नेरइयाणुप्पाउ उक्कोसं पंच जोयणसयाइं । दुक्खेण भिद्दुयाणं वेयणसतसं पगाढा

भाषा. तथा अपर्याप्तनां उदारिक शरीर वैक्रिय आहारक शरीर तेमनुं पण मांस चक्षुवालाने ग्रहण मां नथी आवतुं माटे सूक्ष्म तथा जे अपर्याप्तां तथा पर्याप्तां जे शरीर ते जीवे मुक्यां छतां एटले मुकतां मात्रमांज हजारो भेदने पामे छे एटले वेराईने झीणा२ परमाणु संघात थाय छे॥ ९ ॥ हावे तेहोनो उपपात परिणाम कहे छे। नारकीनो उपपात उत्कृष्टपणाथी पांचशे जोजननो छे एटले सातमी नारकी

टीका. र्षा नारकिना धापाना वेदनानतसंप्रगाढाना येदनायनानि अपरिमिता वेदनाः संप्राति गाढानि प्रवगाढानि येषां वेदनाशतसंगाढाः मुखादिदर्शनात् निष्ठांत
एव नारकिणः येषा तेषुतेपद्मायश्चार यतो वेदनाशतसंगाढा स्ततो दुःखेनाजिद्रुतास्तेषां जघन्यत उत्पातो गव्यूतमात्रमेतच्च संप्रदायादवसीयते तथाच दृश्यते
नारकिदेहपाणि पाठ. नेरइयाणुप्पाउ गाउय उक्कोस पंचजोयणसयाइं इति उत्कर्षतः पंचयोजनशतानि दुःखेनाजिहतानामित्युक्तं ततो दुःखमेवानिरूपयाति अच्छि
निमीलणमत्तमित्यादि नरके नैरयिकाणामुष्णवेदनाया शीतवेदनाया वा अहर्निशं पच्यमानाना नाक्षिनिमीलनमात्रमपि अक्षिनिकोचकालमात्रमपि अस्ति सु

मूल. णं १० अच्छिनिमीलियमेत्तं नत्थि सुहे दुःखमेव अणुबद्धं । नरए नेरइयाणं अहोनिसं

भाषा. ये उत्कृष्टपणाथी पांचशे योजननुं शरीरमान छे ने जघन्यपणाथी एक गाउ ते संप्रदायथी जाणवुं ते ना
रकी महा दुःखवते अभिद्रुत छे एटले व्याप्त छे अपरिमित वेदनाये युक्त छे ॥ १० ॥ हवे दुःखनुं नि
रूपण कहे छे जे ए नारकीने एक आंख्यनुं मटकु मारीये (आंख्य मीचीये एटलो काल) पण सुख न
थी दुःखज बांध्युछे माटे रात्रि दिवस नरकने विषे पचवापणु छे माटे ॥११ ॥ नरकने विषे नारकीने अ

टीका. वं किंतु दुःखमेव केवलं प्रतिबद्धमनुबद्धं सदानुगतमितिभावः अथ यत्तेषां वैक्रियशरीरं तत्तेषां मरणकाले कथं भवतीति निरूपणार्थमाह ॥ तेयाकम्मेत्या दि तैजसकार्म्मणशरीराणि यानि सूक्ष्मशरीराणि सूक्ष्मनामकर्म्मोदयवतां पर्याप्तानामपर्याप्तानां चौदारिकशरीराणि वैक्रियाहारकशरीराणि च तेषामपि प्रा यो मांसचक्षुरग्राह्यतया सूक्ष्मत्वात् तथा यानि अपर्याप्तानि अपर्याप्त शरीराणि तानि जीवेन मुक्तमात्राणि संति सहस्रशोभेदं व्रजाति विशकलितास्त त्परमाणुसंघाता भवंतीत्यर्थः एतासामेव गाथानां संग्राहिकां गाथामाह एत्थयभिन्नेत्यादि प्रथमागाथा एत्थइति पदोपलक्षिता द्वितीया भिन्नमुहुत्तो इति तृतीया

मूल. पच्चमाणाणं ११ अतिसीयं अतिउण्हं अइतण्हा अइखुहा अइभयं च। नरए नेरइयाणं दुक्खस तातिं (सतानि) अविस्सामं १२ एत्थय भिन्नमुहुत्तो पुग्गलअसुभाय होइ अस्साउ। उववाउ उपा

भाषा. ति शीत वेदना तथा अति उष्ण वेदना तथा अति तृषा (तरष) तथा अति क्षुधा (भुख) तथा अति भ य ए सर्व दुःख निरंतर छे ॥ १२॥ ए सर्व गाथायोने संग्रह करनारी एक छेल्ली गाथा संग्रहणीनी क ही छे एटले ए गाथायोनुं एक एक पद ग्रहण करिने एक छेल्ली गाथा छे जेम एत्थ १ भिन्नमुहुत्तो २ पु

का. पोग्गलाहारिते पोग्गला भणिता इत्यादि चतुर्थी समुग्घातेति समुग्घातविचारणा खलु इत्यादि एवं शेष पदान्यपि भावनीयानि तृतीयप्रतिपत्तौ तृतीयो नरकोद्देश
समुद्देशःसमाप्तो नरकाधिकारः ॥ ३ ॥ संप्रति तिर्यगधिकारोवक्तव्यस्तत्रेदमादि सूत्रम् । सेकिंनमित्यादि अथकेते तिर्यग्योनिजाः सूरिराह तिर्यग्योनिजाः पंच

उ अगिसरीराय नायव्वा (बोधव्वा) १३ सेत्तं नेरइया तइउ नारय उद्देसउ सम्मत्तो ॥ ३ ॥
अ. ॥ सेकिं तं तिरिक्खजोणियाउ पंचविहा पं० तं० एगिंदियतिरिक्खजोणिया बेइंदियतिरिक्खजो
णिया तेइंदियतिरिक्खजोणिया चउरिंदियतिरिक्खजोणिया पंचेंदियतिरिक्खजोणियाउ सेकिंतं एग

गल ३ असुभा ४ असुसाउ ५ उरवाउ ६ उप्पाउ ७ अग्नि ८ शरीरा एए प्रकारे गाथायो जांणवी ॥
नारकीनो त्रीजो उद्देशो समाप्त थयो ॥ नारकीनो अधिकार संपूर्ण थयो ॥ हावे तिर्यंच योनिनो अधि
।पा। कार कहे छे! हे भगवन् तिर्यंच योनिया केटला प्रकारना! हे गौतम तिर्यंच योनिया पांच प्रकारना कह्या
छे एकेंद्रिय १ बेरिंद्रिय २ तेरिंद्रिय ३ चउरिंद्रिय ४ पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया ५ हे भगवन् एकेंद्रिय ति

पा ३१५ विधाः प्रज्ञप्ता भगवंता एकेंद्रियादिसूत्रं प्रायः सुगमं केवलं भूयान् पुस्तकेषु वाचनाभेद इति यथावास्तिवाचनाक्रमप्रदर्शनार्थमक्षर संस्कारमात्रं क्रियते एकेंदि

मूल. गिंदियतिरिक्खजोणिया२ पंचविहा पं० त० पुढविक्काइ एगिंदियतिरिक्खजोणिया जाव. वणस्सइ काइय एगिंदियतिरिक्खजोणिया सेकिंतं पुढविक्काइय एगिंदियतिरिक्खजोणिया२ दुविहा पं० तं० सुहुमपुढविक्काइय एगिंदियतिरिक्खजोणिया बादरपुढवीक्काइय एगिंदियतिरिक्खजोणिया सेकिंतं

भाषा. र्यंच योनिया केटला प्रकारना? हे गौतम एकेंद्रिय तिर्यंच योनिया पांच प्रकारना पृथिवीकायिक एकेंद्रि य तिर्यंच योनिया १ अप्कायिक २ तेउकायिक ३ वायुकायिक ४ वनस्पतिकायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया ५ हे भगवन् पृथिवीकायिक एकेंद्रिय तिर्यंच योनिया केटला प्रकारना, हे गौतम पृथिवीकायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया बे प्रकारना कह्या छे सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया१ बादर पृथ्वीकायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया२ हे भगवन् सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया केटला प्रकार

टीका. गाथाद्वयं ? दिना सम्यक्ने एकादिनाः पञ्चेन्द्रियाः प्रथमा अथवा पृथिवीकायिका यावद्वनस्पतिकायिकाः अथ के ते पृथिवीकायिकाः पृथिवीकायिका द्विविधाः

मूल. सुहुमपुढविकाइय एगिंदियतिरिक्खजोणिया? दुविहा पं० तं० पज्जत्तासुहुम० अपज्जत्तासुहुम० सेतं सुहुम० सेकिंतं बादरपुढविकाइया? दुविहा पं० तं० पज्जत्ताबादरपुढविकाइया अपज्जत्ता बादरपुढविकाइया सेतं बादरपुढविकाइय एगिंदियतिरिक्खजोणिया सेत्तं पुढविक्काइय एगिंदियतिरिक्खजो

भाषा. ना कह्या ? हे गौतम सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया बे प्रकारना कह्याछे पर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया ने अपर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया ए प्रकारे सूक्ष्म कह्या हे भगवन् बादरपृथिवीकायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया केटला प्रकारना? हे गौतम बादरपृथिवीकायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया बेप्रकारना कह्याछे। पर्याप्ताबादरपृथिवीकायिक एकेंद्रियतिर्यंचयोनियाने अपर्याप्ता बादरपृथिवीकाइक एकेंद्रियतिर्यंचयोनिया ए प्रकारे बादर कह्या हवे एज प्रकारे अप्कायिक

पा. ३१५ विधाः प्रज्ञप्ता स्तथा एकेंद्रियादिसूत्रं प्रायः सुगमं केवलं भूयान् पुस्तकेषु वाचनाभेद इति यथावस्थितवाचनाक्रमप्रदर्शनार्थमक्षर संस्कारमात्रं क्रियते एकेंद्रि

गिंदियतिरिक्खजोणियाइ पंचविहा पं० त० पुढविक्काइ एगिंदियतिरिक्खजोणिया जाव. वणस्सइ

मूल. काइय एगिंदियतिरिक्खजोणिया सेकिंतं पुढविक्काइय एगिंदियतिरिक्खजोणियाइ डुविहा पं० तं०

सुहुमपुढविक्काइय एगिंदियतिरिक्खजोणिया बादरपुढवीक्काइय एगिंदियतिरिक्खजोणिया सेकिंतं

र्यंच योनिया केटला प्रकारना? हे गौतम एकेंद्रिय तिर्यंच योनिया पांच प्रकारना पृथिवीकायिक एकेंद्रि

य तिर्यंच योनिया १ अप्कायिक २ तेउकायिक ३ वायुकायिक ४ वनस्पतिकायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयो

भाषा. निया ५ हे भगवन् पृथिवीकायिक एकेंद्रिय तिर्यंच योनिया केटला प्रकारना? हे गौतम पृथिवीकायिक ए

केंद्रिय तिर्यंचयोनिया बे प्रकारना कह्या छे सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया १ बादर पृथिवी

कायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया २ हे भगवन् सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया केटला प्रकार

ंका.

यावावत्पंचेंद्रिया अथकेते एकेंद्रियाः पंचविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा पृथिवीकायिका यावद्वनस्पतिकायिकाः अथ के ते पृथिवीकायिकाः पृथिवीकायिका द्विविधाः

ूल.

सुहुमपुढविक्काइय एगिंदियतिरिक्खजोणियाः२ दुविहा पं० तं० पज्जत्तासुहुम० अपज्जत्तासुहुम० सेतं सुहुम० सेकिंतं बादरपुढविक्काइयाः२ दुविहा पं० तं० पज्जत्ताबादरपुढविक्काइया अपज्जत्ता बादरपुढविक्काइया सेत्तं बादरपुढविक्काइय एगिंदियतिरिक्खजोणिया सेत्तं पुढविक्काइय एगिंदियतिरिक्खजो

ाषा.

ना कह्या छे हे गौतम सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया बे प्रकारना कह्याछे पर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया ने अपर्याप्ता सूक्ष्म पृथिवीकायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया ए प्रकारे सूक्ष्म कह्या हे भगवन् बादरपृथिवीकायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया केटला प्रकारना? हे गौतम बादरपृथिवीकायिक एकेंद्रिय तिर्यंचयोनिया बेप्रकारना कह्याछे। पर्याप्ताबादरपृथिवीकायिक एकेंद्रियतिर्यंचयोनियाने अपर्याप्ता बादरपृथिवीकाइक एकेंद्रियतिर्यंचयोनिया ए प्रकारे बादर कह्या हवे एज प्रकारे अप्कायिक

पा. ३१६ प्रज्ञप्ता स्तद्यथा सूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च बादरपृथिवीकायिकाश्च अथ के ते सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः सूक्ष्मपृथिवीकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा पर्याप्तका

मूल. णिया सेकिंतं अउक्काइय एगिंदियतिरिक्खजोणियाए दुविहा पन्नत्ता एवं जहेव पुढविक्काइयाणं तहेव चउक्कं एवं जाव वणस्सइकाइया सेत्तं वणफ्फइकाइय एगिंदियतिरिक्खजोणिया सेकिंतं बें दियतिरिक्खाए दुविहा पं० तं० पज्जत्तकबेइंदिय० अपज्जत्तबेइंदियतिरिक्खजोणिया सेत्तं बेइंदियति

भाषा. एकेंद्रियथी आरंभिने जावत् वनस्पतिकाय पर्यंत च्यारे भेद पृथिवीकायिकनी पेठे कहेवा ए प्रकारे एकें द्रिय तिर्यंचयोनिया कह्या ॥ हे भगवन् बेइंद्रिय तिर्यंचयोनिया केटला प्रकारना? हे गौतम बेइंद्रिय तिर्यंचयोनिया बे प्रकारना पर्याप्ता बेइंद्रिय तिर्यंचयोनिया ने अपर्याप्ता बेइंद्रियतिर्यंचयोनिया ए प्रका रे जावत् चतुरिंद्रिय पर्यंत कहेवुं हे भगवन् पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया केटला प्रकारना? हे गौतम पंचेंद्रि य तिर्यंचयोनिया त्रण प्रकारना कह्याछे जलचरपंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया१ स्थलचरपंचेंद्रिय तिर्यंचयोनि

टीका. अपर्याप्तकाश्च के ते बादरपृथिवीकायिका बादरपृथिवीकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च एवं तावद्वक्तव्यं यावद्वनस्पतिकायिकाः

मूल. रिक्खजोणिया एवं जाव. चउरिंदिया सेकिंतं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाः तिविहा पं० तं० जलयर पंचेंदियतिरिक्खजोणिया थलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया सेकिंतं जलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाः दुविहा पं० तं० संमुछिमजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाय गब्भ

भाषा. याः खेचरपंचेंद्रिय तिर्यंचयोनियाः हे भगवन् जलचरपंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया केटला प्रकारना कह्या छे? हे गौतम जलचरपंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया बे प्रकारना कह्याछे संमूर्छिम जलचरपंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया ने गर्भज जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया हे भगवन् संमूर्छिम जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया केटला प्रकारना? हे गौतम संमूर्छिम जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया बे प्रकारना पर्याप्ता संमूर्छिम जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया ने अपर्याप्ता संमूर्छिम जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया ए प्रकारे संमूर्छिम जलच

पा. ३१७ अथ के ते द्वींद्रिया द्वींद्रिया द्विविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च एवं त्रींद्रिय चतुरिंद्रिया अपि वक्तव्या अथ के ते पंचेंद्रियातिर्यग्योनिकाः

मूल. वक्कंतियजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाय सेकिंतं संमुछिमजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाए दुविहा पं० तं० पज्जत्तगसंमुछिमजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया अपज्जत्तगसंमुछिमजलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया सेत्तं संमुछिमपंचेंदियतिरिक्खजोणिया सेकिंत्तं गब्भवक्कंतिजलयरपंचेंदियातिरिक्खजोणियाए दुविहा पं० तं० पज्जत्तगगब्भवक्कंतियजलयर. अपज्जत्तगगब्भवक्कंतिजलयर सेत्तं जल

भाषा. र पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया कह्या हे भगवन् गर्भज जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया केटला प्रकारना? हे गौतम गर्भज जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया बे प्रकारना कह्या एक पर्याप्ता गर्भज जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया ने बीजा अपर्याप्ता गर्भज जलचर पंचेंद्रिय तिर्यचयोनिया ए प्रकारे गर्भज जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया कह्या ॥ हे भगवन् स्थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया केटला प्रकारना?

टीका. पंचेंद्रियतिर्यग्योनिकास्त्रिविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा जलचराः स्थलचराः खचराश्च अथकेते जलचरा जलचरा द्विविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा संमूर्छिमाश्च गर्भव्युत्क्रांति

सूत्र. यरपंचिंदियतिरिरकखजोणिया सेकिंतं थलयरपंचेंदियतिरिरकखजोणिया२ डुविहा पं० तं० चउप्पय थलयरपंचिंदियतिरिरकखजोणिया परिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिरकखजोणिया सेकिंतं चउप्पयथलयर पंचिंदिय०२ डुविहा पं० तं० संमुछिमचउप्पयथलयरपंचिंदिय० गप्नवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिं

भाषा. हे गौतम स्थलचर पंचेंड्रिय तिर्यंचयोनिया बे प्रकारना कह्या छे चउपदथलचर पंचेंड्रिय तिर्यंचयोनिया ने परिसर्पथलचर पंचेंड्रिय तिर्यंचयोनिया हे ज्ञगवन् चउपदथलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया केटला प्रकारना? हे गौतम चउपदथलचर पंचेंड्रिय तिर्यंचयोनिया बे प्रकारना कह्या छे संमूर्छिम थलचर पंचें ड्रिय तिर्यंचयोनिया जिम जलचरनी वक्तव्यता छे तिमज च्यार प्रकारना ज्ञेदे सहित जाणवी ए प्रकारे चउपदथलचर पंचेंड्रिय तिर्यंचयोनिया कह्या हे ज्ञगवन् परिसर्पथलचर पंचेंड्रिय तिर्यंचयोनिया केटला

पा. ३१७ काश्च अथ के ते संमूर्छिमा संमूर्छिमास्त्रिविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा पर्याप्तकाश्च अपर्याप्तकाश्च अथ के ते गर्भव्युत्क्रांतिकाः २ द्विविधा स्तद्यथा पर्याप्तका अपर्या

दियतिरिक्खजोणियाय जहेव जलयराणं तहेव चउक्कउ भेदो सेत्तं चउप्पयथलयरपंचिंदियातिरिक्ख
मूल. जोणिया सेकिंतं परिसप्पथलयरपंचिंदिय० परिसप्पथलयरपंचिंदिया डुविहा पं० तं० उरपरिसप्प
थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया भुयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया उर.१ डुविहा पं०
जहेव जलयराणं तहेव चउक्कउ भेउ एवं भुयगपरिसप्पाणवि भाणियव्वा सेत्तं भुयगपरिसप्पथलय

प्रकारनाः हे गौतम परिसर्पथलचर पंचेंडिय तिर्यंचयोनिया बे प्रकारना एक उरपरिसर्पथलचर पंचेंडि
भाषा य तिर्यंचयोनिया ने भुजपरिसर्पथलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया हे भगवन् उरपरिसर्पथलचर पंचेंडि
य तिर्यंचयोनिया केटला प्रकारनाः हे गौतम उर० बे प्रकारना कह्या छे जिम जलचरनी वक्तव्यता छे ति
मज च्यार भेदे सहित्त जाणवी ए प्रकार भुजपरिसर्पथलचर पंचेंडिय तिर्यंचयोनिया जाणवा ए प्रका

टीका.

प्रकाराश्च एवं चतुष्पदा उरपरिसर्पाः भुजपरिसर्पा पक्षिणश्च प्रत्येकं चतु.प्रकारा वक्तव्याः संप्रति पक्षिणां प्रकारांतरेणभेदप्रतिपादनार्थमाह पक्खिणं भंते इत्यादि पक्षिणां भदंत कतिविध कतिप्रकारो योनि संग्रहो योन्युपलक्षितं ग्रहणमित्यर्थ. भगवानाह गौतम त्रिविधो योनिसंग्रहः प्रज्ञप्तस्तद्यथा अंडजामयूराद

मूल.

रपंचिंदियतिरिक्खजोणिया सेत्तंथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया सेकिंतं खहयरपंचिंदियतिरिक्ख जोणिया ख०२ दुविहा पं० तं० संमुच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया गब्भवक्कंतियखह यरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया सेकिंतं संमुच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया२ दुविहा पं०

भाषा.

रे थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया कह्या । हे भगवन् खचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया केटला प्रकारना? हे गौतम खेच० बे प्रकारना कह्या छे संमूर्छिम खेचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया ने गर्भज खेचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया हे भगवन् संमूर्छिम खेचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया केटला प्रकारना? हे गौतम संमू० बे प्रकारना कह्या छे एक पर्याप्ता संमूर्छिम० अपर्याप्ता संमूर्छिम० ए प्रकारे संमूर्छिम खेचर पंचेंद्रिय तिर्यंच

पा. ३१० पाः पोतजाः वग्गुल्यादयः संमूर्छिमाः खंजरीटादयः अंडजास्त्रिविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा स्त्रियः पुरुषा नपुंसकाश्च पोतकास्त्रिविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा स्त्रियः पुरुषा नपुं

मूल. तं० पज्जत्तगसंमुछिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया अपज्जत्तगसंमुछिमखहरयपंचिंदियतिरिक्ख जोणिया एवं गब्भवक्कंतियावि जाव पज्जगत्तगब्भवक्कंतिया जाव अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियावि खहयरपंचिंदियतिरिरुखजोणिया एां भंते केइविहे जोणिसंगहे पं० गो० तिविहे जोणिसंगहे पं० तं० अंमया पोयया संमुछिमा अंमया तिविहा पं० तं० इत्थी पुरिसा नपुंस

भाषा. योनिया कह्या ए प्रकारे गर्भज खेचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया जाणवा जावत् पर्याप्ता अपर्याप्ता गर्भज खेचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया पर्यंत हावे पंखीनो प्रकारांतरे करिनें भेद कहे छे हे भगवन् खेचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिनो केटला भेदे जोनि संग्रह कह्यो छे हे गौतम खेच० त्रण प्रकारनो योनि संग्रह कह्यो छे एक अंमज १ एटले मयूर प्रमुख इंमाथी उपना ते तथा पोतज २ एटले वागुल प्रमुख तथा संमू

टीका.

सकाश्च तत्र ये ते संमूर्छिमास्ते सर्वे नपुंसकाः संमूर्छिमानामवश्यं नपुंसकवेदोदयभावात् ॥ एएसिणमित्यादि एतेषां पक्षिणां भदंत जीवानां कति लेश्याः प्रज्ञ
प्ता भगवानाह गौतम षट् लेश्याः प्रज्ञप्ताः तद्यथा कृष्णलेश्या यावत् शुक्ललेश्या तेषां द्रव्यतो भावतो वा सर्वलेश्यापरिणामसंभवात् तेणंभंते इत्यादि ते
भदंत पक्षिणो जीवाः किं सम्यग्दृष्टयो मिथ्यादृष्टयः सम्यग्मिथ्यादृष्टयश्च भगवानाह गौतम त्रिविधाअपि तेणं भंते इत्यादि ते भदंत जीवाः किं ज्ञानिनो

मूल.

का पोयया तिविहा पं० तं० इत्थी पुरिसा नपुंसया तत्थणं जेते संमुच्छिमा ते सव्वे नपुंसका ॥
॥ तेसिणं भंते जीवाणं कइलेस्साओ पं० गो० छल्लेस्साओ पं० तं० कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा

भाषा.

छिम ३ एटले खंजरीट प्रमुख हावे अंडज त्रण प्रकारना कह्या छे स्त्री१ पुरुष२ नपुंसक३ कह्याछे पोतज
त्रण प्रकारना कह्या छे स्त्री १ पुरुष २ नपुंसक ३ तेमां संमूर्छिम जे छे ते सर्वे नपुंसक जाणवा केमजे
संमूर्छिमने अवश्य नपुंसक वेदनो उदय छे माटे ॥ हे भगवन् ते जीवोने केटली लेश्यायो कही छे: हे गौ
तम छ लेश्यायो कही छे ते कृष्ण लेश्याथी आरंभिने जावत् शुक्ल लेश्या पर्यंतनो पाठ लेवो केमजे

पा. ३७०

टीका. ऽज्ञानिनः जगवानाह गौतम द्वयेपि ज्ञानिनोपि अज्ञानिनोपीत्यर्थः तत्रये ज्ञानिन स्तेद्विज्ञानिन स्त्रिज्ञानिनोवा येप्यज्ञानिनस्तेपि द्व्यज्ञानिन स्त्र्यज्ञानिनो वा तेषा मित्यादि ते जदंत जीवाः किंमनोयोगिनो वाग्योगिनः काययोगिनः जगवानाह गौतम त्रयेपि तेणं जंते इत्यादि ते जदंत जीवाः किं साकारोपयुक्ताः अनाकारोपयुक्ता जगवानाह द्वयेपि साकारोपयुक्ता अनाकारोपयुक्ताश्चेत्यर्थः तेणं जंते इत्यादि ते जदंत पाहिणो जीवाः कुतउत्पद्यंते किंनैरयिकेज्य इत्यादि यथा प्रज्ञापनायां व्यु

मूल. तेणं जंते जीवा किं सम्मदिठि मिठदिष्टी सम्मामिठदिष्टी गो० सम्मदिठीवि मिठदिठीवि सम्मामि ठदिठीवि तेणं जंते जीवा किं नाणि अन्नाणि गो० नाणीवि अन्नाणीवि तिन्नि नाणाइं तिन्नि अन्ना

भाषा. तेमने द्रव्यथी अथवा जावथी सघली लेश्या परिणामनो संजव छे हे जगवन् ते जीवो समकित दृष्टि छे के मिथ्यादृष्टि छे के मिश्रदृष्टि छे? हे गौतम ते जीवोने समकितदृष्टि पण छे ने मिथ्यादृष्टि पण छे ने मिश्रदृष्टि पण छे हे जगवन् ते जीवो शुं ज्ञानी छे के अज्ञानि छे? हे गौतम ज्ञानी पण छे ने अज्ञानी पणछे तेमां जे ज्ञानी छे ते बे ज्ञाने सहित छे ने त्रण ज्ञाने सहित पणछे ने जे अज्ञानी छे ते बे अज्ञाने

टीका. ऋगोनिरे यथा इष्टव्यं तेसिणामित्यादि तेषां नदंत पदिणा कियंतं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता नगवानाह गौतम जघन्येनां तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पल्योपमासंख्येयनागः तेसिणामित्यादि तेषां नदंतजीवाना कति समुद्घाताः प्रज्ञप्ता नगवानाह गौतम पंच समुद्घाताः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा वेदनासमुद्घातः कषायसमुद्घातो मारणां तिकसमुद्घातो वैक्रियसमुद्घात स्तैजससमुद्घातश्च तेणं नंते इत्यादि ते नदंत जीवा मारणांतिकसमुद्घातेन किं समवहता म्रियंते ऽसमवहता म्रियंते नग

मूल. णाइ नयणाए जहा डुविहे सु गब्भवक्कंतियाणं तेणं नंते जीवा किं मणजोगी वयजोगी कायजोगी गो० तिविहावि तेणं नंते जीवा किं सागरोवउत्ता अणागारोवउत्ता गो० सागारोवउत्तावि अ

नाषा. सहित ले ने त्रण अज्ञाने पण सहित ले पण एटले त्रण ज्ञान मति १ श्रुत २ अवधि ३ ज्ञान पर्यं त होय ने त्रण अज्ञान मतिअज्ञान १ श्रुतअज्ञान २ विनंगज्ञान ३ तेमां नजना ले हे नगवन् ते जीवो शुं मन जोगी ले वचन जोगी ले के काय जोगी ले? हे गौतम त्रण जोगे सहित ले हे नगवन् ते जीवो साका रोपयोगी ले के अनाकारोपयोगी ले? हे गौतम साकारोपयोगी पण ले ने अनाकारोपयोगी पण ले हे

पा. ३७१ टीका- वानाह गौतम समवहताअपि म्रियंते असमवहता अपि म्रियंते तेषां भंते इत्यादि ते भदंत जीवा अनंतरमुद्धृत्य क्व गच्छंति एतदेव व्याचष्टे इत्यादि यथाद्विवि
धप्ररूपो नथा इत्थं तेसिणमित्यादि तेषां भदंत जीवानां कति किं प्रमाणानि जातिकुलकोटीनां योनिप्रमुखाणि योनिप्रवाहाणि शतसहस्राणि योनिप्रमु
ख शतसहस्राणि जातिकुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवंति भगवानाह द्वादशजातिकुलकोटियोनिप्रमुख शतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि तत्रजातिकुलयोनीनां

मूल. णागारोवउत्तावि तेणं भंते जीवा कउउ वज्जंति किं नेरईएहिंतो उववज्जंति तिरिख्खजोणीएहिंतो
उववज्जंति पुछा गो० असंखिज्जवासाउय अकम्मभूमगअंतरदीवगवज्जेहिं उववज्जंति। तेसिणं भंते

भाषा. भगवन् ते जीवो कीहांथी आवी उपजे छे? शुं नारकीथकी उपजे छे के तिर्यंच योनीथी उपजे छे? हे गौ
तम असंख्यात वर्षना आउखावंतने वर्जिने अकर्मभूमि वर्जिने अंतरद्वीपनां जुगलीयां वर्जिने बीजी ग
ति थकी उपजे छे हे भगवन् ते जीवोने केटला काळनी स्थिति कही छे? हे गौतम जघन्यपणाथी अंत
र्मुहुर्तनी ने उत्कृष्टपणाथी पल्योपमनो असंख्यातमो भाग आउखानी स्थिति कही छे हे भगवन् ते जीवो

टीका. मिदं परिभूमुदाहरणं पूर्वाचार्यैरुपादर्शि जातिरिति तिर्यग्जाति स्तस्याः कुलानि कृमिकीट वृश्चिकादीनि ॥ इमानि च कुलानि योनिप्रमुखाणि तथाहे कस्यामेवयोनौ मनेकानिकुलानिजवंति तथाहि गणयोनौ कृमि जातिकुलं कीटजातिकुलं वृश्चिकजातिकुलमित्यादि मथवा जातिकुलमित्येकं पदं जातिकुल योन्योश्च परस्परं विशेषः एकस्यामेव योनावनेकजातिकुलसंजवात् तथथा एकस्यामेव गणयोनौ कृमिजातिकुलं कीटजातिकुलं वृश्चिकजातिकुलमित्यादि

मूल. जीवाणं केवइयं काल ठिई पं० गो० जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलितोवमस्स असंखेज्जइ ना गं तेसिणं नंते जीव णं कइ समुग्घाया पं० गो० पंच समुग्घाया पं० तं० वेयणा समुग्घाए जाव.

नाषा. ते केटला समुद्घात कह्याछे हे गौतम पांच समुद्घात कह्या छे वेदना समुद्घातथी आरंनिने जावत् तेज समुद्घात सुधी पांच जाणवा हे नगवन् ते जीवो मारणांतिक समुद्घाते मरण पाम्या थका शुं समोह्या मरे छे के असमोह्या मरे छे हे गौतम समोह्या पण मरे छे ने असमोह्या पण मरे छे हे नगवन् ते जीवो आंतरा रहित चवीने किहां जाय छे केइ गातेमां उपजे छे शुं नारकीने विषे उपजे छे के ति

पा. ३०७

टीका. त्वं एकस्यामेवयोनावनेकानि जातिकुलानि भवंतीत्यर्थः एवं एकस्यामेवयोनावनेकानिजेदजावादनेकानि योनिप्रवाहाणि जातिकुलानि संनवंतीत्युपपद्यंते खेचरपंचेंद्रियतिर्यग्योनिजानां द्वादशजातिकुलकोटिशतसह्स्राणि भवंत्यपि गाथा जोणिसंगहलेस्सा दिठी नाणेय जोगउवओगे । उववायठिइसमुग्घाय चयणजाईकुलविहीओ अस्याक्षरगमनिका प्रथमं योनिसंग्रहद्वारं ततोलेश्याद्वारं ततोदृष्टिद्वारमित्यादि भुयगाणंभंते इत्यादि भुजगानां भदंत कतिविधो योनिसंग्रहः प्रज्ञप्त इत्यादि पक्षिवत् सर्वनिरवशेषं वक्तव्यं नवरं स्थिति

मूल. तेयासमुग्घाए तेणं भंते जीवा मारणंतिय समुग्घाए णंकिं समोहता मरंति असमोहता मरंति गो० समोहियाविमरंति असमोहियाविमरंति तेणं भंते जीवा अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गछंति किं

भाषा. यंचने विषे उपजे छे हे गौतम पूर्वे पक्षिवत्तिमां उद्वर्त्तना कही छे तिम जाणवी एटले पन्नवणा सूत्रना व्युत्क्रांति पदमां जेम कहीछे तिम विस्तारथी जाणवी हे भगवन् ते जीवोनां केटलां जातिकुलकोटी योनि प्रमुख योनि प्रवाह शतशहस्त्र एटले लाखो गमे कह्या छे हे गौतम बार जातीकुल कोटि योनि प्रमुख शतशहस्त्र एटले लाखो कह्यां छे त्यां पूर्वाचार्योए जाति कुल योनिनुं उदाहरण देखाड्युं ते जिम तिर्यंच

टीका.

...जातिकुलकोटिप्रमाणानां ... स्थिति जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटी च्यवनमुद्वर्त्तना तत्र नरकगतिचिंतायामधो यावत् द्वितीया पृथिवी उपरि यावत् सह
स्रारकल्पस्तावदुत्पद्यन्ते नव तेषां जातिकुलकोटियोनिप्रमुख शतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि एवमुरःपरिसर्पाणामपि वक्तव्यं नवरं तत्र च्यवनद्वारे ऽधश्चिंतायां यावत्
पंचमीपृथिवीतिवक्तव्यं कुलकोटिचिंतायां दश जातिकुलकोटियोनि प्रमुखशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि। चउप्पयाणमित्यादि चतुष्पदानां भदंत जातिविधोयोनिसंग्रहः

मूल.

नेरइएसु उववजंति तिरिक्ख. पुछा गो० एवं उव्वट्टणा भाणियव्वा जहा वक्कंतिए तहेव। तेसिणं
भंते जीवाणं कइ जाई कुलकोडी जोणिपमुहसयसहस्सा पं० गो० बारसजाइकुलकोडि जोणि

भाषा.

नी जाति छे ने तेनां कुल जिम क्रमिया कीडा विंछी प्रमुख ए कुल छे ते योनि प्रमुख कहीये एटले एक
योनिने विषे अनेक कुल थाय जिम छाण योनिने विषे क्रमि जातिना कुल तथा किट जातिनां कुल तथा
वींछी जातिनां कुल इत्यादि जाणवुं हे भगवन् भुजपरिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनियानो केटला प्र
कारनो योनि संग्रह कह्यो छे हे गौतम त्रण प्रकारना योनि संग्रह कह्या छे ते जिम अंडज १ पोतज २ सं

टीका.

प्रज्ञप्तो भगवानाह गोतम त्रिविधो योनिसंग्रहः प्रज्ञप्त स्तद्यथा पोतजाः संमूर्छिमाश्च इह ये अंडजव्यतिरिक्तगर्भव्युत्क्रांतास्ते सर्वे जरायुजा अजरायुजा वा पोतता इति विवक्षितमतोऽत्रत्रिविधो यथोक्तरूपो योनि संग्रह उक्तो अन्यथा गवादीनां जरायुजत्वात् तृतीयोपि जरायुजलक्षणो योनिसंग्रहो वक्तव्यः स्यादिति तत्र ये पोतजास्ते त्रिविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा स्त्रियः पुरुषा नपुंसकाश्च त त्र ये ते संमूर्छिमास्ते सर्वे नपुंसकाः शेषद्वारकलापः पूर्ववत् नवरं स्थिति जघन्येनां

मूल.

पमुहसयसहस्साइं भुयगपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते कइविहे जोणीसंगहे पं० गो० तिविहे जोणिसंगहे पं० तं० अंडया पोयया संमुछिमा एवं जहा खहयराणं तहेव णा

भाषा.

मूर्छिम२ ए प्रकारे पूर्वनी पेठे जाणवो जिम खेचर पंखीने तिम निश्चे जाणवो पण आटलो विशेष जे स्थिति चयवन कुल कोटीने विषे नाना प्रकारपणु छे तेहीज देखाडे छे जे स्थिति जघन्यपणे अंतर्मुहुर्त्तनी ने उत्कृष्टपणे पूर्वकोटी प्रमाणनी जाणवी ने उद्वर्त्तना एटले चवीने बीजी पृथिवी सुधी जाय ने उपरि यावत् सहस्रारकल्प त्यां पर्यंत उपजे ने तेमनां नव जातिकुलकोटियोनि प्रमुख शतसहस्र एटले लाख कह्यांछे शेष

टीका. नर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि च्यवनद्वारे अधःस्थितायां यावच्चतुर्थी पृथिवी ऊर्ध्वं यावत्सहस्रारजातिकुलकोटि योनिप्रमुखशतसहस्राण्यष्टावपि दश खजचरा णामित्यादि खजचराणां जदंत कतिविधो योनिसंग्रहः प्रज्ञप्तः जगवानाह गौतम त्रिविधो योनिसंग्रहः प्रज्ञप्त स्तद्यथा अंमजाः पोतजाः संमूर्छिमाश्च अंमजा स्त्रिविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा स्त्रियः पुरुषा नपुंसकाश्च पोतजास्त्रिविधा स्तद्यथा स्त्रियः पुरुषा नपुंसकाश्च तत्र ये ते संमूर्छिमास्ते सर्वे नपुंसकाः शेषद्वारकला

मूल. णत्तं जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोमी उव्वट्टित्ता दोच्चं पुढविं गछइ णवजाईकुलकोमी जो णीपमुहसयसहस्सा नवंतीतिमक्खाया सेसं तहेव उरगपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणी

नाषा. पूर्वनी पेठे हावे उरपरिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनियानो प्रश्न पुछ्यो तेनो उत्तर जिम नुजपरि सर्प एटले घो प्रमुखने जिम कह्युं तिम जाणवुं पण तेमां आटलो विशेष जे स्थिति जघन्यपणे अंतर्मु हूर्त्तनी ने उत्कृष्टपणे पूर्वकोटी प्रमाणे जाणवी च्यवीने जावत् पांचमीपृथिवी पर्यंत हेठल जाय ने उप रि तो सहस्रारदेवलोक पर्यंत जाय दश जाति कुल कोटी प्रमुख शत सहस्र एटले लाख कह्यांठे हवे

पा. ३७४ पंतिना प्रागत नरं स्थितिश्यवनजातिकुलकोटिषु नानात्वं स्थितिर्जघन्येनांतर्मुहूर्त्त मुत्कर्षतः पूर्वकोटि च्यवनद्वारे अधःश्चितायां यावत्सप्तमी ऊर्द्ध यावत्सहस्रा

टीका. रः कुलकोटियोनि प्रमुखशतसहस्राणि अर्द्धत्रयोदशसार्द्धानि द्वादशेत्यर्थः चतुरिंद्रियाणां जदंत कति जाति कुलकोटियोनिप्रमुख शतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि- ग

गातनाद नवजाति कुलकोटियोनिप्रमुख शतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि एवं त्रींद्रियाणामष्टौ जातिकुलकोटियोनिप्रमुख शतसहस्राणि द्वींद्रियाणां सप्तजाति कुल

या एणं नते पुछा जहेव नुयगपरिसप्पाणं तहेव नवरं ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोमी

मूल. उव्वट्टित्ता जाव. पंचमिं पुढविं गछेइ दसजाई कुलकोमी चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिख्ख. पुछा:

चउपदथलचर पचेंद्रियतिर्यंचयोनियानो प्रश्न पुछ्यो तेनो उत्तर हे गौतम तेमनो जोनिसंग्रह बे प्रका

रनो कह्योछे एक जरायुज एटले गाय प्रमुख तथा संमूर्छिम हवे जरायुज त्रण प्रकारना कह्याछे स्त्री१ पु

भाषा. रुष२ नपुंसक३ ने जे संमुर्छिम ते सर्वे नपुसक जाणवा तेमनी केटली लेश्यायो छे इत्यादि शेष जिम पं

खीने कह्युं तिम जाणवुं पण स्थिति जघन्यपणे अंतर्मुहुर्त्तनी ने उत्कृष्टपणे त्रण पल्योपमनी। च्यवीने

कोटियोनिप्रमुखा शतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि इहजातिकुलकोटयो भिन्नजातीया स्ततो भिन्नजातीयाभिधानप्रसंगतो गंधांगानि भिन्नजातीयत्वात् प्ररूपयति केर पामित्यादि कति भदंत गंधांगानि क्वचित् गंधा इति पाठः तत्र पदैकदेशे पदसमुदायोपचारात् गंधा इति गंधांगानी ति द्रष्टव्यं प्रज्ञप्तानि तथा कति गंधांगश तानि प्रज्ञप्तानि भगवानाह गौतम सप्त गंधांगानि सप्त गंधांगशतानि प्रज्ञप्तानि इह सप्त गंधांगानि परिस्थूरजातिभेदादमूनि तद्यथा मूलं त्वक् काष्ठं निर्या

गो० दुविहा पं० तं० जराउया संमुछिमया जराउया तिविहा पं० तं० इत्थी पुरिसा नपुंसका तत्थणं जेते संमुछिमा ते सव्वेणपुंसका तेसिणं भंते जीवाणं कइ लेस्साउ पन्नत्ताउ सेसंजहा पक्खीणं

चोथीपृथिवी सुधी जाय दश जाति कुल कोटी जोनि प्रमुख लाख जाणवा हवे जलचर पंचेंद्रियतिर्यं चयोनियानो प्रश्न पुछ्यो तेनो उत्तर जिम भुजपरिसर्पने कह्युं तिम जाणवुं पण एटलो विशेष जे चवि ने जावत् हेठली सातमीपृथिवी सुधी जाय ने साढाबार लाख जाति कुल कोटि जोनि प्रवाह जाणवा हे भगवन् चतुरिंद्रियने जातिकुलकोटि जोनि प्रवाह केटला लाख कह्या? हे गौतम नव लाख जाति कुलको

पा. ३२५

टीका. सः पत्रं पुष्पं फलं च तत्र मूलं मुस्तावालककोशीरादि त्वक् सुवर्णछल्लीत्वचाप्रभृति काष्टं चंदनागरुप्रभृति निर्यासः कर्पूरादि पत्रं जातिपत्रतमालपत्रादि पुष्पं प्रियंगुनागरपुष्पादि फलं जातिफलकक्कोलकैलालवंगप्रभृति एतेच वर्णमाश्रित्य प्रत्येकं कृष्णादिभेदात् पंच पंच भेदा इति वर्णपंचकेन गुण्यंते जाता पंचत्रिंश न् गंधाश्रिताश्चापाये ते सुरभिगंधपरत्वेनैकेन गुणिता पंचत्रिंशत् जाता पंचत्रिंशदेव एकेनगुणिता तदेव भवतीति न्यायात् तत्राप्येकैकस्मिन् वर्णभेदे रसपंचेकं

मूल. णाणत्तं ठिई जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं उव्वट्टित्ता चउत्थं पुढविं गछंति दस

भाषा. टि जोनि प्रवाह जावत् कह्याछे तेंद्रियने आठ लाख जाति कुलकोटि जोनि प्रवाहजावत् कह्याछे ने बेइंद्रि यने सात लाख जाति कुलकोटि जोनि प्रवाह कह्याछे इहां जाति कुलकोटि योनि भिन्नजातिनोछे माटे भिन्न जातिना केहेवाना प्रसंगथी गंधनां अंग भिन्न जातिनां छे माटे तेनी प्ररूपणा करेछे हे भगवन् गं धांग केटलांछे कोइ जगाये गंध एटलो पण पाठछे त्यां गंधशब्दे करिने गंधनां अंग लेवां केमजे पदना एकदेशनुं ग्रहण करेछते उपचारथी पद समुदायनुं पण ग्रहण थायछे माटे तथा केटलां गंधांगशत कह्याछे

स्पर्शे भेदेन विवक्षितं प्राप्यते इति सा पंचविंशत् रसपंचकेन गुण्यते जातं पंचसप्ततं शतं यद्यपि वर्णपंचकोऽस्ति तथापि गंधांगेषु यथोक्तरूपेषु प्रशस्या व्य
का. वहारतश्चत्वार एव मृदुलघुशीतोष्णरूपास्ततः पंचसप्ततं शतं स्पर्शचतुष्टयेन गुण्यते जातानि सप्तशतानि उक्तं च मूल तय कट्ठ निज्जास पत्त पुप्फ फल मोय गं

जाई कुलकोडी जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया णं भंते पुछा जहा भुयगपरिसप्पाणं नवरं उव १
र. ट्टिता जाव अहेसत्तमिं पुढविं अद्ध तेरसजाई कुलकोडी जोणीपमुह जाव. पन्नत्ता चउरिंदियाणं

ए प्रश्न हे गौतम सात गंधांग सात गंधांगशत कह्यांछे हावे सात गंधांग जाति भेदे देखाडेछे मुल १
त्वचा २ काष्ट ३ निर्यास । रस ४ पत्र ५ पुष्प ६ फल ७ तेमां मूल एटले मोथवालो उशीर इत्यादि
। जाणवा १ त्वचा एटले सुवर्ण छाल इत्यादि जाति भेद जाणवा २ काष्ट एटले चंदन अगरु इत्यादि जा
णवां ३ नियार्स एटले कर्पूर प्रमुख जाणवां ४ पत्र एटले जाति पत्र तमाल पत्र प्रमुख जाणवां ५ पु
ष्प एटले प्रियंगु नागरफुल इत्यादि जाणवां ६ फल एटले जाईफल कंकोलां एलची लविंग इत्या

पा ३७८ गग गणाउत्तर नेया गंधंगमया सुणेयव्वा अस्या व्याख्यानरूपं गाथाद्वयं सुब्रा सुवण्णगल्ली अगरू वालो तमाल पत्तं च तहयापिंगू (जाईफलंचे) जाईए गंधं

टीका. गा गुणणाए मत्तसया पंचहिं वण्णेहिं सुरनिगंधेण रसपणगेणं तहफासेहिं यवगहिं मेत्तेहिं अंत्र जाईए गंधंगा इति जात्यजात्यन्नेदेनामूनि गंधांगानि शेषं

गंधि मरणगियाई कनिजदंत पुष्प जातिकुलकोटि योनिप्रमुख शतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि भगवानाह गौतम षोडशपुष्पजातिकुलकोटि योनिप्रमुखं शतसहस्रा

मूल. नंत केइ जाइ कुलकोमी जोणीपमुह सहस्सा पं. गो. नवजाईकुलकोमी जोणीपमुहसयसहस्सा जाव

दि ए सर्वने प्रत्येक२ काला प्रमुख पांच वर्ण भेदे गणिये तारे पांतरीश थाय एटले सातने पांच

नते गणीये तारे पांतरीश थाय हावे एक सुरभिगंध संघाथे गणिये तारे पण पांतरीशज थाय एवो न्या

भाषा. य छे माटे । तेमां पण एक एक वर्ण भेदने विषे पांच रस द्रव्य भेदे करिने जुदा२ छे माटे पांतरीशने

पांच रस वते गणिये तारे एकसो पंचोतेर १७५ थाय तेने वली आठ फरशछे तेमांथी व्यवहार वते च्यार

फरस लईये एटले मृदु१ लघु२ शीत३ उष्ण४ ए चार फरसवते एकसो पंचोतेरने गणिये तारे सातशे

टी. णि प्रज्ञप्तानि तद्यथा चत्तारि जलजानां पद्मानां जातिभेदेन तथा चत्वारि स्थलजानां कोरिंटकादीनां जातिभेदेन चत्वारि महागुल्मिकादीनां जात्यादीनां चत्वा रि महावृक्षाणां मधुकादीनामिति कइणमित्यादि कति भदंत वलयः कति वल्लिशतानि प्रज्ञप्तानि भगवानाह गौतम चतस्रोवलयस्त्रगपुप्पादि मूलभेदेन ताश्च मूलटीकाकृता नैविक्तपेन न व्याख्याता इति संप्रदायादवसेयाः चत्वारि वल्लिशतान्यवातरजातिभेदेन कइणमित्यादि कति भदंत लताः कतिलताशतानि भगवा ४

मू. समरकखाया तेइंदियाणं पुण गो० अठ जाईकुल० जाव समरकखाया बेइंदियाणं भंते कइ जाइ पुण गो० सत्तजाईकुलकोमी जोणीपमुहसयसहस्सा कइणं भंते गंधगा पन्नत्ता कइणं भंते गंधसयायं गो०

भा. ७०० थाय माटे सातशे गंधांग कह्यां छे हे भगवन् फुल जातिनी कुलकोटी योनि प्रवाह केटला लाख कही छे? हे गौतम सोल लाख फुलजातिनी कुलकोटि जोनि प्रवाह कही छे चार लाख जलमां थएलां कमल जातिना चार लाख थलजना एटले कोरंटादिक जाति भेदे करिने कह्या छे चार लाख महा वृक्ष एटले महुमा प्रमुखना चार लाख महागुल्म एटले जाई प्रमुखना एवी रीत्यें सोल लाख ८

टीका.

पगा गग्गाउत्तर जेया गंधंगसया मुणेयव्वा अस्या व्याख्यानरूपं गाथाद्वयं मुद्रा मुवण्णगल्ली अगरु वालो-तमाल पत्तं च तहयपियंगू (जाईफलंचे) जाईए गंधं गा गुणाणा मत्तमया पंचहिं वण्णेहिं सुरभिगंधेण रसपणगेणं तहफासेहिं यवग्गहिं मेत्तेहिं अंत्र जाईए गंधंगा इति जात्यंजात्यभेदेनामूनि गंधांगानि शेषं पारि ं करणगित्यादि कनिजदंन पुण्य जातिकुलकोटि योनिप्रमुख शतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि भगवानाह गौतम षोडशपुष्पजातिकुलकोटि योनिप्रमुख शतसहस्रा

मूल.

भंते केइजाइ कुलकोमी जोणीपमुह सहस्सा पं. गो. नवजाईकुलकोमी जोणीपमुहसयसहस्सा जाव

भाषा.

दि ७ ए सर्वने प्रत्येकश् कालो प्रमुख पांच वर्ण भेद गणिये तारे पांतरीश थाय एटले सातने पांच वते गणीये तारे पांतरीश थाय हावे एक सुरभिगंध संघाथे गणिये तारे पण पांतरीशज थाय एवो न्याय छे माटे । तेमां पण एक एक वर्ण भेदने विषे पांच रस द्रव्य भेदे करिने जुदा२ छे माटे पांतरीशने पांच रस वते गणिये तारे एकसो पंचोतेर १७५ थाय तेने वली आठ फरशछे तेमांथी व्यवहार वते च्यार फरस लेईये एटले मृडु१ लघु२ शीत३ उष्ण४ ए चार फरसवते एकसो पंचोतेरने गणिये तारे सातशे

का. णि प्रज्ञप्तानि तद्यथा चत्वारि जलजानां पद्मानां जातिभेदेन तथा चत्वारि स्थलजानां कोरिंटकादीनां जातिभेदेन चत्वारि महागुल्मिकादीनां जात्यादीनां चत्वा
रि महावृक्षाणां मधुकादीनामिति कइणमित्यादि कति भदंत वल्लयः कति वल्लिशतानि प्रज्ञप्तानि भगवानाह गौतम चतस्रोवल्लयस्त्रपुष्पादि मूलभेदेन ताश्च
मूलटीकाकृता नैविस्तरेण न व्याख्याता इति संप्रदायादवसेयाः चत्वारि वल्लिशतान्यवांतरजातिभेदेन कइणमित्यादि कति भदंत लताः कति लताशतानि भगवा

ूल. रामक्खाया तेइंदियाणं पुछा गो० अठ जाईकुल० जावसमक्खाया बेइंदियाणं भंते कइजाइ पुछा गो०
सत्तजाईकुलकोमी जोणीपमुहसयसहस्सा कइणं भंते गंधगा पन्नत्ता कइणं भंते गंधसयायं गो०

---

७०० थाय माटे सातशे गंधांग कह्यां छे हे भगवन् फुल जातिनी कुलकोटी योनि प्रवाह केटला लाख
पा. कह्या छे हे गौतम सोळ लाख फुलजातिनी कुलकोटि जोनि प्रवाह कह्या छे चार लाख जलमां थएलां
कमल जातिना चार लाख थलजना एटले कोरंटादिक जाति भेदे करिने कह्या छे चार लाख म
हा वृक्ष एटले महुडा प्रमुखना चार लाख महागुल्म एटले जाई प्रमुखनी एवी रीत्ये सोळ लाख

१. ३७७

टीका.

शाह गौतम अष्टौ लता नागलताद्या मूलभेदेन तान्यपि संप्रदायादवसातव्या मूलटीकाकारेणाव्याख्यानात् अष्टौ लताशतानि प्रज्ञप्तानि अवांतरजातिभेदेन कइणामि ...पापि कति भदन्त हरितकायाः कति हरितकायशतानि प्रज्ञप्तानि भगवानाह गौतम त्रयो हरित कायाः प्रज्ञप्ता जलजाः स्थलजाः उभयजाः एकैकास्मिन् शतमवांतर भेदानामिति त्रीणि हरितकायशतानि फलसहस्सं चेत्यादि फलसहस्सं च वृंतबन्धाना वृंताकप्रभृतीनां फलसहस्सं च नालबन्धानां तेविसब्बे इत्यादि तेपिसर्वभेदा

मूल.

सत्तगंधगा सत्तगंधसया पन्नत्ता कइणं भंते पुप्फजाइकुलकोमीजोणीपमुहसयसहस्सा पं० तं०

भाषा.

जाणवा हे भगवन् केटला वेलीयो वल्लिशत केटला सो प्रकार कह्या छे! हे गौतम च्यार प्रकारनी वल्लियो फुलमालादि मूल भेदे कहीछे ते वात मूल टीका करनारे जुदी२ व्याख्या नथी करी ते संप्रदायथी जाणवी च्यार वल्लीशत एटले च्यारशे प्रकारनी वेलीयो अवांतर जातिभेदथी जाणवी हे भगवन् केटला प्रकारनी लतायो केटलां लतानां शेंकमां कह्यांछे! हे गौतम आठ प्रकारनी लतायो नाग लतादिक मूल जातिभेदे कहीछे ते पण मूल टीकाकारे व्याख्यान नथी करी ते संप्रदा

मविशब्दादन्येपि तथाविधा हरितकायमेवावतरंति हरितकाये;तर्जवंति हरितकायोपि वनस्पतौ वनस्पातिरापि स्थावरे स्थावरा मपि जीवेषु तत एवं समनुगम्यमा ना मथा तथा जात्यंतर्जावेन स्वत एव स्वतएव सूत्रतस्तथासमनुग्राह्यमाणाः समनुग्राह्यमाणाः परेण सूत्रत एव समनुप्रेक्ष्यमाणाः२ मनुप्रेक्ष्या मर्थालोचन

चत्तारि जलयराणं चत्तारिथलयराणं चत्तारिमहारुख्वाणं चत्तारिमहागुम्मियाणं कइणं नंते वल्लीउ कइवल्लीसया पं० गो० चत्तारि वल्लीउ चतारि वल्लिसया पन्नत्ता कइणं नंते लयाउ कइलयसया पं.

यथी जाणवी ने चारशे वल्लियो पण अवांतर वल्लि जातिना नेदथी जाणवी । हे नगवन् केटलां हरितका यछे केटलां हरितकाय शत कह्यांछेः हे गौतम त्रण हरितकाय कह्यांछे जलथी थयेलां१ थलथी थयेलां२ उन्नयथी एटले जल थल थकी थयेलां३ हरितकाय कह्यांछे एक एकने विषे सो सो अवांतर जातिन्नेदे करिने त्रणसो जाणवा फलनां सहस्र हजारो वींटे बांधेलां वृंताक प्रमुखनां तथा फलनां सहस्र हजा रो नाले बांधेलां कमल प्रमुखनां ते सर्वे नेद हरितकायमां जाणवा अपि शब्देकरिने बीजाय पण ते

पा ३७८ टीका.	रूपणा तथा समवतारितमाना:२ तथा२ तंत्रयुक्तिभिः एतयोरेव द्वयोः काययोः समवतरंति तद्यथा त्रसकाये स्थावरकाये च एवमेवेत्यादि एवमेव उक्तेनैव प्रकारेण सूत्राकारेणं पूर्वापरंच पूर्वापरं येन सहपूर्वापरं उक्तप्रकार स्तेन उक्तविषयपौर्वापर्यालोचनयेति भावार्थः आजीवमदिट्ठं तेणंति आसकलजगदाभि व्याप्या जीवाना यो दृष्टान्तः परिच्छेदः स आजीवदृष्टान्तस्तेन सकलजीवनिदर्शनेनेत्यर्थः आह च मूलटीकाकार आजीदृष्टांतेन सकलजीवनिदर्शनेनेति चतुरशीतिजाति
मूल.	गो. अठलयाउ अठलयसया पन्नत्ता कइणं भंते हरियकाया कइहरियकायसया पं. गो.तउहरियं
भाषा.	प्रकारना हरितकाय जे ते हरितकायमां जाणवा हरितकाय पण वनस्पतिने विषे अंतर्भाव पामे छे वनस्पति पण थावरने विषे अंतर्भाव पामेछे थावर पण जीवने विषे अंतर्भाव पामेछे माटे ए प्रकारे तेहवी तेहवी जातिमां तेम तेम अंतर्भाव करि पोत पोतानी मेळेज जाणवुं तथा सूत्रथी पण तेम तेम ग्रहण करवुं परजे तेणे सूत्रथी ग्रहण कराव्या छतां ए प्रकारे आलोचना करचा छतां ए प्रकारे सम्यक् सारी रीते चिंतवन करचा छतां ते ते शास्त्र युक्तिवते ए बे कायने विषे निश्चे अंतर्भाव पामे छे एक त्रस

टीका.

मूल.

भाषा.

चतुरशीतिसंख्योपादानमुपलक्षणं तेनान्यान्यपि जातिकुलकोटि योनि
कुलकोटि योनिप्रमुखशतसहस्राणि जवंतीत्याख्यातं मया अन्यैश्च ऋषजादिजिरिति अत्र चतुरशीतिसंख्योपादानमुपलक्षणं तेनान्यान्यपि जातिकुलकोटि योनि प्रमुखशतसहस्राणि वेदितव्यानि तथाहि पक्षिणां द्वादशजातिकुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि जुजपरिसर्पाणां नव उरगपरिसर्पाणां दश चतुष्पदानां दश जलच

काया तजहरियकायसया पन्नत्ता फलसहस्सं च बेंटबद्धाणं फलसहस्सं च नालबद्धाणं तेवि सव्वे हरि यकायमेवसमोयरंति तेएवं समणुगम्ममाणा एवं समणुगाहिज्जमाणा एवं समणुपोहिज्जमाणा एवं

काय ने बीजा थावरकाय एने ए सर्व जेद अंतर्जाव पामेछे ए प्रकारे पूर्वापर आलोचवेकरिने विचारवे करिने समस्त जगतने विषे आजिव्यापिने रहेला जीवोनो दृष्टांत परिछेद एटले सकल जीवनुं देखाड युं ते आ जीव दृष्टांते परिछेद कहिये एटले चोराशी लाख जाति कुलकोटि योनि प्रवाह ए प्रकारे कह्यो आ जगाए चोराशी लाख संख्यानुं ग्रहण कह्युं ते उपलक्षणथी जाणवुं एटले उलखावा मात्र छे ते माटे बीजी पण जाति कुलकोटियोनि प्रमुख एटले प्रवाह शतसहस्र शंकाजोगमे जाणवां ते कहे छे पंखी

पा ३२८ टीका. गणामर्द्धत्रयोदशानि चतुरिंद्रियाणां नव त्रींद्रियाणामष्टौ द्वींद्रियाणांसप्त पुष्पजातीनां षोडश एतेषां चैकत्र मीलने त्रिनवति जातिकुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्रा णि सार्द्धानि भवंति ततश्चतुरशीति संख्योपादानमुपलक्षणमवसेयं नचैतत् व्याख्यातं स्वमनीषिकाविजृंभितं यतउक्तं चूर्णौ आजीवगादिठंते यांति अशेष जीव राशिरेव चतुरशीतिजातिकुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्रा एतत् प्रमुखा अन्येपि विद्यंते इति ॥ कुलकोटिविचारणे विशेषाधिकारादिमानान्यप्याधिकृत्याविशेषप्र

मूल. समणुचिंतिज्जमाणा एएसु चेव दोसु काएसु समोयरंति तंतसकाए चेव थावकाए चेव एवमेवसपुव्वा वरेणं आजीवादिठं तेणं चउरासीइ जाइकुलकोडी जोणीपमुहसयसहस्सा भवंतीति समक्खाया ॥

भाषा. नां १२ बार लाख कुलकोटि योनि प्रवाह । भुजपरिसर्पनां ए नव लाख कुल० उरपरिसर्पनां १० लाख कु० चउपदनां १० दश लाख कु० जलचरनां १२॥ साढावार लाख कु० चउरिंद्रिनां ए नव लाख कु० तेंद्रियनां ८ आठ लाख कु० बेंद्रियनां ७ सात लाख कु० फुल जातिनां १६ लाख कु० ए सर्व मलिने साढि त्राणु लाख जाति कुलकोटि योनि प्रवाह थाय माटे ए व्याख्यान पोतानी बुद्धिथी नथी कर्यु चू

का. अथाह भत्तिणंनंते इत्यादि अस्तीति निपातो बह्वर्थ संति विद्यंते णमिति वाक्यालंकारे विमानानि विशेषतः पुण्यप्राणिभिर्मन्यंते तद्गतसौख्यानुभवनेनानुभूयंत इति विमानानि तान्येव नामग्राहमाह अर्चीषि अर्चिरावर्त्तानि एवं अर्चिरावर्त्तानि अर्चिःप्रभाणि अर्चि.कांतानि अर्चिर्वर्ण्णानि अर्चिर्लेश्यानि अर्चिर्ध्वजानि अर्चिःशृंगाराणि अर्चि.शिष्टानि अर्चिःकूटानि अर्चिरुत्तरावतंसकानि सर्वसंख्यया एकादशनामानि भगवानाह हंता अत्थि हंतेति प्रत्यवधारणे अस्तीति निपातो बहू

भ. ॥ अत्थिणं भंते विमाणाइं सोत्थीणि सोत्थियावत्ताइं सोत्थीयप्पभाइं सोत्थियकंताइं सोत्थियवन्नाइं सोत्थियलेस्साइं सोत्थियझयाइं सोत्थिसिंगाराइं सोत्थिकुंभाइं सोत्थिसिद्धाइं सोत्थुत्तरवडिंसगा

पा. णिाकार पण एमज कहे छे ॥कुलकोटिनी विचारणाने विषे विशेष अधिकारथी विमानना अधिकारे करीने विशेष प्रश्न कहे छे हे भगवन् घणा विमान स्वस्तिक एटले साथिया सरखां १ तथा स्वस्तिकावर्त्त साथियानी पेठे वलीयांवालां २ तथा स्वस्तिकप्रभा साथियानी पेठे कांतिवालां ३ तथा साथियानी पेठे मनोहर ४ तथा साथिया सरखावर्णना ५ तथा साथिया सरखी लेश्यावालां ६ तथा साथियानी

ग्रा. ३३०

टीका.

णं तंमोमानि विमानानीतिगम्यः के महालयाणामित्यादि किं महांति कियत्प्रमाणमहत्त्वानि णामिति पूर्ववत् भदंत तानि विमानानि प्रज्ञप्तानि भगवानाह गौ
तम जंबुद्दीवेणं इत्यादि जंबुद्वीपेसर्वोत्कृष्टे दिवसे सर्वाभ्यंतरे मंडले वर्त्तमानः सूर्यो यावति क्षेत्रे सूर्य उदेति यावति क्षेत्रे सूर्योऽस्तमुपयाति एतावंति त्रीणि
अवकाशांतराणि उदयास्तप्रमितमधिकृतं क्षेत्रं त्रिगुणमित्यर्थः असदेतत् बुद्ध्या परिभावनीयमेतत् यथा एकस्याविवक्षितस्य देवस्य एको विक्रमः स्यात् तत्र जं

मूल.

इं हंता अत्थि तेणं भंते विमाणा केमहालया प० गो० जावतियं चणं सूरिए उदेइ जावति चणं सू
रिए अत्थमेइ एवतियाइं तिन्नोवासंतराइं अत्थे गइयस्स देवस्स एगविक्कमेसिया सेणं देवताए

भाषा.

पेठे ध्वजावाळां ७ तथा साथिया सरखा शृंगारवाळां ८ तथा साथियानी पेठे सिद्ध एटले स्पष्ट छे ए
तथा साथियानी पेठे कुट छे १० तथा साथियानी पेठे उत्तरावतंसक छे ११ ए प्रश्न तेनो उत्तर हे गौ
तम एमज छे हे भगवन् विमान केटला,मोटा आलयवाळा छे! हे गौतम जंबुद्वीपने विषे सर्वोत्कृष्ट दिवसने
विषे एटले सर्वथी मोट दिवसे सघळे अभ्यंतरे वर्त्तमान एहवो सूर्य जेटला क्षेत्रमां उदय पामे तथा अस्त

का. द्वीपे सर्वोत्कृष्टे दिवसे सूर्य उदेति सप्तचत्वारिंशत् सहस्राणि द्वे शते त्रिषष्ट्यधिके योजनानामेकस्य योजनस्य एकविंशतिः षष्टिभागाः एतावति क्षेत्र उक्तंच
नागानीगनलस्मा दोण्णि सया जोयणाण तेवठा इगवीससाठिभागा कक्कम माइंमि पेछ नरा ॥ ४७२६३।२१ एतावत्ये वच क्षेत्रे तस्मिन् सर्वोत्कृष्टे दिने अ
स्त मुपयाति तत एतत् क्षेत्रं द्विगुणीकृतमुदयास्तापातरालप्रमाणं जवति तच्चैतावत् चतुर्नवतिः सहस्राणि पंचशतानि षट् विंशत्यधिकानि योजनस्य द्वाचत्वा

उक्किठाए तुरियाए जावदिव्वाए देवगईए वीइवयमाणे२ जावएगाहं वा दुयाहं वा उक्कोसेणं छ
सू. म्मासे वीईवइज्जा अत्थेगईयं विमाणं वीईवइज्जा अत्थेगइयं विमाणं नो वीईवइज्जाए महालयाणं

पासे एहवा त्रण अवकाशांतर त्रण क्षेत्र एवमां छे एम बुद्धिये विचार करवो एटलो एक देवनो विक्रम होय एट
ले ... होय। जंबुद्वीपने विषे सर्वोत्कृष्ट दिवसे सूर्य उगतेथी मान सम्मतालीस हजार बसेत्रेसठ योजन
भा. ... ... एक योजनना साईठिया एकवीस जाग ४७२६३। २१ । एटलेज क्षेत्रे ते उत्कृष्ट दिन
... ...णुं करेथके उदय आथमवाने अंतराले एटले वच्चे क्षेत्र परिमाण थाय ए४५२६ ।

टीका. शिंशत् षष्ठिभागाः २८५२६।६० । ४२ एतावत्त्रिगुणीकृतं यथोक्त विमानपरिमाण करणाय देवस्य एको विक्रमः परिकल्पते सचैवं प्रमाणः द्वे लक्षे अष्टा शि. सहस्राणि पंचशतानि अशीत्यधिकानि योजनानामेकस्यचयोजनस्य षष्टिभागाः षट् २८३५८०६ इति सेणं देवे इत्यादि सविवक्षितो देव स्तया सकल त्वरानिरूपया उत्कृष्टया त्वरितया चपलया चरुया शीघ्रया उद्धतया जवनया छेकया दिव्यया देवगत्या अमीषां पदानामर्थः प्रागवद्भावनीयः व्यतिव्रजन् जघ न्यत एकाहं वा द्व्यहं वा यावत् उत्कर्षेन. षण्मासान् यावत् व्यतिव्रजेत् गछेत् तत्रैवं गमने अस्त्येतन् यथाएकं किंचन विमानं पूर्वोक्तानां विमानानां मध्ये व्य

मूल. णो तेविमाणा पन्नत्ता । अत्थिणं भंते विमाणाइं अच्चीणि अच्चिरावताइं तहेव जाव अच्चुत्तरवडिंस

भाषा. ६० । ४२ ए क्षेत्रमान त्रणगुणु करवुं तेवारे यथोक्त विमाननुं परिमाण करवाने अर्थे देवनो एक विक्रम एटले फर कलपवो तेनुं परिमाण आटलुं थाय जे बे लाख त्राशी हजार पांचशे ने एशी योजन एक योजनना साईठीया भाग ६ छ एटलुं मान थाय हावे ते देवता उत्कृष्ट गतिये करिने उतावली गतिये करिने जावत् दिव्यगति देवतानी गति त्यां सुधीनो पाठ लेवो एवी गतिये जतो थको २ जावत् ए

का. गिच्छेत् व्यतिक्रमेत् तस्यपारं लभेतेतिभावः तथा ऽस्त्येतत् यथा एककं विमानं न व्यतिव्रजेत् न तस्य पारं लभेत उभयत्रापि आसावेकवचनं ततोयं भावार्थः उ त्कृष्टप्रमाणेनापि क्रमेण यथोक्तरूपयापि च गत्या षण्मासानपि यावदधिकृतो देवो गच्छति तथापि केषाञ्चिद्विमानानां पारं लभेत केषांचिन्न लभेत इति एतावन्म हान्ति तानि विमानानि प्रज्ञप्तानि हे श्रमण हे आयुष्मन् अत्थिणं भंते इत्यादि संति भदंत विमानानि स्वस्तिकानि स्वस्तिकावर्त्तानि स्वस्तिकप्रभाणि स्वस्ति

मू. काइं हंता अत्थि तेविमाणा के महालया पं० गो० एवं जहा सोत्थिणी नवरं एवं इयाइं पंच उवासंतराइं अत्थेगइयस्स देवस्स एके विक्कमेसिया सेसं तं चेव । अत्थिणं भंते विमाणाइं का

भा. क दिवस बे दिवस उत्कृष्टपणे छ मासे तेहनो पार पामे एक कोइ विमानने अतिक्रमे पार पामे एक कोइ विमानने न अतिक्रमे न पार पामे एवां महालय मोटां ठेकाणांवाळां हे गौतम ते विमान कह्यां छे हे भगवन् अर्चि एवा नामनां अर्चि आवर्त्त तेमज जावत् अचिरावसंतक ए प्रकारे अगीयार भेदे विमान छे! हे गौतम एज प्रकारे ते विमान छे ने जेम स्वस्तिक विमान महालय एटले मोटां क

. ३३०

टीका. स्वकाभानि स्वस्तिकवर्णानि स्वस्तिकलेश्यानि स्वस्तिकध्वजानि स्वस्तिकशृंगाराणि स्वस्तिकशिष्टानि स्वस्तिककूटानि स्वस्तिकोत्तरावतंसकानि हंता अस्तीत्या
दि नवरं प्राकृ नवमन वा इयाइं पंचउवासंतराइं इति वक्तव्यं उदयास्तापांतरालक्षेत्रं पंचगुणं क्रियते इति भावः अत्थिणं भंते इत्यादि संति भदंत विमा
नानि कामावर्तानि कामप्रभाणि कामकान्तानि कामवर्णानि कामलेश्यानि कामध्वजानि कामशृंगाराणि कामशिष्टानि कामकूटानि कामोत्तरावतंसकानि

मूल. माइं कामावत्ताइं जाव कामुत्तरविंसगाइं हंता अत्थि । तेणं भंते विमाणा के महालया
पं० गो० जहा सोत्थीणि नवर सत्तउं वासंतराइं विक्कमे सेसं तहेव । अत्थिणं भंते वि

भाषा. ह्यां तिमज जाणवां पण तेमां आटलो विशेष जे अवकाशांतर पांच एवडां क्षेत्र छे एकेक देवता होय
तेनो एक विक्रम फेर होय एटले प्रथम जे सूर्यना उदय अस्त वच्चे क्षेत्र कह्युं छे तेने पांचघणुं करवुं
शेष पूर्वनी पेठ जाणवुं हे भगवन् कामनामे कामावर्त्तनामे जावत् कामोत्तरावतंसकसुधीनो
ए प्रकारनां विमान छे हे गौतम एजं प्रकारनां छे महालय मोटां स्थानवालां मोटां जेम स्व

हंता भवतीत्यादि सर्वं पूर्ववत् नवरमत्रोदयास्तापांतराळक्षेत्रं सप्तगुणं वर्त्तव्यं शेषं तथैव । अत्थिणं भंते इत्यादि संति भदंत विजय वेजयंतापराजितानि विमानानि
हंता भवतीत्यादि प्राग्वत् नवरमत्र एव इयायं नव उवा संतरा इति वक्तव्यं शेषं तथैव उक्तंच जाव उदेइ सूरो जावय सो अछमेइ अवरेणं तिगपणसत्तनवगुणं
काउं पत्तेय पत्तेयं ॥ सीयाळीससहस्सा दोयसयातोयपणाण तेवठा इगवीस सठिभागा कक्कमरमाइंमि पेठनरा ॥ एयं ठगुणं काउं गुणिज्जए तिपणसत्तमाईहि आग

माणाइं विजयाइं वेजयंताइं अपराइयाइं हंता अत्थि तेणं भंते विमाणा किं (के) म
हालया गो० जावतियं सूरिए उदेइ एव इयाइं नव उवासंतराइं सेसं तं चेव नोचेवणं ते विमाणा

स्तिक विमान कह्यां तेम जाणवां पण तेमां आटलो विशेष सात अवकाशांतरनो विक्रम एटले क्षेत्र
सातघणुं करीये एटलो विक्रम जाणवो शेष वर्जी पूर्वनी पेठे हे भगवन् घणां विमान विजय एवे ना
मे वैजयंत नामे जयंत नामे अपराजित नामे छे हे गौतम एमज छे ते विमान केटलां मोटां छे ए प्रश्न
तेनो उत्तर हे गौतम जेटला क्षेत्रमां सूर्य उगे ए प्रकारना माने एहवो अवकाशांतर नव जाणवां ए

. ३३७
टीका. कांतानि स्वस्तिकवर्णानि स्वस्तिकलेश्यानि स्वस्तिकध्वजानि स्वस्तिकशृंगाराणि स्वस्तिकशिष्टानि स्वस्तिककूटानि स्वस्तिकोत्तरावतंसकानि हंता अस्तीत्या
दि समग्रं प्राग्वत् नवरमत्र एतावंति पंचावकाशांतराणि इति वक्तव्यं उदयास्तमयांतरालक्षेत्रं पंचगुणं क्रियते इति भावः अस्तिणं भंते इत्यादि संधि पदांत विमा
नानि कामावर्त्तानि कामप्रभाणि कामकांतानि कामवर्णानि कामलेश्यानि कामध्वजानि कामशृंगाराणि कामशिष्टानि कामकूटानि कामोत्तरावतंसकानि

मूल. माइं कामावत्ताइं जाव कामुत्तरवडिंसगाइं हंता अत्थि । तेणं भंते विमाणा केमहालया
पं० गो० जहा सोत्थीणि नवरं सत्तउं वारांतराइं विक्कमे सेसं तहेव । अत्थिणं भंते वि

भाषा. ह्यां तिमज जाणवां पण तेमां आटलां विशेष जे अवकाशांतर पांच एवडां क्षेत्र छे एकेक देवता होय
तेवो एक विक्रम फेर होय एटले प्रथम जे सूर्यना उदय अस्त वच्चे क्षेत्र कह्युं छे तेने पांचघणुं करवुं
ए भाव छे शेष पूर्वनी पेठे जाणवुं हे भगवन् कामनामे कामावर्त्तनामे जावत् कामोत्तरावतंसकसुधीनो
पाठ लेवो ए प्रकारनां विमान छे हे गौतम एजं प्रकारनां छे महालय मोटां स्थानवालां मोटां जेम स्व

टीका.

कं॥ सत्तेत्यादि मर्ी पूर्ववत् नवरमत्रोदयास्तान्तरारक्षेत्रं सप्तगुणं वक्तव्यं शेषं तथैव । अत्थिणं भंते इत्यादि संति भदंत विजय वेजयंतापराजितानि विमानानि

नना नवेत्यादि प्राग्वत् नवरमत्र एव इयाय नव उवा संतरा इति वक्तव्यं शेषं तथैव उक्तंच जाव उदेइ सूरो जावय सो अङमेइ अवरेणं तिगपणसत्तनवगुणं

काउं पत्तेय पत्तेयं ॥ सीयालीससहस्सा दोयसया जोयणाण तेवठा इगवीस सठिभागा कक्खडमाइंमि पेठनरा ॥ एयं डगुणं काउं गुणिज्जए तिपणसत्तमाईहि आग

मूल.

माणाइं विजयाइं वेजयंताइं अपराइयाइं हंता अत्थि तेणं भंते विमाणा किं (के) म

हालया गो० जावतियं सूरिए उदेइ एव इयाइं नव उवासंतराइं सेसं तं चेव नोचेवणं ते विमाणा

भाषा.

स्तिक विमान कह्यां तेम जाणवां पण तेमां आटलो विशेष सात अवकाशांतरनो विक्रम एटले क्षेत्र

सातघणुं करीये एटलो विक्रम जाणवो शेष बधुं पूर्वनी पेठे हे भगवन् घणां विमान विजय एवे ना

मे वैजयंत नामे जयंत नामे अपराजित नामे छे हे गौतम एमज छे ते विमान केटलां मोटां छे ए प्रश्न

तेनो उत्तर हे गौतम जेटला क्षेत्रमां सूर्य उगे ए प्रकारना माने एहवो अवकाशांतर नव जाणवां ए

पा. ३३३

टीका. य एतेन लघं कया वाणिमाणं विमाणाणि । तथापि विक्रमेणपि संताने गच्छंति अंति नम्मागं तनपि न पिऊंति यारं केसिंचि सुग विमाणाणं महयां मृतीयाप तिव्वो तिरियग्योनाधिकारे प्रथम उद्देशकः ॥ उक्त प्रथमोद्देशक इदानीं द्वितीयसमारभ्यते तस्य चेदमादिसूत्रं कइविहाणमित्यादि. कतिविधा भदंत संसारसमापन्न

मूल. वीईवएज्जाएमहालयाणं विमाणा पन्नत्ता समणाउसो तिरिक्खजोणियपढमो उद्देसउ समत्तो ॥ कइविहाणं भंते संसारसमावन्नगा जिवा पं० गो० छविहा संसारसमावन्नगा जीवा पं० तं० पु

भाषा. नफां मोटां ए विमान छे शेष बीजुं पूर्वनी पेठे निश्चे जाणवुं हे श्रमण हे आउखावंत ए प्रकारे त्रीजी प मित्तीमां तिर्यंचयोनिना अधिकारने विषे पेहेलो उद्देशो समाप्त थयो॥ तिर्यंच योनिनो पेहेलो उद्देशो कह्या पछी बीजो उद्देशो कहेवाना आरंभने विषे कहेलुं आ प्रकारनुं सूत्र छे ते केहे छे हे भगवन् केट ला प्रकारना संसारने पाम्या एहवा संसारी जीव कह्या छे हे गौतम छ प्रकारना संसारी जीव कह्या छे जीव एटले प्राणनुं धारण करे ते जीव कहीये ते प्राण बे प्रकारना द्रव्यप्राण ने भावप्राण द्रव्य

टीका. गात्जीवाः प्रज्ञप्ताः भगवानाह गौतम षड्विधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा पृथिवीकायिका यावत्त्रसकायिकाः अथ केते पृथिवीकायिकाः इत्यादि प्रज्ञापनागतं प्रथमं प्रज्ञापनापदं निरवशेषं वक्तव्यं यावदंतिमं सेत्तं देवा इति पदं संप्रति विशेषाभिधानाय भूयोपि पृथिवीकायविषयं सूत्रमाह कइविहाणमित्यादि कतिविधाणमिति

मूल. ढविकाईया जाव तसकाईया सेकिंतं पुढविक्काईया पु० डुविहा पं० तं० सुहुमपुढविकाईया बादरपुढविकाइया सेकिंतं सुहुमपुढविकाइया २ डुविहा पं० तं० पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्तं सुहुमपुढविकाइया सेकिंतं बादरपुढविकाइया२ डुविहा पं० तं० पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय एवं

भाषा. प्राण दश प्रकारना पांच इंद्रियो ५ मन वचन काया त्रण योग बल ८ उश्वास निश्वास ए आउखु १० ए दश प्राण थकी वियोग करे ते हिंसा ए भाव बे भावप्राण ते ज्ञानादिक जाणवा हवे छ प्रकारना जीव कहे बे पृथिवीकायिकथी आरंभिने त्रसकाय पर्यंत एटले पृथिवीकायिक १ अप्कायिक २ तेजःकायिक ३ वायुकायिक ४ वनस्पतिकायिक ५ त्रसकायिक ६ हावे पृथिवीकायिक केटला प्रकार

 पृथिवी नां पृथिवी प्रज्ञप्ता भगवानाह गौतम षट्विधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा श्लक्ष्ण पृथिवी मृद्वी चूर्णितलोष्टकल्या, शुद्धपृथिवी पर्वतादिमध्ये, मनः शिला

मूल. जहापन्नवणाए सण्हा सेत्तविहा पन्नत्ता खरा अणेगविहा पन्नत्ता जावअसंखेज्जा सेत्तं बादरपुढविकाइया सेत्तंपुढविकाइया । एवं चेव जहापन्नवणा तहेव निरया वाससंन्नाणियव्वं जाववणप्फइकाइया एवं जत्थिको तत्थ सिय संखिज्जा सियअसंखिज्जा सियअणंता सेत्तं बादरवणस्सइका

भाषा. ना पृ॰ बे प्रकारना सूक्ष्म पृथीवीकायिक १ बादर पृथिवीकायिक२ सूक्ष्म पृथिवीकायिक केटला प्रकारना उ॰ सू॰ बे प्रकारना एक पर्याप्ता ने बीजा अपर्याप्ता ए प्रकारे सूक्ष्म पृथिवीकायिक कह्या हावे बादर पृथिवीकायिक केटला प्रकारना उत्तर. बाद॰ बे प्रकारना एक पर्याप्ता ने बीजा अपर्याप्ता एप्रकारे जेम पन्नवणा सूत्रमां कह्युं छे तेम केहेवुं हावे सूक्ष्म मृदु पृथिवीकायिक सात प्रकारना कह्या छे खर अनेक प्रकारना कह्या छे जावत् असंख्याता कह्या छे ए प्रकारे बादर पृथिवीकायिक कह्या ए प्र

टीका. लोकप्रतीताः वालुका सिकतारूपा शर्करा मुरुंबपृथिवी खरापृथिवी पाषाणादिरूपा अधुना एतासामेव स्थितिनिरूपणार्थमाह । सण्हपुढविकाइयाणमित्यादि श्लक्ष्णपृथिवीकायिकानां भदंत कियंतं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता भगवानाह गौतम जघन्येनांतर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेत एकं वर्षसहस्रं एवमन्येनाभिलापेन शेषाणामपि पृ ६

मूल: इया सेत्तं वणप्फइ काइया सेकिंतं तसकाइयाऽ चउव्विहा पं० तं. बेइंदियाण तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया सेकिंतं बेइंदिया ऽ अणेगविहा पन्नता एवं जहेव पन्नवण्णाए तहेव निरवसेसं भा

भाषा. कारे पृथिवीकायिक निश्चे जाणवा पन्नवणा सूत्रनुं सघलुं पेहेलुं पद आ जगाये केहेवुं जावत् वनस्पतिकाय एम जावत् जिहां सुधी एकछे शुं संख्याताछे शुं असंख्याताछे शुं अनंताछे तिहां पर्यंत ए प्रकारे ८
वादरवनस्पतिकाय जाणवा हावे त्रसकाय केटला प्रकारना उ० त्र० च्यार प्रकारना बेइंद्रिय तेइंद्रिय चउरिंद्रिय पंचिंद्रिय हावे बेरिंद्रि केटला प्रकारना उ० बे० अनेक प्रकारना एम सघलुं जिम पन्नवणा सूत्रमां कह्युं छे तेम जावत् सर्वार्थसिद्धदेव तिहां सुधीनो पाठ लेवो ए प्रकारे अनुत्तरोपपातिकदेव

।तिर्यग्गामनया गाथया उत्कृष्टमनुगंतव्यं तामेव गाथामाह सण्हाय इत्यादि श्लक्ष्णापृथिव्या एकं वर्षसहस्रमुत्कर्षतः स्थितिः शुद्धपृथिव्या द्वादशवर्षसहस्राणि

मूल. ।णियव्वं जाव सव्वठ्ठसिद्धगादेवा सेत्तं अणुत्तरोववाइया सेत्तं पंचिंदिया सेत्तं तसकाइया॥कइविहा णं भंते पुढवी पं० गो० छव्विहा पुढवि पं० तं० सण्हा पुढवी सुद्धपुढवी वालुयापुढवी मणोसिलापुढवी सक्करापुढवी खरपुढवी सण्हपुढवीणं भंते केवइयं कालं ठिई पं० गो० जहन्नेणं अंतोमुहु

भाषा. कह्या एटले देवता सर्व कह्या ए प्रकारे पंचेंद्रिय कह्या ए प्रकारे त्रसकायिक कह्या हावे विशेष केहेवाने अर्थे पृथिवीकाय विषयनुं सूत्र कहे छे हे भगवन् पृथिवी केटला प्रकारनी हे गौतम छ प्रकारनी पृथिवी कही छे सूक्ष्म पृथिवी १ शुद्ध पृथिवी २ वालुक पृथिवी ३ मनःसिला पृथिवी ४ शर्करा पृथिवी ५ खरपृथिवी ६ हे भगवन् सूक्ष्म एटले मृदुपृथिवीनी केटला कालनी स्थिति कही छे? हे गौतम जघन्यपणे अंतर्मुहुर्त्तनी ने उत्कृष्टपणे एकहजार वरसनी ए प्रकारे शुद्धपृथिवीनो प्रश्न तेनो उत्तर जे ज

ीका.

वालुकापृथिव्या श्चतुर्दशवर्षसहस्राणि मनःशिलापृथिव्याः षोडशवर्षसहस्राणि शर्करापृथिव्या अष्टादशवर्षसहस्राणि खरपृथिव्या द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि स र्वासामपि चामूषां पृथिवीनां जघन्येन स्थिति रंतर्मुहूर्त्तं वक्तव्या संप्रति स्थितिनिरूपणाप्रस्तावात् नैरयिकादीनां चतुर्विंशतिदंडक क्रमेण स्थितिं निरूप

ूत्र.

त्तं उक्कोसेणं एगं वाससहस्सं सुद्धपुढवी पुछा गो० जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं वारसवाससह स्सा वालुयापुढवी पुछा गो० जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं चउदसवाससहस्सा मणोसिलापुढवी पुछा गो० जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सोलसवाससहस्साइं सक्करापुढवी पुछा गो० जहण्णेणं

ापा.

घन्यपणे अंतर्मुहुर्त्तनी ने उत्कृष्टपणे बारहजार वरसनी वालुकापृथिवीनो प्रश्न तेनो उत्तर जे जघन्यप णे अंतर्मुहुर्त्त ने उत्कृष्टपणे चउदहजार वरसनी स्थिति आउखु मनःशिलापृथिवीनो प्रश्न तेनो उत्तर जे जघन्यपणे अंतर्मुहुर्त्त ने उत्कृष्टपणे सोलहजार वरसनी स्थिति । शर्करापृथिवीनो प्रश्न तेनो उत्तर जघ न्यपणे अंतर्मुहुर्त्त ने उत्कृष्टपणे अढारहजार वरसनी स्थिति खरपृथिवीनो प्रश्न तेनो उत्तर जघन्यपणे

पा० ३३६ टीका. [illegible]

मूल. अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसंवाससहस्साइं खरपुढवि पु० गो० जहन्नेणं अंतो
मुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्सा नेरइयाणं भंते केवइयं कालं ठिई पं० गो० जहन्नेणं दस
वाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई एवं सव्वं जाणियव्वं जावसव्वट्ठसिद्धदेवाति ॥

भाषा. अंतर्मुहूर्त्त ने उत्कृष्टपणे बावीसहजार वरसनी स्थिति जाणवी हवे स्थिति निरूपणाना प्रसंगथी नारकी
आदिकना चोवीश दंडक क्रमेकरिने स्थिति निरूपणाना अभिप्राये कहेछे हे भगवन् नारकीनी स्थिति
केटला काळनी कहीछे हे गौतम जघन्यपणे दशहजार वरसनी ने उत्कृष्टपणे तेत्रीश सागरोपमनी स्थि
ति जाणवी ए प्रकारे पन्नवणासूत्रनुं सघळुं स्थितिपद आ जगाये लेवुं जावत् सर्वार्थसिद्ध देवता पर्यंत भ

टीका.

नीरोगपृथिव्यादि अथकायस्थितिरिति कः शब्दार्थः उच्यते कायोनाम जीवस्य विवक्षितः सामान्यरूपोविशेषरूपोवा पर्यायविशेषः तस्मिन् स्थितिः कायस्थितिः किमुक्तं भवति यस्य वस्तुनो येन पर्यायेण जीवत्वलक्षणेन पृथिवीकायादित्वलक्षणेन वा आदिष्टस्य तेन व्यवच्छेदेन यद्भवनं सा कायस्थितिः तत्र जीव इति जीवप्राणधारणे जीवति प्राणान् धारयतीति जीवः प्राणाश्च द्विधा द्रव्यप्राणा भावप्राणाश्च तत्र द्रव्यप्राणा आयुःप्रभृतयः उक्तंच पंचेन्द्रियाणि त्रिविधं ब

मूल.

॥ जीवेणं भंते जीवेत्ति कालउ केवच्चिरं होति गो० सव्वद्धा पुढविकाइएणं भंते पुढविकाइत्ति कालउ केवच्चिरं होइ गो० सव्वद्धं एवं जावतस काइए पडुपन्नपुढविकाइयाणं भंते केवति कालस्स

भाषा.

एवं ए प्रकारे भवस्थितिनु निरूपण कह्यु ॥ हवे कायस्थिति निरूपण करवाने अर्थे कहे छे हवे कायस्थिति ए शब्दनो अर्थ कहे छे काय एटले जीवनो सामान्य रुप अथवा विशेष रुप पर्याय विशेष तेने विषे स्थिति एटले रहेवु तेने कायस्थिति कहीये जे वस्तुनो जे पर्याये करिने जीवत्व लक्षणे करिने अथवा पृथिवीकायादि लक्षणे करिने एटले जीवपणु ओलखवे करिने अथवा पृथिवीकायादि

मूल. निओगासिया णं० जहण्णपदे असंखेज्जाहिं उसप्पिणि उसप्पिणीहिं उक्कोसपए असंखेज्जाहिं

उवणपे करिने आदिष्ट कहेतां कह्यो ते व्यवछेदे करिने एटले ते रुपे थयु ते कायास्थिति कहीये

भाषा. तेमां जीव एटले धातुप्राणनु धारण करवुं एवा अर्थनो छे माटे प्राणनु धारण करे ते जीव कहीये हे भगवन् जीव जे ते एटले जीवन पर्याय सहित काल थकी कालआश्रिने केटलो घणो काल रहे छे हे गोतम सर्व काले रहेछे एटले संसारी अवस्थामां द्रव्यप्राण तथा भावप्राण आश्रिने रहेछे ने मुक्त अवस्थामां भावप्राण आश्रिने रहे छे माटे सर्वकाले जीववानु विद्यमानपणुछे उतापणु छे सामान्य जीवनी

का. मनस्त्वात् यथ जीव इति न एकः प्रतिनियतो विवक्ष्यते किंतु जीवसामान्यं ततःप्राणधारणलक्षणजीवनाभ्युपगमेऽपि न कश्चिद्दोषः तथाहि जीवेणं भंते इत्यादि सूत्रेणामीति पूर्ववत् भदंत जीवतीति जीवन्निति प्राणान् धारयन् इत्यर्थः कालतः कियच्चिरं भवति भगवानाह गौतम सर्वाद्धा जीवसामान्यस्यानाद्यनंतत्वात् न चैतत् व्याख्यानं स्वमनीषिकाविजृम्भितं यतउक्तं मूलटीकाया जीवेणं भंते इत्यादि एषा उघकायस्थितिः सामान्यजीवापेक्षिणीति सर्वाद्ध या निर्वचनं एवंच पृथि

सू. उसप्पिणि उसप्पिणीहिं जहण्णपदातो उक्कोसपदे असंखेज्जगुणा एवं जाव पडुप्पन्नवाउकाइया पडुप्पन्नवणस्सतिकाइयाणं भंते केवति कालस्स निल्लेवासिता गो० पडुप्पण्णवणप्फइकाइया जह

भा. अपेक्षाये ए उघे कायस्थिति छे एम पृथिवीकायादिकने विषे पण सर्व कालपणु कहेवु एम गति इंद्रिय आदि द्वारे करिने जेम पन्नवणासूत्रना अढारमां पदमां कह्यु छे तेम कायस्थिति सघली कहेवी गति इंद्रियआदि द्वारने संग्रह करनारी आ बे गाथानो अर्थ आ प्रकारे छे गति१ इंद्रिय२ काय३ योग४ वेद५ कषाय६ लेश्या७ समकित८ ज्ञान९ दर्शन१० संयत११ उपयोग१२ आहार१३ भाषा१४ प

पा. ३३८ टीका. पृथ्वीकायादिष्वप्यदोषः एतत्सामान्यस्य सर्वदैव भावादिति एवं गतींद्रियादिद्वारे यथाप्रज्ञापनायामष्टादशे कायस्थिति नामके पदे कायस्थिति रुक्ता तथात्र सर्वं निरवशेषं वक्तव्यं यथा उपरि तत्पदगतं न किमपि तिष्ठति गतींदियकायादिद्वार संग्राहिकेत्रेमे गाथे गइइंदिएयकाए जोगेवेए कसाय लेसाय, संमत्त नाणदंस णसंजय उव उगमाहारे ॥ भासग परित्त पज्जत सुहुम सण्णीय नवहिवरमेय एएसिंतु पयाणं कायठिई होइ नायव्वा सूत्रपाठस्तु लेश्यातो दर्श्यते नेरइएणं भं

मूल. णणपदे अपदा उक्कोसपदे अपदा पमुप्पण्णवणस्सतिकाइयाणं नत्थिनिल्लेवणा पमुप्पन्न तस काइयाणं पुन्न गो० जहण्णपएसागरोवमसहस्सपुहुत्तस्स उक्कोसपदे सागरोवमसहस्सपुहुत्तस्स

रित्त१५ पर्याप्ति१६ सूक्ष्म१७ संज्ञी१८ भवस्थिति१९ चरम२० एह पदनी कायस्थिति जाणवी ॥ हवे

भाषा. विवक्षित कालने विषे जघन्यपणाथी तथा उत्कृष्टपणाथी केटला पृथिवीकायादिक जीव उपजे ते नि रूपण करवाने अर्थे कहे छे हे भगवन् तत्काल उत्पन्न थता पृथिवीकायि जीव केटले काले करिने नि र्लेप थाय एटले समये२ एक एक उद्धरिये तारे केटले काले सर्व उद्धराय सर्व समाप्त थाय? हे गौत

णे गोरइत्ति कालतो केवच्चिरं होइ गोयमा जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेतीसं सागरोवमाइं तिरिक्खजोणिएणं भंते तिरिक्खजोणियात्ति कालतो केवच्चिरं होइ गोयमा जहण्णेणं अंतोमुहुत्तमुक्कोसेणमणंतं कालं अणंताउ उस्सप्पिणिउ कालतो अणंतालोगा असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा आवालियाए असंखेज्जइभागा इत्यादि संप्रति सामान्यपृथिवीकायादिगतकायस्थितिनिरूपणार्थमाह पुढविक्काइए णं भंते इत्यादि पृथिवीकायिको भदंत सामान्यरूपोऽतएव सातावेक

जहन्नपया उक्कोसपए विसेसाहिया अविसुद्धलेस्सेणं भंते अणगारे असंमोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेस्सं देवं देविं अणगारिं जाणइ पासइ गो० नोइणट्ठे समट्ठे अविसुद्धलेस्सेणं भंते अणगारे असं

म जघन्यपणाथी पण असंख्याति उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल जाणवो ने उत्कृष्टपणाथी पण असंख्याति उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल जाणवो जघन्यपदथी उत्कृष्टपदे असंख्यातगुणा एमज अप्काय तेजकायनां पण सूत्र जाणवा जावत् तत्काल उपजता वायुकायिक तत्काल उपजता वनस्पतिकायिक हे भगवन् केटले काले निर्लेप थाय ए प्रश्न हे गौतम तत्काल उपजता वनस्पतिकायिक जघन्यपणा

ा. ३३९ टीका: वचनं न बव्यस्यैकत्वे इति पृथिवीकाय इति कालतःकियच्चिरं जवति जगवानाह गौतम सर्वाद्धां पृथिवीकायस्य सामान्यस्य सदैव जावात् एवमप्तेजोवायुवन स्पतित्रसकाय सूत्राण्यपि जावनीयानि संप्रति विवक्षिते काले जघन्यपदे उत्कृष्टपदे वा कियंतो निनवा उत्पद्यमानाः पृथिवीकायिकादय इत्येतन्निरूपणार्थमाह पमुप्पन्नपुढविक्काइयाणं जंते केवइ कालस्सनिल्लेवा सिया इत्यादि प्रत्युत्पन्नपृथिवीकायकास्तत्कालमुत्पद्यमानाः पृथिविकायिका जदंत केवइ कालस्सान्ति तृतीयार्थे

मूल. मोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेस्सं देवं देविं अणगारे जाणइ पासइ गो० नोइणद्वे समद्वे अ

थी पदरहित उत्कृष्टपणाथी पदरहित तत्काल उपजता वनस्पतिकायिकने नथी निर्लेपता अनंतानंत पणाथकी तत्काल उपजता त्रसकायनो प्रश्न तेनो उत्तर जे जघन्यपदे सागरोपम सहस्र पृथक्त्कपणे करि

भाषा. ने बेथी नव लगे ते पृथक्त्कपणुं जाणवुं ने उत्कृष्टपणे दश सागरोपम शत (सो) सागरोपम पृथक्त्कपणे एटले एकथी दश लगे पण जघन्यपदथी उत्कृष्टपदमां विशेषाधिक जाणवुं हावे ए सघलु कह्युं ते विशुद्ध ले श्यावालो जे सत्व प्राणी तेहनी मतिने प्राप्त थयोछतो यथावस्थितपणे नलो अवनासे अविशुद्ध ले

वन्ती कियता कालेन निर्लेपाः स्युः प्रतिसमयमेकैकापहारेणापाह्रियमाणाः कियता कालेन सर्व एव निष्ठामुपयांतीति भावः भगवानाह गौतम जघन्यपदे यदा सर्वस्तोका भवंति तदेत्यर्थः असंख्येयाभिरुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभिरुत्कृष्टपदेपि यदा सर्वबहवो भवंति तदापीति भावार्थः असंख्येयाभिरुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभि नेवरं जघन्यपदादुत्कृष्टपदिनोऽसंख्येयगुणाः एवमप्तेजोवायुसूत्राण्यपि भावनीयानि वनस्पतिसूत्रमाह पडुप्पन्नेत्यादि प्रत्युत्पन्नवनस्पतिकायिका भदंत कियता कालेन निर्ले

विसुद्धलेस्सेणं भंते अणगारे समोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेस्सं देवं देविं अणगारं जाणइ पासइ गो० नोइणट्ठे समट्ठे अविसुद्धलेस्सेणं भंते अणगारे समोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेस्सं देवं

इयावालाने कांईक विशेष कहेवाने अर्थे कहे छे अविशुधलेश्या एटले कृष्णादिक लेश्यावालो हे भगवन् अणगार साधु ज्ञातरि एटले जाणनार साधु असमवहतः एटले वेदनादि समुद्घात पाम्यो एवो आत्मा तेणे करिने अविशुद्धलेसी एटले कृष्णादिक लेश्यावालो देव तथा देवी अणगार साधु ते प्रत्ये जाणे देखे भगवान कहे छे ए अर्थ समर्थ नथी १ हे भगवन् अविशुद्ध लेसियो साधु अ

भा. ३४० याः स्युः भगवानाह गौतम प्रत्युत्पन्नवनस्पतिकायिका जघन्यपदे अपदा इयता कालेनापह्रियंते इत्येतत्पदरहिता अनंतत्वात् उत्कृष्टपदेऽप्यपदा अनंतानंततया ।

टीका. निर्लेपनासंभवात् तथाचाह पडुप्पण्णवणस्सइ काइयाणं नत्थि निल्लेवणा इति सुगमं नवरमनंतानंतत्वादिति हेतुपदं स्वयमभ्यूह्यं पडुप्पण्णतसकाइयाणमित्यादि प्रत्युत्पन्नत्रसकायिका भदंत कियता कालेन निर्लेपाः स्युः । भगवानाह गौतम जघन्यपदे सागरोपमशतपृथक्त्वस्य तृतीयार्थे षष्ठी प्राकृतत्वात् सागरोपमश

मूल. देविं अणगारं जाणइ पासइ गो० नोइणट्ठे समट्ठे अविसुद्धलेस्सेणं भंते अणगारे समोहया समोहएणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेस्सं देवं देविं अणगारं जाणइ पासइ गो० नोइणट्ठे समट्ठे अविसुद्धले

भाषा. समवहत वेदनादि समुद्घात युक्त आत्माये करीने विशुद्धलेसीयो तेजोआदि लेसीयो देवदेवी अणगार साधु प्रत्ये जाणे देखे हे गौतम ए अर्थ समर्थ नथी २ अविशुद्धलेशियो कृष्णादिलेश्यावालो साधु वेदनादि समुद्घातने पाम्यो आत्माये करिने अविशुद्धलेशि देवदेवी प्रत्ये अणगार साधु जाणे देखे ए प्रश्न हे गौतम ए अर्थ समर्थ नथी ३ अविशुद्धलेशियो अणगार साधु समवहत एटले वेदनादि समुद्

नागा...नेत्वर्थ. ... माणगोपमशनपृथक्त्वेन नवरं जघन्यपदादुत्कृष्टपदं विशेषाधिकमवसेयं इदंच सर्वमुच्यमानं विशुद्धलेश्यसत्वमभिप्रायं यथावस्थिततया ...नागारनात्मा नान्यथेत्याविशुद्ध विशुद्धलेश्याविषयं किंचिद्विवक्षुराह अविशुद्धलेसेणमित्यादि अविशुद्धलेश्यः कृष्णादिलेश्यो जदंतानगारो नाविद्यते अगारं गृहं यस्या ...नगारः साधुः पसमवहतेन समवहतो वेदनादि समुद्घातेन गतः एवमिमे द्वे सूत्रे असमवहतसमवहताभ्यामात्मभ्यामविशुद्धलेश्यपरविषये प्रतिपादिते एव

स्सेणं भंते अणगारे समोहया समोहएणं विसुद्धलेस्सं देवं देविं अणगारे जाणइ पासइ गो० नोइ

णठे समठे विसुद्धलेस्सेणं भंते अणगारे असंमोहतेणं अप्पाणेणं अविसुद्धलेस्सं देवं देविं अण

घातने पाम्यो आत्माये करिने विशुधलेशियो देवदेवी. अणगार साधु जाणे देखे हे गौतम ए अर्थ सम र्थ नथी ४ हे भगवन् अविशुद्धलेसी अणगार साधु समवहता समवहत एटले वेदनादि समुद्घात क्रि याविष्टपणे नही परिपूर्ण समवहत नही पण असमवहत सर्वथा एहवो आत्माये करी अविशुद्धलेसी दे वदेवी प्रत्ये अणगार साधु प्रत्ये जाणे देखे हे गौतम ए अर्थ समर्थ नही ५ हे भगवन् अविशुद्धलेशि

ा. ३४१ टीका. समसमवहतसमवहताभ्यामात्मभ्यां विशुद्धलेश्यपरविषये द्वे सूत्रे भावयितव्ये तथा अन्ये विशुद्धलेश्याविशुद्धलेश्यपरविषये द्वे समवहतासमवहतेनात्मनेति पदेन स मवहतासमवहतो नाम वेदनादिसमुद्घाताक्रियाविष्टोतनु परिपूर्णो समवहतोनाप्यसमवहतः सर्वथा तदेवमविशुद्धलेश्ये ज्ञातरि साधौ षद्सूत्राणि प्रवृत्तानि एवमेव विशुद्धलेश्येपि साधौ ज्ञातरि षद् सूत्राणि परिभावनीयानि नवरं सर्वत्र जानाति पश्यतीति वक्तव्यं विशुद्धलेश्यकतया यथावस्थित ज्ञानदर्शनभावात्

मूल. गारं जाणइ पासइ हंता जाणइ पासइ जहा अविसुद्धलेस्सेणं ७ आलावगा एवं विसुद्धलेस्सेणवि ७ आलावगा भाणियव्वा जाव विसुद्धलेस्सेणं भंते अणगारे समो

भाषा. ज्ञातरि जाणनार साधु समवहता समवहत एटले वेदनादि समुद्घाते क्रियाविनष्टतो नही परिपूर्ण सम वहत नही पण असमवहत सर्वथा विशुद्धलेशि देवदेवी अणगार जाणे देखे हे गौतम ए अर्थ समर्थ न ही ६ हे भगवन् विशुद्धलेशीयो ज्ञातरि एटले जाणनार साधु असमवहत एटले वेदनादि समुद्घात आत्माए करीने अविशुद्धलेशी देवदेवी अणगार प्रत्ये जाणे देखे हे गौतम जाणे देखे ७ जिम

भावक मूलटीकाकारः शोभनमशोभनंवा वस्तु यथावद्विशुद्धलेश्यो जानातीति समुद्घातोपि च तस्याप्रतिबंधकं एव नच तस्य समुद्घातोऽत्यंताया शोभनो भव ति उक्तंच मूलटीकाया समुद्घातोपि तस्याप्रतिबंधक एवेत्यादीति तदेवं यतोऽविशुद्धलेश्यो न जानाति विशुद्धलेश्यो जानाति ततः सम्यग्मिथ्याक्रियपयोरेकदा निषेधमभिधित्सुराह ॥ अन्नउत्थियाणं भंते इत्यादि अन्ययूथिका अन्यतीर्थिका भदंत चरकादय एवमाचक्षते सामान्येन एवं भाषंते स्वशिष्यान् श्रवणं प्रत्यभि

हया समोहएणं अप्पाणेणं विसुद्धलेस्सं देवं देविं अणगारं जाणइ पासइ हंता जाणइ पासइ ॥

॥ अन्नउत्थियाणं भंते एवमाइक्खइ एवं भासेइ एवं पन्नवेइ एवं परूवेइ एवं खलु एगे जीवे एगेणं

अविशुद्धलेशीयाना ७ आलावा कह्या एम विशुद्धलेशीयाना पण ७ आलावा जाणवा तिहां ५ पांच आलावा पूर्वनी पेठे कहेवा जावत् हे भगवंत विशुद्धलेशीयो अणगार ज्ञातरिसाधु समवहतासमव हत वेदनादि समुद्घात क्रियाविशिष्ट थको आत्माये करिने विशुद्धलेशी देवदेवी अणगार साधु प्रत्ये जाणे देखे हे गौतम हा जाणे देखे त्यां पर्यंत कहेवुं ॥ हे भगवन् अन्ययुथिक जे चरकादिक ते सामान्य

पा. ३४७ टीका. सूत्रार्थतश्च विस्तरेण व्यक्तं कथयंति एवं प्रज्ञापयंति प्रकर्षेण ज्ञापयंति यथा स्वात्मनि व्यवस्थितं ज्ञानं तथा परेष्वप्युत्पादयंतीति एवं प्ररूपयाति तत्वार्चिंतायां यथावस्थितं निरूपयंति इह खल्वेको जीव एकसमयेन युगपत्। द्वे क्रिये प्रकरोति तद्यथा सम्यक्क्रियां च सुंदराध्यवसायात्मिका मिथ्यात्वक्रियां च

मूल. समएणं दोकिरियातो पकरेइ तं० सम्मत्तकिरियंच मिछत्तकिरियंच जं समयं समत्तकिरियं पकरेइ तं समयं मिछत्तकिरियं पकरेइ जं समयं मिछत्तकिरियं पकरेइ तं समयं समत्तकिरियं पकरेइ सम्मत्त किरियापकरेण ताएमिछत्तकिरियं पकरेइ मिछत्तकिरिया पकरेण ताए समत्तकिरियं पकरेइ एवं

भाषा. पणे एम कहे एटले पोताना शिष्य प्रत्ये एम कहे विस्तारपणे एम परुपणा करे पोताने विषे रहेलुं ज्ञान परने विषे उत्पन्न करे निश्चे एक जीव एक समयने विषे बे क्रिया करे जे समकितक्रिया ने मिथ्यात्वक्रिया जे समये समकितक्रियाने करे छे ते समयने विषे मिथ्यात्वक्रियाने पण करे छे ने जे समय ने विषे मिथ्यात्वक्रिया करे छे ते समयने विषे समकितक्रियाने पण करे छे मिथ्यात्वक्रियाने करवे क

णं एगे समएणं इत्यादि एक समयमिति प्राकृतत्वात् सप्तम्यर्थे द्वितीया यस्मिन् समये सम्यक्क्रिया प्रकरोति तं समयमिति तस्मिन् समये सम्यक्क्रिया प्रकरोति सम्योन्यसंवलनोपनिपातप्रदर्शनार्थमाह सम्यक्त्व प्रकरणेन मिथ्यात्वक्रिया प्रकरोति मिथ्यात्वक्रियाप्रकरणेन सम्यक्त्वक्रियां प्रकरोति तदुभयकरणस्वभावस्य नतः क्रियाकरणात् सर्वात्मनाप्रवृत्तेरन्यथाक्रियायोगादिति एवं खल्वित्यादि निगमनं प्रतितार्थं सेकहमेयं भंते इत्यादि तत्कथमेतत् भदंत एवं तदेवं गौतमेन प्रश्ने कृते

हा. खलु एगे जीवे एगेणं समएणं दोकिरियाउ पकरेइ तं सम्मत्तकिरियं मिछत्तकिरियंच से कहमेयं भंते एवं गो० जण्णं ते अन्नउत्थिया एव माइक्खंति एवं भासंति एवं पन्नविंत्ति एवं परूविंति एवं खलु एगेणं समएणं दोकिरियाउ पकरेइ तहेव जाव सम्मत्तकिरियंच मिछतकिरियंच जेते एवमाहंसु

पा. रिने समकितक्रियाने पण करे एम निश्चे एक जीव एक समयने विषे बे क्रियायो करे छे समकित क्रिया ने मिथ्यात्वक्रिया माटे ते किम जाणवुं? हे गौतम जे अन्य तिर्थि कहे छे विस्तारथी भाखे छे प्ररूपणा करे छे जे एक जीव एक समयने विषे बे क्रिया करे छे ते मिथ्या छे वली हुं कहुंछुं हे गौतम ए

टीका.

पृणानरावुश विस्तरेण व्यक्तं कथयंति एवं प्रज्ञापयंति प्रकर्षेण ज्ञापयंति यथा स्वात्मनि व्यवस्थितं ज्ञानं तथा परेष्वप्युत्पादयंतीति एवं प्ररूपयति तत्वार्चिंताया मर्यादिगमेनादिति निरूपयंति इह खल्वेको जीव एकसमयेन युगपत्। द्वे क्रिये प्रकरोति तद्यथा सम्यक्क्रियां च सुंदराध्यवसायात्मिकां मिथ्यात्वक्रियां चा

मूल.

समएणं दोकिरियाओ पकरेइ तं० सम्मत्तकिरियंच मिछत्तकिरियंच जं समयं समत्तकिरियं पकरेइ तं समयं मिछत्तकिरियं पकरेइ जं समयं मिछत्तकिरियं पकरेइ तं समयं समत्तकिरियं पकरेइ सम्मत्त किरियापकरेण ताएमिछत्तकिरियं पकरेइ मिछत्तकिरिया पकरेण ताए समत्तकिरियं पकरेइ एवं

भाषा.

पणे एम कहे एटले पोताना शिष्य प्रत्ये एम कहे विस्तारपणे एम परुपणा करे पोताने विषे रहेलुं ज्ञान परने विषे उत्पन्न करे निश्चे एक जीव एक समयने विषे बे क्रिया करे जे समकितक्रिया ने मिथ्यात्वक्रिया जे समये समकितक्रियाने करे छे ते समयने विषे मिथ्यात्वक्रियाने पण करे छे ने जे समयने विषे मिथ्यात्वक्रिया करे छे ते समयने विषे समकितक्रियाने पण करे छे मिथ्यात्वक्रियाने करवे क

पा. ३४३ टीका. भवि भगवानाह गौतम यतः प्यामिति वाक्यालंकारे ते भन्ययूथिका भन्यतीर्थिका एवमाचक्षते इत्यादि प्राग्वत् यावत् तन्मिथ्यात एवमाख्यानवंतः भहं पुन गौतम एवं भाषरे एवं जरेरे एवं प्रज्ञापयामि प्ररूपयामि इह खल्वेकोजीव एकेन समयेन एकां क्रियां प्रकरोति तद्यथा सम्यक्त्वक्रियां वा मिथ्यात्वाक्रियां वा भतएव यस्मिन् समये सम्यक्त्वक्रियां प्रकरोति न तस्मिन् समये मिथ्यात्वाक्रियां प्रकरोति यस्मिन् समये मिथ्यात्वक्रियां प्रकरोति नतास्मिन् समये सम्यक्त्वाक्रियां करोति परस्परवैविक्ता

मूल. तएणं मित्रा अहं पुण० गो० एवं माइक्खामि जाव परूवेमि एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगं किरियं पकरेइ तं सम्मत्तकिरियं वा मिछत्तकिरियं वा जं समयं सम्मत्तकिरियं पकरेइ णो तं समयं मिछत्तकिरियं पकरेइ जं समयं मिछत्तकिरियं पकरेइ नो तं समयं सम्मत्तकि

भाषा. म बीजा प्रत्ये प्ररुपणा करुंछुं जे एक जीव एक समयने विषे एक क्रिया करे छे समकितक्रिया अथवा मिथ्यात्वाक्रिया जे समे समकितक्रिया करे छे ते समे मिथ्यात्वक्रियाने नथी करतो ने जे समे मिथ्यात्वक्रिया करे छे ते समे समकितक्रियाने नथी करतो समकितक्रिया प्रकरणे मांहो

नियमप्रदर्शनार्थमाह सम्यक्त्वक्रियाप्रकरणेन मिथ्यात्वक्रिया प्रकरोति मिथ्यात्वक्रियाप्रकरणेन सम्यक्त्वक्रिया प्रकरोति सम्यक्त्व मिथ्यात्वक्रिययोः परस्परपरिहारावस्थानात्मकतया जीवस्य तदुभयकरणस्वभावत्वायोगादन्यथा सर्वथा मोक्षाभाव प्रसक्तेः कदाचिदपि मिथ्यात्वानिवर्त्तनात् व्याख्यातस्तिर्यग्योनिजाधिकारः ॥

रियं पकारेइ सम्मत्तकिरिया पकरणताए नोमिछत्त किरियं पकरेति मिछत्तकिरिया पकरणयाए नो सम्मत्त किरियं पकरेति एवं खलु एगे जीवे एगेणं समएणं एगंकिरियं पकरेइ तं समत्तकिरियं वा मिछत्तकिरियं वा सेत्तं तिरिरकखजोणी तउद्देसउबीउ ॥

मांहो बे क्रियानो नियम नही मिथ्यात्वक्रिया प्रकरणे मांहोमांही बे क्रियानो नियम नही एम निश्चे एक जीव एक समयने विषे एक क्रिया करे छे समकितक्रिया अथवा मिथ्याक्रिया जीवने बे क्रिया करवानो स्वभावज नथी ने बे क्रिया करवानो जो स्वभावज होय तो सर्वथा मोक्षना अभावज थाय ए, प्रकारे तिर्यंचयोनिनो अधिकार पूरो थयो बीजो उद्देशो समाप्त थयो ॥

पा. ३४४

॥ सम्प्रति मनुष्याधिकारव्याख्यावसरस्तत्रेदमादिसूत्रम् । सेकिंतमित्यादि अथ केते मनुष्याः सूरिराह मनुष्या द्विविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा संमूर्छिममनुष्याश्च गर्भ
व्युत्क्रांतिकमनुष्याश्च चशब्दौ द्वयानामपि मनुष्यत्वजाति तुल्यता सूचकौ सेकिंतमित्यादि अथकेते संमूर्छिममनुष्याः सूरिराह एकाकारा एकस्वरूपाः प्रज्ञप्ताः अ
थ क्व तेषां संजव इति जिज्ञासिषुर्गौतमः पृछति कहिणं जंते इत्यादि क्व जदंत संमूर्छिममनुष्याः संमूर्छंति जगवानाह अंतर्मनुष्यक्षेत्रे इत्यादि सूत्रं प्राग्वत्प्रज्ञापनी
य पावत् अंतोमुहुत्ताद्धाउयाचेव कालंपकरेंति उपसंहारमाह सेत्तं संमूर्छिममणुस्सा संप्रति गर्भव्युत्क्रांतिकमनुष्यप्रतिपादनार्थमाह सेकिंतमित्यादि अथ के ते अंतर
द्वीपका लवणसमुद्रमध्ये अंतरे द्वीपाः अंतरद्वीपाः अंतरद्वीपेषुजवा अंतरद्वीपकाः राष्ट्रेभ्य इति वुञ् सूरिराह अंतरद्वीपका अष्टाविंशतिविधाः प्रज्ञप्ताः तानेव तद्य
थेत्यादिना नामग्राहमुपदर्शयति एकोरुकाः १ आजाषिकाः २ नांगूलिका ३ (आमूलिका) वैषाणिकाः ४ हयकर्णाः ५ गजकर्णाः ६ गोकर्णा ७ शकु
लीकर्णाः ८ आदर्शमुखाः ९ मेढमुखाः १० अयोमुखाः ११ गोमुखाः १२ अश्वमुखाः १३ हस्तिमुखाः १४ सिंहमुखाः १५ व्याघ्रमुखाः १६ अश्वकर्णाः
१७ सिंहकर्णाः १८ अकर्णाः १९ कर्णप्रावरणाः २० उल्कामुखाः २१ मेघमुखाः २२ विद्युद्दंताः २३ विद्युज्जिह्वाः २४ घनदंताः २५ लष्टदंताः २६
गूढदंताः २७ शुद्धदंताः २८ इह एकोरुकादिनामानो द्वीपाः परं तात् तद्व्यपदेश इतिन्यायान्मनुष्या अप्येकोरुकादय उक्ताः यथा पंचालदेशनिवासिनः पुरुषाः
पंचाला इति तथाच एकोरुकमनुष्याणामेकोरुक द्वीपं पिपृछिषुराह कहिणं जंते इत्यादि क्व जदंत दाक्षिणात्यानामिह एकोरुकादयो मनुष्याः शिखरिण्यपि
पर्वते विद्यंते तेचा मेरोरुत्तरदिग्वर्त्तिनइति तद्व्यवछेदार्थं दाक्षिणात्यानामित्युक्तं एकोरुकमनुष्याणामेकोरुकद्वीपः प्रज्ञप्तः जगवानाह गौतम जंबूद्वीपमंदरपर्वत
स्यान्यत्रासंजवा दस्मिन् जंबूदीप द्वीप इति प्रतिपत्तव्यं मंदरपर्वतस्य मेरोर्दक्षिणस्या दिशि क्षुल्लहिमवद्वर्षधरपर्वतस्य क्षुल्लग्रहणं महाहिमवद्वर्षधरपर्वतव्यवछेदार्थं

टीका.

एगाए पउमवरवेइयाए एगण वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खेत्ता सेणं पउमवरवेइया अद्धजोयणं
उड्ढं उच्चतेणं पंच धणुसयाइं विक्खंभेणं एगुरूयदीवसमंता परिक्खेवेणं पन्नत्ता तीसेणं पउमवरवेइयाए
अयमेयारूवे वन्नावासे पन्नत्ते तं० वयरामयानिम्मा एवंवेतिया वन्नओ जहा रायपसेणइए तहा भाणिय
व्वा सेणं पउमवरवेइया एगेणं वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता सेणं वणखंडेदेसूणाइं दो जोयणाइं
चक्कवालविक्खंभेणं वेइया समए परिक्खेवेणं पन्नत्ते सेणंवणखंडे किण्हे किण्होभासे एवं जहारायपसेण
इज्जे वणसंडवन्नओ तहेव निरविसेसं भाणियव्वं तणाणयवन्नगंधफासोसद्दो तणाणं वावीओप्पाय पव्वय
गा पुढविसिला पट्टगाय भाणियव्वा जावतत्थणं बहवे वाणमंतरा देवाय देवीओय आसयंति जाव वि
हरंति एगुरूयदीवस्सणं दीवस्स अंतोबहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पन्नत्ते सेजहानामए आलिंगपुक्खरेइ
वा एवं सयणीए भाणियव्वे जावपुढविसिलापट्टगंति तत्थणं बहवे एगुरूयदीवया मणुस्साय मणुस्सी

ठप आसयंति जाव विहरंति एगुरूयदीवेणं दीवे तत्थ२ देशे२ तहिं२ बहवे उद्दालका मोद्दालका को
दालगा कतमाला नतमाल एट्टमाला सिंगमाला संखमाला दंतमाला सेलमालगा णाम डुमगणा पन्नत्ता
समणाउसो कुसविकुसविसुद्धरुखमूला मूलमंतो कंदमंतो जाववीयमंतो पत्तेहिय पुप्फेहिय अच्छन्नपडि
च्छन्ना सिरिए अईव२ सोभेमाणा उवसोभेमाणा चिठंति एगुरूयदीवेणं दीवे तत्थ बहवे हेरुयालवणा
भेरुयालवणा मेरुयालवणा सेरुयालवणा सालवणा सरलवणा सत्तपण्णवणा पूयफलिवणा खज्जू
रवणा नालिएरवणा कुसविकुस जाव चिठंति एगुरुयदीवेणं तत्थ बहवे तिलया लउता नग्गोहा जाव
रायरुरुखा णदि रुरुखा कुसविकुस जावचिठंति एगुरुयदीवेणं२ तत्थ बहुउपउमलयाउ नागलयाउ
जाव सामलयाउ निच्चं कुसुमियाउ एवं लयावन्नउ जहाउववाईए जाव पडिरुवाउ एगूरुयदीवेणं२ तत्थ
बहवे सिरियगुम्मा जाव महाजाइगुम्मा तणगुम्मा दसद्धवन्न कुसुमं कुसुमेंति जेणं वायविहुलग्गसाला

मूल.

एगरुयदीवस्स बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं करेंति एगूरुयदीवेणं तत्थ बहुउव गाराइं उप्पन्नताउ ताउणं वनराइउ किण्हाउ किण्होवभासाउ जाव रम्माउ महामेहणिगुरुं बभूयाउ जाव महता गधद्वणिं मुयंताउ पासाईयाउ एगूरुयदीवे तत्थ बहवे मत्तंगानामदुमगणा पन्नत्ता समणाउसो जहा सेचंदप्पभमणिसिलागवरसीधु पवरवारुणिसुजायफल पुप्फचोणिज्जा ससार बहुदव्वजुत्ति संसारकाल संधिय आसवमहुमे रगारिट्ठाभदुट्ठजाइ पसन्नभेलगासताउ खज्जूरमुदिया सारका विसायण सुपक्क खोयर सभरसु रावण्णरसगंधफरिस जुत्त बलवीरियपरिणामा मज्जविधीयबहुप्पगारा तहेव तेमत्तंगयावि दुम गणा अणेगबहुवि विहवीससापरिणया एमज्ज विहीए उववेया फलेहिं पुन्नाविववि सट्टंति कुसविकुसविशुद्ध रुरुखमूला जाव चिट्ठंतिएगुरुयदीवे तत्र बहवेभिंगंगाणामदुमगणा पन्नत्ता समणाउसो जहा सेचारगघम्मक रग कलसककरिपायकंचाणि उल्लूकवद्धणि सुपइट्ठकविट्ठापारावसगा भिंगाराकरोडि सरंगपरंगपत्ती थाल

णिज्ञग सवालिय अयपलगवालविचित्तवट्टकमाणि तट्टकासिप्पिखारापिणय कंचणमाणिरयणभत्ति विचित्त
विभायणविहि बहुप्पगारा तहेव तेसिम्मिगं गेयावि डुमगणा अणेगबहुविविहवीससापरियणताए भायण
विहीए उववेया फलेहिं पुण्णा विवविसट्टंति कुसविकुसजावचिठंति एगुरुयदीवेणं तत्थ बहवे तुरुयंगानाम
डुमगणा पन्नत्ता समणाउसा जहा से आलिंगपणवदद्दरपडहाम्भिम्भमा भंभा तहोरभ्भ किणियखरमुहि
मुपंग संखियपरिल्लएपव्वगा परिवायणिव्वं सवेणुवीगो सुग्घोसगविपंचिमहतिकछ तिरिस्खिसतकला
मूल. ला कंसाल तालक संसंपत्ताउ आतोद्यविधीये णिउणगंधव्वसमयकुसलेहिं फंदियातिट्ठाणकरणसुद्धा त
हेव तेतुम्भियं गाविडुमगणा अणेगबहुविहवीससापरिणताए ततावितततंबधणाषुसिराए चउव्विहाए आतो
ज्ञविहाए उववेया फलेहिं, पुण्णाविव विसट्टंति कुसविकुसाविसुद्धरुक्खमूलाउ जावचिठंति एगरुयदीवे
तत्थ बहवे दीवासिहाणामडुमगणा पन्नत्ता समणाउसो जहासे संझविरागसमए नवनिहिपतिणो

वर्द्धिया चक्कवालचंदे पन्नूय वट्टिपलित्तझ्झणेहिं विउज्जालियतिमिरमद्दए कणगनिकरकुसुमि यपारिजाय घणप्पगासे कंचणमणिरयणविमलमहरिह तवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाहिं दीवियाहिं सह सा पज्जालिउस वियणिद्धतेयदिप्पंतविमल गहगण समयप्पदाहिंवितिमिरकरकसूरपसरिउज्जोवविल्लियाहिं जालाउज्जलपहसियाभिरामाहिं सोभमाणाहिं सोभमाणा तहेवतेदीवसिहावि डुमगणा अणेग
ल. वद्धाविविहवीससा परिणया एउद्योयविहीएउववेया फलेहिं कुसविकुसजावचिट्ठंति एगुरूदीवे तत्थ बहवे जोइसिया नाम डुमगणा पन्नत्ता समणाउसो जहासे अचिरुग्गय सरयसूर मंडलपडंत उक्कोसहस्स दिप्पंतविज्जुज्जल लहुयवहुनिझ्झूमजालिय निद्धंतधोय तत्ततवणिज्जकिंसुया सोगजासुयणकुसुमविम उलिय पुंजमणिरयणकिरणजच्चहिं गुलयतिरयरुवाइ रेगरुवा तहेव तेजोतिसिहा विडुमगणा अणेग वद्धाविविहवीससा परिणयाए उज्जोयविहाए उववेया सुहलेसा मंदलेसा मंदातवलेसा कूडाठाणठिया अ

१.६४७ स्रोत्र ममा गाहाहिं लेसाहिं साएएत्नाए तेएएसे सव्व उसेमंताउ त्तासंति उज्जोवंति पत्तासंति कुसवि
कुसविजावचिठंति एगुरूदीवे तत्थ बहवे चित्तंगा नामए डुमगणा पन्नत्ता समणाउसो जहासे पेच्छ
घरेव्व चितरामेव कुसुमदाममाला कुलज्जललेसा त्तासंतमुक्कपुप्फ पुजो वयार किलिए विरल्लियाविचि
त्तमल्लसिरि समुदप्पगा न्ने गंथिमवेढिमपूरिमसंघयमेणं मल्लेणं छेयसिथ्थिपयविन्नागरइएणं सव्वउ
मूल॰ समंता चेवसमणुबद्धे पविरललंबंतविप्पइठेहिं पंचवन्नेहिं कुसुमदामेहिं सोभमाणा वनमालकत
ग्गए चेव दिप्पमाणे तहेव तेचित्तं गयाविडुमगणा अणेगबहुविविहवीससा परिणयाए मल्लविहीए
उववेया कुसविकुसविजाव चिठंति एगुरुयदीवे तत्थ बहवे चित्तरसानाम डुमगणा पन्नत्ता समणाउसो ज
हासे सुगंधवरकलमसालि तंडुलविसिठणिरुवयडुद्धरद्धे सारयवयमंफखंमहुमेलिए अइरसे परमन्ने दे
जउत्तमोहवन्नगंधमत्तेरण्णो जहावाविचक्कवट्टिसहोज्जनिउणेहिं सूरयपुरिसेहिं सज्झिए चाउरकप्प सेय

रित्तेव उवणो कलमसालिणिव्वत्तिएविवक्के सेवप्फमिउविसयसगलसित्थे अणेगसालणगसंजुत्ते अह
वा पडिपुन्नदव्वुवरकमे सुसक्कए वण्णगंधरसफरिस जुत्तबलविरिय परिणामे इंदियवलवद्धणे खुप्पिवा
रा सहणं पहाण गुलकटियखंडमत्थंडिउवणी पव्वमोयगे सण्हसमितिगब्भेहवेज्जा परमइट्ठगसंजुत्ते
जहेव ते चित्तरसावि दुमगणा अणेगबहुवि विहवीससा परिणयाए भायणविहीए उववया कुसविश जाव
उ. चिट्ठंति एगुरुयदीवेणं तत्थ बहवे मणियगा नाम दुमगणा पण्णत्ता समणाउसो जहासेहार उहारवेटण गमउ
ड कुंडल वासुत्तूमहेम जालमणि जालकणग जालंग सुत्तग उचितिय कडगखडुयएगावलिकंठसुत्तमगरगउ
रत्थगेवेज्जसोणिसुत्तमचूलामणि कणगतिलगफुल्लग सिद्धत्थियकण्णवालि ससिसूरउसभ चक्कगतल भं
गेय तुडियहत्थमालगवलंखदीनारमालिया चंदसूरमालिया हरिसय केयूरवलिय पालंब अंगुलिज्जग
कंचीमेहलाकलाव पयरकपायजालघंटिय खंखिणि रयणोरुजालगडिवरनेउर वलणमालिया कणगणि

गा. ३४७ गलमालिया कंचणमणिरयण भत्तिचित्तव्वभूसणविहीबहुप्पगारा तहेव ते माणियंगा विडुमगणा अणेग
बहुविविहा । वीससा परिणयाए भूसणविहीए उववेया कुसविकुसवि जाव चिठंति एगुरुयदीवे त
त्थ बहवे गेहागरा नाम डुमगणा पन्नत्ता समणाउसो जहासे पागारट्टालग चरिया गोपुरपासायाा
मूल. गासतलगमंडवएगसालग चाउसालग गब्भघरमोहणघर वलभिघर चित्तसालगमालियभत्तिघर वह
तंसं नंदियावत्तसंठियायत्तपंडुरतलपुंडमालहम्मिय अहवणं धवलहर अद्धसागह विब्भतसे
लद्धसेलसंठिय कूडागार सुविहि कोठग अणेगघरसरणलेण आवेणविडंग जालचंदनिव्वूह अपवरक
करोतालि चंदसालिवि भत्तिकलित्ता भवणविही बहुविगप्पा तहेवते गहागारा विडुमगणा अणेग
बहुविविह विस्ससा परिणयाए सुहारुहण सुहोत्ताराए सुहनिक्खमणपवेसाए दद्दरसोपाणपंतिकालि
याए पइरित्ताए सुहविहाराए मणाणुकूलाए भवणविहीए उववेया कुसवि कुसविजाव चिठंति एगूरुयदीवे

तत्थ बहवे अणिगणानाम दुमगणा पन्नत्ता समणाउसो जहासे अणेगआइगखोम तणुयकंबल दुगल्लको
सेज्ज कालमि यपट्टचीण अंसुतवन्नावरणात वारवाणग पच्छुन्ना भरणचित्तसहिणग कल्लाणगभिंगमेहलक
ज्जलवहुवन्नरत्तपीयसुक्किलमरकयामिगलोमहेमफ्फरल्लग अवरत्तगासिंधु उसभदामिलविंग कलिंग नलिण
तंतुमयभत्तिचित्ता तत्थ विही बहुप्पगारा हवेज्जवरपट्टणुग्गता वण्णराग कलिया तहेव ते अणियणाविदुमग
णा अणेग बहुविविहवीससा परिणयाए तत्थ विहीए उववेया कुसविकुसवि जाव चिठंति १० एगुरुयदीवे
मूल. णं भंते दीवे मणुयाणं केरिसए आगारभावए पन्नायारे पं० गो० तेणं मणुया अणातिवरसोमचारुरुवा भो
गुत्तमा भोगलख्खणधरा भोगसास्सिरीयासुजाय सव्वंगसुंदरंगा सुपइठियकुम्मचारुचलणा रतुप्पलपत्त
मउयसुकुमालकोमलतला नगणगरमगरसागरचक्कंकहरंकलख्खणं कियचलणा अणुगुव्वसुसाहयगुलि
याउण्णयतणुयतंबाणिद्धणख्खा संठियसुसालिठगूढगुप्फा एणीकुरुविंदावत्तवट्टाणुपुव्वजंघा सामुग्गनिमुग्ग

शा. ३५० गूढजाणू गतससणसुजात सण्णिभोरुवरवारणमत्त तुल्लविक्कमविलासितगती सुजातवरतुरगगुज्झदेसा आ
इन्नहतोव्व णिरुवलेवा पमुइयवरतुरगसीह अइरेगवट्टियकडी साहयसोणिंदमुसलदप्पण णिगरित वरक
णगत्थरुसरिसवरवइरवलितमज्झा उज्जुअसमसाहितसुजायजच्चतणुकासिणणिद्धआदेज्जलडहसुकुमालमउय
रमणिज्जरोमराइ गंगावत्तयपयाहिणावत्ततरंगभंगुररविकिरणतरुणबोधियअकोसा तंतपउमगंभीरवियड
मूल. णाभा कसविहगसुजायपीणकुच्छी झसोदरा सुइकरणी पम्हवियडणाभा सन्नत्तपासा संगतपासा सुंदरपासा
सुजातपासा मितमाइतपीणरइतपासा अकरंडुयकणगरुयगनिम्मलसुजायनिरुवहयदेहधारी पसत्थबत्ती
सलक्खणधरा कणगसिलातलुज्जलपसत्थसमतलउवचियविच्छिन्नपिहुलवच्छा सिरिवच्छंकियवच्छा पुरवफ
लिहवट्टियभुया भुयगीसरविपुलभोग आयाणफलिहउच्छूढदीहबाहू जुगसन्निभपीणरइयपीवरपउट्ठसंठि
यउवचियघणथिरसुबद्धसुसिलिट्ठपव्वसंधी रत्ततलोवइतमउयमंसलपसत्थलक्खणसुजायअच्छिद्दजालया

णी पीनरवट्टियसुजायकोमलवरंगुलीश्रा तंबतलिणसुतिरतिल(रुचिर)निद्धणुक्खा (नखा) चंदपाणिलेहा
सूरपाणिलेहा संखपाणिलेहा चक्कपाणिलेहा दिसासोवत्थिपाणिलेहा चंदसूरसंखचक्कदिसासो वत्थियपा
णिलेहा अणेगवरलक्खणुत्तमपसत्थसुविरइयपाणिलेहा वरमाहिसवराहसीहसद्दूलउसभणागवरविउल
उतमइंदखंधा चउरंगुलसुप्पमाण कंबुवरसारिसगीवा अवट्ठितसुविभत्तसुजातचित्तमंसु मंसलसंठियप
सत्थसद्दूलविउलहणुया उतवितासिलप्पवालबिंबफलसन्निभाधरोठा पंडुरससिसगलविमलनिम्मलसंख
[illegible]गोखीरफेणदगरयमुणालिया धवलदंतसेढीअखंडदंता अफुडियदंता अविरलदंतासुसिणिदंतासु
[illegible]सेढिव अणेगदंता हुतवहनिद्धंतधोततत्ततवणिज्जरत्ततलतालुजीहा गरुलायतउज्जुतंगणा
[illegible]रीयणयणा कोकासितधवलपत्तलच्छा आणामियचावरुइलकिण्हब्भरा इयसंठियसगत
[illegible]सिणिद्धभुमया अल्लीणपमाणजुत्तसवणासुस्सवणा पीणमंसलकवोलदेसभागा अइरु

१. ३५१ ग्गयवालचंदसंठिय पसत्थविछिन्नसमणिडाला उडुवइपडिपुन्नसोमवयणा छत्तागरुत्तिमंगदेसा घणनिचि
यसुबद्धलक्खणुन्नयकूडागारणिभपिंडियसिरा हुतवहनिद्धंतधोय तत्ततवणिज्जरत्तकेसंतकेसभूमि सामलि
बोंडघणणिचियछोडियमिउविसयपसत्थसुहुमलक्खणसुगंधसुंदर भुयमोयगभिंगणीलकज्जलपहट्ठभमरगण
णिद्धणिकुरुंबणिचियकुंचियपयाहिणावत्तमुद्धसिरिया लक्खणवंजणगुणोववेया सुजायसुविभत्तसूरूवा
पासाइयादरिसणिज्जा अभिरूवापडिरूवातेणंमणुया ओहसरा हंसस्सरा कोंचसरा णंदिघोसा सीहस्सरा
मूल. सीहघोसा मंजुस्सरा मंजुघोसा सुस्सरा निग्घोसा छाया उज्जोइयंगमंगा वज्जरिसहनारायसंघयणा सम
चउरंससंठाणसंठिया सिणिद्धछवी निरायंका उत्तमपसत्थअइसेसनिरुवमतणू जल्लमलकलंकसेयरय
दोसविवज्जियसरीरा निरुवमलेवा अणुलोमवाउवेगा कंकग्गहणीकपोत परिणामा सउनिपोस पिट्ठं
तरोरुपरिणया विग्गहियउन्नयकुछी पउमप्पलसरिसगंधनिस्साससुरहिवयणा अट्ठधणुसयऊसिया ते

भिंमणुयाणं चउसठीपिमिकरंभगा पन्नत्ता समणाउसो तेणं मणुया पगइन्नदया पगइविणीया पगइउव
संता पगइपयणुकोहमाणमायालोभा मिउमद्दवसंपन्ना अलीणा नद्दग्गा विणीया अपिबा असंणिहिसंचया
अचंभा विभिमंतरपविसणा जहिच्छियकामगा मिणोयतेमणुयगणा पन्नत्ता समणाउसो तेसिणंनंते मणुयाणं
केवति कालस्स आहारठे समुप्पज्जइ गो. चउत्थन्नतस्सआहारठे समुप्पज्जइ ए गूरुयमणुईणं नंते केरि
सए आगार नावपमो यारे पं. गो. ताउणं मणुईउ सुजायसव्वंगसुंदरीओ पहाणमहिलागुणेहिंजुता अ
अंतविसप्पमाणं पउमसूमालकुम्मसंठियविसिठचलणा उज्जुमउयपीवरानिरंतरसुसातचलणंगु
लीउ अभ्भुण्णयरतियतालिण तंबसुसिणिद्धणखा रोमरहियवाट्टलठसंठियअजहन्नपसत्थलख्ख
ण अकोप्पजंघजुयला सुणिमियसुगूढजाणू मंसलसुबद्धसंधा कयालिखंनातिरेग संठियाणिव्वण
सूमालमउयकोमल अविरलसमसहंतसुजातवट्टपीवरनिरंतरोरुअ अठावयदीविपट्ट संठिया पसत्थवि

१.३५७ निण्णपिहुलसोणि वदणायामप्पमाणदुगुणियविसालमंसलसुबद्धजहणवरधारिणिउ वज्जविराइयपसत्थ
लक्खणणिरोदरा तिवलियतणुणमियमज्झियाउ उज्जुयसमसहियजच्चतणुकसिणणिद्धआदेज्जलडहसुविभत्त
कंतसुजायसोभंतरुइलरमणिज्जरोमराई गंगावत्तकपयाहिणावत्ततरंगभंगुररविकिरणतरुणबोधियअकोसा
यंतपउमगंभीरवियडणाभा अणुब्भडपसत्थपीणकुच्छी सण्णयपासा संगयपासा सुजायपासा मियमाइय
मूल. पीणरइयपासा अकरंडुयकणगरुयगनिम्मलसुजायणिरुवहयगायलट्ठी कंचणकलसपमाण समसहियसु
जायलट्ठचुचुयआमेलजमलजुगलवट्टिय अब्भुण्णयरतियसंठियपयोधराउ भुजंग अणुपुव्वतणुयगोपुच्छव
ट्टसमसहियणमियआएज्जललियबाहाउ तंबणहा मंसलग्गहत्था पीवरकोमलवरंगुलीउ णिद्धपाणिलेहा
रविससिसंखचक्कसोत्थियविभत्तसुविरतियपाणिलेहा पीणुण्णयकक्खवक्खवत्थिपदेसा पडिपुण्णगलकवो
ला चउरंगुलसुप्पमाणकंबुवरसरिसगीवा मंसलसंठियपसत्थहणुगा दालिमपुप्फपगाससीवरपलंब

कुंमियपराधरा सुंदरोत्तरोठा दधिदगरयचंदकुंदवासंतिमउलअछिद्दाविमलदंसणा रत्तुप्पलरत्तमउय
सुमालतालुजीहा कणयरमउलअकुडिलअभ्भुग्गयउज्जतुंगणासा सारयनवकमलकुमुदकुवलयविमुक्कमउ
लदलनिगरसरिसलख्खणअंकियकंतनयणा पत्तलधवलायततंबलोयणाउ आणामितचावरुइलकिण्हब्भ
राइंसंठियसंगयआययसुजायतणुकासिणानिद्धभुमया अल्लीणपमाणजुत्तसवणा सुस्सवणा पीणम
ठरमणिज्जगंडलेहा चउरंसपसत्थसमणिडाला कोमुतिरयणिकरविमलपडिपुन्नसोमवयणा छत्त

ल. णणयउत्तिमंगा कुडिलसुसिणिद्धदीहासिरया छत्तज्झयजूवथूनदामिणिकमंडलुकलसवाविसोत्थिय
पडागजवमछकुम्मरहवरमगरज्झयसुकथालअंकुसअट्ठावयवीईसुपइठ्ठ कम्मऊरसिरियाभिसेयतोरणमे
इणिउदधिवरनवणागिरिवरआयंसलिलयगयउसन्नसीहचमरं उत्तमपसत्थछत्तीसलख्खणधरीउ हंस
सगईउ कोइलमुहुरगिरसुसराउकन्नाउ सव्वस्सअणुमयाउ ववगयवलिपलियावंगडुवन्नवाही दोभ

१.३५७ णिण्णापिहुलसोणि वदणायामप्पमाणदुगुणियविसालमंसलसुबद्धजहणवरधारिणिउवज्जविराइयपसत्थ
लक्खणणिरोदरा तिवलियतणुणमियमज्झियाउ उज्जुयसमसहियजच्चतणुकसिणणिद्धआदेज्जलडहसुविभत्त
कंतसुजायसोभंतरुइलरमणिज्जरोमराई गंगावत्तकपयाहिणावत्ततरंगभंगुररविकिरणतरुणबोधियअकोसा
यंतपउमगंभीरवियडणाभा अणुब्भडपसत्थपीणकुच्छी सन्नयपासा संगयपासासुजायपासा मियमाइय
मूल॰ पीणरइयपासा अकरंडुयकणगरुयगनिम्मलसुजायणिरुवहयगायलट्ठी कंचणकलसपमाण समसहियसु
जायलट्ठचुचुयआमेलजमलजुगलवट्टिय अब्भुण्णयरतियसंठियपयोधराउ भुजंग अणुपुव्वतणुयगोपुव्व
वट्टसमसहियणमियआएज्जललियबाहाउ तंबणहा मंसलग्गहत्था पीवरकोमलवरंगुलीउ णिद्धपाणिलेहा
रविससिसंखचक्कसोत्थियविभत्तसुविरतियपाणिलेहा पीणुण्णयकक्खवक्खवत्थिपदेसा पडिपुण्णगलकवो
ला चउरंगुलसुप्पमाणकंबुवरसरिसगीवा मंसलसंठियपसत्थहणुगा दालिमपुप्फपगासपीवरपलंब

३५३ ग्गसोगमुक्का उव्वत्तेणयनराण थोंचूणमूसिया उसभ्भावसिंगारचारुवेसा संगतगतहसियन्नणिय चिट्ठिय
विलाससंल्लावनिउणजुत्तोवयारकुसला सुंदरघणजहणवयणकर चरणणयणलावन्नवन्नरुवजोवण
विन्नासकलिया नंदणवणविवरचारिणीउव्वअच्छराउ अच्छेरगपिच्छणेज्जा पासाइतातोदरिसणिज्जातो अ
नं. निरुवाउ पडिरुवाउ तासिणं भंते मणुईणं केवति कालस्स आहारट्ठे समुप्पइज्जइ गो. चउत्थभत्तस्स
आहारट्ठे समुप्पज्जइ तेणं भंते मणुया किमाहारंति गो. पुढवी पुप्फ फलाहारा तेमणुयगणा पन्नत्ता स
मणाउसो तीसेणं भंते पुढवीए केरिसए अस्साए पन्नत्ते गो. सेजहा नामए गुलेइवा खंडेइवा सक्करा
इवा मत्थंडियाइवा भिसकंदेइवा पप्पडमोततेतिवा पुप्फत्तराइवा पउमुत्तराइवा अकोसियातिवा विजता
ति महाविजयाइवा पायसोवमाइवा उवमाइवा अण्णोवमाइवा चउरक्क गोखीरे चउठाणेपरिणए गुड
खंडमत्थंडिउवणीए मंदग्गि कढिए वण्णेणं उववेए जाव फासेणं भवेएतारुवेसिता नोइणट्ठे समट्ठे तीसे

णं पुढवीए एत्तो इट्ठयराए चेव जाव मणामतरा चेव आसाएणं भंते पुष्पफलाणं केरिसए आस्साए पं. गो.
से जहा नामए रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स कल्लाणपवरभोयणे सयसहस्सनिष्फन्ने वन्नेणं उववेए गंधेणं उव
वेए रसेणं उवयेए फासेणं उववेए आस्सायणिज्जे वीसायणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे वीहिणिज्जे मयणि
ज्जे सव्वेंदियगाय पल्हायणिज्जे भवेतारुवेसिया नोइणट्ठे समट्ठे तेसिणं पुष्पफलाणं इत्तो इट्ठतराणं चेव
मू.छ. जाव आस्साएणं पन्नते तेणं भंते मणुया तमाहारेत्ता कहिंवसहिं उवेंति गो. रुक्खगेहालयाणं तेमणु
यगणा पन्नता समणाउसो तेणं भंते रुक्खा किंसट्ठिया पं० गो० कूडागारसंठिया पच्छाघरसंठिया छत्ता
गारसंठिया झयसंठिया थूभसंठिया तोरणसंठिया गोपुरसंठिया पालगसंठिया अट्टालगसंठिया पा
सायसंठिया हम्मितलसंठिया गवक्खसंठिया वालग्गपोतियसंठिया वलभीसंठिया अण्णेतत्थबहवे
वरभवणसयणासणविसिठसंठाणसंठिया सुभसीतलगयाणं ते डुमगणा पन्नत्ता समणाउसो अत्थिणं भं

. ३५३ ॥ गसोगमुका उव्वत्तेणयनराण थोंचूणमूसिया उसभ्भावसिंगारचारुवेसा संगतगतहसियनणिय चिठ्ठिय
विलाससंल्लावनिउणजुत्तोवयारकुसला सुंदरघणजहणवयणकर चरणणयणलावन्नवन्नरुवजोवण
विन्नासकलिया नंदणवणविवरचारिणीउव्वअछराउ अछेरगपिछणेज्जा पासाइतातोदरिसणिज्जातो अ
मूल. ॥ भिरुवाउ पडिरुवाउ तासिणं भंते मणुईणं केवति कालस्स आहारठे समुप्पइज्जइ गो. चउत्थभत्तस्स
आहारठे समुप्पज्जइ तेणं भंते मणुया किमाहारंति गो. पुढवी पुप्फ फलाहारा तेमणुयगणा पन्नत्ता स
मणाउसो तीसेणं भंते पुढवीए केरिसए अस्साए पन्नत्ते गो. सेजहा नामए गुलेइवा खंमेइवा सक्करा
इवा मत्थंभियाइवा भिसकंदेइवा पप्पमोततेतिवा पुप्फत्तराइवा पउमुत्तराइवा अकोसियातिवा विजता
ति महाविजयाइवा पायसोवमाइवा उवमाइवा अण्णोवमाइवा चउरक्क गोखीरे चउठाणेपरिणए गुम
खंमत्थंभिउवणाए मंदग्गि कढिए वण्णेणं उववेए जाव फासेणं भवेएतारुवेसिता नोइणठे समठे तीसे

इठपराए चेव जाव मणामतरा चेव आसाएणं भंते पुप्फफलाणं केरिसए आस्साए पं. गो.
मजहा नामए रन्नोचाउरंतचक्कवट्टिस्स कल्लाणपवरभोयणे सयसहस्सनिप्फन्ने वन्नेणं उववेए गंधेणं उव
वेए रसेणं उववेए फासेणं उववेए आस्सायणिज्जे वीसायणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे वीहिणिज्जे मयणि
ज्जे सव्विंदियगाय पल्हायणिज्जे भवेतारुवेसिया नोइणट्ठे समट्ठे तेसिणं पुप्फफलाणं इत्तो इट्ठतराणं चेव
जाव आस्साएणं पन्नते तेणं भंते मणुया तमाहारेत्ता कहिंवसहिं उवेंति गो. रुरुखगेहालयाणं तेमणु
मू.प. यगणा पन्नता समणाउसो तेणं भंते रुरुखाकिंसठ्ठिया पं० गो० कूडागारसंठिया पच्छाघरसंठिया छत्ता
गारसंठिया झयसंठिया थूभसंठिया तोरणसंठिया गोपुरसंठिया पालगसंठिया अट्टालगसंठिया पा
सायसंठिया हम्मितलसंठिया गवरुखसंठिया वालग्गपोतियसंठिया वलभीसंठिया अण्णेतत्थबहवे
वरभवणसयणासणविसिठसंठाणसंठिया सुभसीतलछायाणं ते डुमगणा पन्नत्ता समणाउसो अत्थिणं भं

गा. ३५४ ते एगुरुयदीवे२ गेहाणिवा गेहावयणाणिवा णोइणठे समठे रुक्खगेहालयाणं मणुयगणा पन्नत्ता स
मणाउसो अत्थिण भंते एगुरुयदीवे२ गामाइवा नगराइवा जाव सन्निवेसाइवा णोइणठे समठे जहात्थि
य कामगामिणोणं ते मणुयगणा पन्नत्ता समणाउसो अत्थिणं भंते एगुरुयदीवे२ असीइवा मसीइवा कि
सीतिवा विवणीइवा पणीइवा वाणिज्जाइवा नोइणठे समठे ववगय असिमसिकिसिविवाणिपणियवज्जाणं ते
मूल. मणुयगणा पन्नत्ता समणाउसो अत्थिणं भंते एगुरुयदीवे२ हिरण्णेइवा सुवन्नेइवा कंसेइवा दूसेइवा मणीइ
वा मुत्तिएइवा विपुलधणकणगरयणमणिमोत्तिय संखसिलप्पवालसंतसारसावयज्जेवा हंताअत्थि णोचेवणं
तेसिं मणुयाणं तिव्वेममत्ति भावे समुपज्जइ अत्थिणं भंते एगुरुयदीवे२ रायाइवा जुवरायाइवा इ
सारेइवा तलवरेइवा माडंबिएइवा कोडुंबिएइवा इब्भेइवा सेठीइवा सेणावइवा सत्थवाहेइवा
नोइणठे समठे ववगयइड्ढिसक्काराएणं तेमणुयगणापन्नत्ता समणाउसो अत्थिणं भंते एगूरुयदीवे दासा

सूत्र.

इवा पेसाइवा सिस्साइवा भयगतिवा भाइल्लगाइवा कम्मगाराइ भोरापुरिसाइवा नोइणट्ठे समट्ठे ववग यपेम्मा भोगियाणं तेमणुयगणा पन्नत्ता समणाउसो अत्थिणं भंते एगूरुयदीवे२ मातातिवा पियाइवा भाया इवा भयणीइवा भज्जाइवा पुत्ताइवा धूयाइवा सुण्हाइवा हंताअत्थि नोचेवणं तेसिणंमणुयाणंतिव्वेपेज्जबं धणे समुपज्जइ पयणुपेज्जबंधणाणं तेमणुयगणा पन्नत्ता समणाउसो अत्थिणं भंते एगुरुयदीवे२ अरीइवा वे रियइवा घायगाइवा वहगाइवा पडिणीइवा पच्चामित्ताइवा णोइणट्ठे समट्ठे ववगयवेराणुबंधाणं तेमणुय गणा पन्नत्ता समणाउसो अत्थिणं भंते एगुरुयदीवे२ मित्ताइवा वयंसाइवा घडियाति सुहीतिवा सुहीया इवा महाभागातिवा संगतियातिवा नोइणट्ठे समट्ठे ववगयपेमाणुरागाणं तेमणुयगणापण्णत्ता समणाउ सो अत्थिणंभंते एगुरुयदीवे२ आवाहाइवा विवाहाइवा जन्नाइवा सड्ढाइवा थालिपागाइवा चोलोवण यणाइवा सीमंतोवणयणाइवा पितिपिंडनिवेयनाइवा नोइणट्ठे समट्ठे ववगयआवाहविवाहजन्नसड्ढथा

३५५॥ सिंघाडगगोलोवण सीमंतोवणतणपितिपिंडनिवेदणाणं तेमणुयगणा पण्णत्ता समणाउसो अत्थिणं भंते ए
गूरुयदीवे२ इंदमहाइवा रुद्रमहाइवा खंदमहाइवा सिवमहातिवा वेसमणमहातिवा मुगुंदमहातिवा णा
गमहाइवा जक्खमहाइवा भूतमहाइवा कूवमहाइवा तडागमहाइवा नंदिमहाइवा दहमहाइवा पव्वय
महातिवा रुक्खमहाइवा चेतिगमहाइवा थूभमहाइवा णोइणट्ठे समट्ठे ववगयमहामहिमाणं ते मणुयगणा
पन्नत्ता समणाउसो अत्थिणंभंते एगूरुयदीवे२ नडपेछाइवा णट्टपेछातिवा मल्लपेछातिवा मुट्ठियपेछातिवा
मूल. विडंबगपेछातिवा कहकपेछातिवा पवगपेछातिवा अक्खायगपेछातिवा लासगपेछातिवा लंखपेछातिवा मंख
पेछातिवा तणइल्लपेछातिवा तुंबवीणपेछातिवा कावपेछातिवा मागहपेछातिवा जल्लपेछाइवा कहयापेछाइवा
णोइणट्ठे समट्ठे ववगयकोउहल्लाणं ते मणुयगणा पन्नत्ता समणाउसो अत्थिणं भंते एगूरुयदीवे२ सगडाइवा
रहाइवा जाणाइवा जुग्गाइवा गिल्लीतिवा थिल्लीतिवा पिल्लाइवा पवहणाइवा सीयाइवा संदमाणियाइवा

नोइणट्ठे समट्ठे पादचारविहारिणोणं ते मणुगणा पन्नत्ता समणाउसो अत्थिणं नंते एगूरुदीवे आसाइवा
हत्थिइवा उट्टातिवा गोणाइवा महिसाइवा खराइवा अयाइवा एलगाइवा हंता अत्थि नोचेवणं तेसिं म
णुयाणं परिन्नोगत्ता एहव्वमागछंति अत्थिणं नंते एगुरूयदीवे२ गावीइया महिसीइवा उट्टितिवा अयाइवा
एलगाइवा हंता अत्थि नोचेवणं तेसिंमणुयाणं परिन्नोगेत्ता एहव्वमागछंति अत्थिणं नंते एगुरुयदीवे२
मूल. सीहाइवा वग्घाइवा दीवियाइवा अत्थाइवा परस्सराइवा सियालाइवा विमालाइवा सुणगाइवा कोलसु
णगातिवा कोकंतियइवा ससगाइवा दित्तवित्तलातिवा चिलुलगाइवा हंता अत्थि नोचेयणं अन्नमन्नस्स तेसिं
वामणुयाणं किंचिआवाहंवा पवाहंवा उप्पायंति छविछेयं वा करेंति वा पगइन्नद्दगाणं तेसावयगणा पन्नत्ता
समणाउसो अत्थिणं नंते एगुरूयदीवे२ सालीइवा वीहीइवा गोहुमाइवा इक्खुइवा तिलायवा हंता
अत्थि नोचेवणं तेसिंमणुयायं परिन्नोगत्ताए हव्वमागछंति अत्थिणं नंते एगूरुयदीवे२ गत्ताइवा दरीइवा

जा॰ ३५६ पाइवा घंसीइवा भिगूइवा उत्ताएइवा विसमेइवा विजलेइवा धूलीइवा रेणुतिवा पंकेइवा वलणीइवा
णोइणठे समठे एगूरुय दीवेणं दीवे वहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पन्नते समणाउसो अत्थिणं भंते एगुरुयदी
वे२ खाणुइवा कंटाएइवा हीरएइवा सक्कराइवा तणकयराइवा सत्तकयराइवा असुइइवा पूईयाइवा दु
भ्भिगंधाइवा अचोरूखाइवा णोइणठे समठे ववगयखाणुकंटक रीसहसक्करतण कयवरअसुइपूईयदुभ्भि
मूल॰ गंधमचोखववज्जिएणं एगुरुयदीवे पन्नत्ते समणाउसो अत्थिणं भंते एगूरुयदीवे२ दंसाइवा मसगातिवा
पिसुगाइवा जूवाइवा लिरूखाइवा ढिंकुणाइवा नोतिणठे समठे ववगयदंसमसगपिसुतजुवालिख्ख ढिंकुण
पीरवज्जिएण एगुरुयदीवे पन्नत्ते समणाउसो अत्थिणं भंतेएगुरुयदीवे२ अहीइवा अयगराइवा महोरग्गा
तिवा हंताअत्थि नोचेवणंते अन्नमन्नस्स तेसिं वामणुयाणं किंचि आवाहंवा पवाहंवा छविछेयंवा पकरेंति
पगइभद्दगाणं ते वालगणा पन्नत्ता समणाउसो अत्थिणं भंते एगूरुयदीये२ गहदंभातिवा गहमुसलाइवा

गहगज्जियाइवा गहजुद्धाइवा गहसंघाडाइवा गहअवसव्वा अब्भाइवा अब्भरुक्खाइवा संझाइवा गं
धव्वणगराइवा गज्जियाइवा विज्जुयाइवा उक्कापयाइवा दिसादाहाइवा णिग्घाइवा पंसुविठीइवा जूवाइवा
जक्खालित्ताइवा धूमियाइवा महियातिवा रउग्घायाइवा चंदोवरागाइवा सूरोवरागाइवा चंदपरिवेसाइवा
सूरपरिवेसाइवा पडिचंदाइवा पडिसूराइवा इंदधणूआइवा उदगमछाइवा अमोहाइवा कविहसीयाइवा पा
ईणवायाइवा पडीणवायाइवा जावसुद्धवायाइवा गामदाहाइवा नगरदाहाइवा जावसन्निवेसदाहाइवा वाण
पृ.ल. क्खय जणक्खय कुलक्खय धणक्खय वसणभूतमणारयाइवानोइणठ्ठे समठ्ठे अस्थिणं भंते एगूरूयदीवे
डिंबाइवा डमराइवा कलहाईवा बोलाइवा खाराइवा वेरातिवा विरुद्धरज्जाइवा नोइणठ्ठे समठ्ठे ववगयडिंब
डमरकलहवोलखारवेरविरुद्धरजाविवज्जियाणं तेमणुयगणा पन्नत्ता समणाउसो अस्थिणं भंते एगुरूयदीवे
महाजुद्धाइवा महासंगामाइवा महासत्थपडणाइवा महापुरिसपडणाइवा महारुधिरपडणाइवा नागवाणा

३५७ तिवा खेलवाणातिवा तामस वाणातिवा उब्भूइयाइवा कुलरोगाइवा गामरोगाइवा नगररोगाइवा मंमल
रोगाइवा सीसवेयणाइवा अत्थिवेयणाइवा कन्नवेयणाइवा नक्कवेयणाइवा दंत्तवेयणाइवा कासाइवा सासा
इवा जराइवा दाहाइवा कत्थूइवा खसराइवा कोट्टाइवा कुम्मातिवा दगोवराइवा अरिसाइवा अजिरगा
मूल. इवा भगंदलाइवा इंदग्गहाइवा खंदग्गहाइवा कुमारग्गहाइवा नागग्गहाइवा जरकग्गहाइवा भूयग्ग
हाइवा उब्वेवगाहाइवा धणुग्गहाइवा एगाहियाइवा वेयाहियाइवा तेयाहियाइवा चाउत्थगाहियावा हि
ययसूलाइवा मत्थगसूलाइवा पाससूलाइवा कुच्छिसूलाइवा जोणिसूलाइवा गाममारीवा जावसन्निवेसमा
रीवा पाणरकय जाववसणभूतमणायरियंवा नोइणट्ठे समट्ठे ववगयरोगायंकाणं तेमणुयगणा पन्नत्ता सम
णाउसो अत्थिणं भंते एगुरूयदीवे२ अइवासाइवा मंदवासाइवा सुवुट्ठीइवा मंदवुट्ठीइवा उदवाहीइवा
पवाहाइवा दगुब्भेयाइवा दगुप्पीलाइवा गामवहाइवा जावसन्निवेसवहाइवा पाणरकय जाववसणभू

तमणारियाइवा नोइणठे समठे ववगयवगोवहगाणं तेमणुयगणा पन्नत्ता समणाउसो अत्थिणं भंते एगुरूय
दीवेउ आयागराइवा तंबागराइवा सीसागराइवा सुवन्नागराइवा रयणागराइवा वइरागराइवा वसुहा
राइवा हिरण्णवासाइवा सुवन्नवासाइवा रयणवासाइवा वइरवासाइवा आभरणवासाइवा पत्तवा पुप्फ
वा फलवा वीयवास गंधवास मल्लवास वन्नवास चुन्नवास खीरवुठ्ठीइ रयणवुठ्ठीइवा हिरण्णवुठ्ठीइवा सुव
न्न तहेव जावचुन्नवुठ्ठीइवा सुकालाइवा उकालाइवा सुभिरूखाइवा दुभिरूखाइवा अप्पग्घाइवा महग्घा
मूल. इवा कयाइवा विक्कयाइवा संणिहीइवा संचयाइवा निधिइवा निहाणाइवा चिरपोराणाइवा पहीणसा
मियाइवा पहीणसेउयाइवा पहीणगोत्तागाइं जाइं इमाइं गामागर नगरखेम्म कव्वम्म मंम्बदोणमुह पट्ट
णासमसंवाहसन्निवेससु सिघाम्मगातिगचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहमहेसु नगरनिद्धमणेसु सुसाणगिरिकंद
रसंतिसलोवठ्ठाणभवणगिहेसु सन्निखित्ताचिठंति नोइणठे समठे एगुरूयदीवेणं भंते दीवे मणुयाणं केव

३५ए अंतर्द्वीप कह्या । हे नगवन् दक्षिण दिशाना वासी एकोरुक मनुष्योने एकोरुक नामे द्वीप किहां कह्यो
बे हे गौतम जंबूद्वीप नामे द्वीपने विषे मेरु पर्वतनी दक्षिण दिसे क्षुल्लक हिमवंत वर्षधर पर्वत्तने उत्तर
पूर्वदिशिना चरमांत थकी लवण समुद्र त्रणशें योजन अवगाहिने अंतराले लघु हिमवंतनी दाढा उ
पर । दक्षिण दिशना वासी एकोरुक नामे द्वीप कह्यो बे त्रणशें योजन लांब पणे कह्यो बे ने नवशें
उगणपंचास योजन कांइक विशेष ऊणां परिधिमाने एकोरुक द्वीप कह्यो बे ते ए पद्मवर प्रधान वेदि
काये करी एकवनखंम करी सर्वथी सकल दिशे समस्तपणे सम्यक् प्रकारे युक्त बे ते पद्मवर वेदिका
अर्ध योजन एटले ब गाउ ऊपरि उंचपणे करीने पांचशें धनुष विस्तार पणे एकोरुक द्वीपने सघले
परिक्षेपे परिमाणे कही बे ते पद्मवर वेदिकाने एहवो एतादृश वर्णक वर्णना स्वरुप कह्यो बे ते जिम
बे तिम कहे बे वज्ररत्ननी निपजावेली पद्मवर वेदिकाना नूमिनाग थकी उपरि नीसरच्या जे

प्रदेश तेनु नाम ने मान कहीए एटले प्रदेश सर्व वज्ररत्नमय छे एम वेदिकानो वर्ण
क रायपसेणी सूत्रमां कह्यो छे तिम जाणवो ते पद्मवर वेदिका एक वन खंडे करी
सर्वथी सघले सम्यक् प्रकारे परिक्षिप्त एटले युक्त छे ते वनखंड देशे ऊणां बे योजन चक्र
वाल पणे विस्तारे करी मंडलनी पेठे छे ए वेदिका सामान्य परिक्षेप परिमाणे करी कही ते वनखंड
पा॰ काला कालीछे छायानाकांति जेनी एम जिम रायपसेणीसूत्रमां वनखंड वर्णनछे तिम निरवशेष एटले स
मग्र जाणवुं तृणा तोरण। गंध। फरस। शब्द तृणाना वावीउ उत्पात पर्वत. पृथिवी. शिलापट्टक ए
टलां सर्वनुं वरणन रायपसेणीथी जाणवुं जावत् तिहां घणा वाणव्यंतर देवता देवीयोछे रहेछे जावत्
शब्देकरि विचरेछे वली ए कोरुक नामा द्वीपने विषे मध्य भाग घणो समछे समानपणेछे रमणीक भूमि
भाग कह्योछे ते जिम मुरज एटले वादित्रविशेष तथा पुष्कर वादित्रविशेष ते अत्यंतसम होय तेहनी

पा. ३६० उपमाये समपणु तथा सुहालापणुं कह्युंछे अथवा एम शय्याथो कही जावत् पृथिवी शिलापट्टक तिहां लगे पाठ लेवो । तिहां एकोरुक द्वीपने विषे मनुष्य तथा मनुष्यनी स्त्रीयो बेसेछे जावत् शब्देकरी वि
१४०८ चरेछे तिहां एकोरुक द्वीपने विषे ते ते देशने विषे तिहां२ घणा२ उद्दालक एहवे नामे मोदालक एहवे नामे कोद्दालक एहवे नामे कृतमाल एहवे नामे नतमाल एहवे नामे नट्टमाल एहवे नामे श्रृंगमाल
भाषा. एहवे नामे शंखमाल एहवे नामे दंतमाल एहवे नामे सेलमाल एहवे नामे सर्व वृक्ष जाति विशेषनो समूह कह्योछे तीर्थंकर गणधरोये हे साधो हे आउखावंतो कुश विकुश विशुद्ध ए नामना वृक्षनो विस्तार सहित शुभमूल मूलमंत कंदवंत जावत् शब्देकरी बीजवंत पांदडांये करि फुले करि सहित नथी छेदाणी नथी ढांकेली शोभा जेमनी एवा अति शोभाये करि शोभता उपशोभता एटले विशेष शोभता थका रह्याछे एकोरुक नामा द्वीपने विषे घणां वृक्षछ हरु मरु तालादिक वृक्ष जाति विशेष जाणवा